CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

133.5
स त
4020

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

STATE MUSEUM, LUCKNOW
LIBRARY

Acc. No. 4020

Book No. 133.5
स त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Presented to S.M.L.

[signature]
26.4.71

[signature]
7.8.63

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

* श्रीः *

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्रीनीलकण्ठदैवज्ञविरचिता—

ताजिक-नीलकण्ठी

लखीमपुरनिवासिना

पं० सीतारामज्योतिर्विदा विरचितया

भाषाटीकया संवलिता ।

काशीस्थश्रीचन्द्रमहाविद्यालयप्रधानज्यौतिषशास्त्राध्यापक

ज्यौतिषाचार्य्य

पं० श्रीगणेशदत्तपाठकः

अन्वयोदाहरणोपपत्तिपरिवर्द्धनादिभिः परिष्कृत्य

संशोधिता ।

प्रकाशक—

भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, बनारस १.

(ब्रांच—कचौड़ीगली, बनारस ।)

चतुर्थ संस्करणम्] संवत् २०१२ [मूल्य ३)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

4020
133.5
6 त

मुद्रक–
पं० वैकुण्ठनाथ भार्गव,
आनन्दसागर प्रेस, गायघाट, बनारस १.

State Museum Library
Lucknow

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

ज्यौतिः शास्त्र 'सिद्धान्त, संहिता, और होरा' इन तीन स्कंधों में विभक्त है। होरा में जातक मुहूर्तादि अनेक विषय हैं, जिनमें से एक वर्षतन्त्र भी है। यद्यपि वर्षफलोपयोगी बहुत से ग्रन्थ हैं तथापि श्रीनीलकंठ दैवज्ञकृत 'नीलकण्ठी' का ही आजकल अधिक प्रचार पाया जाता है। उक्त ग्रन्थ में अनेक फारसी और अरबी के शब्द मिलते हैं जिससे लोगों का अनुमान है कि उक्त ग्रन्थ किसी फारसी ग्रन्थ का ही अनुकरण है। वस्तुतः शब्दों को लेकर कोई भी निर्णय नहीं किया जा सकता क्योंकि वेदादि में भी ऐसे शब्द मिलते हैं जो कि न तो फारसी ही में मिलते हैं और न संस्कृत में ही–जैसे (जर्भरी भर्तारौ, तुर्फरीतु-हन्तारौ) सायनभाष्योपोद्धात (निरुक्त १३।५) किसी २ के मतसे 'यवन' शब्द से ही यवनों का ग्रहण होता है यह भी कहना असंगत है क्योंकि अथर्ववेद के पैप्पलीय शाखा के (१।७।३) में भी 'यवनाद्याभिः' इत्यादि यवन शब्द आता है। हाँ, यह अवश्य कहा जा सकता है कि जिस काल में जैसी राजभाषा होती है उसका आभास साधारण लोगों के बोल चाल में भी जरूर आ जाता है। प्रस्तुत ग्रन्थ भी शाही जमाने में निर्मित हुआ क्योंकि इस ग्रन्थ के प्रसिद्ध टीकाकार विश्वनाथ दैवज्ञ ने स्वयं बादशाह जहांगीर के लड़के शाहजहां की कुंडली बनाया है जिसकी एक प्रति गवर्नमेंट संस्कृत कालेज बनारस की लाइब्रेरी में वर्त्तमान है। इससे इस बात की पुष्टि हो जाती है कि ग्रन्थ की रचना शाही जमाने में हुई है।

उक्त ग्रन्थ को पं० नीलकंठ दैवज्ञ ने सम्वत् १६४४ में अन्य कतिपय ग्रन्थों की सहायता से बनाया था। इस ग्रन्थ की अनेक टीकायें आजतक निकल गई हैं। परन्तु सभी टीकाकारों ने विश्वनाथ दैवज्ञ का ही आश्रय लिया है, किसी २ ने कहने को विश्वनाथ का अनुकरण नहीं किया है परन्तु उन्होंने अक्षरशः उनकी नकल किया है और कहीं २ अपनी मनगढ़ंत टीका कर अनर्थ कर दिया है। प्रायः इस ग्रन्थ के पढ़ने वालों को स्पष्ट ग्रहादि साधन में गोसूत्रिका गुणन करने में कठिनाई होती थी जिसका उदाहरण प्रायः किसी टीकाकार ने नहीं किया तथा प्रत्येक देश के राश्युदय भिन्न भिन्न होते हैं इसके बनाने का प्रकार भी किसीने नहीं दिया है इसको देखकर मैंने उक्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोनों विषयों को भली-भाँति समझाकर उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर दिया है जिससे पढ़ने वालों को आसानी से समझ में आ जाय।

मैंने अनेक हस्तलिखित प्रतियों और टीकाओं को एकत्र कर सरल और उपपत्ति-टिप्पणी (सान्वय) सहित भाषाटीका कर सम्वत् १९९२ में ही श्रीकैलाशनाथजी भार्गव को समर्पण कर दिया था, परन्तु यन्त्रालय में कार्य विशेष होने से आजतक यह ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हो सका था।

अन्त में सज्जन महानुभावों से प्रार्थना है कि जहां कहीं मेरे भ्रान्तिदोष या यन्त्रालय के असावधानी से कुछ त्रुटि हो उसे सुधार लेगें तथा मुझे भी सूचित करेंगे जिसमें अग्रिम संस्करण में अशुद्धियाँ सुधार दी जांय। क्योंकि भ्रान्ति होना मनुष्य का धर्म है। अलम्।

सम्बत् १९९४ नाग पँचमी।

विनीत
ज्यौ० आ० श्रीगणेशदत्तपाठक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ ताजिकनीलकण्ठीस्थ विषयाणामनुक्रमणिका।

विषय	पृष्ठ
मङ्गलाचरण—	१
मेषराशिका स्वरूप	१
वृषराशि ,,	२
मिथुनराशि ,,	,,
कर्कराशि ,,	,,
सिंहराशि ,,	३
कन्याराशि ,,	,,
तुलाराशि ,,	,,
वृश्चिकराशि ,,	४
धनराशि ,,	,,
मकरराशि ,,	,,
कुम्भराशि ,,	,,
मीनराशि ,,	५
राशियोंके मित्रशत्रु का विभाग	,,
संक्षेपसे राशियोंका स्वरूप और प्रयोजन	६
वर्षप्रवेशकाल बनानेकी रीति	,,
इसका उदाहरण	७
वर्षप्रवेशसमयका तिथिसाधन	९
तिथिसाधनका उदाहरण	१०
टिप्पणीमें योग और नक्षत्रसाधन	,,
वर्षप्रवेश समय लिखनेका क्रम	,,
स्पष्टग्रहसाधनोपयोगी चालनका प्रकार	११
ग्रहोंका स्पष्टीकरण—गोमूत्रिका गुणन	,,
इसका उदाहरण	१२
भयात भभोग बनानेका प्रकार	१३
चन्द्रमाके स्पष्ट करनेका विचार	१४
,, ,, ,, उदाहरण	,,
दशमलग्नसाधनोपयोगी नतका साधन	१६
लग्नादिद्वादश भावोंका साधन	१६
टिप्पणीमें प्रत्येक देशके उदयमान-का साधन	१७
अयनांशसाधनकी रीति	१९
लग्नसाधनका उदाहरण	२०
दशमलग्नसाधनका ,,	,,
भावसाधनके ,,	२१-२२
भावोंकी शुद्धता	२२
भावचक्र तथा चलित चक्र	,,
भावस्थ ग्रहोंके फल	२३
विंशोपक बल	,,
राशियोंके स्वामी और द्रेष्काणाधीश जाननेका प्रकार	२४
ग्रहोंकी उच्च राशियाँ	२५
ग्रहोंकी नीचराशियाँ व उच्च बल-साधन और नवांशोंके स्वामियों-का वर्णन	,,
मेषादिराशियोंके हद्देशोंका वर्णन	२६
पंचवर्गीबल	२७
पंचवर्गी से सबल निर्बल ग्रहके लक्षण	२८
रोमक मतानुसार ग्रहमैत्री	२९
टिप्पणीमें	,,
पंचवर्गी बलसाधनोदाहरण	,,
द्वादशवर्गीका विचार	३०
होरा-द्रेष्काण व चतुर्थांशके अधिपतियों-का वर्णन	,,
पंचमांशपति और द्वादशांशपति	३२
द्वादशवर्गीसे ग्रहोंके शुभ पापफलोंका विचार	३५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
ग्रहभेदसे फलों में विशेषता	३५
द्वादशभावोंके शुभ और अशुभ फलों-का निर्णय	,,
लग्नमें विचारणीय विषय	३६
धनभाव और तृतीय भावमें ,,	,,
चौथे और पाँचवें भावमें ,,	,,
छठे और सातवें भावमें ,,	,,
आठवें भावमें ,,	३७
नवम और दशम भावमें ,,	,,
ग्यारहवें और बारहवें भावमें ,,	,,
बलवान ग्रहके लक्षण	३८
ग्रहोंके स्थान और बलिष्ठ योग	,,
मंगलका बल	,,
मेषादि बारह राशियोंके त्रिराशिपति	३९
त्रिराशिपतियोंके प्रयोजन	,,
वर्षेश निर्णयार्थ पंचाधिकारी	४०
वर्षेशनिर्णयका प्रकार	,,
दृष्टिके समतामें वर्षेशका निर्णय	,,
मतान्तरसे दृष्टि बल की समतामें वर्षेशका निर्णय	,,
मुंथहाके जाननेका प्रकार	४१
,, उदाहरण	,,
राहुके मुख-पीठ-पूँछके लक्षण	,,
सूर्यका स्वरूप	४३
चन्द्रमाका ,,	,,
मङ्गलका ,,	,,
बुधका ,,	४४
गुरूका ,,	,,
शुक्रका ,,	,,
शनैश्चरका ,,	४५
राहु और केतुका	,,
ग्रहोंकी दृष्टि ,,	,,
ग्रहोंकी दृष्टिसाधन का उदाहरण	४७
ताजिकोक्तग्रहमैत्री और दीप्तांश	४८

विषय	पृष्ठ
टीका में विशेषता	४८-४९
दीप्तांशों का प्रयोजन	,,
षोडश योगोंके नाम	,,
इक्कवाल और इन्दुवार योगके लक्षण	५०
इत्थशालयोगका लक्षण	,,
उदाहरण	५१
दृष्ट्यभावमें मुथशिल तथा त्रिविध-मुथशिल लक्षण	,,
उदाहरण	५२
प्रकारान्तरसे मुथशिलयोगका विचार	५३
पुनःप्रकारान्तरसे फल विचार	,,
अशुभ फल विचार	,,
ईशराफ योगका लक्षण	५४
नक्तयोगका लक्षण	,,
उदाहरण	,,
यमय योगका लक्षण	५५
उदाहरण	५६
मणऊ योगका लक्षण	,,
उदाहरण	५७
मणऊ योगके भेद	,,
उदाहरण	५८
कम्बूलयोग के लक्षण	,,
उत्तमोत्तम कम्बूल योग	५९
उत्तम-मध्यम उत्तम कंबूल	,,
उत्तम मध्यमोत्तम और मध्यम मध्यम कम्बूल के लक्षण	६०
उत्तमाधम कम्बूल का उदाहरण	६१
मध्यम मध्यमाधम कम्बूलयोग	,,
उत्तमकम्बूलयोग	६३
प्रकारान्तरसे मध्यमकम्बूल का लक्षण	६४
अधमोत्तमकम्बूलयोग ,, ,,	६५
अधम-मध्यम ,, ,,	६६
अन्य अधम ,,	६७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
अधमाधम कंबूलयोगका लक्षण	६७
,, ,, उदाहरण	६८
पूर्वोक्त उत्तमोत्तम कंबूल	,,
अधमाधम कंबूल का उदाहरण	,,
मुथशिल योग	६६
दृष्टान्तद्वारा पूर्वोक्तमतका खंडन	७०
प्रकारान्तरसे फलोत्पत्तिज्ञानके लिये कम्बूलयोगके भेद	,,
दृष्टान्तसहितकम्बूलयोगका फल	,,
शून्यमार्गग्रहणलक्षण	७१
गैरिकम्बूलकालक्षण	,,
गैरिकम्बूलयोगका उदाहरण	७२
खल्लासर योग का लक्षण	,,
रद्दयोगका लक्षण	७३
रद्दयोगका समय भेदसे फलमें विशेषता	,,
दुःफालिकुत्थयोगका लक्षण	,,
दुत्थोत्थदिवीर योगका लक्षण	७४
तम्बीरयोगका लक्षण	,,
कुत्थयोगका लक्षण	,,
कुत्थके अन्य भेदोंका वर्णन	७५
अन्य प्रकार से	,,
दुरफयोगका लक्षण	७६
अन्य अशुभ प्रकार वर्णन	,,
चन्द्रमाका अत्यन्त विशेष वर्णन	७७
चन्द्रमा के अन्य दुरफ योग	,,
चन्द्रमाका विशेष दोषाल्पकत्व	७८
सम्पूर्ण ग्रहोंके चारहर्ष स्थानोंका वर्णन	,,
सहमाध्यायः	
सहमोंके नाम	८०
पुण्यसहमका साधन	,,
गुरु, विद्या, यश सहम का साधन	८१
मित्र सहमका ,,	८२
माहात्म्य और आशा सहमका साधन	८२
सामर्थ्य, भ्रातृसहमका ,,	८३
गौरव, राज, वा तात सहमों का ,,	,,
माता, पुत्र, जीवित, अम्बुसहमोंका,,	८४
कर्म, रोग, मन्मथ सहमोंका ,,	८५
कलि, क्षमा, शास्त्र सहमोंका ,,	,,
बन्धुवन्दक, मृत्यु सहमोंका ,,	८६
देशान्तर, अर्थ सहमोंका ,,	,,
परदारा, अन्यकर्म, वणिक् सहमों ,,	,,
कार्यसिद्धि, विवाह सहमोंका ,,	८७
प्रसव, सन्ताप सहमोंका ,,	,,
श्रद्धा, प्रीति, बल, देह सहमों ,,	८८
जाड्यव्यापार, पानीयपतन सहमों का साधन	,,
शत्रु, शौर्य सहमोंका ,,	८६
उपाय, दरिद्र, गुरुता सहमों ,,	,,
जलपथ, बन्धन सहमों ,, ,,	९०
कन्या, अश्व सहमों ,, ,,	,,
सहमोंके फल होनेका समय निरुपण	९२
सहमोंका बलवर्णन	,,
सहमेश का बलविचार	,,
सहमफलके ह्रास और वृद्धिका विचार	९३
प्रकारान्तरसे सहमोंके फलोंका ह्रास	,,
वर्षमें साधने योग्य सहमोंका वर्णन	,,
पुण्य सहम का फल	९४
,, ,, ,, अशुभ फल	,,
पापग्रह और शुभग्रहके सम्बन्धसे फल में विशेषता	,,
पुण्य सहमकी प्रशंसा	,,
पुण्य सहमके अशुभ फल	९५
सहमों की उपयोगिता	,,
कार्यसिद्धि सहमका शुभाशुभ फल	,,
कलिसहमका शुभाशुभ फल	,,
विवाहसहमका ,, ,,	९६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
यशसहमका शुभाशुभ फल	९६
प्रकारान्तरसे ,, ,,	,,
आशासहमका ,, ,,	,,
रोगसहमका अशुभ फल	९७
प्रकारान्तरसे रोगसहमका शुभाशुभफल	,,
धनसहमका ,, ,,	,,
सहमोंपर ग्रह दृष्टिका प्रभाव	९८
पुत्रसहमका शुभाशुभफल	,,
पुनःपुत्रसहमका शुभाशुभफल	,,
पितृसहमका ,,	,,
पुनः ,, ,,	९९
बन्धनसहमका ,,	,,
गौरवसहमका ,,	,,
पुनः गौरव सहमका शुभाशुभफल	१००
कर्मसहमका ,,	,,
प्रकारान्तरसे ,,	,,
सहमोंके पर्य्यायवाची सहम	,,
सहमोंका प्रयोजन	१०२
वर्षमें दशा लानेका प्रकार	,,
पात्यंशसाधन	,,
दशादिवस लानेका प्रकार	१०३
अंशोंके समानतामें निणय	,,
दशा साधनका उदाहरण	,,
अन्तर्दशा लानेका प्रकार	१०४
मासप्रवेश और दिनप्रवेश लानेकीविधि	१०५
मासप्रवेश की इष्ट घटि लाने का प्रकार	१०६
उदाहरण	,,
कविवंशवर्णनमाह	१०७

द्वितीयं प्रकरणम्

विषय	पृष्ठ
मङ्गलाचरण	१०९
वर्षतन्त्रका प्रयोजन	,,
प्रश्नसे वर्षका शुभाशुभविचार	११०
वर्षेशके स्थितिवशफल	१११
पञ्चवर्गीबलके अनुसार वर्षेशका फल	,,
वर्षेश सूर्यका फल	११२
,, चन्द्रमाका ,,	११३
,, मङ्गलका ,,	११४
,, बुधका ,,	११५
,, बृहस्पतिका ,,	११६
,, शुक्रका फल	११७
,, शनिका फल	११८
वर्षेशसे सम्पूर्ण वर्षका शुभाशुभफल	११९
इत्थशालद्वारा वर्षेशका फल	,,
हद्दाद्वारा वर्षेशका फल	,,
जन्मकालीन शुभाशुभफल देनेवाले ग्रहोंद्वारा वर्षेश का फल	,,
,, उदाहरण	१२०
,, उपसंहार	,,
मुंथहाकी दैनिक गति	१२१
स्वामी और शुभग्रहोंद्वारा मुंथहाका फल	,,
चतुर्थादिभावमें स्थित मुंथाका फल	,,
लग्नमें मुंथाका फल	१२२
दूसरे भावमें ,, ,,	,,
तीसरेभावमें ,, ,,	,,
चौथे भावमें ,, ,,	,,
पाचवें भावमें ,, ,,	,,
छठें भावमें ,, ,,	१२३
सातवें भावमें ,, ,,	,,
आठवें भावमें ,, ,,	,,
नवम भावमें ,, ,,	,,
दशम भावमें ,, ,,	१२४
ग्यारहवें भावमें ,, ,,	,,
बारहवें भावमें ,, ,,	,,
क्रूर ग्रहोंसे क्षुतदृष्टिसे दृष्ट प्रत्येक भावोंमें मुन्थहाका फल	,,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
पुनःभावस्थित मुन्थहाका फल	१२४
पापग्रहोंसे युक्त मुन्थहाका फल	१२५
पापग्रह और शुभग्रहोंका फल	,,
वर्षमें अनिष्टस्थानमें स्थित मुंथाका फल	,,
इसका उदाहरण	१२६
वर्षेशके बलसे मुन्थहाका फल	,,
सूर्यके सम्बन्धसे मुन्थहाका फल	,,
चन्द्रमाके ,, ,,	,,
मङ्गलके ,, ,,	१२७
बुधशुक्रके ,, ,,	,,
वृहस्पतिके ,, ,,	,,
शनिके ,, ,,	,,
राहुमुखगत मुन्थहा फल	१२८
राहुके मुख, पीठ, पूँछके लक्षण	,,
राहुकी पीठ व पुच्छमेंस्थित मुंथहाकाफल	,,
जन्मकालीन ग्रहोंके शुभाशुभफल	,,
मुथहास्वामीका अशुभ फल	१२६
प्रकारान्तरसे ,, ,,	,,
मुन्थहा और मुथहास्वामीका शुभाशुभफल	,,
अरिष्टाध्यायः	
वर्षमें अरिष्ट विचार	१३०
अरिष्टभङ्गाध्यायः	१३६
बारहों भावों के सामान्य विचार	१४०
लग्नस्वामीका शुभाशुभफल	,,
वर्षमें अधिकारी ग्रहोंके हीनबली रहते विशेष फल	,,
मङ्गल का फल	१४१
शुक्र और शनैश्चर का फल	,,
वर्षलग्न के फल	,,
अधिकारियों के बलवान् रहते हुये फल में विशेषता	१४२
धननाश योग	,,
धनभावका विचार	१४३
दूसरा धनलाभयोग	,,
सम्पूर्ण भावों में अतिदेश	,,
दृष्टिवश से पूर्वोक्तयोग	,,
थोड़े धन के प्रतियोग और दंडयोग	१४४
अन्य धनलाभयोग	,,
धनयोग और उसके नाशयोग	,,
अन्य धनप्राप्तियोग	१४५
बहुधनलाभयोग	,,
अन्य धनलाभयोग	,,
अन्य धनयोग और उसके नाशयोग	,,
शनिके दौष्ट्यापवाद और धन-नाशयोग	१४६
जन्मसमथ धनेश गुरुका बारहों भावों में फल	,,
सहज भावका शुभाशुभफल	१४७
भ्रातृसुखकारकयोग	१४८
भ्रातृदुष्टयोग	१४६
भाइयोंको सुखकारी योग	,,
अन्य भ्रातृ सौख्य-योग	,,
सहजभावके दुःखकारक योग	१५०
भाइयों के बुरे योग	,,
चौथे भावका विचार	,,
माता पिता के अरिष्ट योग	१५१
माता पिता को क्लेश योग	,,
,, ,, शुभ-अशुभ योग	१५२
पंचम भावका विचार	१५२
पुत्रप्राप्तियोग	,,
पुत्रप्राप्ति और पुत्रदौष्ट्य योग	१५३
अन्य पुत्रप्राप्तियोग	१५४
शुभाशुभयोग	,,
पुत्रप्राप्ति व पुत्रनाश योग	,,
छठें भावका विचार	१५५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
अन्य अशुभ फल	१५५
बुधका फल	,,
शनिकृत अरिष्ट योग	१५६
भौमकृत अरिष्ट योग	,,
अन्य अरिष्ट योग	,,
अन्य रोगोत्पत्ति योग	१५७
रोगनाश व रोगोत्पत्ति योग	,,
अन्य दो योग	१५८
शूलयोग	,,
ग्रहोंके वश से फोड़ाका योग	,,
अन्य अनिष्ट योग	१५९
रोग का स्थान	,,
सप्तम भावका विचार	१६०
जारता योग और विवाह योग	,,
स्त्रीसौख्य और विवाहयोग	१६१
स्त्रीलाभ और स्त्रीकष्ट योग	,,
अत्यधिक स्त्रीसुख योग	,,
स्त्रीसुख सम्बन्धी चार योग	,,
स्त्रीक्लेश और विवाह योग	१६२
स्त्रीके क्लेश योगों का वर्णन	,,
विवाहयोग	,,
स्त्रीप्राप्ति के तीन योग	,,
फिर विवाह के दो योग	१६३
स्त्रीसुख प्राप्ति योग	,,
विदेश गमन योग	,,
अष्टम भावका विचार	१६४
महामृत्यु योग	,,
चार मृत्यु योग	,,
रोग का योग	१६५
अल्पमृत्यु योग	१६५
धननाश और विवाद योग	,,
महा अल्पमृत्यु योग	१६६
कलहयोग	,,

विषय	पृष्ठ
जय और वाद योग	१६६
अन्य कलि व रोग योग	,,
अन्य कलहयोग	१६७
विदेशगमनादि योग	,,
अन्य अल्पमृत्यु योग	,,
सामान्य वर्षयोग	१६८
वाहन से भय और गिरने का भय	,,
महामृत्यु योग	,,
अन्य महामृत्यु योग	,,
नवम भावका विचार	
यात्रा में लाभ योग	१७०
अन्य गमनयोग तथा चिन्तित यात्रा योग	,,
चिन्तित यात्रा योग	१७१
समीचीन यात्रा योग	,,
दूर यात्रा योग	१७२
प्रबल विदेश यात्रा योग	,,
दशम भावका विचार	
राज्यधन सुख आदि लाभयोग	१७३
राज्य प्राप्तियोग और राजा से बन्धन योग	,,
अन्यस्थान प्राप्तियोग	,,
दूसरे राज्यप्राप्ति योग	१७४
द्रव्यनाश योग	,,
पाप और पुण्यवृद्धि योग	,,
दुष्ट योग	,,
मुन्थमहासम्बन्धी शुभाशुभ फल	१७५
एकादश भावका विचार	
लाभ योग	१७५
शुभाशुभ योग	१७६
धन प्राप्ति योग	,,
गड़े हुये द्रव्यके प्राप्तिका योग	,,
बारहवें भावका विचार	
अन्यस्थानोंमें गये हुये ग्रहोंका फल	१७८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
निर्बल शनि आदि का फल	१७८
दुष्ट स्थानमें स्थित वर्षपति का फल	१७६
वर्षमें सामान्य शुभाशुभ फल	,,
वर्षमें ग्रहोंका फल पाककाल	,,
दशाफलाध्याय	
पूर्णबलयुक्त लग्नदशा का फल	१८१
मध्यम बलयुक्त लग्न दशाका फल	,,
अधम ,, ,,	,,
क्रूर लग्नकी दशाका फल	,,
पूर्ण बलयुक्त सूर्यकी दशा का फल	१८२
मध्यबली ,, ,,	,,
अल्पबली ,, ,,	,,
नष्टबली ,, ,,	,,
सूर्यके विशेष स्थान स्थिति से दशा का फल	,,
पूर्णबली चन्द्रमा के दशाका फल	१८३
मध्यबली ,, ,,	,,
अल्पबली ,, ,,	,,
नष्टबली ,, ,,	,,
अनिष्ट स्थानोंसे भिन्न स्थान में चन्द्रमाका फल	१८४
पूर्णबली मङ्गलके दशाका फल	,,
मध्यमबली ,, ,,	,,
नष्टबली ,, ,,	,,
तीसरे छठें ग्यारहवें मङ्गलका फल	१८५
पूर्णबली बुधके दशा का फल	,,
मध्यमबली ,, ,,	,,
स्वल्पबलयुक्त ,, ,,	,,
हीनबली ,, ,,	१८६
अनिष्ट स्थानों से भिन्न स्थानों में बुध का फल	,,
पूर्णबली गुरुके दशाका फल	,,
मध्यमबली ,, ,,	,,
अल्पबली ,, ,,	,,
नष्टबली ,, ,,	१८७
अनिष्ट स्थानोंसे भिन्न स्थानोंमें गुरुका फल	१८७
पूर्णबली शुक्रके दशाका फल	,,
मध्यमबली ,, ,, ,,	१८८
अल्पबली ,, ,, ,,	,,
नष्टबली ,, ,, ,,	,,
अनिष्ट स्थानोंसे भिन्न स्थानोंमें शुक्रका फल	,,
पूर्णबली शनिके दशा का फल	१८६
मध्यमबली ,, ,, ,,	,,
अल्पबली ,, ,, ,,	,,
नष्टबली ,, ,, ,,	,,
तीसरे-छठें-ग्यारहें स्थानोंमें शनिका फल	,,
द्रेष्काणवश लग्नदशाका फल	१९०
टिप्पणीमें विशेषता	,,
अन्तर्दशा तथा भावोंमें स्थित ग्रहोंका फल	१९१
लग्नमें स्थित ग्रहोंका फल	,,
धनभावमें स्थित ग्रहोंका फल	१९२
तीसरे भावमें ,, ,, ,,	,,
चौथे भावमें ,, ,, ,,	,,
पञ्चम भावमें ,, ,, ,,	१९३
छठे भावमें ,, ,, ,,	,,
सप्तम भावमें ,, ,, ,,	,,
आठवें भावमें ,, ,, ,,	१९४
नवम भावमें ,, ,, ,,	,,
दशम भावमें ,, ,, ,,	,,
एकादश भावमें ,, ,,	१९५
बारहवें भावमें ,, ,, ,,	,,
अध्यायके समाप्तिका वर्णन	,,
मासदिनप्रवेशफलाध्यायः	
मासपति और दिनपति बनानेका प्रकार	१९६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
मासका फल	१९७
अनिष्टफल	,,
मासलग्न सम्बन्धी शुभाशुभ फल	१९८
प्रकारान्तर से फल	,,
लग्न नवमांशके वश पूर्वोक्त भावोंकेफल	,,
अधिकारी ग्रहोंके विरुद्ध स्थानमें स्थित होनेसे अनिष्ट फल	१९९
मतान्तरसे फल	,,
अन्य आचार्यों का मत	,,
दिन प्रवेशका फल	२००
दिन स्वामीका निर्णय	,,
दिन प्रवेशमें ग्रहोंका शुभाशुभ फल	,,
छठें, आठवें इत्यादि स्थानोंमें स्थित दिनेशादिकोंके फल	,,
दिनलग्न नवांश द्वारा फल	२०१
उक्तरीतिसे भावेशलग्नके अर्थ अतिदेश	,,
छठें और बारहवें भावमें विशेष फल	,,
अष्टम भावका फल	२०२
कर्तरी योगका फल	,,
चन्द्रकृत अरिष्ट योग	,,
पुनः ,, ,, ,,	,,
शुभफल	२०३
दिनप्रवेशमें चन्द्रमाके अवस्थासे फल	,,
अवस्था लाने का प्रकार	,,
द्वादश अवस्थाओंके नाम	,,
अवस्थाके फल	,,
मृगयादिविचाराध्यायः	
मृगया विचार	२०५
भोजन चिन्ता	,,
भोजनके अन्नोंका ज्ञान	२०७
स्वप्न चिन्ताका वर्णन	,,
स्वप्नमें सुन्दरी स्त्रीके साथ रमणका ज्ञान	२०८
ग्रन्थकारके वंशका वर्णन	,,

विषय	पृष्ठ
प्रश्नतन्त्रम् ।	
ब्रह्मासे प्रश्न व स्वरकी परम्परा	२१०
प्रश्न समयके नियम	,,
किसकी बाणी मिथ्या नहीं होती	,,
अन्य टीकाकारोंके मतोंका खंडन टि० में	,,
योग्य और अयोग्य प्रश्नकर्ता	२११
प्रश्नकर्त्ताकी परीक्षा	,,
बहुत प्रश्नोंके विषयमें विधि	२१२
राशिचक्रका पूजन	२१३
दीप्तादि अवस्थाओंका माहात्म्य	,,
दीप्तादि अवस्थाओंके नाम	,,
दीप्तादि अवस्थाओं के लक्षण	,,
,, ,, का फल	२१४
सूर्यका स्वरूप	,,
चन्द्रमाका ,,	२१५
भौम ,, ,,	,,
बुध ,, ,,	,,
गुरु ,, ,,	,,
शुक्र ,, ,,	२१६
शनिका ,, ,,	,,
राहु केतुका ,,	,,
लग्नसे विचारने योग्य कार्य	,,
धनभावसे ,, ,,	,,
सहजभावसे ,, ,,	२१७
चौथे भावसे ,, ,,	,,
पाचवें भावसे ,, ,,	,,
छठें भावसे ,, ,,	,,
सातवें भावसे ,, ,,	,,
आठवें भावसे ,, ,,	२१८
नवम भावसे ,, ,,	,,
दशम भावसे ,, ,,	,,
ग्यारहवें भावसे ,, ,,	,,
बारहवें भावसे ,, ,,	,,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
भावों का बलाबल ,,	२१९
प्रश्नमें शुभाशुभ ,,	,,
दृष्टिसे कार्यसिद्धि ,,	,,
लग्नेशादिकी लग्न पर दृष्टिका फल	२२०
अन्य प्रकारसे	,,
अनिष्टयोग	,,
हमारा काम कब होगा इस प्रश्न में उत्तर	२२१
द्रेष्काण वशसे लाभालाभ ज्ञान	,,
लाभ आदिके समय का निर्णय	२२२
भूतभविष्य वर्त्तमान प्रश्नमें शुभाशुभ फल	२२३
शुभफल	२२४
शुभाशुभ फल	,,
द्वितीय स्थान सम्बन्धी प्रश्न	,,
प्रश्नदीपकोक्त धनलाभ योग	२२५
तीसरे स्थान सम्बन्धी प्रश्न	,,
चतुर्थ भावसम्बन्धी प्रश्न	२२६
पञ्चम स्थान ,, ,,	२२८
चन्द्रमासे पुत्र या कन्या का ज्ञान	२२९
सन्तान जीवेंगे या मर जायँगें	,,
प्रसव समयज्ञान	२३०
भुवनदीपकोक्त प्रसवज्ञानसमय	,,
इस वर्ष सन्तान होगी या नहीं	२३१
छठें स्थानसम्बन्धी प्रश्न	,,
स्वामिसेवक और चतुष्पदका प्रश्न	२३३
स्त्रीसम्बन्धी प्रश्न	२३५
स्त्रीसम्बन्धी प्रेमका प्रश्न	,,
रुष्ट स्त्रीके आगमनका प्रश्न	२३६
कन्या परीक्षा	,,
प्रसूति परीक्षा	२३७
गर्भ किसका है	,,
पतिव्रताकी परीक्षा	२३८
अष्टम स्थानसम्बन्धी प्रश्न	२३९

विषय	पृष्ठ
नवम स्थान सम्बन्धी प्रश्न	२४१
नगरसे लाभ होगा या नहीं	२४२
दशमस्थान सम्बन्धी प्रश्न	२४३
एकादश स्थान ,, ,,	२४५
द्वादश स्थान ,, ,,	२४६
अथ विशेषप्रश्नाध्यायः	
वह परदेश से चला या नहीं	२४७
पथिकागमन प्रश्न	२४८
प्रवासी के आगमन का समय	२५०
प्रवासी जीता है या मर गया	२५२
परचक्रागमन प्रश्न	२५३
शत्रु कितने दिनों में आवेगा	,,
हारजीतके विषयमें प्रश्न	२५४
दुर्ग प्रश्न	२५५
रोगीके शुभाशुभके विषयका प्रश्न	२५६
देवदोष ज्ञान	२५७
प्रश्नलग्नसे दोषज्ञान	,,
स्वामी सेवक प्रश्न	२५९
दूसरा स्वामी होगा या नही	,,
गड़े हुये या खोये हुये धनके लिये प्रश्न	२६०
चोरी गये हुये धनका प्रश्न	२६१
चोर के विषयमें प्रश्न	२६४
चोर के वयोज्ञान के विषय में	२६५
नष्टस्थान का प्रश्न	२६६
यह चोर है या नहीं	,,
चोर स्त्री है या पुरुष	,,
सन्तान विषय के प्रश्न	२६७
भोजन ज्ञान प्रश्न	२६९
मैंने आज कैसा भोजन किया है	,,
स्वप्नदर्शन प्रश्न	२७२
आखेट सम्बन्धी विचार	,,
विवाद प्रश्न	२७३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय	पृष्ठ
बन्धन प्रश्न	२७४
कैदसे छूटने का प्रश्न	२७५
नौका के विषय में प्रश्न	२७६
जनश्रुति के सत्यासत्यका प्रश्न	२७८
क्रयविक्रय के विषय प्रश्न	,,
धान्य के उत्पत्ति में विचार	२७९
अथ प्रकीर्णकाध्यायः	
लाभालाभ के विषय में विचार	२८०
लाभादि में समय का निर्णय	२८२
प्रश्नसमयमें लग्न जानने का प्रकार	२८३
मुष्टिगत (मानसिक) प्रश्न	२८४
स्त्रीसम्भोग सम्बन्धी प्रश्न	२८५
सूरत प्रश्न	२८६
महर्घ विचार	२८७
मेषार्कप्रवेशसे शुभाशुभ	,,
मनुष्योंके जन्मलग्नसे प्रत्येक वर्षमें शुभाशुभ फलज्ञान	२८८
परिशिष्ट प्रकरणम्	
वर्षमें शुभाशुभफल ज्ञानार्थ त्रिपताकी चक्र	२८९
मुद्दादशा बनाने का प्रकार	२९०
उदाहरण	,,
अनेक प्रकारों की उपपत्ति	,,
ग्रन्थसमाप्तिः	२९६

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ताः ।

ज्यौतिष ग्रन्थ (भाषा तथा संस्कृत)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मानसागरी

सोपपत्त्युदाहरणभाषाविवृतिसहिता

चतुर्थ सर्वश्रेष्ठ संस्करण

लेखक—श्री अनूपमिश्र ज्योतिषाचार्य

यद्यपि मानसागरी अन्यत्र भी प्रकाशित हुई है तथापि उसमें [संस्करण परम्परा से अनेक स्थलों में पाठ अत्यन्त भ्रष्ट हो गये हैं। परिश्रम से सुधार कर गणित विषयकोपपत्ति से विभूषित कर पं० श्री अनूपममिश्र जी ने सरल और प्रासादिक हिन्दी भाषा में टीका लिखी है। अन्यान्य विषय भी बढ़ा दिये गये हैं और संस्करणों से करीब दूनी पृष्ठ हो गई है। यह जन्मपत्र बनाने वालों के लिये इतनी उपयोगी पुस्तक है कि दूसरी पुस्तक की उसे आवश्यकता नहीं पड़ सकती। छपाई सफाई पर विशेष ध्यान दिया गया है और सर्वसाधारण की सुविधा के लिये मूल्य ७) सजिल्द रखी गई है। अधिकांश बिक चुकी हैं। शीघ्र मगाइये। बिक जानेपर अगले संस्करण तक रुकने पड़ेंगे।

फलित संग्रह

पं० रामयत्न शर्मणा संग्रहीत

मूल्य ।॥)

बालबोध ज्यौतिष

अर्थात्

मूल्य १॥)

फलित नवरत्न संग्रह

कुण्डली दर्पण

लेखक—श्री अनूप मिश्र

मूल्य १)

यह पुस्तक जन्म कुण्डली बनाने के लिये अत्यन्त उपयोगी है। इसके सहारे थोड़े पढ़े-लिखे लोग भी आसानी से कुण्डली की सभी बातों को जानकर सुविशद कुण्डली बना सकते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लघुजातक	२)
मीमांसुकण्ठाभरण	|≡)
जातकालङ्कार (भा० टी०) (ज्यौतिषशास्त्र में फलादेश करने का अपूर्व ग्रन्थ)	||=)
वास्तुराजवल्लभः (भा०टी०)	२)
द्विरागमन व्यवस्था	|)
बृहज्ज्योतिस्सार भा०टी०	३)
मुहूर्तचिन्तामणि भा०टी०	३)
लग्नवाराही भा० टी०	=)|||
लग्नजातक भा० टी०	=)|||
शीघ्रबोध भा० टी०	||=)
स्वप्नविचार	-)
महावीर प्रश्नावली	-)
सामुद्रिक सटीक	|)
चमत्कारचिन्तामणि भा०टी०	|)
तिथिनिर्णय	=)
व्यक्तगणित भाषा प्रथम-परीक्षोपयोगी	|≡)
अशौच्यनिर्णय	=)|||
वास्तुमुक्तावली	|||)
राशिमाला बड़ा	=)
मूहूर्तमिताक्षरा भा० टी०	२)
लघुसंग्रह भा० टी०	१||)
लघुसंग्रह मूल	=)
ग्रहगोचर	=)
कर्मविपाक भा० टी०	२||)
लघुपाराशरी भा० टी०	||)
षट्पंचाशिका भा० टी०	|=)
जातकाभरण भा० टी०	३|-)||
बृहदवकहढ़ाचक्र भा० टी०	१|-)||
खेट कौतुक (खानखाना ज्यौतिष)	≡)||
रत्नउद्योत भा० टी०	||=)
हनुमानज्योतिष	|)
शकुनविचार	=)
होड़ाचक्र भा० टी० छोटा	-)||
ताड़िका गणित	-)||
फलिताक्षेप विमर्श	=)
पल्लीपतनकारिका भा० टी०	-)|||
नान्हीदत्त पचीसी	-)||
भाग्यरहस्य ६ भाग पूरा जिल्द	१)

श्री सचित्र जन्म-पत्र

ये जन्म पत्र सर्वसाधारण के उपयोग के विचार से पाँच तरह के छापे गये हैं और उनमें शास्त्रोक्त विधि से उचित २ स्थानों में सैकड़ों चक्र ग्रहों के चित्र राशियों के चित्र तथा पचरंगे नव ग्रहों से सम्भव नौ अवतारों के चित्र किताबनामा, डबल क्राउन ८ पेजी आर्ट पेपर तथा आइवरी पर छप कर तैयार है। शीघ्र मँगाइये। अपनी कुण्डली तैयार कराइये।

(१)	जिसे पण्डित लोग	५)	में बनावेंगे मूल्य	२||)
(२)	,,	१०)	,,	३)
(३)	,,	१५)	,,	३||)
(४)	,,	२०)	,,	५)
(५)	,,	२५)	,,	६|)

प्रकाशक—**भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, बनारस १.**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ताजिकनीलकण्ठी

भाषाटीकासहिता ।

मङ्गलाचरणम्

प्रणम्य हेरम्बमथो दिवाकरं गुरोरनन्तस्य तथा पदाम्बुजम् ।
श्रीनीलकण्ठो विविनक्ति सूक्तिभिस्तत्ताजिकं सूरिमनः प्रसादकृत् ॥१॥

चन्द्रमौलिं चिरं नौमी कृपया द्योतिताक्षरम् ।
प्रसादो दीयते येन इन्द्रनीलैः समप्रभम् ॥ १ ॥
अतसीपुष्पतुल्यश्रीः प्रेक्षणा मधुराधरा ।
आसीना नवनारीयं चेतो वर्धयते नृणाम् ॥ २ ॥

अन्वयः—श्रीनीलकंठः तत्ताजिकं विविनक्ति (काभिः) सूक्तिभिः (किं कृत्वा) हेरम्बं प्रणम्य, अथ दिवाकरं प्रणम्य तथा अनन्तस्य गुरोः पदाम्बुजं प्रणम्य । कथम्भूतं तत्ताजिकं सूरिमनः प्रसादकृत् ॥ १ ॥

श्री नीलकण्ठ दैवज्ञ नीलकण्ठी नामक उस ताजिक ग्रन्थ को सुन्दर उक्तियों से प्रकट करते हैं, क्या करके गणेशजी और सूर्यनारायण तथा गुरुदेव अनन्त दैवज्ञ के चरणारविन्दों को प्रणाम करके । कैसा है वह ताजिक ग्रन्थ कि पण्डितों के मन को प्रसन्न करनेवाला है अर्थात् इस नीलकण्ठी ताजिक के देखने विचारने से पण्डितों का मन प्रसन्न होता है ॥ १ ॥

मेषराशि का स्वरूप—

पुमांश्चरोऽग्निः सुदृढश्चतुष्पाद्रक्तोष्णपित्तोऽतिरवोऽद्रिरुग्रः ।
पीतो दिनं प्राग्विषमोदयोऽल्पसङ्गप्रजो रूक्षनृपः समोऽजः ॥२॥

अन्वयः—पुमांश्चरोऽग्निः सुदृढः चतुष्पाद् रक्तोष्णपित्तोऽतिरवोऽद्रिरुग्रः पीतोदिनं प्राग् विषमोदयोऽल्पसंगप्रजोरूक्षनृपः समोऽजः ॥ २ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुरुष राशि, चरसंज्ञक, अग्निराशि, पुष्ट अङ्ग, चार चरण, [1]लाल रङ्ग, गरम स्वभाव, पित्तप्रकृति, अतिशब्द, पर्वतचारी, क्रूर, पीत वर्ण, दिवाबली, पूर्व दिशा का स्वामी, विषम उदय, थोड़ा स्त्री संग व थोड़ी प्रजा, रूखा (कान्तिहीन) शरीर, क्षत्रिय-वर्ण, अज (मेष) राशि का यह स्वरूप है ॥ २ ॥

वृषराशि का स्वरूप—

वृषः स्थिरः स्त्रीक्षितिशीतरूक्षो याम्येट्सुभूर्वायुनिशा चतुष्पात् ।
श्वेतोऽतिशब्दो विषमोदयश्च मध्यप्रजासङ्गशुभोऽपि वैश्यः ॥ ३ ॥

अन्वय—स्थिरः स्त्रीक्षितिशीतरूक्षोयाम्येट् सुभूर्वायुनिशा चतुष्पात् श्वेतोऽतिशब्दो विषमोदयश्च मध्यप्रजासंगशुभोऽपि वैश्यः (एवं गुण विशिष्टो) वृषः ॥ ३ ॥

स्थिर संज्ञा, स्त्री राशि, पृथ्वीतत्त्व, शीतलस्वभाव, कान्तिहीन, दक्षिण दिशा का स्वामी, उत्तम भूमिचारी, वात प्रकृति, रात्रि में बली, चार चरण, सफेद रङ्ग, महाशब्द-कारी, विषम उदय, मध्यम स्त्री संग व प्रजा (संतान), शुभ (सौम्य) राशि, वैश्य-वर्ण, ऐसा वृषराशि का स्वरूप है ॥ ३ ॥

मिथुनराशि का स्वरूप—

प्रत्यक्समीरः शुकभाद्विपान्ना द्वन्द्वं द्विमूर्तिर्विषमोदयोष्णः ।
मध्यप्रजासङ्गवनस्थशूद्रो दीर्घस्वनः स्निग्धदिनेट् तथोग्रः ॥ ४ ॥

अन्वयः—प्रत्यक् समीरःशुकभा द्विपात् ना द्विमूर्त्तिः विषमोदयोष्णः मध्य-प्रजा संग वनस्थ शूद्रो दीर्घस्वनः स्निग्ध दिनेट् तथोग्रः (एवं द्वन्द्वं) ॥४॥

पश्चिम दिशा का स्वामी, वायुतत्त्व, सुग्गे के ऐसा हरा रंग दो चरण (द्विपद) पुरुषराशि [2]मिथुनराशि के चरस्थिर दोनों स्वभाव ([3]द्विस्वभाव) विषम उदय, गरम स्वभाव, मध्यम स्त्री संग व सन्तान, वन में रहनेवाला शूद्रवर्ण, भारी शब्द, चिकने अङ्ग, दिन में बलवान् (दिवाबली) तथा क्रूर, ऐसा मिथुनराशि का स्वरूप है ॥४॥

कर्कराशि का स्वरूप—

बहुप्रजासङ्गपदः कुलीरश्चरोऽङ्गना पाटलहीनशब्दः ।
शुभः कफी स्निग्धजलाम्बुचारी समोदयी विप्रनिशोत्तरेशः ॥ ५ ॥

अन्वयः—बहुप्रजासंगपदः चरोऽङ्गना पाटलहीनशब्दः शुभः कफीस्निग्ध जलाम्बुचारी समोदयो विप्रनिशोत्तरेशः (एवं गुण विशिष्टः) कुलीरः ॥ ५ ॥

---

१ मेष सिंह और धनु इन तीन राशियों के दो दो वर्ण हैं ।

२. स्त्री पुरुष के जोडे को द्वन्द्व या मिथुन कहते हैं ।

३. मिथुन का पूर्व भाग, स्थिर राशि के समीप होने के कारण स्थिर संज्ञक और पर भाग चर के सामीप्य के कारण चर संज्ञक है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बहुत स्त्री सङ्ग, व सन्तान, बहुत से चरण, चर संज्ञा, स्त्री राशि, पाटल (श्वेतरक्त) वण, शब्द हीन, शुभ (सौम्य) राशि, कफप्रकृति, चिकने अङ्ग, जलराशि, जलचारी, समउदय ब्राह्मणवर्ण, रात्रि बली, उत्तरदिशा का स्वामी, ये कर्कराशि के लक्षण हैं ॥ ५ ॥

सिंहराशि का स्वरूप—

पुमान्स्थिरोऽग्निर्दिनपीतरूक्षः पित्तोष्णपूर्वेशदृढश्चतुष्पात् ।
समोदयो दीर्घरवोऽल्पसङ्गप्रजो हरिः शैलनृपोग्रधूम्रः ॥ ६ ॥

अन्वयः—पुमान् स्थिरोऽग्निर्दिनपीतरूक्षःपित्तोष्णपूर्वेशदृढश्चतुष्पात् समोदयो दीर्घरवोऽल्पसंगप्रजः शैलनृपोग्रधूमः (एवं गुण विशिष्टः) हरिः ॥६॥

पुरुष राशि, स्त्री संज्ञा, अग्नितत्त्व, दिवाबली, पीला रङ्ग, रूखा (तेजोहीन) पित्त प्रकृति, गरम स्वभाव, पूर्वदिशा का स्वामी, पुष्ट शरीर, चतुष्पाद (चार चरण) सम उदय, भारी शब्द, थोड़ा स्त्री सङ्ग व प्रजा, पर्वतचारी, क्षत्रियवर्ण, क्रूर स्वभाव, धुँवा के समान रङ्ग, ये लक्षण सिंहराशि के हैं ॥ ६ ॥

कन्याराशि का स्वरूप—

पाण्डुर्द्विपात्स्त्रीद्वितनुर्यमाशा निशामरुच्छीतसमोदयाक्ष्मा ।
कन्याऽर्धशब्दा शुभभूमिवैश्या रूक्षाऽल्पसङ्गप्रसवा शुभा च ॥७॥

अन्वयः—पाण्डुर्द्विपात् स्त्री द्वितनुर्यमाशा निशामरुच्छीतसमोदयाक्ष्मा अर्धशब्दा शुभभूमि वैश्या रूक्षाऽल्पसंगप्रसवा शुभा च (एवं गुण विशिष्टा) कन्या ॥ ७ ॥

पिण्डोर के समान रङ्ग, द्विपद (दो चरण), स्त्री संज्ञा, द्विस्वभाव (चरस्थिर-दोनों स्वभाव अर्थात् पूर्व भाग स्थिर पर भाग चर), दक्षिण दिशा का स्वामी, रात्रि में बली, वातप्रकृति, शीतलस्वभाव, समउदय, पृथ्वीतत्त्व, आधा शब्द, उत्तम भूमिचारी, वैश्यवर्ण, रूखा (तेजरहित) थोड़ा स्त्री सङ्ग व सन्तान, सौम्य राशि, ये लक्षण कन्याराशि के हैं ॥ ७ ॥

तुलाराशि का स्वरूप—

पुमांश्चरश्चित्रसमोदयोष्णः प्रत्यङ्मरुत्स्निग्धरवोनवन्यः ।
स्वल्पप्रजासङ्गमशूद्र उग्रस्तुलो द्युवीर्यो द्विपदः समानः ॥ ८ ॥

अन्वयः—पुमान् चरश्चित्रसमोदयोष्णः प्रत्यक् मरुत् स्निग्ध रवो न वन्यः स्वल्पप्रजासंगमशूद्र उग्रो द्युवीर्योद्विपदः समानः (एवं गुण विशिष्टः) तुलः ॥ ८ ॥

पुरुषराशि, चरसंज्ञा, विचित्र वर्ण (अनेक रंग) समउदय, गरम स्वभाव, पश्चिम दिशा का स्वामी, वायुतत्त्व, अथवा वातप्रकृति, चिकना शरीर, शब्दहीन,

वनचारी, थोड़ा स्त्री संग व सन्तान, शूद्रवर्ण, क्रूरस्वभाव, दिन में बली, द्विपद, (दो चरण), समान अङ्ग, ये लक्षण तुलाराशि के हैं ॥ ८ ॥

वृश्चिकराशि का स्वरूप—

स्थिरः सितः स्त्रीजलमुत्तरेशो निशा रवोनो बहुपात्कफी च ।
समोदयो वारिचरोऽतिसङ्गप्रजः शुभः स्निग्धतनुर्द्विजोऽलिः ॥९॥

अन्वयः—स्थिरः सितःस्त्रीजलमुत्तरशोनिशारवोनो बहुपात्कफी च समोदयो वारिचरोऽतिसंगप्रजः शुभः स्निग्धतनुर्द्विजोऽलिः ॥ ९ ॥

स्थिर संज्ञा, श्वेत वर्ण, स्त्री राशि, जलतत्त्व, उत्तर दिशा का स्वामी, रात्रि बली, शब्दहीन, बहुत चरण, कफप्रकृति, समउदय, जलचारी, बहुत स्त्री संग व सन्तान, शुभ राशि, चिकने अंग, ब्राह्मण वर्ण, ये लक्षण वृश्चिकराशि के हैं ॥ ९ ॥

धनुराशि का स्वरूप—

ना स्वर्णभाः शैलसमोदयोऽतिशब्दो दिनं प्राग्दृढरूक्षपीतः ।
राजोष्णपित्तो धनुरल्पसूतिसङ्गो द्विमूर्तिर्द्विपदोऽग्निरुग्रः ॥१०॥

अन्वयः—ना स्वर्णभा शैलसमोदयोऽतिशब्दो दिनं प्राग्दृढरूक्षपीतः राजोष्ण पित्तोऽल्पसूतिसंगोद्विपदोऽग्निरुग्रः (एवं गुण विशिष्टः) धनुः ॥१०॥

पुरुष राशि, सुवर्ण की कान्ति के समान रङ्ग, पर्वतचारी, समउदय, भारी शब्द, दिवाबली, पूर्व दिशा का स्वामी, पुष्ट अङ्ग, तेजोहीन, पीला रंग, क्षत्रिय वर्ण, गरम स्वभाव, पित्तप्रकृति, थोड़ा स्त्री संग व सन्तान, द्विःस्वभाव (पूर्वभाग स्थिर उत्तर भाग चर) द्विपद (दो चरण) अग्नितत्त्व, क्रूर स्वभाव, ये लक्षण धनुराशि के हैं ॥ १० ॥

मकरराशि का स्वरूप—

मृगश्चरत्क्ष्माऽर्धरवो यमाशा स्त्रीपिङ्गरूक्षः शुभभूमिशीतः ।
स्वल्पप्रजासङ्गसमीररात्रिरादौ चतुष्पाद्विषमोदयो विट् ॥ ११ ॥

अन्वयः—चरक्ष्माऽर्धरवोयमाशास्त्रीपिङ्गरूक्षः शुभभूमिशीतः स्वल्प प्रजा संग समीररात्रिरादौ चतुष्पाद्विषमोदयोविट् (एवं गुण विशिष्टः) मृगः ॥११॥

चर संज्ञा, पृथ्वीतत्त्व, अर्धशब्दकारी, दक्षिण दिशा का स्वामी, स्त्री राशि, पीतरङ्ग, तेजोहीन, उत्तम भूमिचारी, शीतल स्वभाव, थोड़ा स्त्री सङ्ग व प्रजा, वातप्रकृति, रात्रि में बली, पूर्वभाग चतुष्पाद (चार चरण वाला, उत्तरभाग जलचर) विषमउदय, वैश्यवर्ण, ये लक्षण मकरराशि के हैं ॥ ११ ॥

कुम्भराशि का स्वरूप—

कुम्भोऽपदोनादिनमध्यसङ्गप्रसूः स्थिरः कर्बुरवन्यवायुः ।
स्निग्धोष्णखण्डस्वरतुल्यधातुः शूद्रः प्रतीचीविषमोदयोग्रः ॥१२॥

अन्वयः—अपदो ना दिनमध्यसंगप्रसूः स्थिरः कर्बुरवन्यवायुः स्निग्धोष्ण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
खण्डस्वरतुल्यधातुः शूद्रः प्रतीचीविषमोदयोग्रः (एवं गुणविशिष्टः) कुम्भः ॥ १२ ॥

अपद (चरणहीन) पुरुष राशि, दिन में बली, मध्यम प्रजा व स्त्री सङ्ग, स्थिरसंज्ञक, विचित्रवर्ण, वनचारी, पवनतत्त्व, चिकना शरीर, उष्ण (गरम) स्वभाव, खण्डितस्वर, वातपित्त व कफ ये तीनों समान हैं जिसमें ऐसी प्रकृति, शूद्रवर्ण, विषम-उदय उग्र (क्रूर) स्वभाव, ये कुम्भराशि के लक्षण हैं ॥ १२ ॥

मीनराशि का स्वरूप--

मीनोऽपदः स्त्री कफवारिरात्रिर्निःशब्दबभ्रुर्द्वितनुर्जलस्थः ।
स्निग्धोऽतिसङ्गप्रसवोऽपि विप्रःशुभोत्तराशेड्विषमोदयश्च ॥ १३ ॥

अन्वयः—अपदः स्त्री कफवारिरात्रिर्निःशब्दबभ्रुर्द्वितनुर्जलस्थः स्निग्धोऽतिसङ्गप्रसवोऽपि विप्रः शुभोत्तराशेड्विषमोदयश्च (एवं गुणविशिष्टः) मीनः ॥ १३ ॥

पैरों से हीन, स्त्रीराशि, कफप्रकृति, जलतत्त्व, रात्रि में बली, शब्दरहित न्यौलाके समान रंग, द्विस्वभाव (पूर्वदल चर), जलचर, चिकना शरीर, बहुत प्रजा व स्त्री-संग, ब्राह्मणवर्ण, सौम्य स्वभाव, उत्तर दिशाका स्वामी, विषम उदय और शिथिल अंग ये मीनराशि के लक्षण हैं ॥ १३ ॥

राशियों के मित्र शत्रु का विभाग—

धराम्बुनोरग्निसमीरयोश्च वर्गे सुहृत्त्वं परतोऽरिभावः ।
चापान्त्यभागस्य चतुष्पदत्वं ज्ञेयं मृगान्त्यस्य जलेचरत्वम् ॥१४॥

अन्वयः—धराम्बुनोः अग्निसमीरयोश्च वर्गे सुहृत्वं परतोऽरिभावः, चापान्त्यभागस्य चतुष्पदत्वं, मृगान्त्यस्य जले चरत्वं ज्ञेयम् ॥ १४ ॥

पृथ्वी राशि और जल राशि के सम्बन्ध से मित्रत्व जानना अर्थात् पृथ्वी तत्त्ववाले और जलतत्त्ववाले राशियों का आपस में मिलाप है, ऐसे ही अग्निराशि वायुराशियों के वर्ग में भी मित्रत्व जानना, इससे विपरीत में शत्रु भाव जानना, जैसे कि पृथ्वी–अग्नि, वायु व जलवायु इन तत्त्वोंवाली राशियों का परस्पर शत्रुभाव जानना, तथा दोनों का एकही तत्त्व होतो अत्यन्त प्रीति कहना, यह पिता-पुत्र स्त्री पुरुष, स्वामि-सेवक, अथवा जिस किसी दोनों की मैत्री जानना हो तो इस प्रकार विचार करना। अब धन और मकर का कुछ विशेष स्वरूप नहीं कहा, इससे यहाँ सिंहावलोकन न्याय से वर्णन करते हैं–धनराशि के उत्तर भाग में चार पैर जानना और मकर के उत्तर भाग में जलचर का भाव जानना ॥ १४ ॥

उदाहरण—जैसे किसी ने पूछा कि बलराम और तोताराम में मित्रता रहेगी या नहीं तो बलराम की वृषराशि और पृथ्वी तत्व है तथा तोताराम की वृश्चिक राशि और जल तत्व है इसलिये दोनों में मित्रता रहेगी, इसी प्रकार और भी समझना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राशीनां मित्रामित्रचक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
अग्नि तत्व	भूमि तत्व	वायु तत्व	जल तत्व	भूमि तत्व	भूमि तत्व	वायु तत्व	जल तत्व	अग्नि तत्व	भूमि तत्व	वायु तत्व	जल तत्व	तत्वाः
मि तु कुं	मी वृ क	मे सिं ध	वृ क म	मि तु कुं	मी वृ क	मे सिं ध	वृ क म	मि तु कुं	मी वृ क	मे सिं ध	वृ क ध	मित्राणि

संक्षेप से राशियों का स्वरूप और प्रयोजन—

पित्तानिलौ धातुसमः कफश्च त्रिर्मेषतः सूरिभिरूहनीयाः ।
राजन्यविट्शूद्रधरासुराश्च सर्वं फलं राश्यनुसारतः स्यात् ॥१५॥

अन्वयः—सूरिभिः मेषतः पित्तानिलौ धातुसमः कफश्चत्रिः ऊहनीयाः । तथा मेषतः राजन्यविट्शूद्रधरासुराश्चत्रिः ऊहनीयाः सर्वफलं राश्यनुसारतः स्यात् ॥ १५ ॥

पण्डितों को मेष से मीन पर्य्यन्त पित्त, अनिल (वायु), धातुसम (वायु पित्त-कफात्मक) और कफ ये तीन आवृत्ति गिनकर राशियों के तत्वों को जानना चाहिये। अर्थात् मेष राशि की पित्त प्रकृति, वृष राशि की वायु प्रकृति, मिथुन राशि की वायु पित्तकफात्मक और कर्क राशि की कफ, प्रकृति इसी प्रकार सिंहराशि पित्त प्रकृति कन्या वायु प्रकृति, तुला धातुसम और वृश्चिकराशि कफ प्रकृति इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिये। इसी प्रकार मेष से क्षत्री वैश्य शूद्र और ब्राह्मण तीन आवृत्ति गिनने से राशियों के वर्ण का ज्ञान होता है जैसे मेष क्षत्री वर्ण, वृष वैश्य वर्ण, मिथुन शूद्र वर्ण, कर्क ब्राह्मण वर्ण, इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिये सभी राशियों का फल राशियों के गुणानुसार ही होता है ॥ १५ ॥

वर्षप्रवेशकाल बनाने की रीति—

गताः समाः पादयुताः प्रकृतिघ्नसमागणात् ।
खवेदाप्तघटीयुक्ता जन्मवारादिसंयुताः ॥
अब्दप्रवेशे वारादिसप्ततष्टेऽत्र निर्दिशेत् ॥ १६ ॥

अन्वयः—गताः समाः पादयुताः प्रकृतिघ्नसमागणात् खवेदाप्तघटी युक्ता जन्मवारादि संयुता अत्र सप्ततष्टेऽब्द प्रवेशेवारादिः स्यात् ॥ १६ ॥

गतवर्ष (जन्मसंवत् या शाका को वर्त्तमान संवत् या शाका में घटाने से शेष गत वर्ष होता है) का चतुर्थांश उसमें जोड़ देना और उसको अलग रखना फिर गत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्ष को २१ इक्कीस से गुणाकर ४० चालीस का भाग देना फल घटी और पल होगा उसको पूर्वस्थापित चतुर्थांशयुत गत वर्ष में जोड देना और इसमें जन्म का वार इष्ट घटी पल भी जोड देना तो वर्ष प्रवेश के समय का वार घटी पल इष्टकाल होगा। यदि वार सात से अधिक होतो वार में सात का भाग देना शेष वर्ष प्रवेश का बार होता है।

श्रीसम्वत् १९७१ शाके १८३६ चैत्र कृष्ण १४ रविवासरे ४३।५५ शतभिषनक्षत्रे ५०।२६ सिद्धियोगे ४।५२ विष्टि करणे १४।११ श्रीसूर्योदयादिष्टम् १३।४६ मिथुन लग्नोदये जन्म। भयातम् २४।३० भभोगः ६३।७।

जन्मकालिकस्पष्टग्रहाः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	१०	१०	१०	९	२	१०	४
०	१२	९	२	१७	१६	४	४	४
४	०	२६	४९	८	२५	२५	३३	३३
४६	४१	४८	३०	२१	३७	०	४६	४६

जन्माङ्गम्

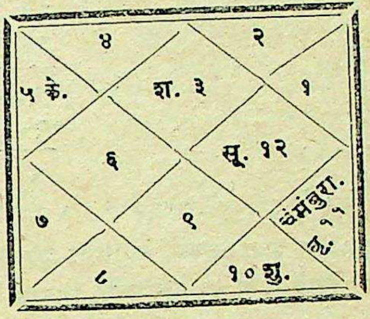

वर्षप्रवेश साधनोदाहरण

सूत्रानुसार वर्त्तमान सम्बत् १९९२ में
जन्म सम्बत् १९७१ को घटाया तो

शेष गतवर्ष २१ हुआ
गतवर्ष में चार का भाग दिया ४) २१ (५ वार
२०
१
६०
शेष को साठ से गुणा कर
गुणनफल में फिर चार का भाग दिया ४) ६० (१५ घटी
६०
×

चार का भाग देने से चतुर्थांश ५ वार और १५ घटी मिला।

	वार	घटी
इसको गतवर्ष में	२१	०
	५	१५
जोड़ने से यह	२६	१५ हुआ

गतवर्ष को २१
इक्कीस से २१
गुणा किया २१
४२
तो यह ४४१ हुआ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसमें चालीसका भाग दिया ४०) ४४१ (११ घटी
४०
४१
४०
१ शेष को
६० ६० से गुणाकर
४०) ६० (१ पल, ४० का भाग दिया
४०
२० शेष को
६० ६० से गुणाकर
४०) १२०० (३० विपल, फिर भाग दिया
१२००
×

२१ से गुणे हुये गतवर्ष में ४० का भाग देने से लब्धि ११ घटी १ पल और ३० विपल प्राप्त हुआ इसको चतुर्थांश युत गतवर्ष (२६।१५) में जोड़ने से २६।२६।१।३० हुआ, इसमें जन्म का वार और इष्टकाल (१।१३।४६) जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वार २६ घटी ३६ पल ५० विपल ३० इष्टकाल हुआ। यहाँ वार २६, सात से अधिक हैं इसलिये वार में सात का भाग दिया तो शेष ५ वाँ बार वर्षप्रवेश का हुआ, अर्थ रविवार से गणना करने से ५ वाँ बृहस्पति वार को ३६ दण्ड ५० पल और ३० विपल पर २२ बाईसवां वर्ष का आरम्भ हुआ।

नोट—वास्तव में वर्ष प्रवेश उसी वार और तिथि को होता है कि जिस दिन और जिस तिथि के स्पष्टराश्यादिसूर्य जन्मकालीन स्पष्ट राश्यादि सूर्य के बराबर हों। कभी २ वार और तिथि में एक २ दिन का अन्तर हो जाता है इस लिये जिस दिन के सूर्य का राशि और अंश जन्मकालीन सूर्य के राशि और अंश के बराबर हों उसी दिन वर्ष प्रवेश होता है।

जैसे उपरोक्त उदाहरण में गणित से बृहस्पतिवार आया है परन्तु उस दिन के सूर्य का राशिअंश जलकालीन सूर्य के राशि अंश के बराबर नहीं होने से अगले दिन याने चैत्र कृष्ण ५ शुक्रवार को ३६ दण्ड ५० पल और ३० विपल पर वर्ष प्रवेश हुआ है।

❀ वर्षप्रवेशसारिणी ❀

गतवर्षसम्बन्धिध्रुवाङ्कमें जन्मकालिक वारादि जोड़नेसे वर्षप्रवेश कालिकवारादिक होता है

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गतवर्ष	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गतवर्ष	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गतवर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गतवर्ष	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

वर्ष प्रवेश सयय का तिथिसाधन—

शिवघ्नोऽब्दः स्वखाद्रीन्दुलवाढ्यः खाग्निशेषितः ।
जन्मतिथ्यन्वितस्तत्र तिथावब्दप्रवेशनम् ॥ १७ ॥

अन्वयः—अब्दः शिवघ्नः स्वखाद्रीन्दुलवाढ्यः जन्मतिथ्यन्वितः खाग्नि शेषितः तत्र तिथौ अब्दप्रवेशनं स्यात् ॥ १७ ॥

गतवर्ष संख्या को ११ से गुणा कर दो जगह रक्खे, पहले में १७० का भाग देकर लब्धांक को दूसरे स्थान में जोड़ देवे, तदनन्तर शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से लेके जन्मतिथि तक जो संख्या हो उसको युक्त करके तीस ३० का भाग देवे जो शेष रहे उसी संख्याके तिथि में वर्ष प्रवेश होता है। परन्तु कभी कभी पूर्वतिथि में और कभी कभी आगे वाली तिथि में भी वर्ष प्रवेश होता है। तिथि से वार प्रधान है और जन्ममास से कभी पूर्वमास में कभी पीछे वाले मास में वर्ष प्रवेश होता है उसका प्रमाण यह है कि।

"तत्कालेऽर्को जन्मकालरविणा स्याद्यतः समः। स एव मासो विज्ञेयो वर्षावेशे बुधैर्ध्रुवम्"।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जन्मकालीन सूर्य के तुल्य सूर्य जिस महीने में जिस तिथि और वार को हों उस महीने में उसी तिथि, वार को वर्ष प्रवेश होता है। ऐसा पण्डितों ने निश्चय किया है। [1]नीचे ग्रन्थान्तर में कहे हुए रीति से नक्षत्र और योग निकालने की रीति भी टिप्पणी में लिखते हैं ॥ १७ ॥

तिथि के साधन का उदाहरण—

गत वर्षगण—२१ इसको ग्यारह से गुणा किया तो

गुणनफल २३१ हुआ इसको दो जगह रखकर—

एक जगह १७० से भाग दिया   १७०) २३१ (१ लब्धि

१७०

६१

को पूर्वस्थापित गुणनफल २३१ में जोड़ने से योगफल

२३१
१

२३२ हुआ इसमें शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से जन्मतिथि पर्यन्त तिथि संख्या २९ जोड़कर उसमें ३० का भाग देने से।

२३२
२९

३०)२६१(८ ल०
२४०

२१ शेष तुल्य वर्ष प्रवेश की तिथि हुई अर्थात् कृष्णपक्ष की षष्ठी तिथि को वर्ष प्रवेश हुआ।

वर्ष प्रवेश समय लिखने का क्रम—

संवत् १९९२ शाके १८५७ चैत्र कृष्ण ५ शुक्रवार घटी ३२ पल ३१ विशाखा नक्षत्र घटी ४८ पल १७ व्याघात योग घटी २ पल १४ कौलव करण घटी० पल २ इस दिन सूर्योदय से ३९ घटी ५० पल और ३० विपल पर बाईसवें वर्ष का प्रवेश हुआ। गत वर्षगण २१। यह भाषा में उदाहरण हुआ आगे पण्डितों के लिखने के लिए संस्कृत में लिखते हैं।

---

१. व्योमेन्दुभिः संगुणिता गताब्दा स्वशून्यवेदाश्विलवैर्विहीनाः।
जन्मर्क्षयोगैः सहिता पृथक्स्था नक्षत्रयोगौ भवतो भतष्टौ ॥ १ ॥

गत वर्षगण २१ को १० से गुणा किया तो २१० हुआ इसको दो जगह रक्खा २१०।२१० एक जगह २४० का भाग दिया लब्धी (अर्धाधिक्ये रूपं ग्राह्यं) इसके अनुसार १ प्राप्त हुई इसको दूसरे २१० में घटाया तो २०९ हुए इसमें जन्म नक्षत्र संख्या २४ जोड़ दिया तो २३३ हुए इसमें २७ का भाग दिया तो शेष १७ हुए अर्थात् अश्विनी से गणना करने से अनुराधा में वर्ष प्रवेश हुआ। इसी प्रकार योग का भी साधन करना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सजयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशिं नाशयति विघ्नानाम्॥ १॥

श्री संवत् १९९२ तथा श्रीमच्छालिवाहनीयशकेषु शकः १८३६ याम्यगोलावलम्बिनि भगवति भास्करे सौम्यायने शिशिरर्त्तौ मासानामुत्तमे मासे चैत्रमासे कृष्णे पक्षे पञ्चम्यां ५ तिथौ भृगुवासरे घट्यः ३२।३१ विशाखाभे घट्यः ४८।१७ व्याघातयोगे घट्यः २।१४ कौलव करणे घट्यः० । २ तत्र श्रीमन्मार्त्तण्डमण्डलार्द्धोदयादिष्टम् ३६।५०।३० तत्समये तुललग्नोदये श्रीमतां द्वाविंशत्यब्दप्रवेशः शुभः । गताब्दाः २१ । भयातम् ५६।३३ भभोगः ६५।० दिनमानम् २६।३२ । शुभम् ।

¹स्पष्टग्रह साधनोपयोगी चालन का प्रकार—

प्रस्तारस्तु यदाग्रे स्यादिष्टं संशोधयेदृणम्।
इष्टकालं यदाग्रे स्यात्प्रस्तारं शोधयेद्धनम्॥ १॥

अथवा—

स्वेष्टादग्रे भवेत्पंक्तिः पंक्तौ स्वेष्टं विशोधयेत्।
स्वेष्टात्पृष्ठे भवेत्पक्तिः स्वेष्टे पक्तिं विशोधयेत्॥
ऋणं धनं तथा ज्ञेयं चालने विधिरेव हि॥ २॥

पञ्चांग (तिथिपत्र) में जो आठ २ दिनके सूर्यादि ग्रहस्पष्ट किये होते हैं उसको प्रस्तार वा पंक्ति कहते हैं, वह प्रस्तार यदि इष्टकाल (जन्मदिन वा वर्षप्रवेश दिन) से आगे होवे तो प्रस्तार के वार घटी पल में इष्ट समय का वार घटी पल घटा देवै, जो शेष रहै वही वारादि ऋण चालन होता है, तथा यदि इष्ट काल आगे होवे और प्रस्तार पीछे होवे तो इष्टकाल के वार घटी पल घटा देवै तो शेष अंक वारादि धन चालन होता है, इस प्रकार ऋण, धन चालन का प्रकार जानना इसका प्रयोजन आगे है॥ २॥

ग्रहों का स्पष्टीकरण—

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नी खषड्हृता।
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद् ग्रहः॥ १८॥

अन्वयः—गतैष्यदिवसाद्येन (ऋणधनचालनेन) गतिर्निघ्नी खषट्हृता लब्धम् अंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो ग्रहः भवेत्॥ १८॥

गत और एष्य दिवसादिक अर्थात् (ऋणचालन और धनचालन) से पंचांगस्थ ग्रहों की गति को गोमूत्रिका क्रम से गुणा करे फिर साठ ६० का भाग देवे भाग देने से जो अंश कला विकलात्मक लब्ध होवे उसको पंचाङ्गस्थित ग्रहों में घटावे वा युक्त करे अर्थात् ऋणचालन होवे तो घटावे, और धनचालन होवे तो जोड़ देवै जोड़ने व घटाने से वह तात्कालिक स्पष्टग्रह होवेगा॥ १८॥

१ ग्रन्थान्तरोक्त यह प्रकार यहां पाठकों की सुलभता के वास्ते लिखते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नोट—ग्रह यदि वक्री हो तो अंशादि फल को पञ्चांगस्थ ग्रह में विलोम याने ऋणचालन हो तो जोड़ने से धनचालन हो तो घटाने से स्पष्ट ग्रह होता है। राहु और केतु में हमेशा विलोम ही करना चाहिये।

ग्रहों के साधन का उदाहरण

ति० ६ शनौ मिश्रमानम् ४५।३३

पंक्तिस्थग्रहाः।

	सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के	ग्रहाः
	११	११	१०	८	१०	१०	८	२	राशि
	१	२२	११	५	६	१४	१९	१९	अंश
	९	२४	२३	४	२९	५१	४५	४५	कला
	५१	३०	६	१९	१०	५८	३९	३९	विक
गतिः	५९	४४	१००	६	७५	७	३	३	कला
	४९	३९	१८	३८	९	४१	११	११	विक

यहां वर्षेष्ट वारादि ६।३६।५० से पंक्तिस्थ वारादि इष्टकाल (मिश्रमान) आगे है इसलिये पंक्तिस्थ वारादि ०।४५।३४ इष्टकाल में वर्षेष्ट वारादि इष्टकाल को घटाने से

०।४५।३४
६।३६।५०

शेष १।५।४४ ऋणचालन हुआ इससे आगे लिखे हुये गोमूत्रिका गुणन की रीति से पंक्तिस्थ ग्रहगति को गुणा कर फल में पंक्तिस्थ ग्रह राश्यादि चालन के अनुसार ऋण या धन करने से तात्कालिक स्पष्ट ग्रह होता है।

गोमूत्रिका गुणन की रीति।

साधारण गुणा में अङ्कों को गुणक से गुणा कर गुणनफल को बायें तरफ एक स्थान बढ़ाकर रखते हैं परन्तु गोमूत्रिका में बायें से दहिने हटाकर रखते हैं जैसा नीच के उदाहरण से मालूम होगा। इसमें विशेषता यह है कि गुणनफलों में ६० का भाग देते हैं अन्त में तीन स्थान का फल अंश कला विकलात्मक होता है। इसीको पंक्तिस्थ ग्रह में धन या ऋण, चालन के अनुसार करने से स्पष्ट ग्रह होता है। यों तों गोमूत्रिका के कई प्रकार हैं उनमें सुलभ एक प्रकार है जिसको नीचे लिखते हैं।

ऋणचालन १।१।४४ इसके प्रत्येक अङ्क से कला विकलात्मक ग्रहगति को गुणा किया।

१ ग्रहगति २

चालन	कला ५९	चालन	विकला ४९
१	५९	१	४९
५	२९५	५	२४५
४४	२५९६	४४	२१५६

दूसरे कोष्ठ में अन्तिम गुणनफल २१५६ में ६० का भाग दिया लब्धि ३५ को ऊपर वाले अङ्क २४५ में जोड़ दिया तो २८० हुये इसको प्रथम १ कोष्ठक के अन्तिम गुणनफल २५९६ में जोड़ने से २८७६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुये। तथा दूसरे २ कोष्ठक के ऊपर वाले गुणनफल ४६ को प्रथम कोष्ठक के दूसरे गुणनफल २६५ में जोड़ने से ३४४ हुये। अब प्रथम १ कोष्ठक के अन्तिम अङ्क २८७६ में साठ का भाग दिया तो लब्धि ४७ मिली इसको इसके ऊपर वाले अङ्क ३४४ में जोड़ दिया तो ३६१ हुये इसमें साठ का भाग दिया तो लब्धि ६ और शेष ३१ विकला हुये, लब्धि को ऊपर वाले अङ्क ५६ में जोड़ने से ६५ हुये इसमें साठ का भाग दिया तो लब्धि १ अंश और शेष ५ कला हुई। यों गोमूत्रिका से १ अंश ५ कला और ३१ विकला फल प्राप्त हुआ, यहाँ चालन ऋण है इसलिये पंक्तिस्थ

रा अं क वि

सूर्य ११।१।६।५१ में प्राप्त फल ०।१।५।३१ को घटाया तो स्पष्ट सूर्य ११।०।४।२७ हुये। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के गतियों को चालन से गुणा कर ६० का भाग देकर फल को पंक्तिस्थ ग्रहों में ऋण धन करने से स्पष्ट ग्रह होते हैं इसी प्रकार जन्म कुण्डली में भी ग्रहों को स्पष्ट करना चाहिये।

भयात भभोग बनाने का प्रकार—

गतर्क्षनाड्यः खरसेषु शुद्धाः सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ताः।
भयातसंज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाड्या सहितो भभोगः ॥१॥
चेत्स्वेष्टकालात्प्रागेव ऋक्षं यदि समाप्यते।
तदेष्टकालतो ऋक्षनाड्यः शोध्या गतर्क्षकम् ॥
भभोगा पूर्ववत्कार्याः ततः साध्यस्तु चन्द्रमाः ॥ २ ॥

गत नक्षत्र की (जिस नक्षत्र में जन्म हुआ हो या वर्ष लगा हो उसके पूर्व जो नक्षत्र हो उसे गत नक्षत्र कहते हैं) घड़ियों को ६० साठ में घटा देवे जो घड़ी पल शेष रहे उनको सूर्योदय से इष्ट घड़ियों में जोड़ देवे जोड़ने से उसकी भयात संज्ञा होती है, और अपने नक्षत्र की घड़ियों को साठ से घटाई हुई नाड़ियों में जोड़ देने से भभोग होता है ॥ १ ॥

जो इष्टकाल से पहले ही नक्षत्र समाप्त हो जावे तो इष्टकाल में नक्षत्र घटी पल घटा देने से भयात होता है और गत नक्षत्र की नाड़ियों को साठ ६० में शोध (घटा) कर उसी पर दिनवाले नक्षत्र की नाड़ियों में जोड़ देने से भभोग हो जाता है, इस प्रकार भयात व भभोग बनाकर तत्काल चन्द्रमा का साधन करना चाहिये ॥ २ ॥

भयात भभोग बनाने का उदाहरण

वर्ष प्रवेशतिथि के पहले दिन याने चतुर्थी को स्वाती नक्षत्र गत नक्षत्र है उसका मान घटी ४३ पल १७ हैं इसको

साठ ६० में
घटाया तो ४३।१७
१६।४३ शेष हुआ इसमें
३६।५० इष्टकाल
५६।३३ जोड़ने से यह भयात हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिर शेष में १६।४३

४८।१७ वर्त्तमान विशाखा का मान घटी ४८ पल १७ जोड़नेसे

यह भभोग=६५। ०—हुआ

चन्द्रमा के स्पष्ट करने का विचार

खषड् ६० घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत्-
खतर्कघ्नधिष्णेषु युक्तं द्विनिघ्नम् ।
नवाप्तं शशी भागपूर्वस्तु भुक्तिः
खखाभ्राष्टवेदा ४८००० भभोगेन भक्ताः ॥१६॥

अन्वयः—खषड्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत् खतर्कघ्नधिष्णेषु युक्तं द्विनिघं नवाप्तं भागपूर्वः शशी स्यात् । खखाभ्राष्टवेदाः भभोगेन भक्ताः भुक्तिः स्यात ॥१६॥

भयात को पलात्मक बनाकर (भयात घटी को साठ से गुणा कर उसमें पल जोड़ देने से पलात्मक होता है) उसको साठ से गुणा कर गुणनफल में भभोग का पला बनाकर उससे भाग देवे लब्धि में गतनक्षत्र (जिस नक्षत्र में वर्ष लगा है उससे पहले जो नक्षत्र है) को ६० से गुणा कर जोड़ देवे फिर योगफल को २ से गुणा करै गुणनफल में नौ ९ का भाग दे तो लब्धि अंश कला विकलात्मक चन्द्रमा होता है (अंश में तीस ३० का भाग देने से लब्धि राशि और शेष अंश होता है ।) ४८००० को ६० से गुणाकर पलात्मक भभोग से भाग देने से कला विकला चन्द्रमा की गति होती है ॥ १६ ॥

चन्द्रमा स्पष्ट करने का उदाहरण—

घ० प०

भयात ५६ ३३ को पलात्मक बनाया तो

६०

३३६०

३३

३३९३ यह हुआ इसको ६० से गुणा किया

६०

तो गुणनफल — २०३५८० यह हुआ इसमें

भभोग घटी ६५ ३९००) २०३५८० (५२ लब्धि ५२।१२।० मिला इसमें गत

पल० को पलात्मक १९५०० नक्षत्र स्वाती की संख्या १५ को

करके भाग दिया तो ८५८० ६० से गुणाकर जोड़ दिया तो

७८०० ९५२।१२।० हुए इसको दो २ से

७८० गुणाकर ९ नौ से भाग दिया तो

६० लब्धि २११ अंश ३६ कला और

GC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३९००) ४६८०० (१२
३६००
७८००
७८००
०

० विकला हुआ अंश में ३० का भाग देने से ७ राशि और शेष १ अंश और ३६ कला ० विकला स्पष्टचन्द्र ७।१।३६।० हुआ।

जैसे—

$$\frac{(६५२।१२।०) \times २}{६} = \frac{२११^\circ}{३०} ।३६'।०''$$

स्प० चं०—७।१।३६।०

गति साधन का उदाहरण—

अड़तालिस हजार को ४८०००
६० से गुणा किया— ६०
भभोग से भाग दिया ३६००) २८८०००० (७३८
२७३००
१५०००
११७००
३३०००
३१२००
१८००
६०
३६००) १०८००० (२७
७८००
३००००
२७३००
२०००

गुणनफल में पूर्वोक्त पलात्मक-भभोग से भाग दिया तो लब्धि ७३८ कला २७ विकला चन्द्रमा की गति हुई।

अथ स्पष्टग्रहाः

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के	ग्रह
११	७	११	१०	६	१०	१०	८	२	राशि
०	१	२१	९	४	५	१४	१९	१९	अंश
४	३६	३५	३३	५७	६	४३	४९	४९	कला
२८	०	३६	१२	३	५१	३३	८	८	विकला
५९	७३८	४४	१००	६	७५	७	३	३	गतिकला
४९	२७	३९	१८	३८	९	४१	११	११	विकला

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशमलग्न साधनोपयोगी नत का साधन—

पूर्वं नतं स्याद्दिनरात्रिखण्डं दिवानिशोरिष्टघटीविहीनम् ।
दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं द्युरात्रिखण्डं त्वपरं नतं स्यात् ॥ २० ॥

अन्वयः—दिनरात्रिखण्डं दिवानिशोरिष्टघटीविहीनम् पूर्वं नतं स्यात् । दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं द्युरात्रिखण्डं अपरं नतं स्यात् ॥ २० ॥

दिनार्ध (दिन मान का आधा) में अथवा रात्र्यर्ध (दिन मान को ६० में घटाने से शेष रात्रिमान होता है उसका आधा) में दिन का अथवा रात्रि का (सम्पूर्ण इष्टकाल में दिनमान को घटाने से रात्रि का इष्ट काल होता है) इष्टकाल घट जाय तो दिन का अथवा रात का (यदि दिन का इष्टकाल घट जाय तो दिन का और रात का इष्ट घट जाय तो रात का) पूर्वनत होता है । यदि दिन या रात के इष्ट काल में दिनार्ध या रात्र्यर्ध घट जाय तो दिन का या रात का पश्चिम नत होता है ॥२०॥

लग्नादि १२ भावों का साधन—

तत्काले सायनार्कस्य भुक्तभोग्यांशसङ्गुणात् ।
स्वोदयात्खाग्नि ३० लब्धं यद्भुक्तं भोग्यं रवेस्त्यजेत् ॥२१॥
इष्टनाडीपलेभ्यश्च गतगम्यान्निजोदयात् ।
शेषं खत्र्या ३० हतं भक्तमशुद्धेन लवादिकम् ॥ २२ ॥
अशुद्धशुद्धभे हीनं युक्तनुर्व्ययनांशकम् ।
एवं लङ्कोदयैर्भुक्तं भोग्यं शोध्यं पलीकृतात् ॥ २३ ॥
पूर्वपश्चान्नतादन्यत्प्राग्वत्तद्दशमं भवेत् ।
सषड्भे लग्नखे जायातुर्यौ लग्नोनतुर्य्यतः ॥ २४ ॥
षष्ठांशयुक्ततनुः सन्धिरग्रे षष्ठांशयोजनात् ।
त्रयः ससन्धयो भावाः षष्ठांशोनैकयुक् सुखात् ॥ २५ ॥
अग्रे त्रयः षडेवं ते भार्धयुक्ताः परेऽपि षट् ।
खेटे भावसमं पूर्णं फलं सन्धिसमे तु खम् ॥ २६ ॥

अन्वयः—तत्काले सायनार्कस्य भुक्तभोग्यांशसंगुणात्, स्वोदयात् खाग्नि-लब्धं यत्रवेः भुक्तं भोग्यं तदिष्टनाडीपलेभ्यस्त्यजेत्, निजोदयात् गतगम्यान् राशीन् त्यजेत् शेषं खत्र्याहतं अशुद्धेन भक्तं लवादिकं फलं स्यात् । अशुद्धशुद्धभे हीनं युक् व्ययनांशकं तनुः स्यात् ।

एवं लङ्कोदयैः रवेः भुक्तं भोग्यं साध्यं तत् पूर्वपश्चान्नतात् पलीकृतात् शोध्यम् अन्यत्प्राग्वत् तद् दशमं भवेत् । सषड्भे लग्नखे जायातुर्यौ भावौ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्तः, लग्नोनतुर्यतः षष्ठांशयुक्तनुः सन्धिः अग्रे षष्ठांश योजनात् त्रयः ससन्धयो भावाः स्युः षष्ठांशोनैकयुक् सुखात् अग्रे त्रयः एवं षड् भावाः स्युः ते भार्धयुक्ताः परेऽपि षड् भावाः स्युः खेटे भावसमं पूर्णं फलं सन्धिसमे तु खं फलं भवति ॥ २१–२६ ॥

तात्कालिक याने इष्टकाल के समय जो स्पष्ट सूर्य हैं उसमें अयनांश जोड़ देने से सायन सूर्य होते हैं, सायन सूर्य के भुक्त या भोग्य अंशों (सायन सूर्य का जो अंश कला विकला है उसे भुक्तांश और भुक्तांश को ३० अंश में घटा देने से शेष अंश कला विकला भोग्यांश होता है) को सायन सूर्य जिस राशि में है उस राशि का जो पलात्मक मान निज देश में हो उससे गुणा करे फिर उसमें तीस का भाग देवे लब्धी सूर्य का भुक्त या भोग्यकाल पलात्मक होगा (सूर्य के भुक्तांश को निजोदय से गुणा कर तीस का भाग देवे तो भुक्तकाल और भोग्यांश से गुणा कर तीस का भाग दे तो लब्धी

---

१ प्रत्येक देश में मेषादि राशियों के पलात्मक मान भिन्न भिन्न होते हैं उसके बनाने का प्रकार—

दिगष्टदशभिर्हन्यात्स्वदेश पलभा त्रिधा ।
अन्त्यां भजेत्त्रिभिस्तासां सन्ति ते चरखण्डकाः ॥ १ ॥
लङ्कोदया विघटिकागजभानि गोंऽक दस्राग्निपक्षदहनाः
क्रमगोत्क्रमस्थाः । हीनान्विताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थैः
मेषादितो घटतः उत्क्रमतस्त्विमे स्युः ॥ २ ॥

अर्थ—अपने देश के पलभा को तीन स्थान में रखकर क्रम से १०।८।१० से गुणा कर दे और अन्तिम गुणनफल में तीन का भाग देने से चरखण्ड होता है । इस चरखण्ड को क्रम से मेषादि लङ्कोदय राशियों के (२७८।२९९।३२३।३२३।२९९।२७८) पलात्मक मान में घटाने और जोडने से अपने देश में मेषादि राशियों के पलात्मक मान होते हैं । जैसे--

काशी का पलभा ५।४५ है इसको तीन जगह रखकर उक्त क्रिया किया ।

$$\frac{(५।४५)\times १०}{६०} = ५७ \qquad \frac{(५।४५)\times ८}{६०} = ४६ \qquad \frac{\frac{(५।४५)\times १०}{६०}}{३} = १९$$

तो ५७।४६।१९ यह चरखण्ड मिला इसको उक्त लङ्कोदय मान में क्रम और उत्क्रम से हीन और युक्त किया तो राशियों का मान हुआ ।

२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८
५७	४६	१९	१९	४६	५७
मे = २२१	वृ = २५३	मि = ३०४	क = ३४२	सि = ३४५	क = ३३५

इसी प्रकार प्रत्येक देश में उदयमान बनाना चाहिये ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भोग्यकाल होता है ।) इस भुक्त या भोग्यकाल को इष्टकाल का पला बनाकर उसमें घटा देवें । २१ । घटाने से जो शेष बचे उसमें जिस राशि के उदय मान से गुणा किया है उससे गत याने पीछे के उदय मान या गम्य याने उससे आगे के उदयमान को घटावे अर्थात् यदि भुक्तांश से उदयमान को गुणा किया हो तो गत राशियों के मान और यदि भोग्यांश से गुणा किया हो तो गम्य राशियों के मान को घटावे जिस राशि का मान न घटे वह अशुद्ध राशि होती है जिसका मान घटा हो उसे शुद्ध राशि कहते हैं । घटाने से जो शेष बचे उसे तीस से गुणा कर गुणनफल में अशुद्ध राशि के मान से भाग देने से लब्धी जो अंश कला विकला मिलें ।२२। उसको मेष से गणना करने से जो एक दो तीन इत्यादि अशुद्ध राशि की संख्या हो उसमें घटा देवे और शुद्ध राशि के संख्या में जोड़ देवे (यदि भुक्तांश से क्रिया की हो तो अशुद्ध राशि में घटा देवे और यदि भोग्यांश से क्रिया की हो तो शुद्ध राशि में जोड़ दे) तदनन्तर अयनांश को उसमें घटा देवे, तो शेष राशि अंश कला विकला स्पष्ट लग्न होती है । इसी प्रकार सायन सूर्य के भुक्त अंश और भोग्यांशों से (यदि पूर्वनत हो तो भुक्तांश से और परनत हो तो भोग्यांश से) लंकोदय से गुणा कर ३० तीस का भाग देने से सूर्य का भुक्त या भोग्यकाल होता है । २३ । फिर सूर्य के भुक्त या भोग्यकाल को पूर्व अथवा परनत को इष्टकाल मानकर उसमें घटावे और शेष क्रिया पूर्व के अनुसार करने से दशम भाव याने जन्मलग्न से दशम लग्न हो जाती है ।

नोट—जन्मलग्न या दशम लग्न बनाने में यह ध्यान रखना चाहिये कि यदि रात्रि का जन्म हो तो सायन सूर्य में ६ राशि को जोड़कर लग्न बनाना चाहिये ।

अब अन्य भावों का साधन कहते हैं—लग्न में छ राशि जोड़ देने से सप्तम ७ भाव होता है, और दशम भाव में छ राशि जोड़ देने से चतुर्थ ४ भाव होता है, इस प्रकार ये चार भाव हुए, अब आगे के भावों के साधन का प्रकार कहते हैं कि चोथे भाव में लग्न घटा देवे ॥२४॥ उसका षष्ठांश (अर्थात् शेष में ६ का भाग देने से जो राश्यादि लब्धी हो उसको) लग्न में जोड़ देवे तो लग्न की सन्धि होती है, फिर उसमें षष्ठांश जोड़ दिया तो द्वितीय भाव होता है, उसमें षष्ठांश युक्त किया तो दूसरे भाव की सन्धि होती है, द्वितीय भाव में षष्ठांश जोड़ने से तृतीय भाव और इसमें षष्ठांश जोड़ने से तृतीय भाव की सन्धि होती है । इसी प्रकार षष्ठांश जोड़ने से संधि के सहित तीन भाव होते हैं, फिर षष्ठांश को एक राशि में घटाकर उसको चौथे भाव से जोड़ना प्रारम्भ करे ॥ २५ ॥ तो चौथे भाव से छठे भाव की सन्धि तक सन्धि सहित तीन भाव स्पष्ट हो जाते हैं । इस प्रकार लग्न से छठे भाव तक सिद्ध करके शेष छ भावों को सिद्ध करने के लिये क्रम से उन्हीं भावों में छ २ राशि संयुक्त कर देवे तो बाकी भाव सिद्ध हो जाते हैं, जैसे—तनुभाव में ६ राशि मिलाने से सप्तम भाव द्वितीय भाव में ६ युक्त करने से आठवाँ भाव तीसरे भाव में ६ राशि जोड़ने से नवाँ भाव चौथे भाव में ६ राशि जोड़ने से दशम भाव, पंचम में ६ जोड़ने से लाभ भाव, छठे भाव में ६ जोड़ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से बारहवें भाव की सिद्धि होती है, संधियों में छ २ राशि जोड़ने से उन उन भावों की संधियाँ होती हैं, इस प्रकार ये छ भाव भी सिद्ध होते हैं, यदि खेट (ग्रह) भाव के समान हो तो पूर्ण फल करता है और यदि ग्रह संधि के समान हो तो शून्य फल करता है ॥ २६ ॥

भुक्तं भोग्यं स्वेष्टकालान्न शुद्धेत्त्रिंशन्निघ्नात्स्वोदयाप्तं लवाद्यम् ।
हीनं युक्तं भास्करे तत्तनुः स्याद्रात्रौ लग्नं भार्धयुक्ताद्रवेस्तु ॥२७॥

अन्वयः—भुक्तं भोग्यं स्वेष्टकालात् न शुद्ध्येत्तदात्रिंशन्निघ्नात् स्वोदयाप्तं लवाद्यं (फलं) तत् भास्करे हीनं युक्तं (कार्यं) तनुः स्यात् रात्रौ भार्धयुक्ताद्रवेः लग्नं साध्यम् ॥ २७ ॥

अब यहाँ शङ्का होती है कि पूर्व रीति से लाया हुआ सूर्य का भुक्तकाल या भोग्यकाल यदि इष्टकाल के घटी पलों में से अर्थात् पलात्मक इष्टकाल में से नहीं घटे तो लग्न का साधन कैसे करे समाधान के लिये यह श्लोक है—यदि रवि का भुक्तकाल या भोग्यकाल पलात्मक इष्टकाल में न घटे तो पलात्मक इष्टकाल को तीस से गुणाकर सायन सूर्य जिस राशि पर है उसके उदयमान से भाग दे तो लब्धी अंश कला विकला होगी उसको सूर्य में घटा दे या जोड़ दे तो शेष राश्यादि स्पष्ट लग्न होती है। यदि सूर्य के भुक्तकाल का साधन किया हो तो सूर्य में लब्ध अंशादि को घटाने से और यदि भोग्यकाल का साधन किया हो तो सूर्य में लब्ध अंशादि को जोड़ने से स्पष्ट लग्न राश्यादि होती है। रात्रि में लग्न साधन करना हो तो अर्थात् रात्रि में जन्म या वर्ष प्रवेश हो तो सायन सूर्य में छ राशि जोड़कर लग्न साधन करना चाहिये ॥२७॥

अयनांश साधन की रीति—

(ग्रन्थान्तरे)

वेदाब्ध्यब्ध्यूनः खरसहृतः शकोऽयनांशाः ।

तथा च—

भूनेत्रवेदोनशकस्त्रिनिघ्नो व्योमाभ्रनेत्रैर्विहृतोऽयनांशाः ।
त्रिघ्नोऽर्कराशिः स्वदलेन युक्तस्तावन्मिताभिर्विकलाभिराढ्यः ॥१॥

शालिवाहन शाके में ४४४ घटा देवे शेष में साठका भाग देवे भाग देने से लब्धांक को अंश और शेष कला स्थूल अयनांश होता है।

जैसे इष्टशाके १७५७ में ४४४ घटाया तो शेष १३१३ रहे इसमें साठ का भाग देने से लब्धी २१ अंश और शेष ५३ कला अयनांश हुये परन्तु यह स्थूल होता है।

दूसरा सूक्ष्म प्रकार—

इष्ट शाका में ४२१ घटाकर शेष को तीन से गुणा करे गुणनफल में २०० दो सौ से भाग देवे लब्धी अंश कला विकला तीन स्थान लाकर उसमें जिस मास का अयनांश बनाना हो उस मास के सूर्य जिस राशि पर हों उस राशि के संख्या को तीन से गुणाकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुणनफल का आधा उसी में जोड़ने से जो अंक हो उसे विकला मानकर पूर्व के अंश कला विकलात्मक लब्धी के विकला में जोड़ने से तात्कालिक अयनांश होता है।

जैसे इष्ट शाके १८५७ में ४२१ को घटाया तो शेष १४३६ बचे इसको तीन से गुणा किया तो ४३०८ हुये इसमें २०० से भाग दिया तो लब्धी २१ अंश शेष १०८ बचे इसको ६० से गुणाकर गुणनफल में फिर २०० का भाग दिया तो लब्धी ३२ कला शेष ८० हुये इसको ६० से गुणकर गुणनफल में फिर २०० का भाग दिया तो लब्धी २४ विकला हुये। यहाँ चैत्रमास में अयनांश साधन करते हैं इसलिये सूर्य की राशि १२ को ३ से गुणा किया तो फल ३६ हुये इसमें इसका आधा १८ जोड़ दिया तो ५४ हुये इसको पूर्व के लाये हुये विकला २४ में जोड़ दिया तो ७८ विकला हुये इसमें साठ का भाग दिया तो लब्धि १ कला और शेष १८ विकला हुआ एक कला को पूर्व साधित ३२ कला में जोड़ देने से २१ अंश ३३ कला और १८ विकला यह तात्कालिक अयनांश हुआ।

लग्न साधन का उदाहरण—

स्पष्ट सूर्य राश्यादि ११।०।४।२८ इसमें अयनांश २१।३३।१८ को जोड़ दिया तो सायन सूर्य ११।२१।३७।४६ हुआ यहाँ रात्रि का इष्टकाल है इसलिये सायन सूर्य में ६ राशि जोड़ देने से ५।२१।३७।४५ हुआ, २१।३७।४६ यह सायन सूर्य का भुक्तांश है इसको ३० अंश में घटाया तो शेष ८।२२।१४ यह भोग्यांश हुआ।

सायन सूर्य कन्या राशि पर है इसलिये कन्या के उदयमान ३३५ से भोग्यांश को गुणा किया तो २८०४।८।१० हुये इसमें ३० का भाग दिया तो लब्धि ९३।२८।१६ सूर्य का भोग्यकाल हुआ इसको इष्टकाल का पला बनाकर घटाना चाहिये (परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि यदि सायन सूर्य में ६ राशि जोड़ा हो तो इष्टकाल में से दिनमान घटाकर शेष घटी पल का पल बनाकर उसमें भोग्यकाल या भुक्तकाल को घटावे अन्यथा इष्टकाल का पला बनाकर ही घटावे), यहाँ सायन सूर्य में ६ राशि जोड़े हैं इसलिये इष्टकाल ३६।५०।३० में दिनमान २६।३२ को घटाया तो शेष १०।१८।३० हुये इसका पला बनाया तो ६१८।३० हुआ इसमें सूर्य के पलादि भोग्यकाल को घटाया तो शेष ५२५।१।४४ हुये इसमें कन्या के आगे तुला का मान घटाया तो शेष १९०।१।४४ हुये आगे वृश्चिक का मान ३४५ नहीं घट सकता इसलिये वृश्चिक की अशुद्ध संज्ञा हुई। पूर्वोक्त शेष १९०।१।४४ को ३० से गुणा किया तो गुणनफल ५७००।५२।० हुये इसमें अशुद्धोदय मान ३४५ से भाग दिया तो लब्धी १६ अंश ३१ कला २७ विकला हुई इसमें शुद्ध राशि की संख्या ७ जोड़ दिया तो ७ राशि १६ अंश ३२ कला २७ विकला हुआ इसमें अयनांश २१।३३।१८ को घटाया तो शेष ६।२४।५८।९ राश्यादि स्पष्ट लग्न हुई।

राश्यां उदयमानानि		
मीन	२२१	मेष
कुम्भ	२५३	वृष
मकर	३०४	मिथुन
धन	३४२	कर्क
वृश्चिक	३४५	सिंह
तुला	३३५	कन्या

दशमलग्न साधन का उदाहरण—

रात्रि का पूर्व नत ४।५६ इसी को इष्टकाल कल्पना किया और ६ राशि युत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सायन सूर्य का भुक्तांश २१।३७।४६ है। छ राशि युत सायन सूर्य कन्या का है और इष्टकाल पूर्वनत है इसलिये सायन सूर्य के भुक्तांश को कन्या राशि के लङ्कोदयमान से गुणा किया तो गुणनफल ५८३८।१०२८६।१२७८८ इसमें अन्तिम अङ्क १२७८८ में ६० का भाग देकर लब्धि को दूसरे अङ्क १०२।८६ में जोड़ दिया जोड़ने से जो अङ्क आया उसमें फिर ६० का भाग दिया और लब्धि को पहले अङ्क में जोड़ दिया तो क्रम से ६०१२।५९।८ हुये इनमें ३० का भाग दिया तो लब्धि २००। २५।५८ रवि का भुक्तकाल हुआ इसको पूर्वनत ४।५६ का पला बनाकर २९६ में घटाया तो शेष ९५।३४।२ हुआ यहाँ भुक्तांश से गुणा किया है इसलिये कन्या राशि से गत राशि सिंह का मान घटाया तो नहीं घटता इसलिये कन्या राशि अशुद्ध हुई, शेष ९५।३४।२ को ३० से गुणा किया तो गुणनफल २८५०।१।० हुआ इसमें अशुद्धोदय मान २९९ से भाग दिया तो लब्धि अंशादि ९।३५।१९ हुये इसको अशुद्ध संख्या ५ राशि में घटाया तो शेष ४।२०।२४।४१ रहे इसमें अयनांश को घटाया तो शेष ३।२८।५१।२३ यह दशम भाव स्पष्ट हुआ।

लंकोदयचक्रम्।		
मीन	२७८	मेष
कुम्भ	२९९	वृष
मकर	३२३	मिथुन
धन	३२३	कर्क
वृश्चिक	२९९	सिंह
तुला	२७८	कन्या

भाव साधन के उदाहरण—

लग्न ६।२४।५८।९ इसमें ६ राशि जोड़ने से १२।२४।५८।९ यह सप्तम (जाया) भाव हुआ, दशम लग्न ३।२८।५१।२३ इसमें ६ राशि जोड़ने से ९।२८।५१।२३ यह चतुर्थ भाव हुआ। चतुर्थ भाव में लग्न को घटाया तो शेष ३।३।५३।१४ बचा इसमें ६ से भाग दिया तो लब्धि ०।१५।३८।५२।२० राश्यादि षष्ठांश हुआ इसको लग्न में जोड़ दिया तो लग्न की विराम सन्धि ७।१०।३७।१।२० हुई इसी प्रकार आगे भी षष्ठांश जोड़ने से अन्य भाव हो जायँगे। चक्र में देखो।

इस प्रकार षष्ठांश जोड़ने से सन्धि के सहित तीन भाव हुये अन्य भाव साधन के लिये षष्ठांश ०।१५।३८।५२।२० को १ राशि में घटाया तो शेष ०।१४।२१।७।४० हुये इसको चतुर्थ भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि होगी और फिर इसमें जोड़ने से पञ्चम भाव एवं आगे भी जोड़ने से अन्य भाव हो जायँगे। जैसे—

लग्न	=	६।२४।५८।९
षष्ठांश	=	०।१५।३८।५२।२०
सन्धिः	=	७।१०।३७। १।२०
धनभाव	=	७।२६।१५।५३।४०
सन्धि	=	८।११।५४।४६। ०
सहजभाव	=	८।२७।३३।३८।२०
सन्धि	=	९।१३।१२।३०।४०

इस प्रकार लग्न से सन्धि के सहित ६ भाव स्पष्ट हो गये आगे इन्हीं ६ भावों में ६ राशि जोड़ने से शेष ६ भाव स्पष्ट हो जायँगे। जैसे—

चतुर्थ भाव	=	९।२८।५१।२३।०
रूपोन षष्ठांश	=	०।१४।२१। ७।४०
सन्धि	=	१०।१३।१२।३०।४०
सुतभाव	=	१०।२७।३३।३८।२०
सन्धि	=	११।११।५४।४६। ०
रिपुभाव	=	११।२६।१५।५३।४०
सन्धि	=	१२।१०।३७। १।२०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६ राशि ६।२४।५८।९....	तनुभाव
१२।२४।५८।९...................................	सप्तमभाव
६ राशि ६।१०।३७।१।२०........................	तनुभाव की सन्धि
१२।१०।३७।१।२०...........................	जाया सन्धि

इसी प्रकार आगे भी सन्धि और भावों में ६ राशि जोड़ने से सन्धि सहित अन्य भाव भी सिद्ध हो जाते हैं।

भावों की शुद्धता—इस प्रकार सिद्ध किये हुये भाव शुद्ध हैं या अशुद्ध इसके लिये चतुर्थ भाव को मध्य मान कर उसके पूर्व और पर भाव की राशि को छोड़कर अंश कला विकलादि यदि समान हों तो सिद्ध किये हुये भाव शुद्ध समझना चाहिये। जैसे चतुर्थ भाव के पूर्व तृतीय भाव की सन्धि १३ अंश १२ कला ३० विकला और ४० प्रतिविकला हैं और चतुर्थ भाव के घर में चतुर्थ भाव की सन्धि भी १३ अंश १२ कला ३० विकला और ४० प्रतिविकला है एवं तृतीय भाव और पञ्चम भाव का अंशादि साम्य है इसी प्रकार सभी भावों की साम्यता देखना चाहिये यदि भाव तुल्य हों तो गणित शुद्ध समझना चाहिये अन्यथा अशुद्ध समझना चाहिये।

अथ तन्वादि द्वादश भावाः।

त	सं	ध	सं	स	सं	सु	सं	सु	सं	रि	सं
६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
२४	१०	२६	११	२७	१३	२८	१३	२७	११	२६	१०
५८	३७	१५	५४	३३	१२	५१	१२	३३	५४	१५	३७
९	१	५३	४६	३८	३०	२३	३०	३८	४६	५३	१
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०
जा	सं	मृ	सं	ध	सं	क	सं	आ	सं	व्य	सं
१२	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६
२४	१०	२६	११	२७	१३	२८	१३	२७	११	२६	१०
५८	३७	१५	५४	३३	१२	५१	१२	३३	५४	१५	३७
९	१	५३	४६	३८	३०	२३	३०	३८	४६	५३	१
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर्ष कुण्डली ।

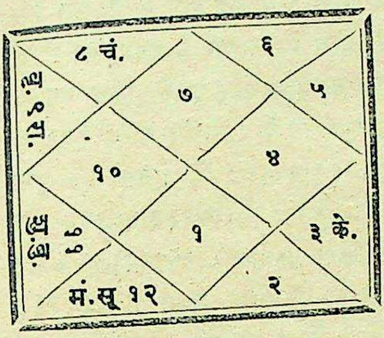

चलित चक्रम् ।

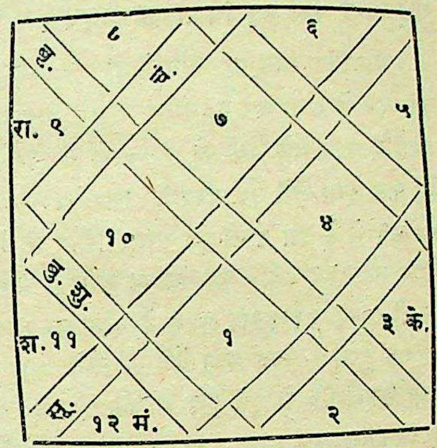

चलित चक्र बनाने का प्रकार—पहले भावों में जो २ राशियां हों उनको लिखकर इसके बाद जो ग्रह जिस भाव या संधि में हो लिखना चाहिये ।

भावस्थ ग्रहों के फल—

खेटे सन्धिद्वयान्तःस्थे फलं तद्भावजं भवेत् ।
हीनेऽधिके द्विसन्धिभ्यां भावे पूर्वापरे फलम् ॥ २८ ॥

अन्वयः—सन्धिद्वयान्तःस्थे खेटे तद्भावजं फल भवेत् । द्विसन्धिभ्यां हीनेऽधिके ग्रहे पूर्वापरे भावेफलम् (भवेत्) ॥ २८ ॥

यदि ग्रह आरंभ संधि से अधिक हो और विराम संधि से न्यून हो अर्थात् दोनों संधियों के मध्य में हो तो जिस भाव में ग्रह हो उसी भाव का फल देता है । दोनों संधियों से न्यून और अधिक ग्रह हो तो पूर्व और पर भाव का फल देता है । अथ आरंभ संधि से न्यून हो तो उससे पूर्व भाव का और विराम संधि से अधिक हो तो उससे पर भाव का फल देता है । प्रत्येक भावों की दो २ संधियाँ होती हैं, एक आरंभ और दूसरी विराम संधि होती है, जैसे सुख भाव की संधि १०।१३।१२।३०।४० है इसके अंशादि का आधा किया तो ६ अंश ३६ कला १५ विकला और २० प्रति विकला यह चतुर्थ भाव की विराम संधि हुई और शेष आधा सुत भाव की आरंभ संधि हुई अब शुक्र १०।५।६।५१ है अर्थात् चतुर्थ भाव के विराम संधि से न्यून है इसलिये पूर्व भाव याने चतुर्थ भाव का फल देगा इसी प्रकार और ग्रहों के फलों को भी समझना चाहिये ॥ २८ ॥

विंशोपक बल ।

ग्रहसन्ध्यन्तरं कार्यं विंशत्या गुणितं भजेत् ।
भावसन्ध्यन्तरेणाप्तं फलं विंशोपकाः स्मृताः ॥ २९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—ग्रहसन्ध्यन्तरं विंशत्या गुणितं कार्यं भावसन्ध्यन्तरेण भजेत् यत् आप्तं फलं तद् विंशोपकाः स्मृताः ॥ २९ ॥

ग्रह जिस भाव या संधि में हो उस भाव की संधि और ग्रह का अन्तर करे फिर उसे २० से गुणा करे तदनन्तर उसमें भाव और सन्धि के अन्तर से भाग लेने से जो अंशादि फल मिले उसी को पूर्वाचार्यों ने विंशोपक कहा है अर्थात् इतने विश्वा पर यह ग्रह फल देगा जैसे सूर्य राश्यादि ११।०।४।२८ यह सुतभाव के राश्यादि सन्धि ११।११।५४।४६ में हैं इन दोनों का अन्तर किया तो शेष ०।११।५०।१८ रहे इनको २० गुणा किया तो २३६।४६।० यह भाज्य हुआ। और सुत भाव १०।२७।३३।३८।२० और इसकी सन्धि ११।११।५४।४६ है दोनों का अन्तर किया तो शेष ०।१४।२१।७।४० यह भाजक हुआ! अब भाग देने के लिये भाज्य को ६० से गुणा किया तो ८५२३६० हुआ इसमें ६० से गुणे हुये भाजक ५१६६७ से भाग दिया तो फल १६।३० यह सूर्य का विश्वात्मकबल हुआ इसी प्रकार अन्य ग्रहों के बल का साधन करना। प्रयोजन यह है कि कौन सा ग्रह किस भाव में कितने विश्वात्मक फल को देता है इसके ज्ञान के लिये विश्वात्मक बल का साधन किया जाता है ॥ २९ ॥

राशियों के स्वामी व द्रेष्काणाधीश जानने का प्रकार—

भौमोशनः सौम्यशशीनवित्सितारेज्यार्किमन्दाङ्गिरसो गृहेश्वराः
आद्याः कुजाद्या रवितोपि मध्यमाः सितात्तृतीयाः क्रियतो दृकाणपाः

अन्वयः—भौमोशनः सौम्यशशीनवित्सितारेज्यार्किमन्दाङ्गिरसो गृहेश्वराः स्युः। क्रियतः आद्या कुजाद्याः रवितो मध्यमा सितात्तृतीयाः दृकाणपाःस्युः ॥३०॥

मेष राशि का स्वामी भौम (मङ्गल) वृष का स्वामी उशना (शुक्र) मिथुन का स्वामी सौम्य (बुध), कर्क का शशि (चन्द्रमा), सिंह का इन (सूर्य), कन्या का वित् (बुध), तुला का सित (शुक्र), वृश्चिक का (मङ्गल), धनु का इज्य (बृहस्पति), मकर का आर्कि (शनैश्चर) कुम्भ का मन्द (शनि), और मीन का आङ्गिरस (गुरु) ये राशियों के स्वामी हैं।

प्रत्येक राशियां तीस २ अंशों की होती हैं, और प्रत्येक राशि में तीन २ द्रेष्काण होते हैं, प्रत्येक द्रेष्काण दश २ अंश के होते हैं, अर्थात् पहला द्रेष्काण एक अंश से लेकर १० दश अंश तक और दूसरा दश से लेकर २० अंश तक और तीसरा द्रेष्काण २० से लेकर ३० अंश तक होता है। मेषादि राशियों में पहला द्रेष्काण मङ्गल से दूसरा सूर्य से और तीसरा शुक्र से आरम्भ कर गणना करनी चाहिये। जैसे मेष में पहला मङ्गल का एवं वृष में पहला बुध का तथा मिथुन में बृहस्पति का इसी प्रकार आगे भी, तथा मेष में दूसरा सूर्य का वृष में चन्द्रमा का ऐसे ही मेष में तीसरा शुक्र का वृष में तीसरा शनि का द्रेष्काण होता है, शेष चक्र में देखो स्पष्ट है ॥ ३० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्रेष्काण चक्र

श्री		मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
१	१०	मं	बु	वृ	शु	श	सू	च	मं	बु	वृ	शु	श
२	२०	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ
३	३०	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श	सू	चं	मं

ग्रहों की उच्च राशियां

सूर्यादितुंगर्क्षमजोक्षनक्रकन्याकुलीरान्त्यतुलालवैः स्युः ।
दिग्भिर्गुणैरष्टयमैः शरैकैर्भूतैर्भसंख्यैर्नखसम्मितैश्च ॥३१॥

अन्वयः—अजोक्षनक्रकन्याकुलीरान्त्यतुलादिग्भिर्गुणैरष्टयमैः शरैकैभूतैर्भसंख्यैर्नखसम्मितैः लवैः सूर्यादितुङ्गर्क्षम् स्युः ॥ ३१ ॥

मेषादि राशियों में सूर्यादि ग्रहों का उच्च होता है, जैसे सूर्य का अज (मेष) राशि में दिग् (दश) अंश परम उच्च होता है एवं चन्द्रमा का उच्च (वृष) राशि में गुण (तीन) अंश, मङ्गल का नक्र (मकर) राशि में अष्टयमैः (अट्ठाईस) अंश, बुध का कन्या राशि में शरैकैः (पन्द्रह) अंश, बृहस्पति का कुलीरं (कर्क) राशि में भूतैः (पाँच) अंश, शुक्र का अन्त्य (मीन) राशि में भसंख्यैः (सत्ताईस) अंश और शनि का तुला राशि में नख (बीस) अंश तक परमोच्च होता है, कहे हुये अंशों से उक्त राशियों में ग्रह न्यूनाधिक अंश हो तो केवल उच्चराशि में होते हैं ॥ ३१ ॥

ग्रहों की नीचराशियां व उच्चबल साधन और
नवांशों के स्वामियों का वर्णन—

तत्सप्तमं नीचमनेन हीनो ग्रहोऽधिकश्चेद्रसभाद्विशोध्यः ।
चक्रात्तदङ्कांशलवो बलं स्यात् क्रियेण तौलीन्दुभतो नवांशाः ॥३२॥

अन्वयः—तत्सप्तमं नीचं अनेन ग्रहो हीनः कार्यः चेद्रसभादधिकस्तदा चक्राद्विशोध्यः तदङ्कांशलवो बलं स्यात् क्रियेण तौलीन्दुभतो नवांशाः स्युः ॥३२॥

अथ ग्रहाणामुच्चनीचचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रहाः
०	१	९	५	३	११	६	उच्च
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	०
६	७	३	११	९	५	०	नीच
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	

अपने उच्च राशि से सातवीं राशि नीच की होती है । जैसे सूर्य का तुला नीच राशि है यदि इसमें सूर्य उच्चांश के तुल्य अंश याने दश अंश का हो तो परम नीच होता है इसी प्रकर अन्य ग्रहों का समझना । ग्रह को नीच से घटाना शेष यदि ६ राशि से अधिक हो तो उसको बारह राशि में घटाना शेष का अंश बनाकर उसमें नौ का भाग देने से उच्चबल होता है । मेषादि राशियों में मेष, मकर, तुला और कर्क से नवमांश का आरम्भ होता है अर्थात् मेष में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेष से, वृष में मकर से, मिथुन में तुला से और कर्क में कर्क से एवं सिंह में मेष से, कन्या में मकर से, तुला में तुला से और वृश्चिक में कर्क से इसी प्रकार आगे भी जानना। एक राशि ३० अंश की होती है उसमें ९ का भाग देने से लब्धि ३ अंश और बीस कला होती है यही एक नवमांश का मान होता है शेष चक्र में स्पष्ट है।३२।

अथ नवांशचक्रम्।

अंशाः		मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
३	२०	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.
६	४०	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.
१०	०	मि.	मी	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.
१३	२०	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.
१६	४०	सिं.	वृ.	कु.	वृ.	सिं.	वृ.	कु.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.
२०	०	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.
२३	२०	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु	क.	मे.	म.
२६	४०	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं	वृ	सिं.	वृ.	कुं.
३०	०	ध.	क.	मि	मी.	ध.	क.	मि	मी.	ध.	क.	मि	मी.

उच्चबल साधनोदाहरण—जैसे सूर्य ११।०।४।२८ इसमें सूर्य का नीच ६।१० घटाया तो शेष ४।२०।४।२८ रहा इसका अंश किया तो १४०।४।२८ हुआ इसमें ९ का भाग दिया तो लब्धी १५।३३ सूर्य का उच्च बल हुआ, इसी प्रकार अन्य ग्रहों के उच्चबल का साधन करना चाहिये।

मेषादि राशियों के हद्देशों का वर्णन—

मेषेऽङ्गतर्काष्टशरेषुभागा जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम्।
वृषेऽष्टषण्णागशरानलांशाः शुक्रज्ञजीवार्किकुजेशहद्दाः॥ ३३॥
युग्मे षडङ्गेषु नगाङ्गभागाः सौम्यास्फुजिज्जीवकुजार्किहद्दाः।
कर्केऽद्रितर्काङ्गनगाब्धिभागाः कुजास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम्॥३४॥
सिंहेऽङ्गभूताद्रिरसाऽङ्गभागाः सुरेज्यशुक्राऽर्किबुधारहद्दाः।
स्त्रियोनगाशाब्धिनगाक्षिभागाः सौम्योशनोजीवकुजार्किनाथाः।३५॥
तुले रसाष्टाद्रिनगाक्षिभागाः कोणज्ञजीवास्फुजिदारनाथाः।
कीटे नगाब्ध्यष्टशराङ्गभागा भौमास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम्॥३६॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चापे रवीष्वम्बुधिपञ्चवेदा जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम् ।
मृगे नगाद्र्यष्टयुगश्रुतीनां सौम्येज्यशुक्रार्किकुजेशहद्दाः ॥ ३७ ॥
कुम्भे नगाङ्गाद्रिशरेषुभागाः शुक्रज्ञजीवारशनैश्चराणाम् ।
मीनेऽर्कवेदाऽनलनन्दपक्षाः सितेज्यसौम्यारशनैश्चराणाम् ॥ ३८ ॥

अन्वयः—मेषे अङ्गतर्काष्टशरेषुभागाः जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम् हद्दाः, वृषेऽष्टषट्नागशरानलांशाः शुक्रज्ञजीवार्किकुजेशहद्दाः स्युः ॥३३॥ युग्मे षडङ्गेषु नगाङ्गभागाः सौम्यास्फुजिज्जीवकुजार्किहद्दाः । कर्केऽद्रितर्काङ्गनगाब्धिनागाः कुजास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् हद्दाः ॥ ३४ ॥ सिंहेऽङ्गभूताद्रिरसाङ्गभागाः सुरेज्यशुक्रार्किबुधारहद्दाः । स्त्रियो नगाशाब्धिनगाक्षिभागाः सौम्योशनोजीवकुजार्किनाथाः ॥ ३५ ॥ तुले रसाष्टाद्रिनगाक्षिभागाः कोणज्ञजीवास्फुजिदारनाथाः । कीटे नगाब्ध्यष्टशराङ्गभागाः भौमास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् हद्दाः स्युः ॥३६॥ चापे रवीष्वम्बुधिपञ्चवेदाः जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम् हद्दाः । मृगे नगाद्र्यष्टयुगश्रुतीनां सौम्येज्यशुक्रार्किकुजेशहद्दाः ॥ ३७ ॥ कुम्भे नगाङ्गाद्रिशरेषुभागाः शुक्रज्ञजीवारशनैश्चराणां हद्दाः । मीनेऽर्कवेदानलनन्दपक्षाः सितेज्यसौम्यारशनैश्चराणां हद्दाः स्युः ॥ ३८ ॥

मेष में प्रथम ६ अंशों का हद्देश बृहस्पति फिर आगे ६ अंशों का हद्देश शुक्र है, फिर ८ अंशों का बुध, फिर ५ अंशों का मंगल और फिर ५ अंशों का शनैश्चर हद्देश होता है। इसी प्रकार वृष आदि राशियों के ३० अंशों में क्रम से हद्देश होते हैं जैसा कि चक्र में स्पष्ट है ॥ ३३--३८ ॥

अथ हद्देशचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.
बृ. ९	शु. ८	बु. ६	मं. ७	बृ. ६	बु. ७	श. ६	मं. ७	बृ. १२	बु. ७	शु. ७	शु १२
शु. ६	बु. ६	शु. ६	शु. ६	शु. ५	श. १०	बु. ८	शु. ४	शु. ५	बृ. ७	बु. ६	बृ. ४
बु ८	बृ. ८	बृ. ५	बु. ६	श. ७	बृ. ४	बृ. ७	बु. ८	बु. ४	शु. ८	बृ. ७	बु ३
मं. ५	श. ५	मं. ७	बृ. ७	बु. ६	म. ७	शु. ७	बृ. ५	मं ५	श. ४	म. ५	मं. ९
श. २	मं. ३	श. ६	श. ४	मं. ६	श. २	मं. २	श. ६	श. ४	मं. ४	श. ५	श. २

अब पंचवर्गी बल ।

त्रिंशत्स्वभे विंशतिरात्मतुङ्गे हद्देक्षचन्द्रा दशकं दृकाणे ।
मुसल्लहे पञ्चलवाः प्रदिष्टा विंशोपका वेदलवैः प्रकल्प्याः ॥३९॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्वभे त्रिंशत्, आत्मतुङ्गे विंशतिः, हद्देऽक्षचन्द्राः, दृकाणे दशकं मुसल्लहे पंचलवाः प्रदिष्टाः, वेदलवैः विंशोपकाः प्रकल्प्याः ॥ ३९ ॥

ग्रह अपनी राशि में हो तो ३० बल प्राप्त करता हैं, अपने उच्च में हो तो २० बल अपने हद्दा में हो तो १५ बल, अपने द्रेष्काण में हो तो १० बल, अपने नवमांश में हो तो ५ अंशबल प्राप्त करता है। सभी बलों का चतुर्थांश विंशोपक बल होता है ॥ ३९ ॥

पूर्वोक्त पाँचों अधिकारों में यदि ग्रह न हो तो कितना बल ग्रहण करना चाहिये इसका निर्णय—

स्वस्वाधिकारोक्तबलं सुहृद्भे पादोनमर्द्धं समभेऽरिभेंऽघ्रिः ।
एवं समानीय बलं तदैक्ये वेदोद्धृते हीनबलः शरोनः ॥४०॥

अन्वयः—स्वस्वाधिकारोक्तबलं सुहृद्भे ग्रहे पादोनं समभे ग्रहे सति अर्द्धं अरिभेंऽघ्रिः एवं बलं समानीय तदैक्ये वेदोद्धृते शरोनः तदा हीनबलः ग्रहः स्यात् ॥ ४० ॥

यदि ग्रह अपने मित्र के घर में हो तो वह पादोन अर्थात् चौथाई हीन २२।३० बल को प्राप्त करता है सम घर में हो तो आधा १५ प्राप्त करता है, शत्रु घर में हो तो एक चरण अर्थात् चौथाई ७।३० बल प्राप्त करता है, एवं जो ग्रह अपने हद्दा का हो वह १५, मित्र हद्दा में हो तो चौथाई कम ११।१५, सम हद्दा में हो तो आधाबल ७।३०, शत्रुहद्दा में हो तो चौथाई ३।४५ तथा जो ग्रह अपने द्रेष्काण में हो वह १०, अपने मित्र के द्रेष्काण में हो तो चौथाई कम ७।३०, समद्रेष्काण में हो तो आधा ५ बल और शत्रु द्रेष्काण में हो तो चौथाई २।३० बल प्राप्त करता है, एवं जो ग्रह अपने नवांश में हो तो ५ बल, मित्रनवांश में हो तो ३।४५, समनवांश में हो तो २।३० और शत्रु नवांश में हो तो १।१५ बल प्राप्त करता है, इस प्रकार इन सबके बल को एकत्र करके चार का भाग देने से विश्वात्मक बल होता है पाँच विश्वा से जो ग्रह कमती होवे वह हीनबली[1] होता है ॥ ४० ॥

	स्वरा०	मित्र	सम	शत्रु
ग्रह	३०	२२ ३०	१५ ०	७ ३०
हद्दा	१५ ०	११ १५	७ ३०	३ ४५
द्रेष्का	१०	७ ३०	५ ०	२ ३०
नव०	५	३ ४५	२ ३०	१ १५

१ पञ्चाल्पो हीनवीर्यः स्यादधिको मध्य उच्यते ।
दशाधिको बली प्रोक्तः पञ्चवर्गी बलादिदम् ॥ ९ ॥

अर्थ—पाँच विश्वा से कमतीबल वाला ग्रह हीनबली, तिससे अधिक १० विश्वा तक १० से अधिक २० विश्वा तक पूर्ण बली ग्रह जानना यह पञ्चवर्गी बल है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यद्यपि इस ताजिकग्रन्थ में, "दृष्टिः स्यान्नवपंचमे बलवती प्रत्यक्षतः स्नेहदा" इत्यादि श्लोकद्वारा आगे दृष्टि के विचार से ग्रहमैत्री का वर्णन है तथापि यहाँ ताजिक मैत्री विद्यार्थियों को सहज में बोध होने के लिये रोमक के मत से ग्रह मैत्री लिखते हैं जो केवल ताजिक के फलादेश में लेना चाहिये।

रोमक मतानुसार ग्रहमैत्री—

मित्रं तृतीयपञ्चमनवमैकादशगतोऽपि यो यस्य।
धनमृतिरिपुरिष्फेषु च समो ग्रहः स्यादिति ज्ञेयम् ॥ १ ॥
शत्रुस्तथैकतुर्ये जायास्थाने तथा दशमे।
ताजिकहिल्लाजमते नैतादृक्कथितमस्माभिः ॥ २ ॥

अर्थः—जो ग्रह जिस ग्रह से तीसरे, पाँचवें, नवें और ग्यारहवें भाव में स्थित हो वह उसका मित्र होता है। दूसरे, आंठवें, छठें और बारहवें हो वह उसका सम, तथा पहले, चौथे, सातवें और दशवें हो तो शत्रु होता है, इस प्रकार यह ग्रहों की मित्रता, समता और शत्रुता को ताजिक शास्त्राचार्य हिल्लाज के मत से हम सबों ने कहा है। पूर्वोक्त वर्ष कुण्डली से मित्रादि चक्र उदाहरणार्थ दिया जाता है।

अथ ग्रह मैत्रीचक्रम्।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
चं.	सू.मं.	चं.	बृ.	बु.शु.श.	बृ.	बृ.	मित्र
बु.शु.श.	बृ.	बु.शु.श.	सू.मं.	चं.	सू.मं.	सू.मं.	सम
मं.बृ.	बु.शु.श	सू.बृ.	शु.श.च.	सू.मं.	बु.श.चं.	बु.शु.चं.	शत्रु

अथ पञ्चवर्गी बलसाधनोदाहरणम्—

जैसे सूर्य ११।०।४।२८ है, सूर्य मीन राशि गुरु के घर में है और सूर्य के गुरु शत्रु हैं इसीलिए गृहबल ७।३० मिला और पूर्वोक्त रीति से लाया हुआ सूर्य का उच्चबल १५।३३ है। सूर्य शुक्र के हद्दा में है और शुक्र सूर्य के सम हैं इसलिए हद्दा का ७।३० बल मिला, सूर्य शनि के द्रेष्काण में है और शनि सूर्य का सम है इसलिए ५ द्रेष्काण बल प्राप्त हुआ, सूर्य चन्द्रमा के नवमांश है और चन्द्रमा सूर्य का मित्र है इसलिए ३।४५ नवमांश बल प्राप्त हुआ। सभी बलों का योग किया तो ३९।१८ हुये इसमें चार का भाग दिया तो ९।४९ यह विश्वात्मक बल हुआ इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी साधन करना चाहिये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ पञ्चवर्गीबल चक्रम् ।

सू.	चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
७ ३१	२२ ३०	७ ३०	७ ३०	३० ०	७ ३०	३० ०	गृहबल
१५ ३३	० ९	१४ २	३ ५६	३ २०	१४ १४	७ १४	उच्चबल
७ ३०	११ १५	१५ ०	१५ ०	१५ ०	१५ ०	११ १५	हद्दाबल
५ ०	७ ३०	१० ०	२ ३०	७ ३०	१० ०	२ ३०	द्रेष्काण बल
३ ४५	५ ०	२ ३०	३ ४५	३ ४५	२ ३०	५ ०	नवमांश बल
३९ १८	४६ २४	४९ २	३२ ४१	६१ ५	४९ १४	५५ ५९	बलैक्य
९ ४९	११ ३६	१२ १५	८ १०	१५ १६	१२ १८	१३ ५९	विश्वाबल

द्वादशवर्गी का विचार—

क्षेत्रं होरात्र्यङ्घिपञ्चाङ्गसप्तवस्वङ्काशेशार्कभागाः सुधीभिः ।
विज्ञातव्या लग्नसंस्थाः शुभानां वर्गाः श्रेष्ठाः पापवर्गास्त्वनिष्टाः ॥४१॥

अन्वयः—क्षेत्रं होरात्र्यङ्घिपञ्चाङ्गसप्तवस्वङ्काशेशार्कभागाः लग्नसंस्था सुधीभिः विज्ञातव्या, शुभानां वर्गाः श्रेष्ठाः पापवर्गाः अनिष्टा ज्ञेयाः ॥४१॥

क्षेत्र (गृह), होरा, तृतीयांश, चतुर्थांश, पञ्चमांश, षष्ठांश, सप्तमांश, अष्टमांश, नवमांश, दशमांश, एकादशांश और द्वादशांश ये बारह वर्ग लग्न में तथा ग्रहों के पण्डितों को विचारना चाहिये; अब इन सबों का फल कहते हैं कि शुभ ग्रहों के वर्ग श्रेष्ठ हैं अर्थात् जो ग्रह अधिक शुभ ग्रह के वर्ग में हो वह शुभफल देने वाला होता है और यदि पापग्रहों के वर्ग में हों तो अनिष्ट फल को देनेवाले होते हैं ॥ ४१ ॥

होरा द्रेष्काण व चतुर्थांश के अधिपतियों का वर्णन—

ओजे रवीन्द्वोः सम इन्दुरव्योर्होरे गृहार्धप्रमिते विचिन्त्ये ।
द्रेष्काणपाः स्वेषुनवर्क्षनाथास्तुर्यांशकाः स्वर्क्षजकेन्द्रनाथाः ॥४२॥

अन्वयः—ओजे रविन्द्वोः सम इन्दुरव्योः गृहार्धप्रमिते होरे विचिन्त्ये, स्वेषु नवर्क्षनाथाः द्रेष्काणपाः, स्वर्क्षजकेन्द्रनाथाः तुर्यांशकाः स्युः ॥४२॥

प्रथम होरा को कहते हैं—ओज (विषम) राशि में मि. सि. तु. ध. कु. इनमें प्रथम १५ अंश तक सूर्य की होरा, फिर शेष १५ अंश अर्थात् १६ से ३० अंश तक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चन्द्रमा का होरा होता है और समराशि वृ. क. क. वृ. म. मी. इनमें पहले १५ अंश तक चन्द्रमा का होरा शेष १५ अंश तक सूर्य का होता है।

अब द्रेष्काणपति को कहते हैं कि— एक राशि के ३० अंशों में तीन द्रेष्काण होते हैं उनमें पहला १० अंश तक दूसरा २० अंश तक और तीसरा ३० अंश तक होता है पहला द्रेष्काण उसी राशि के स्वामी का होता है, दूसरे का उससे पांचवीं राशि के स्वामी का और तीसरा उससे नवीं राशि के स्वामी का होता है। अर्थात् जिस ग्रह के द्रेष्काण का विचार करना हो यदि वह ग्रह प्रथम द्रेष्काण में हो तो उसी राशि का (जिसमें ग्रह है) स्वामी द्रेष्काणपति होता है इसी प्रकार आगे भी समझना।

अब चतुर्थांश स्वामियों को कहते हैं, राशि के ३० अंशों में चार का भाग देने से एक चतुर्थांश ७ अंश और ३० कला का होता है तहाँ पहला चतुर्थांश ७।३० अंश तक, दूसरा १५ अंश तक, तीसरा २२।३० अंश तक, चौथा ३० अंश तक, चतुर्थांश जानना; जो ग्रह पहले चतुर्थांश में हो तो प्रथम केन्द्र अर्थात् उसी राशि का स्वामी चतुर्थांश पति होता है, दूसरे चतुर्थांश में हों तो दूसरे केन्द्र अर्थात् वर्तमान राशि से चौथे घर का स्वामी चतुर्थांश पति तीसरे चतुर्थांश का स्वामी तीसरे केन्द्र का स्वामी अर्थात् ग्रह जिस राशि में हो उससे सातवीं राशि का स्वामी चतुर्थांश पति होता है, चौथे चतुर्थांश में हो तो चौथा केन्द्र अर्थात् वर्तमान राशि से दसवें घर का स्वामी चतुर्थांश पति होता है ॥ ४२ ॥

होरा, द्रेष्काण व चतुर्थांश को सरलता से जानने के लिये नीचे होरा, द्रेष्काण और चतुर्थांश पति चक्र भी दिया हैं।

अथ होरेश चक्रम्।

अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१५	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र
३०	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य

अथ (द्रेष्काण) चक्रम्।

अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१०	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल	बृह.	शनि	शनि	बृह.
२०	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल	बृह.	शनि	शनि	बृह.	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र
३०	बृह.	शनि	शनि	बृह.	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ चतुर्थांशेश चक्रम् ।

अंशाः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुम्भ	मी.
७।३०	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल	बृह.	शनि	शनि	बृ.
१५।०	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल	बृह.	शनि	शनि	बृह.	मङ्गल	शुक्र	बु.
२२। ३०	शुक्र	मङ्गल	बृह.	शनि	शनि	बृह.	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध
३०।०	शनि	शनि	बृह.	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल	बृह

पंचमांशपति और द्वादशांशपति—

ओजर्क्षे पञ्चमांशेशाः कुजार्कीज्यज्ञभार्गवाः ।
समभे व्यत्ययाज्ज्ञेया द्वादशांशाः स्वभात्स्मृताः ॥ ४३ ॥

अन्वयः—ओजक्ष कुजार्कीज्यज्ञभार्गवाः, समभेव्यत्ययात्पञ्चमांशेशाः ज्ञेयाः स्वभात्द्वादशांशाः स्मृताः ॥ ४३ ॥

राशि के ३० अंशों में एक पंचमांश छ छ अंशों का होता है, विषम राशि में पहले पंचमांश का स्वामी मंगल, दूसरे का शनि, तीसरे का बृहस्पति, चौथे का बुध, पांचवें का शुक्र होता है और समराशि में इससे विपरीत (उलटा) जानना जैसे समराशि में पहले पंचमांश का स्वामी शुक्र, दूसरे का बुध, तीसरे का बृहस्पति, चौथे का शनि और पाँचवें का मंगल होता है ।

अथ पञ्चमांशपतिचक्रम् ।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुम्भ	मीन	अंश
मङ्गल	शुक्र	मङ्गल	शुक्र	मङ्गल	शुक्र	मङ्गल	शुक्र	मङ्गल	शुक्र	मङ्गल	शुक्र	६
शनि	बुध	शनि	बुध	शनि	बुध	शनि	बुध	शनि	बुध	शनि	बुध	१२
बृह.	ह.	बृह.	बृह.	बृह.	बृह.	बृह.	बृह.	बृह.	बृह.	बृह.	बृह.	१८
बुध	शनि	बुध	शनि	बुध	शनि	बुध	शनि	बुध	शनि	बुध	शनि	२४
शुक्र	मङ्गल	शुक्र	मङ्गल	शुक्र	मङ्गल	शुक्र	मङ्गल	शुक्र	मङ्गल	शुक्र	मङ्गल	३०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक राशि के ३० अंशों का द्वादशांश (बारहवां भाग) २ अंश ३० कला हुए ऐसे ही ढाई अंशों के विभाग से १२ द्वादशांश होते हैं जिसका चक्र नीचे लिखा है देख लेना, जिस राशि में जो ग्रह स्थित हो तो पहले द्वादशांश में उसी राशि का स्वामी द्वादशांशपति होता है दूसरे द्वादशांश में उससे दूसरी राशि का स्वामी द्वादशांशपति जानना इत्यादि क्रम से सब द्वादशांशाधिपतियों को जानना ॥ ४३ ॥

अथ द्वादशांशचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.	क.
मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ	२	३०
शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	म.	५	०
बु.	चं.	र.	बु.	शु.	म.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	७	३०
चं.	र.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	१०	०
र.	बु.	शु.	मं.	बृ	श.	श.	बृ	म.	शु.	बु.	च.	१२	३०
बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	१५	०
शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	१७	३०
मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	२०	०
बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	२२	३०
श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं	र.	बु	शु.	मं.	बृ.	२५	०
श.	बृ.	मं.	शु	बु.	चं.	र.	बु.	शु	मं.	बृ.	श.	२७	३०
बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु	मं.	बृ.	श.	श.	३०	०

अथ षडंश सप्तमांश, अष्टमांश, नवमांश, दशमांश, एकादशांश इनके अधिपतियों को कहते हैं।

लवीकृतोव्योमचरोऽङ्गशैलवस्वङ्कदिग्रुद्रगुणाः खरासैः ।
भक्तागतास्तर्कनगाष्टनन्ददिग्रुद्रभागाः कुयुताः क्रियात्स्युः ॥ ४४ ॥

अन्वयः—लवीकृतः व्योमचरः अङ्गशैलवस्वङ्कदिग्रुद्रगुणाः खरासैः भक्ताः तर्कनगाष्टनन्द दिग्रुद्रभागाः गताः लवाः स्यु कुयुताः क्रियात्स्युः ॥४४॥

ग्रह के राशि का अंश करे अर्थात् राशि को ३० से गुणा देवे फिर उसमें राशि के आगे स्थित अंशों को जोड़ देवे तदनन्तर उसको कला विकला सहित छः स्थान में बराबर २ स्थापना करके क्रम से ६।७।८।९।१०।११ इन अंकों से गुणा करे फिर ३० से भाग लेने से जो लब्ध हों वह षष्ठ ६, सात ७, आठ ८, नव ९, दस १०, ग्यारह ११, भाग होते हैं, इन सबों में १ जोड़कर मेष से गणना करे गिनती में जहाँ विश्राम हो उसी राशि का स्वामी उस वर्गका स्वामी होता है यदि एक जोड़ने पर बारह से अधिक अंक हों तो बारह से भाग लेना इस प्रकार द्वादशवर्गी बनाना चाहिये ॥४४॥

जैसे स्पष्ट सूर्य राश्यादि ११।०।४।२८ है। सूर्य मीन राशि में है मीन राशि का स्वामी गुरु है अतः सूर्य गुरु के गृह में है, तथा मीन राशि में १५ अंश के भीतर ही

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है इसलिये चन्द्रमा के होरा में है, और १० अंश के अन्दर है इसलिये गुरू के द्रेष्काण में है, मीन के प्रथम चतुर्थांश में है इसलिये गुरू के चतुर्थांश में हुआ। मीन के प्रथम पंचमांश में है इसलिये मीन का प्रथम पंचमांश शुक्र के पंचमांश में हुआ। सूर्य के राशि को ३० से गुणा किया तो ३३० हुये इसमें अंश जोड़ने से ३३०।४।२८ हुये इसको ६ से गुणा किया तो १९८०।२६।४८ हुआ इसमें ३० का भाग दिया तो लब्धी ६६ गत षष्ठांश हुआ इसमें एक जोड़ने से ६७ हुये यह बारह से अधिक है इसलिये इसमें १२ से भाग दिया तो शेष ७ बचे मेष से गणना करने से सातवीं तुला राशि स्वामी शुक्र हुआ अतः सूर्य शुक्र के षष्ठांश में हुआ। इसी प्रकार अन्य अंशो का भी साधन करना। सूर्य मीन में ० अंश है इसलिये प्रथम द्वादशांश में है प्रथम द्वादशांश मीन में गुरू का है अतः सूर्य गुरू के द्वादशांश में है।

अथ द्वादश वर्गी चक्रम्।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
बृ.	मं.	बृ.	श.	बृ.	श.	श.	गृ.
चं.	चं.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	हो.
बृ.	मं.	मं.	श	बृ.	श.	बु.	द्रे.
बृ.	मं.	बु.	शु.	बु.	श.	शु.	च.
शु.	शु.	श	श.	मं.	मं.	बृ.	पचमांश
शु.	शु.	श.	शु.	शु.	शु.	बु.	षष्ठांश
बु.	शु.	श.	मं.	श.	बृ.	शु.	सप्तमांश
सू.	बृ.	श	श.	बृ.	श.	बृ.	अष्टमांश
चं.	चं.	श.	बृ.	शु.	मं.	श.	नवमांश
बु.	श.	श.	मं.	श.	बु.	बृ.	दशमांश
शु.	बु.	बृ.	बु.	बु.	चं.	मं.	एकाद.
बृ.	मं.	मं.	बु.	श	मं.	चं.	द्वादशा.

एवं द्वादशवर्गी स्याद् ग्रहाणां बलसिद्धये।
स्वोच्चमित्रशुभाच्छ्रेष्ठा नीचारिक्रूरतोऽशुभाः॥ ४५॥

अन्वयः—एवं ग्रहाणां बलसिद्धये द्वादशवर्गी स्यात् स्वोच्चमित्रशुभाः (वर्गाः) श्रेष्ठाः, नीचारिक्रूरतोऽशुभाः ज्ञेयाः॥ ४५॥

इस प्रकार ग्रहों के बल सिद्धि के लिये द्वादशवर्गी होती है यह अपने उच, मित्र, शुभों से श्रेष्ठ फल देनेवाली होती है, और नीच, शत्रु पापवर्ग की अशुभ फल को देने वाली होती है—अर्थात् जो ग्रह द्वादशवर्गी में अपने गृहादि व उच्चवर्ग अथवा शुभ ग्रह के वर्ग में स्थित हो, तो वह ग्रह शुभ फलका देने वाला होता है, और यदि वही ग्रह नीच वर्ग शत्रुवर्ग अथवा पापग्रहों के वर्ग में स्थित हो तो उसको अशुभ फल का देने वाला जानना॥ ४५॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वादशवर्गी से ग्रहों के शुभपाप फलों का विचार—

एवं ग्रहाणां शुभपापवर्गपंक्तिद्वयं वीक्ष्य शुभाधिकत्वे ।
दशाफलं भावफलञ्च वाच्यं शुभं त्वनिष्टं त्वशुभाधिकत्वे ॥४६॥

अन्वयः—एवं ग्रहाणां शुभपापवर्गपंक्तिद्वयं वीक्ष्य शुभाधिकत्वे दशाफलं भावफलं च शुभं वाच्यं, अशुभाधिकत्वे तु अनिष्टं वाच्यम् ॥ ४६ ॥

पूर्वोक्त प्रकार से ग्रहों के शुभ व पाप ग्रहों की दोनों पंक्तियों को देखे शुभ ग्रह की पंक्ति अधिक हो तो दशाओं और भावों का फल शुभ कहना चाहिये और जो पापग्रह अधिक हों तो दशाओं और भावों का फल अशुभ कहना चाहिये, अर्थात् पूर्वोक्त प्रकार से ग्रहों का द्वादशवर्गी चक्र बनावे उसमें ग्रह यदि शुभग्रह के ही अधिक वर्ग में हो तो उस ग्रह वा दशा और भावफल शुभ कहना और यदि अधिक पापग्रह ही के वर्ग में हो तो उसका दशाफल और भावफल अशुभ कहना चाहिये ॥ ४६ ॥

ग्रह भेद से फलों में विशेषता—

क्रूरोऽपि सौम्योऽधिकवर्गशाली शुभोऽतिसौम्यः शुभखेचरश्चेत् ।
सौम्योऽपि पापाधिकवर्गयोगान्नेष्टोऽतिनिन्द्यः खलु पापखेटः ॥४७॥

अन्वयः—क्रूरः अपि ग्रहः सौम्याधिकवर्गशाली तदा शुभः, शुभखेचरश्चेत् अति सौम्यः सौम्योऽपि पापाधिकवर्गयोगान्नेष्टः, पापखेटः खलु अतिनिन्द्यः ॥ ४७ ॥

यदि पाप ग्रह भी द्वादशवर्गी में शुभ ग्रहों के अधिक वर्गों से युक्त होवे तो शुभ फल का देने वाला होता है जो शुभग्रह द्वादशवर्गी में शुभग्रहों के अधिक वर्गों से युक्त होवे तो अत्यन्त शुभ फलका देनेवाला होता है और जो शुभग्रह द्वादशवर्गी में पाप ग्रहों के अधिक वर्गों से युक्त होवे तो वह दुष्ट फल का देने वाला होता है। यदि पाप ग्रह द्वादशवर्गी में पापग्रहों के अधिक वर्गों से युक्त होवे तो वह अत्यन्त दुष्ट फल का देने वाला होता है ॥ ४७ ॥

१२ भावों के शुभ और अशुभ फलों का निर्णय—

राशीशमित्रोच्चरिपुक्रमेण चिन्त्यं तनोरप्यनयैव रीत्या ।
भावेषु सर्वेष्वपि वर्गचक्रं विलोक्य तत्तत्फलमूहनीयम् ॥४८॥

अन्वयः—अनयैवरीत्या तनोः अपि राशीशमित्रोच्चरिपुक्रमेण (शुभाशुभफलं) चिन्त्यम्। सर्वेष्वपि भावेषु वर्गचक्रं विलोक्यतत्तत्फलमूहनीयम् ॥ ४८ ॥

इसी प्रकार लग्न का भी द्वादशवर्गी बनाकर शुभग्रह व पापग्रह के अधिक वर्गों से शुभ वा अशुभ फल का विचार करना चाहिये। यथा लग्न शुभ ग्रहों के अधिक वर्ग में होवे तो शुभ फल जानना, अथवा लग्न स्वामी शुभ ग्रह होकर मित्रके घर में व अपने घर में व अपने उच्च स्थान में होवे तो वह शुभ फल को देता है, यदि लग्न का स्वामी सम घर में हो तो शुभ व अशुभ फल बराबर से होते हैं, और यदि लग्न पापग्रहों के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिक वर्गों से युक्त हो, अथवा लग्न का स्वामी पापग्रह होकर शत्रु घर में वा नीच स्थान में स्थित होवे तो वह अशुभ फल को देता है, ऐसेही सब भावों में द्वादशवर्गी करे, फिर उसको देख कर उन २ भावों के शुभ व अशुभ फल इसीरीति से विचार कर कहना चाहिये ॥ ४८ ॥

लग्न में विचारणीय विषय—

शरीरवर्णचिह्नायुर्वयो मानं सुखासुखम् ।
जातिः शीलं च मतिमाँल्लग्नात्सर्वं विचिन्तयेत् ॥ ४९ ॥

अन्वयः—मतिमान् शरीरवर्णचिह्नायुर्वयोमानं सुखासुखं जातिः शीलं च सर्वं लग्नात् विचिन्तयेत् ॥ ४९ ॥

वर्षलग्न व प्रश्नलग्न से शरीर सम्बन्धी सब जैसे शरीर की दुर्बलता व पुष्टता व रक्त श्वेत आदि वर्ण व मशकादि चिह्न, जीवन, बाल्य, यौवन, वृद्धवयस्, सुख, दुःख, ब्राह्मणादि जाति, आचरण, इन सबों को बुद्धिमान् लग्न से विचार करें ॥ ४६ ॥

धनभाव और तृतीय भाव में विचारणीय—

सुवर्णरौप्यरत्नानि धातुर्द्रव्यं सखा धने ।
विक्रमे भ्रातृभृत्याध्वपित्र्यस्खलनसाहसम् ॥ ५० ॥

अन्वयः—धने सुवर्णरौप्यरत्नानि धातुर्द्रव्यं (विचिन्तयेत्), विक्रमे भ्रातृभृत्याध्वपित्र्यस्खलनसाहसम् (विचारयेत्) ॥ ५० ॥

सोना, चांदी, रत्न, गैरिकादि धातु, कांस्य आदि द्रव्य, मैत्री का विचार अर्थात् कैसे मित्र होंगे, इन सबों को धनभाव में चिन्तन करे तथा तीसरे भाव में भाई बहिनों का व सेवक, व मार्ग चलना, पितृ सम्बन्धी कार्य, कार्यों का विध्वंस, साहस कर्म (बिना विचारे कर्म कर डालना) इन सबों का चिन्तन करे ॥ ५० ॥

चौथे और पाँचवें भाव में विचारणीय विषय—

पितृवित्तं निधिक्षेत्रं गृहं भूमिश्च तुर्यतः ।
पुत्रे मन्त्रधनोपायगर्भविद्यात्मजेक्षणम् ॥ ५१ ॥

अन्वयः—तुर्यतः पितृवित्तं निधिक्षेत्रं गृहं भूमिश्च (विचारयेत्) पुत्रे मन्त्रधनोपायगर्भविद्यात्मजेक्षणम् (विचारयेत्) ॥ ५१ ॥

पिता का द्रव्य, गड़ा हुआ द्रव्य, खेती आदि, घर, पृथ्वीलाभ, इन सबों का विचार चौथे भाव से करना । पाँचवें घर से मंत्र (गुप्तसम्भाषण) धन लाभ का उपाय, गर्भ, विद्याप्राप्ति, पुत्रलाभ, इन सबों का विचार करे ॥ ५१ ॥

छठे और सातवें भाव में विचारणीय विषय—

रिपौ मातुलमान्द्यारिचतुष्पाद्धन्धभीव्रणान् ।
द्यूने कलत्रवाणिज्यनष्टविस्मृतिसंकथा ॥
हृताध्वकलिमार्गादि चिन्त्यं द्यूने ग्रहोऽशुभः ॥ ५२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—रिपौ मातुलमान्यारिश्चतुष्पाद्बन्धभीर्व्रणान् (विचारयेत्), द्यूने कलत्रवाणिज्यनष्टविस्मृतिसंकथा हृताध्वकलिमार्गादि चिन्त्यं, द्यूने ग्रह (श्चेत्तदा) अशुभो (ज्ञेयः) ॥ ५२ ॥

मामा, मित्र, शत्रु, गाय, भैंस, आदि चौपाये, पराधीनता, तापत्रय से भय, घाव, इन सबों का विचार छठें भाव से करना। सातवें घर से स्त्री, व्यापार, नष्टवस्तु विस्मरण होना, हरे हुए द्रव्य का, मार्ग का विचार, कलह, यात्रा आदि, इन सबों का विचार करना, सातवें घर में शुभ वा पाप कोई ग्रह होवे तो अशुभ फल का देनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

आठवें घर में विचारणीय विषय—

मृत्यौ चिरन्तनं द्रव्यं मृतवित्तं रणो रिपुः ।
दुर्गस्थानं मृतिर्नष्टं परिवारो मनोव्यथा ॥ ५३ ॥

अन्वयः—मृत्यौ चिरन्तनं द्रव्यं मृतवित्तं रणो रिपुः दुर्गस्थानं मृतिर्नष्टं परिवारो मनोव्यथा (विचारयेत्) ॥ ५३ ॥

आठवें घर में बहुत काल का द्रव्य, मरे हुए का धन, संग्राम, शत्रु, कोटस्थान (किला आदि), मरना, वस्तु का नष्ट होना कुटुम्ब, मन की व्यथा [पीड़ा] इन सबों का विचार करे ॥ ५३ ॥

नवम भाव में विचारणीय विषय—

धर्मे रतिस्तथा पन्था धर्मोपायं विचिन्तयेत् ।
व्योम्नि मुद्रां परं पुण्यं राज्यवृद्धिं च पैतृकम् ॥ ५४ ॥

अन्वयः—धर्मे रतिस्तथा पन्था धर्मोपायं विचिन्तयेत्, व्योम्निमुद्रां परं पुण्यं राज्यवृद्धिं च पैतृकम् (विचिन्तयेत्) ॥ ५४ ॥

नवम भाव में (स्त्रीप्रसङ्ग) तथा यात्रा का विचार, धर्मसाधन, इन सबों का विचार करे, दशम में मुद्रा (राजमुद्रा) परम पुण्य, राज्य, भाग्यवृद्धि, पितृसम्बन्धी विचार, इन सबों का विचार करे ॥ ५४ ॥

ग्यारहवें और बारहवें भाव में विचारणीय विषय—

आये सर्वार्थधान्यार्घ कन्यामित्रचतुष्पदाः ।
राज्ञो वित्तं परीवारो लाभोपायांश्च भूरिशः ॥ ५५ ॥
व्यये वैरिनिरोधार्तिव्ययादि परिचिन्तयेत् ॥ ५६ ॥

अन्वयः—आये सर्वार्थधान्यार्घकन्यामित्रचतुष्पदाः राज्ञो वित्तं परीवारो भूरिशः लाभोपायांश्च (विचिन्तयेत्) व्यये वैरिनिरोधार्तिव्ययादि परिचिन्तयेत् ॥ ५५-५६ ॥

ग्यारहवें घर में सब द्रव्यों का प्रयोजन, धान्य का मूल्य, कन्या, मित्र, चौपाये,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजद्रव्य, कुटुम्ब विचार, बहुत प्रकार के लाभ होने के उपाय, इन सबों का चिन्तवन करे ॥ ५५ ॥ बारहवें घर में शत्रुओं करके किया हुआ अवरोध, घनी पीड़ा, खर्च आदि इन सबों का विचार करना चाहिए ॥ ५६ ॥

बलवान् ग्रह के लक्षण—

लग्नाम्बुद्यूनकर्माणि केन्द्रमुक्तं च कंटकम् ।
चतुष्टयं चात्र खेटो बली लग्ने विशेषतः ॥ ५७ ॥

अन्वयः— लग्नाम्बुद्यूनकर्माणि केन्द्रं, कण्टकम्, चतुष्टयञ्च उक्तं, अत्र विशेषतः लग्ने खेटो बली भवति ॥ ५७ ॥

पहला, चौथा, सातवाँ, दसवाँ इन स्थानों को केन्द्र, कण्टक और चतुष्टय कहते हैं, इन केन्द्रों में स्थित ग्रह बलवान होता है, चौथे, सातवें, दशवें, स्थान की अपेक्षा विशेष करके लग्न में स्थित ग्रह अधिक बलवान् होता है ॥ ५७ ॥

ग्रहों के स्थान और बलिष्ठ योग—

लग्नकर्मास्ततुर्याय सुताङ्कस्थो बली ग्रहः ।
यथाऽऽदिमं विशेषेण सत्रिवित्तेषु चन्द्रमाः ॥ ५८ ॥

अन्वयः—ग्रहः लग्नकर्मास्ततुर्याय सुतांकस्थो बली भवति, (तथापि) यथादिमं विशेषेण (बली भवति) चन्द्रमा सत्रिवित्तेषु (पूर्वोक्तस्थानेषु) बली ज्ञेयः ॥ ५८ ॥

पहला, दसवाँ, सातवाँ, चौथा, ग्यारहवाँ, पाँचवाँ और नवाँ इन स्थानों में स्थित ग्रह बलवान् होता है । उसमें भी आदिम स्थानों का उल्लङ्घन कर यथाक्रम अग्रिम स्थानों की अपेक्षा पूर्व पूर्वस्थित ग्रह अतिशय करके बलवान् होता है । जैसे आदि में नवमस्थ ग्रह बलवान् है उसकी अपेक्षा पंचमस्थ ग्रह बलवान् होता है तथा पञ्चमस्थ ग्रह की अपेक्षा ग्यारहवें, उसकी अपेक्षा चौथे, तिसकी अपेक्षा सातवें घर में, उसकी अपेक्षा दशवें, और उसकी अपेक्षा लग्न में स्थित ग्रह बलवान् होता है । यह सम्पूर्ण ग्रहों का सामान्य प्रकार से बल कहा गया अब चन्द्रमा का विशेष बल कहते हैं, दूसरे स्थान में चन्द्रमा बलवान् होता है, उससे तीसरे उससे नवें, नववें से पाँचवें, पाँचवें से ग्यारहवें इत्यादि क्रम से चन्द्रमा बलवान् होता है ॥ ५८ ॥

मंगल का बल—

कुजः सत्रिषु पृच्छायां सूतौ चान्यत्र चिन्तयेत् ।
भावा नवेत्थं शस्ताः स्यू रिःफाष्टरिपवोऽशुभाः ॥
दीप्तांशातिक्रमेशस्ताः इमेऽपीति विचिन्तयेत् ॥ ५९ ॥

अन्वयः—कुजः सत्रिषु प्रागुक्तेषु स्थानेषु बलिष्ठो ज्ञेयः, एतद्बलम् पृच्छायां सूतौ अन्यत्र वर्षलग्नादौ च चिन्तयेत् । इत्थं नव भावाः शस्ताः स्युः, रिःफाष्ट-रिपवोऽशुभाः स्युः, इमे भावा दीप्तांशातिक्रमे शस्ता इति विचिन्तयेत् ॥५९॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरे घर सहित पूर्वोक्त स्थानों में यथाक्रम से मंगल बलवान् होता है, एवं प्रश्न समय, जन्म समय, तथा वर्षलग्नादिकों में इन स्थानों में स्थित ग्रहों के बलाबल का विचार करे। इस प्रकार नव भाव श्रेष्ठ फल देनेवाले होते हैं और ग्रहों से युक्त बारहवाँ, आठवाँ और छठाँ भाव अशुभ फल देनेवाले होते हैं। यदि इन भावों में ग्रह अपने दीप्तांशों को उल्लङ्घन कर हों तो शुभ फल को देते हैं वहाँ भी यदि अपने दीप्तांशों के मध्य में स्थित हों तो अभिमत फल के देनेवाले नहीं होते हैं ॥ ५९ ॥

मेषादि बारह राशियों के त्रिराशिपति—

त्रिराशिपाः सूर्यसितार्किशुक्रा दिने निशीज्येन्दुबुधक्ष्माजाः।
मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं नित्यं परेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥ ६० ॥

अन्वयः—दिने मेषाच्चतुर्णां राशीनां सूर्यसितार्किशुक्राः तथा निशि इज्येन्दुबुधक्ष्माजाः त्रिराशिपाः स्युः। हरिभाद्विलोमं परेषु नित्यं आर्किकुजेज्यचन्द्राः त्रिराशिपाः स्युः ॥ ६० ॥

दिन में वर्षप्रवेश होवे तो मेषादि चार राशियों के क्रम से सूर्य, शुक्र, शनि और शुक्र त्रिराशिपति होते हैं, और रात्रि में मेषादि चार राशियों के बृहस्पति, चन्द्रमा, बुध, मंगल त्रिराशिपति होते हैं, और सिंह आदि चार राशियों में इससे विपरीत त्रिराशिपति जानना अर्थात् दिन में वर्ष प्रवेश होवे तो सिंह आदि चार राशियों के स्वामी गुरु, चन्द्र, बुध, मंगल, और रात्रि में सिंह आदि ४ राशियों के सूर्य, शुक्र, शनि और शुक्र त्रिराशिपति होते हैं, और सदा अर्थात् चाहे दिन हो या रात्रि धन आदि चार राशियों के शनि, मंगल, बृहस्पति और चन्द्रमा यह त्रिराशिपति होते हैं ॥ ६० ॥

अथ त्रिराशिपतिचक्रम्।

रा.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मकर	कुम्भ	मीन
दिने	सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रौ	बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

त्रिराशिपतियों के प्रयोजन—

वर्षेशार्थं दिननिशाविभागोक्तास्त्रिराशिपाः।
पंचवर्गीबलाद्यर्थं द्रेष्काणेशान् विचिन्तयेत् ॥ ६१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६१ ॥

दिन रात्रि के विभाग से वर्षेश जानने के निमित्त त्रिराशिपतियों को कहा है, और पंचवर्गी बल के निमित्त पूर्वोक्त द्रेष्काणस्वामियों का चिन्तन करना चाहिये ॥ ६१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर्षेश निर्णयार्थ पंचाधिकारी—

जन्मलग्नपतिरब्दलग्नपो मुन्थहाधिप इतस्त्रिराशिपः ।
सूर्यराशिपतिरह्नि चंद्रभाधीश्वरो निशि विमृश्य पञ्चकम् ॥६२॥

अन्वयः—पूर्वार्धं स्पष्टम् । अह्नि (चेत्वर्षप्रवेशस्तदा) सूर्यराशिपतिः निशि (चेत्तदा) चन्द्रभाधीश्वरो इति पंचकम् विमृश्य ॥ ६२ ॥

१. जन्मलग्न का स्वामी २. वर्ष लग्न का स्वामी ३. मुन्था का स्वामी ४. त्रिराशिपति ५. दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य राशि का स्वामी और रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्रमा की राशि का स्वामी ये पाँचों वर्षपति होने के अधिकारी होते हैं ॥ ६२ ॥

वर्षेशनिर्णय प्रकार—

बलीय एषां तनुमीक्षमाणः स वर्षपो लग्नमनीक्षमाणः ।
नैवाब्दपो दृष्ट्यतिरेकतः स्याद्बलस्य साम्ये विदुरेवमाद्याः ॥६३॥

अन्वयः—एषां (पंचाधिकारीणां मध्ये) योबली तनुं ईक्षमाणः सवर्षपः । लग्नमनीक्षमाणः नैवाब्दपः । बलस्य साम्ये दृष्ट्यतिरेकतः वर्षपः स्यादेवं आद्याः विदुः ॥ ६३ ॥

पूर्वोक्त पाँच अधिकारियों के मध्य में जो ग्रह पंचवर्गी में अधिक बलवान् होकर लग्न को देखता हो वही वर्ष का स्वामी होता है और लग्न को नहीं देखे तो वर्ष पति नहीं होता है तथा पंचाधिकारी ग्रहों का बल बराबर हो तो लग्न पर जिसकी अधिक दृष्टि हो उसको वर्षेश पूर्वाचार्यो ने कहा है ॥ ६३ ॥

दृष्टि की समता में वर्षेश का निर्णय—

दृगादिसाम्येऽप्यथ निर्बलत्वे वर्षाधिपः स्यान्मुथहेश्वरस्तु ।
पञ्चापि चेन्नो तनुमीक्षमाणो वीर्याधिकोऽब्दस्य विभुर्विचिंत्यः ॥६४॥

अन्वयः—दृगादिसाम्येऽपि अथ निर्बलत्वे मुथहेश्वरः वर्षाधिपः स्यात् । चेत् पंचापि तनुं न ईक्षमाणः सदा हि वीर्याधिकः अब्दस्य विभुर्विचिन्त्यः ॥६४॥

पूर्वोक्त पांचो अधिकारियों की दृष्टि लग्न पर बराबर हो आदि शब्द से बल भी बराबर हो अथवा पाँचों निर्बल होवे तो मुंथहा का स्वामी वर्षेश होता है । तथा जो पाँचों अधिकारियों में कोई भी लग्न को नहीं देखता हो तो उनमें जो अधिक बलवान् हो वही वर्ष का स्वामी होता है ॥ ६४ ॥

मतान्तर से दृष्टिबल की समता में वर्षेश का निर्णय—

बलादिसाम्ये रविराशिपोऽह्नि निशीन्दुराशीडिति केचिदाहुः ।
ऐनेत्थशालोऽब्दविभुः शशी स वर्षाधिपश्चन्द्रभपोऽन्यथात्वे ॥६५॥

अन्वयः—बलादिसाम्ये अह्नि रविराशिपः, निशि इन्दुराशीट् इति केचि-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दाहुः। (यदि) अब्दविभुः शशी स येनेत्थशालः (स) वर्षाधिप अन्यथात्वे चन्द्रभपः (वर्षेश्वरः स्यात्) ॥ ६५ ॥

पांचों अधिकारियों का पंचवर्गी में बल समान हो, तथा लग्न पर समान दृष्टि हो तो ऐसी अवस्था में दिन में वर्षप्रवेश होने से सूर्यस्थित राशि का स्वामी वर्षेश होता है। रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्रमा जिस राशि पर स्थित हो उस राशि का स्वामी वर्षेश होता है ऐसा किसी आचार्य का मत है। जो वर्ष का स्वामी किसी प्रकार से चन्द्रमा हो तो चन्द्रमा पंचाधिकारियों में जिस ग्रह के साथ इत्थशाल योग करता हो वह वर्षेश होता है अन्यथा (इत्थशाल के अभाव से) अर्थात् चन्द्रमा किसी ग्रह के साथ इत्थशाल न करता हो तो चन्द्रमा जिस राशि पर स्थित हो उस राशि का स्वामी वर्षेश जानना चाहिये ॥ ६५ ॥

मुंथहा के जानने का प्रकार—

स्वजन्मलग्नात्प्रतिवर्षमेकैकराशिभोगान्मुन्थहाभ्रमेण ।
स्वजन्मलग्नं रवितष्टयातं शरघ्नुतं सा भमुखेन्थिहा स्यात् ॥६६॥
प्रत्यहं शरलिप्ताभिर्वर्द्धते सानुपाततः ।
सार्धमंशद्वयं मास इत्याहुः केऽपि सूरयः ॥ ६७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६६–६७ ॥

अपने जन्म लग्न से प्रत्येक वर्ष एक-एक राशि भोग करता हुआ मुन्थहा परिभ्रमण करता है जैसे जन्म समय मिथुन लग्न है, तो प्रथम वर्ष में मुन्था मिथुन राशि पर जानना, दूसरे वर्ष में कर्क राशि पर, तीसरे वर्ष में सिंह पर इत्यादि बहुत वर्ष संख्या होने से मुन्था के लाने का प्रकार सरलता से कहते हैं कि जन्म समय जो लग्न हो, उसी संख्या में गतवर्ष की संख्या को जोड़ देवे अनन्तर उसमें बारह का भाग देवे, भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या वाली राशि पर मुन्था की स्थिति जानना, मुन्था की दैनिक गति ५ कला है, इसपर से अनुपात द्वारा मास में ढाई २½ अंश मुन्थहा का चलन होता है ऐसा किसी का मत है ॥ ६६–६७ ॥

मुन्थहा निकालने का उदाहरण—

जन्मलग्न राश्यादि २।७।३१।३१ इसमें गतवर्ष संख्या २१ को जोड़ दिया तो २३।७।३१।३१ हुआ इसमें १२ का भाग दिया तो शेष राश्यादि ११।७।३१।३१ मुन्थहा हुआ अर्थात् मीन राशि पर मुन्थहा हुआ।

राहु के मुख, पीठ व पूंछ के लक्षण—

भोग्या राहोर्लवास्तस्य मुखं पृष्ठं गता लवाः ।
ततः सप्तमभं पुच्छं विमृश्येति फलं वदेत् ॥ ६८ ॥

अन्वयः—राहोः भोग्याः लवास्तस्य मुखं, गताः (भुक्ताः) लवाः पृष्ठं, ततः सप्तमभं पुच्छं इति विमृश्य फलं वदेत् ॥ ६८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राहु जिस राशि में स्थित होवे उसके भोग्य अंश मुख संज्ञक होते हैं और भुक्त अंश पृष्ठ संज्ञक कहे जाते हैं. तथा उस राशि से सातवीं राशि पूँछ संज्ञक है, यह विचार कर मुन्थहा के फल को कहे ॥ ६८ ॥

जन्मलग्न का स्वामी बुध, वर्ष लग्न का स्वामी शुक्र, मुन्था राशि का स्वामी गुरु, त्रिराशिपति शनी और रात में वर्ष प्रवेश है इसलिये चन्द्र राशि का स्वामी मङ्गल है ये ही इस वर्ष में पञ्चाधिकारी हुये इन सभी पंचाधिकारियों में लग्न को देखने और अधिक बली होने से इस वर्ष का स्वामी शनि हुआ ।

श्रीगर्गान्वयभूषणो गणितविच्चिन्तामणिस्तत्सुतो-
ऽनन्तोऽनन्तमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यै जनुः पद्धतिम् ।
तत्सूनुः खलु नीलकण्ठविबुधो विद्वच्छिवानुज्ञया
सत्तुष्ट्यै व्यदधाद् ग्रहप्रकरणं संज्ञाविवेकेऽमलम् ॥ ६९ ॥

अन्वयः— श्रीगर्गान्वयभूषणः (श्रीगर्गाचार्यवंशे श्रेष्ठः) गणितवित् (गणितं वेत्तीति गणितवित् ज्योतिःशास्त्रविज्ञः) चिन्तामणिरिति नामा (कश्चिदासीत् तत्सुतः) अनन्तमतिः (अनन्तगुणसम्पन्नमतिः) अनन्तनामा यः खलमतध्वस्त्यै (दुष्टमतनिरसनाय) जनुः पद्धतिं (उत्पन्नबालकादेस्तज्जन्मकालमधिकृत्य शुभाशुभनिरूपकं शास्त्रम्) व्यधात् (कृतवान्) खलु (निश्चयेन) तत्सूनुः (तस्य पुत्रः) नीलकण्ठविबुधः विद्वच्छिवानुज्ञया सन्तुष्ट्यै (सतां सन्तोषार्थम्) संज्ञाविवेके (संज्ञातन्त्रे) अमलं निर्मलं ग्रहप्रकरणं व्यदधात् रचितवानित्यर्थः ॥ ६९ ॥

इति श्रीदैवज्ञानन्तसुतनीलकण्ठदैवज्ञविरचितायां नीलकण्ठ्यां संज्ञातन्त्रे
प्रथम ग्रहप्रकरणं समाप्तम् ॥ १ ॥

श्रीगर्गाचार्यजी के वंश में श्रेष्ठ गणित शास्त्र को जाननेवाला कोई चिन्तामणि नाम का पण्डित था, उनके पुत्र अत्यन्त बुद्धिमान् अनन्त नामक हुये जिन्होंने दुष्टों के मत को नाश करने के लिये जातकपद्धति को बनाया, इनके पुत्र नीलकण्ठ नामक विद्वान् शिवजी की आज्ञा से सज्जनों के प्रसन्नार्थ संज्ञा प्रकरण में सुन्दर ग्रह प्रकरण को बनाया ॥ ६९ ॥

इति भाषाटीकायां संज्ञातन्त्रे प्रथमं ग्रहप्रकरणं समाप्तम् ॥ १ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ द्वितीयप्रकरणं प्रारभ्यते ।

सूर्य का स्वरूप—

सूर्यो नृपो ना चतुरस्रमध्यं दिनेन्द्रदिक् स्वर्णचतुष्पदोग्रः ।
सत्त्वं स्थिरस्तिक्तपशुक्षितिस्तु पित्तं जरन्पाटलमूलवन्यः ॥ १ ॥

अन्वयः—नृपः ना चतुरस्रमध्यं दिनेन्द्रदिक् स्वर्णचतुष्पदोग्रः सत्वं स्थिरस्तिक्तपशुक्षितिस्तु पित्तं जरन्पाटलमूलवन्यः एवंगुणविशिष्टः सूर्यः ॥१॥

सूर्य क्षत्रियवर्ण, पुरुषग्रह, चौकोनस्वरूप, मध्याह्न समय में बलवान्, पूर्वदिशा का स्वामी, सुवर्ण का स्वामी तथा चौपाये (हाथी, घोड़ा आदि) का प्रभु, क्रूर, सतोगुणी, स्थिर स्वभाव, तीखा रस प्रिय, पशुभूमिचारी, पित्तप्रकृति, वृद्धावस्था, पाटल (लाल, सफेद मिला) वर्ण, मूल से उत्पन्न धान्यादिकों का अधिष्ठाता, वनचारी ऐसा सूर्य का स्वरूप है ॥ १ ॥

चन्द्रमा का स्वरूप—

वैश्यः शशी स्त्री जलभूस्तपस्वी गौरो पराह्णांबुगधातुसत्त्वम् ।
वायव्यदिक्श्लेष्मभुजङ्गरूप्यस्थूलो युवा क्षारशुभः सिताभः ॥२॥

अन्वयः—वैश्यः स्त्री जलम् तपस्वी गौरोपराह्णाम्बुगधातुसत्वम् वायव्यदिक्श्लेष्मभुजंगरूप्यस्थूलो युवा क्षारशभः सिताभः एवंगुण विशिष्टश्चन्द्रः ॥ २ ॥

वैश्यजाति, स्त्रीसंज्ञक अथवा स्त्रियों का प्रिय, गीली भूमि में गमन करनेवाला, तपस्वी, गौरवर्ण, पराह्णकाल में बलवान्, जलचारी, कांस्य व गेरू आदि धातुओं का स्वामी, सतोगुणी, वायु दिशा का स्वामी, कफप्रकृति, सर्पों का स्वामी, रूपा आदि धातुओं का स्वामी, पुष्ट शरीर, युवा अवस्था, लवणरस का स्वामी, शुभग्रह, सफेद वर्ण तथा उज्ज्वल कांति ऐसा चन्द्रमा का स्वरूप है ॥ २ ॥

मङ्गल का स्वरूप—

भौमस्तमः पित्तयुवोग्रवन्यो मध्याह्नधातुर्यमदिक्चतुष्पात् ।
नाराट्चतुष्कोणसुवर्णकारो दग्धावनीव्यङ्गकटुश्च रक्तः ॥ ३ ॥

अन्वयः—तमः पित्तयुवोग्रवन्यो मध्याह्न धातुर्यमदिक् चतुष्पात्, नाराट् चतुष्कोणसुवर्णकारो दग्धावनी व्यङ्गकटुश्च रक्तः एवंगुणविशिष्टो भौमः ॥ ३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तमोगुणवाला, पित्तप्रकृति, युवा अवस्था, क्रूर, वनचारी, मध्याह्नकाल में बलवान्, धातुओं का स्वामी, दक्षिण दिशा का स्वामी, चौपायों (घोड़ा, हाथी आदि) का प्रभु, पुरुषसंज्ञक, क्षत्रियवर्ण, चौकोन, सुनारों का स्वामी, दग्ध पृथिवी पर गमन करनेवाला, कुछ अंग रहित, कडुआ रस का प्यारा, लाल द्रव्यों का अधिपति है, ऐसा मंगल का स्वरूप है ॥ ३ ॥

अथ बुध का स्वरूप—

ग्राम्यः शुभो नीलसुवर्णवृत्तः शिश्लिष्टकोच्चः समधातुजीवः ।
श्मशानयोषोत्तरदिग्प्रभातं शूद्रः खगः सर्वरसो रजोज्ञः ॥ ४ ॥

अन्वयः—ग्राम्यः शुभो नीलसुवर्णवृत्तः शिश्लिष्टकोच्चः समधातुजीवः, श्मशानयोषोत्तरदिग्प्रभातं शूद्रःखगः सर्वरसः रजः एवंगुणविशिष्टोज्ञः ॥ ४ ॥

ग्राम में रहनेवाला, शुभ, नीलवर्ण, सुवर्ण आदि द्रव्यों का स्वामी, गोल आकार, बाल अवस्था, ईंट की ऊँची भूमि में विचरनेवाला, वात, पित्त, कफात्मक, मनुष्यादि जीवों का प्रभु, श्मशानभूमिवासी, स्त्रीसंज्ञक, उत्तर दिशा का स्वामी, प्रातःकाल में बलिष्ठ, शूद्र वर्ण पक्षियों का प्रभु, कटु आदि सम्पूर्ण रसों का स्वामी, रजोगुण, ऐसा बुध का स्वरूप है ॥ ४ ॥

गुरु का स्वरूप—

गुरुः प्रभाते नृशुभेशदिग्द्विजः पीतो द्विपाद्ग्राम्यसुवृत्तजीवः ।
वाणिज्यमाधुर्य्यसुरालयेशो वृद्धः सुरत्नं समधातुसत्त्वम् ॥५॥

अन्वयः—प्रभाते नृशुभेशदिग्द्विजः पीतो द्विपाद्ग्राम्यसुवृत्तजीवः वाणीज्य-माधुर्य्यसुरालयेशो वृद्धः सुरत्नं समधातुसत्वम् एवं गुणं विशिष्टः गुरुः ॥ ५ ॥

बृहस्पति प्रातःकाल में बलवान्, पुरुष संज्ञक, शुभग्रह, ईशान दिशा का स्वामी, ब्राह्मण वर्ण, पीत वर्ण, द्विपद जीवों का स्वामी, ग्रामचारी, गोल आकार, मनुष्यादि जीवों का अधिपति, वाणिज्य कर्म का कर्ता, मधुरप्रिय, देवालय स्वामी, वृद्धावस्था, सुन्दर रत्नों का स्वामी, वात, पित्त, कफात्मक, सतोगुणी यह बृहस्पति का स्वरूप है ॥५॥

शुक्र का स्वरूप—

शुक्रः शुभः स्त्रीजलगोऽपराह्णः श्वेतः कफी रूप्यरजोऽम्लमूलम् ।
विप्रोऽग्निदिङ्मध्यवयोरतीशो जलावनीस्निग्धरुचिर्द्विपाच्च ॥ ६ ॥

अन्वयः—शुभः स्त्रीजलगोऽपराह्णः श्वेतः कफी रूप्यरजोऽम्लमूलम्, विप्रोऽ-ग्निदिङ्मध्यवयोरतीशो जलावनीस्निग्धरुचिर्द्विपाच्च एवंगुणविशिष्टः शुक्रः ॥६॥

शुभसंज्ञक, स्त्री ग्रह, जलचारी, पराह्ण काल में बलवान्, सफेद वर्ण, कफ प्रकृति, रूप्य आदि द्रव्यों का स्वामी, रजोगुणी, खट्टे रसों का अधिपति, मूल से उत्पन्न धान्य आदिकों का स्वामी, ब्राह्मण जाति, आग्नेय दिशा का स्वामी, युवा अवस्था, सुरत क्रीडा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का ईश, जलवाली पृथ्वी का स्वामी, चिकनी कांतिवाला, द्विपद (मनुष्यादि) का प्रभु ऐसा शुक्र का स्वरूप है ॥ ६ ॥

शनैश्चर का स्वरूप—

शनिर्विहङ्गोऽनिलवन्यसन्ध्याशूद्रांगनाधातुसमः स्थिरश्च ।
क्रूरः प्रतीचीतुवरोऽतिवृद्धोत्करक्षितीट् दीर्घसुनीललोहम् ॥ ७ ॥

अन्वयः—विहङ्गोऽनिलवन्यसन्ध्याशूद्राङ्गनाधातुसमः स्थिरश्च क्रूरः प्रतीचीतुवरोऽतिवृद्धोत्करक्षितीट् दीर्घसुनीललोहम् एवं गुणविशिष्टः शनिः ॥ ७ ॥

पक्षियों का स्वामी, वायुचारी, वनवासी, सन्ध्या समय में बलवान्, शूद्र जाति स्त्री संज्ञक, धातुसमान (वातपित्तकफात्मक) स्थिरस्वभाव, क्रूर, पश्चिम दिशा का स्वामी, अतिवृद्ध (बहुत बूढ़ा) ऊसर भूमि का स्वामी, लम्बे आकारवाला, बहुत काला रङ्ग, लोह धातु का प्रभु यह शनैश्चर का स्वरूप है ॥ ७ ॥

राहु और केतु का स्वरूप—

राहुस्वरूपं शनिवन्निषादजातिर्भुजंगोऽस्थिपनैर्ऋतीशः ।
केतुः शिखी तद्वदनेकरूपः खगस्वरूपात्फलमूह्यमित्थम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—राहुस्वरूपं शनिवन्निषादजातिभुर्जंगोऽस्थिपनैर्ऋतीशः, तद्वत् केतुः शिखी अनेकरूपः इत्थं खगस्वरूपात्फलं ऊह्यम् ॥ ८ ॥

राहु का स्वरूप शनैश्चर के स्वरूप के समान है, परन्तु विशेषता इतनी है कि राहु चाण्डाल जाति, सर्पों का स्वामी, हड्डियों का प्रभु, नैर्ऋत्य दिशा का स्वामी है । केतु बडी चोटी वाला, अनेक स्वरूप को धारण करने वाला है, इस प्रकार ग्रहों के स्वरूप से फल को कहना चाहिये ॥ ८ ॥

ग्रहों की दृष्टि—

दृष्टिः स्यान्नवपञ्चमे बलवती प्रत्यक्षतः स्नेहदा
पादोनाखिलकार्यसाधनकरी मेलापकाख्योच्यते ।
गुप्तस्नेहकरी तृतीयभवभे कार्यस्य संसिद्धिदा
त्र्यंशोना कथिता तृतीयभवने षड्भागदृष्टिर्भवे ॥ ९ ॥

अन्वयः—दृष्टिः नवपंचमे बलवती प्रत्यक्षतः स्नेहदा स्यात् पादोनाखिलकार्यसाधनकरी मेलापकाख्या उच्यते । तृतीयभवने (या दृष्टिः सा) गुप्तस्नेहकरी कार्यस्य संसिद्धिदा तृतीयभवने त्र्यंशोना कथिता, भवे षड्भाग दृष्टिः स्यात् ॥ ९ ॥

ताजिक शास्त्र में ४ चार प्रकार की दृष्टि होती है । १ प्रत्यक्षस्नेहा, २ गुप्तस्नेहा, ३ गुप्तवैरा, ४ प्रत्यक्षवैरा, कुण्डली में जो ग्रह जिस स्थान में हो उस स्थान से नवें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और पांचवें स्थान में स्थित ग्रह को देखता है वह दृष्टि बलवान और प्रत्यक्ष प्रीति को देनेवाली होती है। चतुर्थांशोन अर्थात् पैंतालीस कलावाली सम्पूर्ण कार्यों को सिद्ध करनेवाली (मेलापका) नामक अर्थात् परस्पर प्रीति को करनेवाली दृष्टि होती है यह प्रथम दृष्टि है, जिस स्थान में ग्रह बैठा हो वहाँ से तीसरे स्थान में तथा ग्यारहवें स्थित ग्रह को देखता है यह दृष्टि गुप्त (छिपे हुए) स्नेह को करनेवाली और कार्यों को सिद्ध करनेवाली होती है, यह दृष्टि, तीसरे घर में तिहाई कम अर्थात् चालीस कला की और ग्यारहवें घर में षष्ठांश दश कला की होती है ॥ ९ ॥

दृष्टिः पादमिता चतुर्थदशमे गुप्तारिभावास्मृता-
ऽन्योन्यं सप्तमभे तथैकभवने प्रत्यक्षवैराऽखिला ।
दुष्टं दृक्त्रितयं क्षुताह्वयमिदं कार्यस्य विध्वंसदं
संग्रामादिकलिप्रदं दृश इमाः स्युर्द्वादशांशांतरे ॥ १० ॥

अन्वयः—चतुर्थदशमे (या दृष्टिः सा) पादमिता गुप्तारिभावा स्मृता। अन्योन्यं सप्तमभे तथा एकभवने (या दृष्टिः साः) अखिला प्रत्यक्षवैरा च। इदं दृक्त्रितयं (चतुर्थ दशम अन्योन्य सप्तम तथैक भवनं) क्षुताह्वयं कार्यस्य विध्वंसदं संग्रामादि कलिप्रदं भवति। इमा (दृशो) द्वादशांशांतरे स्युः ॥ १० ॥

जिस स्थान में ग्रह बैठा हो उस स्थान से चौथे और दशवें स्थान में बैठे हुए ग्रह को देखता है, यह दृष्टि छिपे हुए वैर भाव को करनेवाली पंद्रह कला की होती है और परस्पर सातवें तथा एकही घर में स्थित ग्रह जिस ग्रह को देखता है यह दृष्टि प्रत्यक्ष वैर को देनेवाली सम्पूर्ण साठ कला की होती है, ये ३ दुष्ट दृष्टियाँ सम्पूर्ण शुभ कामों का नाश करनेवाली संग्राम आदि युद्धकारक क्लेशों को देनेवाली है यदि द्रष्टा और दृश्य का अन्तर बारह (अंशों से अधिक) न हो तो ये दृष्टियाँ—जैसा फल कहा है—उसकी देनेवाली होती हैं अन्यथा द्रष्टा और दृश्य का अन्तर यदि बारह अंशों से अधिक होगा तो ये दृष्टियाँ यथोक्त फल को देने वाली नहीं होती हैं ॥ १० ॥

अपास्य पश्यन्निजदृश्यखेटा-
देकादिशेषे ध्रुवलिप्तिकाः स्युः ।
पूर्णं० खवेदा ४० स्तिथयो १५ऽक्षवेदाः ४२
खं० षष्टि ६० रभ्रं० शरवेद ४५ संख्याः ॥ ११ ॥
तिथ्यः १५ खचन्द्रा १० वियद० भ्रतर्काः ६०
शेषांकयातैष्यविशेषघातात् ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लब्धं खरामै ३० रधिकोनकैष्ये
स्वर्णध्रुवेताः स्फुटदृष्टिलिप्ताः ॥ १२ ॥

अन्वयः—निजदृश्यखेटात् पश्यम् अपास्य एकादिशेषे पूर्णं खवेदास्तिथयोऽक्षवेदा खं षष्टिरभ्रं शरवेदसंख्याःतिथ्यःखचन्द्रा वियदभ्रतर्काः ध्रुवलिप्तिकाः स्युः । शेषांकयातैष्यविशेषघातात् खरामैः लब्धं, अधिकोनकैष्ये इताः ध्रुवाः स्वर्णं कार्यां तदा स्फुटदृष्टिलिप्ताः स्युः ॥ ११-१२ ॥

जो ग्रह देखता है वह द्रष्टा और जिसको देखता है वह दृश्य कहाता है, दृश्य ग्रह में द्रष्टा ग्रह को घटा देना एकादि शेष के अनुसार पूर्ण खवेदा इत्यादि ध्रुव दृष्टिकला होती है, (अर्थात् दृश्य ग्रह में द्रष्टा को घटाने से राशि स्थान में एक शेष रहे तो शून्य दो शेष रहे तो चालीस इसी प्रकार आगे भी समझना, इस प्रकार जो ध्रुवा मिली वह यात (गत) संज्ञक और उसके आगे वाला ध्रुवा ऐष्य (भोग्य) ध्रुवा होती है, शेष अंश कला विकला को गत और ऐष्य ध्रुवों के अन्तर से गुण देना और गुणनफल में ३० का भाग देना लब्धि को ऐष्यांक यदि गतांक से अधिक हो तो पूर्वोक्त गत ध्रुवा में धन करना यदि न्यून हो तो गत ध्रुवा में ऋण करना तो स्पष्ट दृष्टि कला होती है ॥ १२ ॥

अथ दृष्टिकलाः सान्तराङ्काश्चात्र लिख्यन्ते ।

राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ध्रुवांकाः	०	४०	१५	४५	०	६०	०	४५	१५	१०	०	६०
अन्तरांकाः	४०	२५	२०	४५	६०	६०	४५	३०	५	१०	६०	६०
ऋण धन	ध.	ऋ.	ध.	ऋ.	ध.	ऋ.	ध.	ऋ	ध.	ऋ.	ध.	ऋ.

ग्रहों की दृष्टि साधन का उदाहरण—

जैसे द्रष्टा सूर्य राश्यादि ११।०।४।२८ है और दृश्य मंगल ११।२१।३५।३६ है। दृश्य में द्रष्टा को घटाया शेष ०।२१।३१।८ हुआ । राशि के स्थान में ० याने १२० के नीचे ६० ध्रुवांक है और इसके आगे १ के नीचे ० ध्रुवांक है दोनों का अन्तर ६० हुआ इससे २१।३१।८ को गुणा किया तो गुणनफल १२९१।८ हुआ इसमें ३० का भाग दिया तो लब्धी ४३ कला २ विकला हुई, यहाँ ऐष्यांक गतांक से न्यून है इसलिए गतांक ६० में लब्धी को घटाया तो शेष १६।५८ मंगल के ऊपर सूर्यकी कलात्मिका दृष्टि हुई इसी प्रकार सभी ग्रहों की स्पष्ट कलात्मिका दृष्टि बनानी चाहिए ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दृष्टिचक्रम् ।

दृश्यग्रहाः

द्रष्टा	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सू.	० ०	१६ १७	१६ ५७	२७ २१	१९ ५५	३३ १६	२ २६
चं.	४३ २९	० ०	१५ ०	४० ५८	.१ ८	१८ ३१	२८ ८
मं.	१६ ५८	१५ २	० ०	१६ ३	२१ ३८	२१ ५८	९ ९
बु.	१८ ५७	२२ ५७	४ १	० ०	३६ ५५	५ ५४	४९ ३९
बृ.	१४ १२	४ २८	३१ ३९	१० ५१	० ०	१० २	११ ३६
शु.	१४ ५५	१८ ३०	५ ३०	५१ ७	३९ ५२	० ०	४० ४६
श.	२९ १९	२८ ७	२ १८	६ ५३	३१ ५२	१८ ४८	० ०

ताजिकोक्त ग्रहमैत्री और दीप्तांश—

पश्यन्मित्रदृशा सुहृद्रिपुदृशा शत्रुः समस्त्वन्यथा
तिथ्य१५र्का१२ष्ट८नगां७क९शैल७खचराः९सूर्यादिदीप्तांशकाः ।
चक्रे वामदृगुच्यते बलवती मध्याद्यथा वेश्मनी-
त्येकर्क्षेऽपि दृगुच्यतेऽर्थजननीत्येके विदुः सूरयः ॥ १३ ॥

अन्वयः—(यो ग्रहो यं ग्रहं) मित्रदृशा पश्यन् (स तस्य) सुहृत्, रिपुदृशा शत्रुः, अन्यथा समः ज्ञेयः । तिथ्यर्काष्टनगांकशैलखचराः सूर्यादिदीप्तांशकाः ज्ञेयाः । चक्रे वामदृक् बलवती उच्यते यथा मध्याद्वेश्मनि । एकर्क्षेऽपि (या) दृग् उच्यते (सा) अर्थजननी इति एके सूरयः विदुः ॥१३॥

जो ग्रह जिस ग्रह को मित्र दृष्टि से (नवीं, पाचवीं, तीसरी, ग्यारहवीं, दृष्टि) से, देखता है वह ग्रह उसका मित्र होता है और जो ग्रह शत्रु दृष्टि से (अर्थात् चौथी, दसवीं, पहली और सातवीं दृष्टि) जिस ग्रह को देखता है वह उसका शत्रु जानना चाहिए अन्यथा अर्थात् मित्र और शत्रु दृष्टि के अभाव में परिशेष (दूसरे, छठें, आठवें, बारहवें इन स्थानों में) समता होती है । क्रम से १५, १२, ८, ७, ९, ७, ९ सूर्यादि ग्रहों का दीप्तांश है अर्थात् सूर्य का १५, चन्द्रमा का १२, मंगल का ८, बुध का ७, गुरु का ९, शुक्र का ७, और शनि का ९ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दृष्टि में विशेषता—लग्नादि द्वादश भावरूपी चक्र में वाम भाग में बैठे हुये ग्रह की दक्षिण भाग में बैठे हुये ग्रह के ऊपर जो दृष्टि है वह बलवान् होती है (लग्न से सप्तम भाव पर्यन्त ६ भावों को दक्षिण भाग और सप्तम से द्वादश भाव पर्यन्त ६ भावों को वाम भाग कहते हैं)। जैसे दशम स्थान में बैठे हुये ग्रह का चतुर्थ स्थान में बैठे हुये ग्रह के ऊपर जो दृष्टि है वह बलवान् होती है इसी प्रकार सभी भावों में समझना। एक राशि में बैठे हुये ग्रहों की भी परस्पर दृष्टि होती है यह दृष्टि धन को देने वाली होती है ऐसा कितने पण्डितों ने कहा है ॥ १३ ॥

यहाँ पर कितने नवीन टीकाकारों ने इस (मध्याद्यथा वेश्मनीत्यादि) दृष्टि के आशय को न समझकर "विश्वनाथ" ऐसे प्रगल्भ विद्वानों के टीका टिप्पणियों के उपर आक्षेप करते हुये उन्हीं के टीकादि को आधार मानते हुये स्वयं टीकाकार बनकर अर्थ का अनर्थ कर दिये हैं। विश्वनाथ के पूर्ववर्ती कितने ही वराह, हिल्लाजादि अनेक आचार्यों ने लग्नादि ६ भावों की दक्षिण और सप्तमादि द्वादश पर्यन्त ६ भावों की वाम संज्ञा की है, जैसा कि उदाहरणार्थ हिल्लाज ताजिक में हिल्लाज का वचन है—

यूनाच्च राशिषट्कं वाह्याख्यं चान्तरं लग्नात्।
वाह्यान्तरयोरपि संज्ञोक्ता वाम दक्षिणाख्या ॥

अर्थात् सप्तम भाव से व्यय भाव पर्यन्त ६ भावों का वाह्यसंज्ञा है और इसी को वाम भाग कहते हैं और लग्न से सप्तम भाव पर्यन्त १६ भावों का अन्तर संज्ञा और इसीको दक्षिण भाग कहते हैं। ऐसे प्राचीन आगमशास्त्रों में कहे हुये वचनों को न मानकर ग्रह से ही वाम और दक्षिण भाग कल्पना करनेवाले टीकाकारों से क्षात्रों को सावधान रहना चाहिये।

दीप्तांशों का प्रयोजन—

पुरः पृष्ठे स्वदीप्तांशैर्विशिष्टं दृक्फलं ग्रहः।
दद्यादतिक्रमे तेषां मध्यमं दृक्फलं विदुः ॥ १४ ॥

अन्वयः—स्वदीप्तांशैः पुरः पृष्ठे ग्रहे सति विशिष्टं दृक्फलं दद्यात् तेषां अतिक्रमे मध्यमं दृक्फलं विदुः ॥ १४ ॥

नवम आदि स्थानों में दृष्टि के होते हुए देखनेवाला ग्रह अपने दीप्तांशों करके आगे व पीछे स्थित होवे तो वह उत्कृष्ट नवम आदि स्थानों में स्थित दृष्टि फल को देता है, और यदि दीप्तांशों को उल्लंघन कर जावे तो वह साधारण दृष्टिफल को देता है ॥ १४ ॥

षोडश योगों के नाम—

प्रागिक्कवालोपर इन्दुवारस्तथेत्थशालोऽपर ईसराफः।
नक्तं ततः स्याद्यमया मणऊक कम्बूलतो गैरिकम्बूलनुक्तम् ॥ १५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खल्लासरं रद्दमथो दुफालिकुत्थं च दुत्थोत्थदिवीरनामा ।
तम्बीरकुत्थौ दुरफश्च योगाः स्युः षोडशैषां कथयामि लक्ष्म ॥१६॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १५-१६ ॥

पहला योग १ इक्कबाल, २ इन्दुवार, ३ इत्थशाल, ४ ईसराफ, ५ नक्त, ६ यमया, ७ मणाऊ, ८ कम्बूल, ९ गैरिकम्बूल ॥ १५ ॥ १० खल्लासर, ११ रद्द, १२ दुफालिकुत्थ, १३ दुत्थोत्थदिवीर, १४ तंबीर, १५ कुत्थ, १६ दुरफ, यह षोडश १६ योग हैं, अब इन सब योगों के लक्षण का वर्णन करता हूँ ॥ १६ ॥

इक्कवाल और इन्दुवार योग का लक्षण--

चेत्कण्टके पणफरे च खगाः समस्ताः
स्यादिक्कवाल इति राज्यसुखाप्तिहेतुः ।
आपोक्लिमे यदि खगाः स किलेन्दुवारो
न स्याच्छुभः क्वचन ताजिकशास्त्रगीतः ॥१७॥

अन्वयः—चेत् समस्ताः खगाः कंटके पणफरे च (स्थितास्तदा) इक्कवाल (योगः स्यात्) इति राज्यसुखाप्तिहेतुः, यदि समस्ताः खगाः आपोक्लिमे तदा इन्दुवार योगः (स्यात्) सकिल ताजिकशास्त्रगीतः क्वचन शुभोः न स्यात् ॥ १७ ॥

यदि सभी ग्रह कण्टक (प्रथम, चतुर्थ, सप्तम व दशम) और पणफर (द्वितीय, पञ्चम, अष्टम, एकादश) स्थान में स्थित होवें तो इक्कवाल योग होती है (फारसी में इक्कवाल को एकवाल कहते हैं, एकवाल माने तरक्की होती है) यह इक्कवाल योग राज्य और सुख प्राप्ति का हेतु है अर्थात् अत्यन्त शुभ फल को देनेवाला होता है, तथा आपोक्लिम (तृतीय, षष्ठ, नवम और द्वादश) स्थान में सभी ग्रह हों तो इन्दुवार योग होता है इसको यवन भाषा में इदवार कहते हैं यह ताजिक शास्त्रमें गाया हुआ इंदुवार निश्चय करके कहीं भी (वर्ष प्रवेश व मास प्रदेशादिकों में) शुभदायी नहीं होता है ॥१७॥

इत्थशाल अर्थात् मुथशिल योग का लक्षण--

शीघ्रोऽल्पभागैर्घनभागमन्देऽग्रस्थे निजं तेज उपाददीत ।
स्यादित्थशालोऽयमथो विलिप्ता लिप्तार्धहीनो यदि पूर्णमेतत् ॥१८॥

अन्वयः—शीघ्रोऽल्पभागैर्घनभागमंदेऽग्रस्थे निजं तेजः उपाददीत अयम् इत्थशालः स्यात् । अथ यदि (शीघ्रगतिग्रहः संदगतिग्रहात्) विलिप्ता लिप्तार्धहीनस्तदा एतत् (मुथशिलं) पूर्णम् स्यात् ॥ १८ ॥

जिन दो ग्रहों का मुथशिल योग विचार करना हो उन ग्रहों के मध्य में जिस ग्रह की गति अधिक हो वह शीघ्र गतिवाला ग्रह होता है । और जिसकी गति न्यून हो (अर्थात् चाल कमती हो) वह मन्द गतिवाला ग्रह कहा जाता है । शीघ्र गति वाले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्रह के अल्प (थोड़े) भाग (अंश) हों और मंद गतिवाले ग्रह के घन (बहुत) भाग (अंश) हों और शीघ्र गतिवाले ग्रह से मंदगतिवाला ग्रह अगाड़ी स्थित होवे तो शीघ्र गतिवाला ग्रह मंदगतिवाले ग्रह को अपना तेज (सामर्थ्य) देता है यह इत्थशाल योग होता है। इसी का दूसरा नाम फारसी में मुथशिल माने मिलाप होते हैं, शीघ्रगति वाले ग्रह के दीप्तांशों से मन्द गतिवाला ग्रह अधिक अंश हो और दोनों में परस्पर दृष्टि हो तो मुथशिल योग होता है यही जानना चाहिए।

पूर्ण मुथशिल योग का वर्णन—यदि शीघ्र गति ग्रह मंद गति ग्रह से एक विकला-मात्र कम हो अथवा आधी विकला कम हो तो यह पूर्ण बीस विश्वाओं वाला मुथशिल योग होता है और जब दोनों ग्रहों की विकला पर्यंत अवयवों से समानता हो तब पूर्ण मुथशिल योग होता है, यह अर्थ से ही सिद्ध होता है ॥ १८ ॥

पूर्ण मुथशिल योग

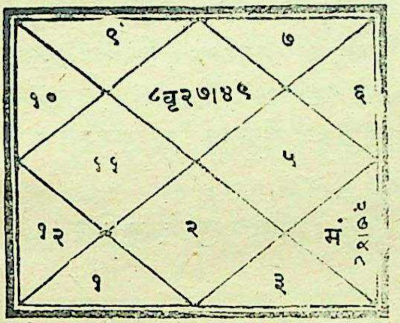

धन भाव का विचार करना है—

लग्नेश मंगल और कार्येश गुरू है इन दोनों में परस्पर दृष्टि है, तथा दोनों में शीघ्र गति मंगल मन्द गति बृहस्पति से एक कला मात्र न्यून है इसलिये पूर्ण मुथशिल योग हुआ। इसलिये धन का लाभ पूर्ण हो गया।

वर्त्तमानमुथशिलयोग

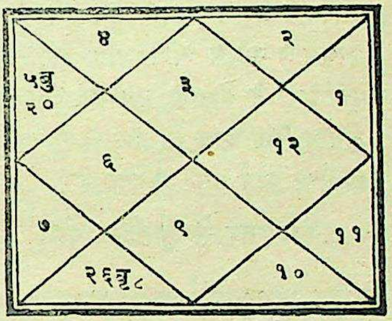

राज्य प्राप्ति का प्रश्न है—

लग्नेश बुध और कार्येश बृहस्पति है दोनों में परस्पर दृष्टि है और शीघ्रगति बुध मंदगति बृहस्पति से कम अंश हैं अतः वर्त्तमान मुथशिल योग हुआ। इसलिये साधारण राज्यप्राप्ति का योग है।

इत्थभाव में मुथशिल तथा त्रिविध मुथशिल लक्षण—

शीघ्रो यदा भान्त्यलवस्थितः सन् मन्देऽग्र्यभस्थे निदधाति तेजः।
स्यादित्थशालोऽयमथैष शीघ्रदीप्तांशकांशैरिह मन्दपृष्टे ॥ १९ ॥
तदा भविष्यद्गणनीयमित्थालं त्रिधैवं मुथशीलमाहुः।
लग्नेशकार्याधिपयोर्यथैव योगस्तथा कार्यमुशन्ति सन्तः ॥ २० ॥

अन्वयः—यदा शीघ्रः भान्त्यलवस्थितः सन् अग्र्यभस्थे मन्दे तेजः निदधाति तदा अयम् इत्थशालः स्यात्। अथ एषः शीघ्रः (स्व) दीप्तांशकांशैः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इह मन्दपृष्ठे तदा इत्थशालं भविष्यद् गणनीयं, एवं त्रिधामुथशिलं आहुः, लग्नेशकार्याधिपयोः यथा एषः योगः स्यात्तथा कार्यं सन्तः उशन्ति ॥१९-२०॥

जब शीघ्रगति ग्रह राशि के अन्तिम अंश अर्थात् तीसवें अंश में स्थित होकर अग्रिम राशि में स्थित मन्द गतिवाले ग्रह को अपने तेज (सामर्थ्य) को देता है, भावार्थ यह है कि—शीघ्रगति ग्रह राशि के अन्त में स्थित हो और मन्दगति ग्रह शीघ्रगति ग्रह के दीप्तांशावधि अंशों में होकर आगे की राशि में स्थित होवे, तब शीघ्र गतिवाला ग्रह मन्द गतिवाले ग्रह में अपने तेज को स्थापित करता है, तभी यह इत्थशाल नामक योग होता है।

अब भविष्य (होनेवाले) मुथशिल योग को कहते हैं— जब शीघ्रगतिवाला ग्रह अपने दीप्तांशों से अधिक अंशों से मन्दगतिवाले ग्रह से पीछे स्थित होकर (अर्थात् शीघ्र मन्दगति ग्रह के अंशों के अन्तर शीघ्र गति ग्रह के दीप्तांशों से अधिक हो) मन्द गतिवाले ग्रह को अपना तेज देने की कामना करता है तब भविष्यत् (आगे होनेवाला) इत्थशाल नामक योग होता है। तीन यों प्रकार का इत्थशाल (मुथशिल) योग पूर्वाचार्यों ने कहा है, मुथशिल योग का फल—लग्न का स्वामी और कार्य्य का स्वामी अर्थात् जिस भाव का प्रश्न किया जावे उसका स्वामी इन दोनों का जैसा मुथशिल योग हो वैसा कार्य सन्तों ने कहा है।

प्रकारान्तर से मुथशिल योग

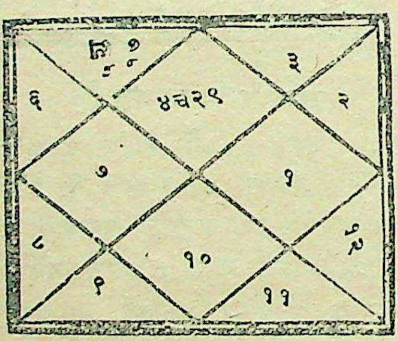

लाभ सम्बन्धी प्रश्न है—

लग्नेश चन्द्रमाशीघ्रगति है और राश्यन्त में बैठा है और कार्येश शुक्र उसके आगे राशि में बैठा है अतः दोनों का इत्थशाल होगा इसलिये धन का लाभ होगा ऐसा कहना चाहिये।

भविष्य मुथशिल योग

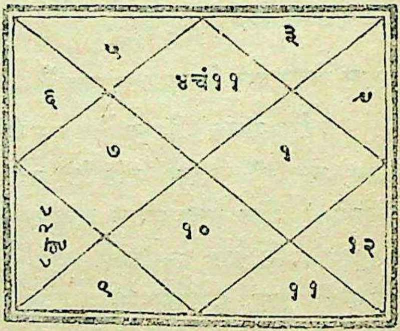

भाग्योदय का प्रश्न है—

यहाँ पर लग्नेश शीघ्रगति ग्रह चन्द्रमा अपने दीप्तांश के अन्दर है तथापि दोनों लग्नेश और कार्येश का अंशान्तर १५ चन्द्रमा के दीप्तांश से अधिक है अतः आगे दोनों का इत्थशाल होगा, इसलिये भाग्योदय भी आगे होगी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकारान्तर से मुथशिल योग का विचार—

लग्नेशकार्याधिपतत्सहाया यत्र स्युरस्मिन्पतिसौम्यदृष्टे ।
तदा बलाढ्यं कथयन्ति योगं विशेषतः स्नेहदृशाऽपि सन्तः ॥२१॥

अन्वयः— लग्नेशकार्याधिपतत्सहाया यत्र स्युः अस्मिन्पतिसौम्यदृष्टे, तदा बलाढ्यं योगं कथयन्ति, विशेषतः स्नेहदृशाऽपि सन्तः बलाढ्यं योगं कथयन्ति ॥ २१ ॥

लग्नेश (लग्न का स्वामी) और कार्येश (कार्य का स्वामी) और इन दोनों के सहायक ग्रह अर्थात् मित्र ये चारों जिस राशि में बैठे हों वह राशि यदि अपने स्वामी और शुभग्रह से देखी जाती हो तो इत्थशाल योग बलवान होता है । विशेष करके स्नेह दृष्टि से देखी जाती हो तो अधिक बलवान योग सन्तों ने कहा है ॥ २१ ॥

पुनः प्रकारान्तर से फल विचार—

स्वर्क्षादिसत्स्थानगतः शुभैश्चेद्युतेक्षितोऽभूद्भविताऽथवाऽस्ते ।
तदा शुभं प्रागभवत्सुपूर्णमग्रे भविष्यत्यथ वर्तते च ॥ २ ॥

अन्वयः—(लग्नाधिपः कार्याधिपश्च) स्वर्क्षादिसत्स्थानगतः शुभैश्चेद्युतेक्षितोऽभूत् तदा शुभं प्रागभवत् पूर्वोक्तस्थानेषु शुभैश्चेद्युतेक्षितो भविता तदा सुपूर्णमग्रे भविष्यति, अथवा पूर्वोक्तस्थानेषु शुभैश्चेद्युक्षितो आस्ते तदा शुभं फलं वर्तते ॥ २२ ॥

लग्नस्वामी और कार्यस्वामी ये दोनों अपनी राशि व अपने उच्च व अपने हद्दा व अपने द्रेष्काण व अपने नवांश में हों व शुभग्रहों से युक्त व शुभग्रहों से देखे गये हों तो वर्ष का शुभफल पहले ही हो चुका है ऐसा कहना चाहिये और यदि लग्न का स्वामी और कार्य का स्वामी ये दोनों अपने घर, आदि पूर्वोक्त स्थान में जानेवाले हों, शुभ ग्रहों से युत होवेंगे अथवा शुभग्रहों से देखे जावेंगे तो शुभ फल आगे होवेगा और जब लग्न का स्वामी और कार्य का स्वामी ये अपने दोनों राश्यादि में हों, अथवा शुभ ग्रहों से युक्त व देखे जाते हों तो शुभ फल इसी समय हो रहा है, यह कहना चाहिये ॥ २२ ॥

अशुभ (नेष्ट) फल विचार—

व्यत्यस्तमस्माद्विपरीतभावेऽथेष्टर्क्षतोऽनिष्टगृहं प्रपन्नः ।
अभूच्छुभं प्रागशुभं त्विदानीं संयातुकामेन च भावि वाच्यम् ॥२३॥

अन्वयः—विपरीतभावे अस्माद् व्यत्यस्तम्, अथ इष्टर्क्षतः अनिष्टगृहं प्रापन्नः तदा शुभं प्रागभूत् इदानीं अशुभं जातं संयातुकामेन च भावि वाच्यम् ॥ २३ ॥

पूर्वोक्त भावों से विपरीत भाव में हों तो अनिष्ट फल कहना चाहिये जैसे (लग्न का स्वामी और कार्य का स्वामी ये दोनों अपने शत्रु के घर में जा चुके हों वा अपने

नीच के घर में, अथवा अपने शत्रु के हद्दा में व अपने शत्रु के नवांश में पापग्रहों के स्थान प्राप्त होकर पापग्रहों से युक्त व पाप ग्रहों से देखे गये हों तो प्रथम अशुभ फल हो गया, और जब लग्न का स्वामी व कार्य का स्वामी ये दोनों उक्त दुष्ट स्थानों में प्राप्त होकर पापग्रहों से युक्त वा देखे जाते हों तो इसी समय अशुभ फल हो रहा है यह कहना चाहिये।) अब तीसरे मुथशिलयोग में विशेष फल विचार करते हैं—जब लग्नाधीश वा कार्याधीश ये दोनों मित्र की राशि से शत्रु के घर में प्राप्त हों जावें तो पहले ही शुभ फल हो चुका है और इस समय अशुभ फल वर्तमान है, लग्नेश और कार्येश ये दोनों मित्र के घर में वर्तमान हैं और कुछ दिन उपरान्त शत्रु के घर में आवेंगे तो अशुभ फल भावी कहना अर्थात् आगे अनिष्ट फल होवेगा ऐसा कहना ॥ २३ ॥

ईसराफ योग का लक्षण—

शीघ्रो यदा मंदगतेरथैकमप्यंशमभ्येति तदेसराफः ।
कार्यक्षयो मूसरिफे खलोत्थे सौम्ये न हिल्लाजमतेन चिन्त्यम् ॥२४॥

अन्वयः—यदा शीघ्रो मन्दगतेः एकमपि अंशं आभ्येति तदा ईशराफः स्यात्। खलोत्थे मूसरिफे कार्यक्षयो विन्द्यात् सौम्ये न इति हिल्लाजमतेन-चिन्त्यम् ॥ २४ ॥

यदि शीघ्रगति ग्रह मन्दगतिग्रह से एक भी अंश अधिक हो तो ईसराफ होता है। इसी का दूसरा नाम मुसरिफ है, (फारसी में ईसराफ मुसरिफ माने फजूलखर्ची के होते हैं) यहाँ शीघ्रगति ग्रह और मन्दगति ग्रह ये दोनों पापग्रह हों तो कार्य का विनाश होता है तथा यदि दोनों शुभग्रह होवें तो वाञ्छित (मन में विचारे हुये) कार्यों की सिद्धि होवे ऐसा हिल्लाज आचार्य का मत है ॥ २४ ॥

नक्तयोग का लक्षण—

लग्नेशकार्याधिपयोर्न दृष्टिर्मिथोऽथ तन्मध्यगतोऽपि शीघ्रः ।
आदाय तेजो यदि पृष्ठसंस्थान्न्यसेदथान्यत्र हि नक्तमेतत् ॥२५॥

अन्वयः—लग्नेशकार्याधिपयोर्मिथः दृष्टिः न अथ तन्मध्यगतोऽपि शीघ्रः पृष्ठसंस्थात् तेजः आदाय अन्यत्र न्यसेत् एतत् नक्तम् स्यात् ॥ २५ ॥

लग्नेश और कार्येश इन दोनों की परस्पर दृष्टि न होवे और यदि इन्हीं दोनों [लग्नेश व कार्येश] के मध्य में कोई अन्य शीघ्रगतिवाला ग्रह स्थित होवे। यदि मध्य में स्थित ग्रह पिछाड़ी बैठे हुये शीघ्रगतिवाले ग्रह से तेज (सामर्थ्य) को लेकर आगे बैठे हुये मन्दगतिवाले ग्रह को देता हो तो यह नक्त नामक योग होता है ॥२५॥

नक्तयोग का उदाहरण—

स्त्रीलाभपृच्छातनुरस्ति कन्या स्वामी बुधः सिंहगतो दशांशैः ।
सूर्यांशकैर्देवगुरुः कलत्रे दृष्टिस्तयोर्नास्ति मिथोऽथ चन्द्रः ॥२६॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चापे वृषे चोभयदृश्यमूर्तिः शीघ्रोऽष्टभागैरथवा भवांशैः ।
आदाय तेजो बुधतो ददौ यज्जीवाय लाभः परतः स्त्रियः स्यात् २७

अन्वयः—स्त्रीलाभप्रच्छा कन्या तनुरस्ति स्वामी बुधः दशांशैः सिंहगतः, सूर्यांशकैर्देवगुरुः कलत्रे तयोर्मिथः दृष्टिः नास्ति अथ शीघ्रः चन्द्रः अष्टभागैः अथवा भवांशैः चापे वृषे उभयदृश्यमूर्त्तिः यद्बुधतः तेजः आदाय जीवाय ददौ अतः परतः स्त्रियः लाभः स्यात् ॥ २६-२७ ॥

जैसे किसी ने आकर स्त्रीलाभ होने का प्रश्न किया तो उस समय कन्या लग्न है उसका स्वामी बुध दस अंशों में सिंह राशि में बारहवें घर में बैठा है, कार्य का स्वामी बृहस्पति बारह अंशों से सातवें घर में स्थित है, यहाँ लग्नस्वामी बुध और कार्यस्वामी बृहस्पति इन दोनों की आपस में दृष्टि नहीं है अर्थात् बुध से आठवें घर में बृहस्पति और बृहस्पति से छठे स्थान में बुध ये दोनों आपस में नहीं देखते हैं, और शीघ्रगतिवाला चन्द्रमा दोनों (बुध और बृहस्पति) के बीच में धनराशि में अथवा बृषराशि में स्थित है, और वह चन्द्रमा लग्नस्वामी बुध कार्यस्वामी बृहस्पति से देखा जाता है, आठ अंश या ग्यारह अंश का होकर चन्द्रमा पीठ पर बैठे हुये बुध से तेज (सामर्थ्य) को लेकर बृहस्पति को देता है इसलिये स्त्री का लाभ किसी अन्य (बीचवाले) मनुष्य के द्वारा होगा। क्योंकि लग्नेश बुध के सामर्थ्य को अन्य शीघ्रगति ग्रह चन्द्रमा हरण कर लेता है ॥ २६-२७ ॥

अथ नक्तयोगस्य चक्रम्

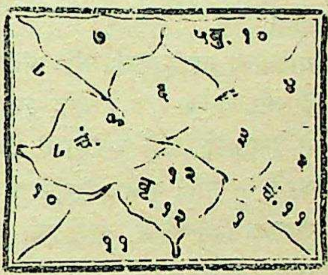

यमय योग का लक्षण—

अन्तः स्थितो मन्दगतिस्तु पश्येद्दीप्तांशकैर्द्वावथ शीघ्रतस्तु ।
नीत्वामहो यच्छति मन्दगाय कार्यस्य सिद्ध्यै यमयःप्रदिष्टः २८

अन्वयः—अन्तःस्थितो मन्दगतिः दीप्तांशकैः द्वौ पश्येत् अथ शीघ्रतः महः नीत्वा मन्दगाय यच्छति कार्यस्य सिध्यै यमयः प्रदिष्टः ॥ २८ ॥

लग्नेश और कार्येश में परस्पर दृष्टि न हो इन दोनों के मध्य में कोई मन्दगति ग्रह बैठा हो और वह मन्दगति ग्रह अपने दीप्तांश के अन्दर होकर दोनों लग्नेश और कार्येश को स्थान दृष्टि (नवम पञ्चम इत्यादि) से देखता हो तो यह मन्दगति ग्रह लग्नेश और कार्येश में जो शीघ्र गतिग्रह उससे तेज को लेकर अन्य मन्दगति ग्रह को देता है इस कारण यह कार्य को सिद्ध करनेवाला यमय योग होता है ॥ २८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यमय योग का उदाहरण—

राज्याप्तिपृच्छा तुललग्ननाथो मेषे सितस्त्वष्टलवैर्वृषस्थः ।
चंद्रोरसांशैर्यदि राज्यनाथो दृष्टिस्तयोर्नास्तिगुरुस्तु मन्दः ॥२९॥
दिगंशकः कर्कगतस्तु पश्यन्नुभौ महो दीप्तलवैः सचान्द्रम् ।
ददौ सितायेति पदस्य लाभोऽमात्येन भावीति विमृश्य वाच्यम् ॥

अन्वयः—राज्याप्तिपृच्छातुललग्ननाथो सितस्त्वष्टलवैर्मेषे यदि राज्यनाथो चन्द्रो रसांशैर्वृषस्थः तयोः दृष्टिः नास्ति गुरुस्तु मंदः दिगशंकः कर्कगतः दीप्त-लवैः उभौ पश्यन्, सचान्द्रम् महो नीत्वा सिताय ददौ इति अमात्येन पदस्य लाभो भावीति विमृश्य वाच्यम् ॥ २९-३० ॥

राज्य प्राप्त होगा या नहीं ऐसा किसी ने आकर प्रश्न किया तो प्रश्नलग्न तुला है, उसका स्वामी शुक्र मेष राशि में आठ अंशों से बैठा है और कार्याधीश (राज्येश) चन्द्रमा ६ अंशों से वृषराशि में स्थित है, और दोनों में परस्पर दृष्टि नहीं है, तहाँ मन्द गतिवाला ग्रह बृहस्पति दश अंशों से कर्कराशि में बैठा है और लग्नेश शुक्र व चन्द्र इन दोनों को स्थानदृष्टि से देखता है, यहाँ चन्द्रमा से तेज (बल) को ग्रहण करके मन्दगति वाले ग्रह शुक्र को देता है इस कारण राज्यलाभ मन्त्री के द्वारा होने वाला है ऐसा कहना चाहिये ॥ २९-३० ॥

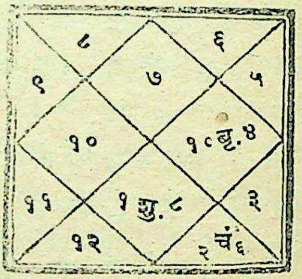

अथ मणऊ योग का लक्षण—

वक्रः शनिर्वा यदि शीघ्रखेटात्पश्चात्पुरस्तिष्ठति तुर्यदृष्ट्या ।
एकर्क्षसप्तर्क्षभुवा दृशा वा पश्यन्नथांशैरधिकोनकैश्चेत् ॥ ३१ ॥
तेजो हरेत्कार्यपदेत्थशाली स्थितोऽपि वाऽसौ मणऊ शुभो न ।

अन्वयः—यदि शीघ्रखेटात् पश्चात् पुरः वक्रः शनिर्वा तिष्ठति तुर्यदृष्ट्या एकर्क्षसप्तर्क्षभुवा दृशा वा अंशैः अधिकोनकैश्चेत् पश्यन्, तेजो हरेत् कार्यपदे-त्थशालीस्थितोऽपि असौ मणऊ शुभो न ॥ ३१ ॥

लग्नेश और कार्येश में जो शीघ्रगति ग्रह उससे पीछे या आगे मङ्गल या शनि बैठे हों अथवा शीघ्रगति ग्रह के अंशों से पीछे या आगे के अंशों में बैठे हों और चतुर्थ दृष्टि या एक स्थान दृष्टि से अथवा सप्तम दृष्टि से अंशों से अधिक और ऊन होकर शीघ्रगति ग्रह को देखते हों और मङ्गल अथवा शनि में कोई शीघ्रगति ग्रह के तेज को हरण करता हो तो ऐसी अवस्था में लग्नेश और कार्येश से इत्थशाल योग होते हुये भी मणऊयोग होता है जो कि शुभ फलदायक नहीं होता है ॥ ३१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मणऊ योग का उदाहरण--

स्त्रीलाभपृच्छा तनुरस्ति कन्याऽत्र ज्ञो दिगंशैस्तिथिभिः सुरेज्यः ॥
कलत्रगः खेऽवनिजो भवांशैः पूर्वं बुधो भौमहृतस्वतेजाः ।
जीवेन पश्चान्मिलतीति लाभो नार्यास्तु नो पृष्ठगतेऽथवाऽस्मिन् ॥३३॥

अन्वयः--स्त्रीलाभपृच्छा कन्या तनुरस्ति अत्र ज्ञो दिगंशैस्तथा तिथिभिः सुरेज्यः कलत्रगः भवांशैः अवनिजः खे पूर्वं बुधो भौमहृतस्वतेजाः पश्चाज्जीवेन मिलतीति हेतोः नार्याः नो लाभः अथवा अस्मिन्पृष्ठगते नो शुभः ॥३२-३३॥

मणऊ योग का उदाहरण--किसी प्रश्नकर्ता ने आकर पूछा कि स्त्री का लाभ होगा कि नहीं ? तो यहाँ प्रश्न समय में कन्या लग्न है, उसका स्वामी बुध दश अंशों से होकर लग्न में बैठा है और बृहस्पति पन्द्रह अंशों से सप्तम घर में बैठा है, और दशम-स्थान में मंगल ग्यारह अंशों से स्थित है और चौथे स्थानदृष्टि से शीघ्र ग्रह बुध को देखता है उस बुध से एक अंश अधिक होकर आगे बैठा हुआ मंगल बुध के तेज को हरण कर लिया और वही बुध प्रथम मंगल से निर्बल किया गया पीछे से कार्याधीश बृहस्पति के साथ शीघ्र चलने से मिला इस कारण स्त्री का लाभ नहीं होवेगा ऐसा कहना चाहिए, यह एक योग

अथ मणऊयोगोयम्

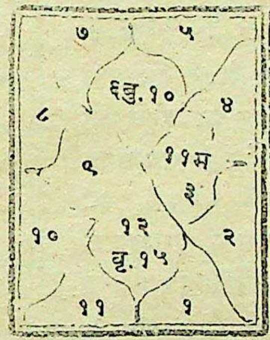

पुनर्मणऊयोगोयम्

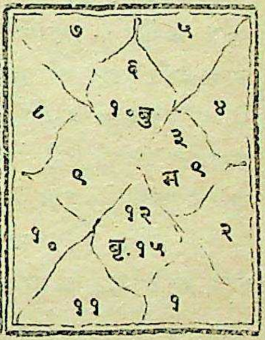

भया। अब अपर योग कहते हैं कि जैसा पूर्व योग कहा गया उसे उसी रूप से स्थित होते हुए बुध के अंशों की अपेक्षा कम अंशों से युक्त होकर मंगल पीछे हो, इस प्रकार थोड़े अंशों से मंगल को पृष्ठगत होते हुए यह मणऊ नामक योग वाञ्छित कार्यों का नाश करने वाला होता है ॥ ३३ ॥

मणऊ योग के भेद--

यदेत्थशालोऽस्त्युभयोः स्वदीप्तहीनाधिकांशैः शनिभूसुतौ चेत् ।
एकर्क्षगौ लग्नपकार्यपौऽस्तस्तेजोहरौ कार्यहरौ निरुक्तौ ॥ ३४ ॥

अन्वयः--यदि उभयोः (लग्नेशकार्येशयोः) इत्थशालोऽस्ति, चेत् स्वदीप्त-हीनाधिकांशैः शनिभूसुतौ लग्नपकार्यपौ एकर्क्षगौ (स्तस्तदा) तेजोहरौ अत एव कार्यहरौ निरुक्तौ ॥ ३४ ॥

यदि लग्नाधीश और कार्याधीश इन दोनों का इत्थशाल (मुथशिल) योग होता हो और इन दोनों में से किसी एक के साथ शनैश्चर व मंगल ये दोनों एक राशि में स्थित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होवें और लग्नेश व कार्येश इनके जो दीप्तांश उनकी अपेक्षा शनैश्चर व मंगल के अंश कमती वा अधिक होवें तो शनैश्चर व मंगल ये दोनों लग्नेश व कार्येश में से एक के तेज को हरते हुए वाञ्छित कार्य को नाश करनेवाले होते हैं ॥ ३४ ॥

इसका उदाहरण—

राज्याप्तिपृच्छातुललग्ननाथः कर्के सितोंऽशैस्तिथिभिर्दिगंशैः ।
वृषे शशी भूपलवैः कुजश्च हरन् द्वयोर्भां हरते च राज्यम् ॥३५॥

अन्वयः—राज्याप्तिपृच्छातुललग्ननाथः सितः तिथिभिरंशैः कर्के, दिगंशैः शशी वृषे भूपलवैः कुजश्च द्वयोर्भां हरन् (अत एव) राज्यं च हरते ॥ ३५ ॥

राज्यलाभ के प्रश्न को किसी ने पूछा तो प्रश्न समय तुला लग्न है, उसका स्वामी शुक्र पन्द्रह अंशों से कर्कराशि में स्थित है, और दश अंशों से वृषराशि में राज्येश चन्द्रमा स्थित है, तथा वहीं सोलह अंशों से मंगल बैठा है, यह मंगल लग्गेश (शुक्र) और कार्येश (चन्द्रमा) दोनों के तेज को हरण करके राज्य को हरता है इस उदाहरण में लग्नाधिप व कार्याधिप. इन दोनों का इत्थशाल योग है, और कार्येश के साथ मंगल अधिक अंशों से वृषराशि में स्थित है, इस कारण लग्नेश और कार्येश के पराक्रम को ग्रहण करके राज्य को हर लिया ॥ ३५ ॥

इन पुनर्मणऊयोगोऽयम्

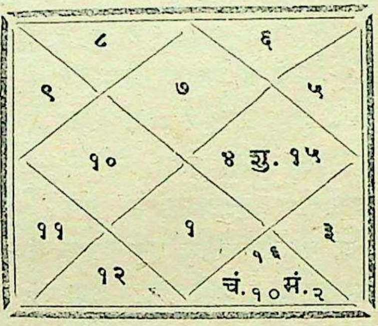

कम्बूल योग के लक्षण—

लग्नकार्येशयोरित्थशालेऽत्रेन्द्वित्थशालतः ।
कम्बूलं श्रेष्ठमध्यादिभेदैर्नानाविधं स्मृतम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः— लग्न कार्येशयोरित्थशाले अत्रेन्द्वित्थशालतः श्रेष्ठमध्यादिभेदैः कम्बूलं नानाविधं स्मृतम् ॥ ३६ ॥

लग्नेश और कार्येश इन दोनों का परस्पर इत्थशाल योग होवे और इनमें से किसी एक के साथ चन्द्रमा भी इत्थशाल योग करे तो उत्तम आदि भेदों से अनेक प्रकार का कम्बूल योग होता है लग्नाधीश व कार्याधीश तथा चन्द्रमा इनके चार प्रकार के भेद से सोलह प्रकार का कम्बूल योग होता है ।

कम्बूलमीषद्द्वितयेत्थशाले चन्द्रोपि चेन्मूथशिलं विधत्ते
मिथः स्वगेहोच्चगतौ प्रधानं मध्यं त्रिकाद्ये त्वधमं परक्षम् ।

जैसे १ उत्तमोत्तम २ उत्तम मध्यम ३ उत्तम, ४ उत्तमाधम, ५ मध्यमोत्तम, ६ मध्यममध्यम, ७ मध्यम, ८ मध्यमाधम, ९ उत्तम, १० मध्यम ११ मध्यममध्यम,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१२ अधम, १३ अधमोत्तम, १४ अधममध्यम, १५ अधम और १६ अधमाधम, ये सोलह भेद है ॥ ३६ ॥

शेष चक्र में स्पष्ट है।

अथ षोडशप्रकारककम्बूलयोगचक्रम् ।

चन्द्रः	लग्नेशकार्येशौ	लग्नेशकार्येशौ	लग्नेशकार्येशौ	लग्नेशकार्येशौ
उत्तमाधिकारश्चन्द्रः	उत्तमाधिकारस्थौ १	मध्यमाधिकारस्थौ २	समाधिकारस्थौ ३	अधमाधिकारस्थौ ४
मध्यमाधिकारश्चन्द्रः	उत्तमाधिकारस्थौ ५	मध्यमाधिकारस्थौ ६	समाधिकारस्थौ ७	अधमाधिकारस्थौ ८
समाधिकारश्चन्द्रः	उत्तमाधिकारस्थौ ९	मध्यमाधिकारस्थौ १०	समाधिकारस्थौ ११	अधमाधिकारस्थौ १२
अधमाधिकारश्चन्द्रः	उत्तमाधिकारस्थौ १३	मध्यमाधिकारस्थौ १४	समाधिकारस्थौ १५	अधमाधिकारस्थौ १६

उत्तमोत्तम कम्बूल योग के लक्षण—

यदीन्दुः स्वगृहोच्चस्थस्तादृशौ लग्नकार्यपौ ।
तदेत्थशाली कम्बूलमुत्तमोत्तममुच्यते ॥ ३७ ॥

अन्वयः—यदीन्दुः स्वगृहोच्चस्थस्तादृशौ लग्नकार्यपौ तदेत्थशालीकम्बूलमुत्तमोत्तममुच्यते ॥ ३७ ॥

यदि चन्द्रमा अपने राशि व अपने उच्च में स्थित हो, लग्नस्वामी, व कार्यस्वामी, ये भी दोनों अपने घर व अपने उच्च में स्थित होकर परस्पर इत्थशाल को करें और ऐसा ही चन्द्रमा भी इन दोनों में से किसी एक के साथ इत्थशाल को करें तो वह कम्बूल नामक उत्तमोत्तम योग कहा जाता है, इसका उदाहरण आगे (४८ श्लोक में) कहेंगे ॥ ३७ ॥

उत्तम मध्यम और केवल उत्तम कम्बूल योगों का लक्षण—

स्वीयहद्दाद्रेकाणांकभागस्थेनेत्थशालतः ।
मध्यमोत्तमकम्बूलं हीनाधिकृतिनोत्तमम् ॥ ३८ ॥

अन्वयः—स्वीयहद्दाद्रेकाणांकभागस्थेन (लग्नाधीश कार्याधीशेन) इत्थशालतः मध्यमोत्तम कम्बूलं, हीनाधिकृतिनोत्तमम् (कम्बूलं भवति) ॥३८॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यदि लग्नेश और कार्येश अपने हद्दा, अपने द्रेष्काण व अपने नवांश में होवे और परस्पर इत्थशाल को करते होवें और चन्द्रमा अपने घर व अपने उच्च में होकर लग्नाधीश कार्याधीश में से किसी एक के साथ इत्थशाल योग को करे तो उत्तम मध्यम नामक कम्बूल योग होता है, यदि लग्नेश और कार्येश अपने अधिकार से हीन हों (अर्थात् अपने गृहादि में न हों) और दोनों का इत्थशाल होता हो ऐसी अवस्था में अपने घर व उच्च में बैठा हुआ चन्द्रमा दोनों में से किसी एक के साथ इत्थशाल योग करे तो उत्तम कम्बूल योग होता है ॥ ३८ ॥

(२) मध्यमोत्तमकम्बूलका उदाहरण—

जैसे किसी ने पूछा कि हमारे भाग्य की वृद्धि कब होगी ? प्रश्न समय तुला लग्न है, उसका स्वामी शुक्र १० अंशों से दशम स्थान में अपने हद्दा में स्थित है और भाग्य (नवम) भाव का स्वामी बुध १४ अंशों से सातवें घर में अपने हद्दा में है, इन दोनों का परस्पर इत्थशाल (मुथशिल) योग भी है, यहाँ चन्द्रमा १४ अंशों से अपने घर कर्क राशि में होकर कार्याधीश के साथ इत्थशाल योग करता है, इस कारण उत्तम मध्य नामक कम्बूल योग भया, क्योंकि चन्द्रमा उत्तमाधिकार में है, इसी से प्रथम भाग्य की वृद्धि अधिक फिर मध्यम कहनी चाहिये।

उत्तममध्यम कम्बूलम्—

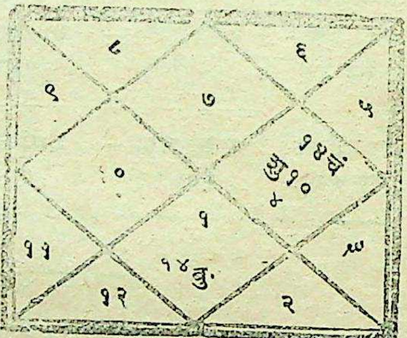

(३) उत्तम कम्बूल का उदाहरण—

जैसे किसी पृच्छक ने प्रश्न किया कि हमको राज्य प्राप्त होगा कि नहीं ? उस समय लग्न मिथुन है, उसका स्वामी बुध सम घर में स्थित है। और राज्यभवन का स्वामी बृहस्पति समघर कन्याराशि में स्थित है और चन्द्रमा अपने उच्च वृषराशि में विद्यमान है, इस प्रकार तीनों ग्रहों के मुथशिल योग के होते हुए उत्तम नामक कम्बूल योग भया, राज्य की प्राप्ति उत्तम कहनी चाहिये ॥३८॥

उत्तमकम्बूलचक्रम्—

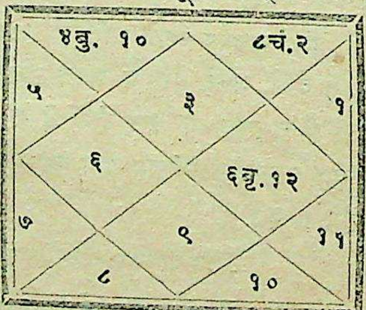

उत्तम मध्यमोत्तम और मध्यममध्यम कम्बूल के लक्षण—

उत्तमाधमता नीचरिपुगेहस्थितेन चेत् ।
स्वद्रेक्काणांशगश्चन्द्रा स्वमोचस्थेत्थशालकृत् ॥ ३९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मध्यमोत्तममेतच्च पूर्वस्मान्न विशिष्यते ।
स्वहद्दादिपदस्थेन कंबूलं मध्यमध्यमम् ॥ ४० ॥

अन्वयः--नीचरिपुगेहस्थितेन (लग्नेश कार्याधीशेन) चेत् (स्वभोच्चादिगतश्चन्द्रः मुथशिलं करोति तदा) उत्तमाधमता कम्बूलं स्यात् । स्वद्रेकाणांशगश्चन्द्रः स्वभोच्चस्थेत्थशालकृत्तदा मध्यमोत्तमं कम्बूलं स्यादेतत्पूर्वस्मात् (उत्तम मध्यम कम्बूलात्) न विशिष्यते । स्वहद्दादिपदस्थेन (लग्नेश कार्याधीशेन) पूर्वोक्त मध्यमाधिकारस्थश्चन्द्रश्चेन्मुथशिलं करोति तदा मध्यमध्यमम् कम्बूलं स्यात् ॥ ३९-४० ॥

लग्नेश और कार्येश दोनों अपने नीचराशि में व अपने शत्रु के घर में होकर परस्पर इत्थशाल करें और चन्द्रमा अपने घर व अपने उच्चराशि में होकर लग्नाधीश और कार्याधीश इनमें से किसी एक के साथ इत्थशाल करता हो तो उत्तमाधम नामक कम्बूल योग होता है, क्योंकि चन्द्रमा उत्तम अधिकार में है, चन्द्रमा अपने द्रेष्काण अपने नवांश में स्थित होकर अपने घर व अपने उच्चराशि में प्राप्त परस्पर मुथशिलकारी लग्नाधीश व कार्याधीश के साथ मुथशिल योग करे ॥३९॥ तो यह मध्यमोत्तम नामक कम्बूल योग होता है, क्योंकि चन्द्रमा का मध्यम अधिकार प्राप्त है, यह मध्यमोत्तम नामक कम्बूलयोग पूर्व कहे हुए उत्तममध्यम कम्बूल से विशेष नहीं है अर्थात् विशेषफल का देनेवाला नहीं है,

मध्यम मध्यम नामक कम्बूल योग का लक्षण कहते हैं-अपने हद्दा व अपने द्रेष्काण व अपने नवांश में बैठे हुये परस्पर मुथशिल योग को करनेवाले लग्नेश व कार्येश के साथ अपने नवांश में स्थित चन्द्रमा इत्थशाल योग करे तो मध्यम मध्यम नामक कम्बूल योग होता है । क्योंकि लग्नेश, कार्येश व चन्द्रमा इन सबका अधिकार मध्यम है इससे मध्यम मध्यम कम्बूल योग भया ॥ ४० ॥

(४) उत्तमाधम कम्बूल का उदाहरण--

जैसे किसी प्रश्नकर्ता ने स्त्री लाभ के लिये प्रश्न किया तो उस समय तुला लग्न है उसका स्वामी शुक्र १० अंशों से अपने नीच कन्या राशि में स्थित है, और स्त्री के घर का स्वामी मङ्गल १५ पन्द्रह अंशों से युक्त होकर अपने नीच कर्क राशि में स्थित है, और चन्द्रमा बारह अंशों से युक्त होकर अपनी राशि (कर्क) में है, इनका परस्पर इत्थशाल योग होने से उत्तमाधम नाम कम्बूल योग भया, इस कारण थोड़े परिश्रम से स्त्री की प्राप्ति होगी ।

उत्तमाधमकम्बूलयोगोऽयम् ।

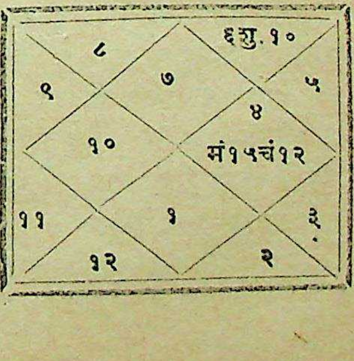

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(५) मध्यमोत्तम कम्बूलयोग का उदाहरण—

जैसे किसी प्रश्नकर्ता ने स्त्री लाभनिमित्त पूछा तो उस समय लग्न तुला उसका स्वामी शुक्र २४ अंशों से अपने घर में है, स्त्री भाव (सप्तम) का स्वामी मङ्गल २८ अंशों से युक्त होकर अपने घर मेष राशि में है, और चन्द्रमा २२ अंशों से मकरराशि का अपने नवांश में स्थित चतुर्थ भाव में है, इन सबका आपस में इत्थशाल योग होता हुआ मध्यमोत्तम नामक कम्बूल योग हुआ। यहाँ इस योग के होने से स्त्री की प्राप्ति उत्तमता से होवेगी ऐसा कहना।

उत्तमकम्बूलचक्रम् ।

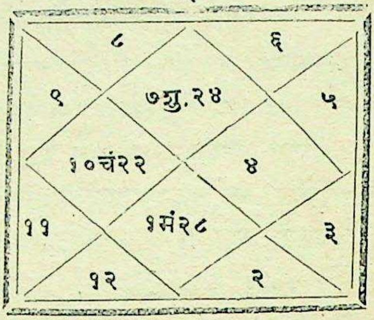

(६) मध्यममध्यम नामक कम्बूलयोग का उदाहरण—

जैसे किसी प्रश्नकर्ता ने सन्तान प्राप्त होने के लिये प्रश्न किया तो उस समय मिथुन लग्न है उसका स्वामी बुध पांचवें तुला लग्न में आठ अंश से स्थित है। और सन्तान (पञ्चम) भाव का स्वामी शुक्र आठ अंशों से होकर मिथुन राशि का अपने हद्दा में है और चन्द्रमा तीन अंशों से अपनी राशि (कर्क) का अपने नवांश में स्थित है यहाँ चन्द्रमा के साथ परस्पर इत्थशालयोग होने से मध्यम मध्यम नामक कम्बूल योग हुआ, इससे सन्तान बहुत यत्न करने से प्राप्त होगा, ऐसा कहना।

मध्यममध्यमकम्बूलचक्रम् ।

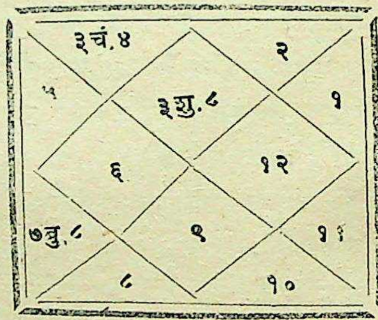

मध्यम- -मध्यमाधम कम्बूलयोग के लक्षण—

स्यान्मध्यमं च कम्बूलं हीनाधिकृतिखेटजम् ।
मध्यमाधमकम्बूलं नीचारिभगखेटजम् ॥ ४१ ॥

अन्वयः—हीनाधिकृतिखेटजम् मध्यमं कम्बूलम् स्यात् । नीचारिभग खेटजम् मध्यमाधमकम्बूलम् स्यात् ॥४१॥

हीन अधिकारवाले ग्रहों से उत्पन्न मध्ममनामक कम्बूलयोग होता है, अर्थात्, अपने उत्तम व मध्यम अधिकारों से रहित सम अधिकार को प्राप्त परस्पर इत्थशालकारी लग्नाधीश व कार्याधीश के साथ अपने मध्यम अधिकार में स्थित चन्द्रमा इत्थशालयोग करे तो मध्यम नामक कम्बूल योग होता है, मध्यमाधम कम्बूलयोग का लक्षण—अपने शत्रु के घर में स्थित परस्पर मुथशिल योग के करनेवाले लग्नाधीश व कार्याधीश के साथ चन्द्रमा अपने द्रेष्काण व अपने नवांश में स्थित होकर यदि इत्थशाल करे तो मध्यमाधम नामक कम्बूल योग होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[७] मध्यमकम्बूलयोग का उदाहरण—

जैसे किसी प्रश्नकर्ता ने सन्तान प्राप्ति निमित्त प्रश्न किया तो उस समय वृषलग्न है और उसका स्वामी शुक्र चार अंशों से मकर राशि का समहद्दा में स्थित है, और सन्तान (पञ्चम) भाव का स्वामी बुध पाँच अंशों से तुलाराशि में समहद्दा में है और चन्द्रमा तीन अंशों से युक्त होकर कर्क राशि का अपने नवांश में स्थित है इन सबका परस्पर मुथशिल योग है इससे मध्यम नामक कम्बूल योग भया इस कारण सन्तान की प्राप्ति अतिप्रयास से होगी।

मध्यसाधकम्बूलचक्रम्

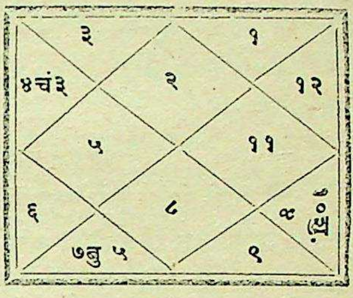

[८] मध्यमाधम कम्बूलयोग का उदाहरण—

जैसे किसी प्रश्नकर्ता ने भाग्यवृद्धि निमित्त प्रश्न किया तो उस समय प्रश्नलग्न मेष है, उसका स्वामी मङ्गल अपने नीच (कर्क) राशि में ४ अंश का है, और भाग्यभाव का स्वामी बृहस्पति पाँच ५ अंशों से युक्त होकर मकर में अपने नीच राशि में है और चन्द्रमा कर्क राशि में तीन ३ अंशों का अपने द्रेष्काण में है इन तीनों का इत्थशाल योग है, इस कारण यह मध्यमाधम नामक कम्बूलयोग भया, यहाँ भाग्य की वृद्धि बहुत परिश्रम से साध्य होगी, ऐसा कहना।

मध्यमाधकम्बूलयोगचक्रम्

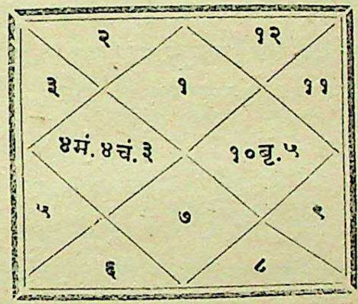

उत्तम कम्बूलयोग के लक्षण—

इन्दुः पदोनः स्वर्क्षोच्चस्थितेनाप्युत्तमं तु तत्।
स्वहद्दादिगतेनापि पूर्ववन्मध्यमुच्यते ॥ ४३ ॥

अन्वयः—इन्दुः पदोनः स्वर्क्षोच्चस्थितेन (लग्ने कार्यांशेन चेन्मुथशिलं करोति) तदा उत्तमं कम्बूलं स्यात्। स्वहद्दादिगतेन (लग्नेशकार्याधीशेन समाधिकारस्थश्चन्द्रश्चेन्मुथशिलकारी तदा) पूर्ववन्ममध्यमं कम्बूलं उच्यते ॥ ४२ ॥

चन्द्रमा अपने अधिकार (उच्च, राशि, द्रेष्काण, नवांश, नीचराशि) से रहित होकर अर्थात् इनमें न होवे किन्तु समगृह आदिकों को प्राप्त होकर अपने राशि व अपने उच्चराशि में प्राप्त परस्पर इत्थशाल योग करते हुए लग्नेश व कार्येश के साथ इत्थशाल योग करे तो उत्तम नामक कम्बूलयोग होता है, क्योंकि चन्द्रमा अपने अधिकारों से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शून्य है और लग्नाधीश व कार्याधीश ये दोनों उत्तमाधिकार को प्राप्त है, इससे यह उत्तम नामक कम्बूल योग कहा है, मध्यम कम्बूलयोग का लक्षण अपने २ हद्दा द्रेष्काण व नवांश में स्थित परस्पर इत्थशाल योग को करते हुए लग्नाधीश व कार्याधीश के साथ चन्द्रमा सम अधिकार में होकर इत्थशाल योग करे तो मध्यम नामक कम्बूल योग होता है, क्योंकि यहाँ चन्द्रमा अपने अधिकारों से शून्य है, लग्नाधीश और कार्याधीश ये दोनों मध्यम अधिकार में है, पूर्वोक्त मध्यम कम्बूल के समान यह भी कम्बूलयोग जानना ॥ ४२ ॥

उत्तम कम्बूलयोग का उदाहरण—

जैसे किसी प्रश्नकर्ता ने धनलाभ के लिए प्रश्न किया तो उस समय तुला लग्न है उसका स्वामी शुक्र ४ अंशों से युक्त होके लग्न ही में स्थित है और धनभवन का स्वामी मङ्गल अपने उच्चराशि (मकर) में ५ अंश का है चन्द्रमा सम द्रेष्काण मिथुनराशि में ३ अंशों से युक्त होकर स्थित है और तीनों का परस्पर मुथशिल योग है इससे उत्तम नामक कम्बूल योग होता है इसी को पूर्वाचार्यों ने (समाधम) कम्बूल योग भी कहा है इससे धन का लाभ उत्तमता से होगा ।

मध्यम कम्बूलचक्रम्

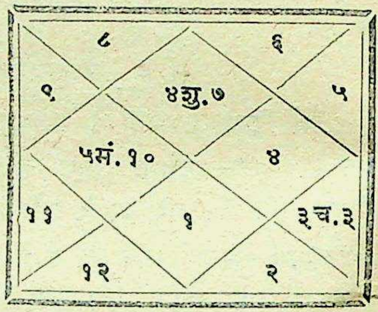

[१०] मध्यम कम्बूल योग का उदाहरण—

जैसे किसी ने धनलाभार्थ प्रश्न किया तो उस समय तुला लग्न है शुक्र १० अंशों से सिंह राशि में अपने हद्दा में स्थित है और धन भाव का स्वामी मंगल २२ अंशों से धनराशि का अपने हद्दा में विद्यमान है और चन्द्रमा दस अंशों से युक्त होकर मिथुन राशि का अपने मध्य द्रेष्काण में स्थित है यहाँ तीनों का परस्पर इत्थशाल योग है, इससे मध्यम नामक कम्बूल योग होता है धनलाभ मध्यम होवेगा ऐसा कहना ।

मध्यमकम्बूल योग चक्रम् ।

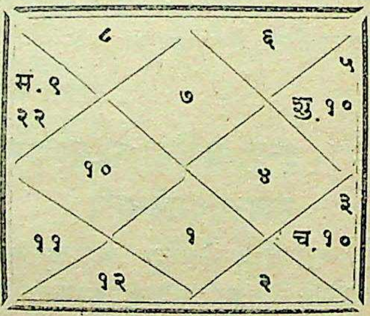

प्रकारान्त से मध्यमकम्बूल योग का लक्षण—

पदोनेनापि मध्यं स्यादिति युक्तं प्रतीयते ।
नीचारिस्थेनेत्थशालेऽधमकम्बूलमुच्यते ॥ ४३ ॥

अन्वयः—पदोनेनापि मध्यं स्यादिति युक्तं प्रतीयते । नीचारिस्थेन (लग्नेशकार्याधीशेन) इत्थशाले अधमं कम्बूलमुच्यते ॥ ४३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पद से हीन अर्थात् उत्तम व मध्यम अधिकार से रहित परस्पर इत्थशाल को करते हुये लग्नाधीश व कार्याधीश के साथ सम अधिकार में स्थित चन्द्रमा यदि इत्थशाल योग को करे तो मध्यम नामक कम्बूल योग होता है। क्योंकि लग्नेश और कार्येश चन्द्रमा इन सबों का सम अधिकार प्राप्त है इस कारण यह मध्यम (समसम) नामक कम्बूल योग सिद्ध हुआ। अधम कम्बूल योग का लक्षण—अपने नीच व अपने शत्रुराशि में प्राप्त परस्पर इत्थशाल योग करते हुये लग्नाधीश और कार्याधीश के साथ समाधिकार में होकर चन्द्रमा यदि इत्थशाल (मिलाप) करता हो तो अधम नामक कम्बूल योग होता है कारण कि चन्द्रमा का सम अधिकार प्राप्त है और लग्नाधीश व कार्याधीश इन दोनों का अधिकार अधम है इससे अधम नामक कम्बूल योग निष्पन्न हुआ ॥४३॥

[११] प्रकारान्तर से मध्यमकम्बूल का लक्षण—

पुनः मध्यम कंबूल योगः।

जैसे किसी पृच्छक ने धनप्राप्ति के निमित्त प्रश्न किया तो प्रश्न समय मेष लग्न है उसका स्वामी मंगल १० अंशों से सिंह राशि में बैठा है और धनभाव का स्वामी शुक्र १० अंशों से युक्त होकर कुम्भराशि में बैठा है, और चन्द्रमा १० अंशों से तुलाराशि में है, इन सबका परस्पर इत्थशाल (मिलाप) है। इससे यह मध्यम नामक कम्बूलयोग भया धन की प्राप्ति मध्यम होगी ऐसा कहना।

[१२] अधम कंबूल का उदाहरण—

अधम कम्बूल योग चक्रम्।

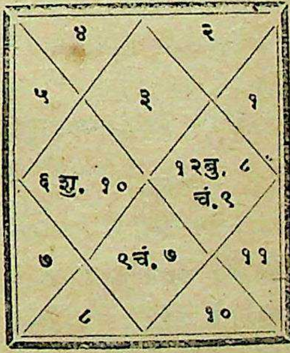

किसी प्रश्नकर्ता ने पुत्रप्राप्ति के विषय में प्रश्न किया तो प्रश्नलग्न मिथुन तिसका स्वामी बुध अपनी नीचराशि (मीन) में ८ अंशों से स्थित है, और पुत्र भाव का स्वामी शुक्र अपने नीचराशि (कन्या) में १० अंशों से युक्त होकर बैठा है और चन्द्रमा अपने समधनराशि अथवा मीनराशि में वर्तमान है और तीनों का परस्पर इत्थशालयोग, है, इस कारण यह अधम नामक कंबूल योग भया यहाँ पुत्र की प्राप्ति अधम अर्थात् कष्टसाध्य कहना।

अधमोत्तम कंबूल योग का लक्षण—

नीचशत्रुभगश्चन्द्रः स्वभोच्चस्थेत्थशालकृत्।
अधमोत्तमकम्बूलं पूर्वतुल्यफलप्रदम् ॥ ४४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४४ ॥

जो चन्द्रमा अपने नीच घर व शत्रु के घर में प्राप्त होकर अपने घर व अपने उच्च घर में स्थित परस्पर इत्थशाल योग को करते हुए लग्नेश व कार्येश के साथ इत्थशाल योग को करे तो अधमोत्तम नामक कम्बूलयोग होता है, क्योंकि अधिकार अधम है और लग्नेश व कार्येश दोनों मध्यम अधिकार में प्राप्त है, इस कारण पूर्वाचार्यों ने इसको अधम मध्यम नाम से कहा है, यह पूर्व के तुल्य फल को देता है ॥ ४४ ॥

(१३) अधमोत्तम कम्बूल योग का उदाहरण—

अधमोत्तमकम्बूलयोगः

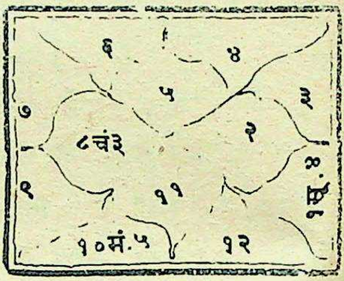

जैसे प्रश्नकर्ता ने सुखप्राप्ति के निमित्त प्रश्न किया तो प्रश्नलग्न सिंह उसका स्वामी सूर्य अपने उच्च राशि (मेष) में ४ अंशों करके स्थित है और सुख (चतुर्थ) भाव का स्वामी मंगल अपने उच्चराशि (मकर) में ५ अंशों से युक्त होकर स्थित है और चन्द्रमा तीन अंशों से युक्त होकर अपने नीच राशि वृश्चिक में है इन तीनों का परस्पर मुथशिल योग होने से अधमोत्तम कम्बूल योग भया, यहाँ सुख की प्राप्ति परिश्रम से होवेगी।

अधम मध्यम कम्बूल योग का लक्षण—

चन्द्रो नीचारिगेहस्थः स्वहद्दादिगते न चेत्।
तदेत्थशालीकम्बूलमुच्यतेऽधममध्यमम् ॥ ४५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४५ ॥

यदि चन्द्रमा अपने नीच घर में व अपने शत्रु के घर में प्राप्त होकर अपने हद्दा व द्रेष्काण व अपने नवांश में स्थित होकर परस्पर इत्थशाल योग करता हुआ लग्नेश कार्येश के साथ इत्थशाल करे तो अधम मध्यम नामक कम्बूल योग होता है यहाँ चन्द्रमा का अधिकार अधम है, और लग्नाधीश कार्याधीश का मध्यम अधिकार है, इससे यह अधम मध्यम नामक कम्बूल योग कहा गया है ॥ ४५ ॥

(१४) अधम मध्यम कम्बूल योग का उदाहरण—

अधममध्यमकबूलयोगः

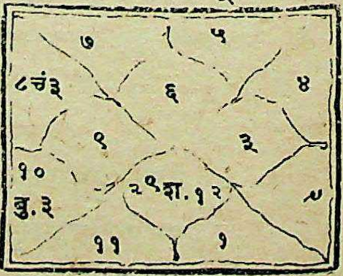

जैसे किसी ने पुत्रप्राप्ति के निमित्त प्रश्न किया तो उस समय कन्यालग्न उसका स्वामी बुध तीन अंशों से अपने हद्दा में मकर राशि में स्थित है, और पुत्र (पञ्चम) भाव का स्वामी शनैश्वर २९ अंशों से युक्त होकर मीन राशि का अपने हद्दा में विद्यमान है तथा चन्द्रमा तीन अंशों से युक्त होकर अपने नीच राशि (वृश्चिक) में है और इन तीनों का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परस्पर इत्थशाल योग है इससे अधम मध्यम नामक कम्बूल योग भया पुत्रलाभ अत्यन्त प्रयास से होवेगा।

अन्य अधम कम्बूल योग का लक्षण—

इन्दुर्नीचारिगेहस्थः पदोनेनेत्थशालकृत् ।
कम्बूलं मध्यमं ज्ञेयं पूर्वतुल्यफलप्रदम् ॥ ४६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४६ ॥

यदि चन्द्रमा अपने नीच राशि व अपने शत्रु के घर में स्थित होकर उत्तम मध्यम व अधम अधिकार से रहित परस्पर मुथशिल योग को करते हुए लग्नाधीश व कार्याधीश के साथ इत्थशाल योग करे तो अधम नामक कम्बूल योग होता है, यहाँ चन्द्रमा का अधम अधिकार है और लग्नाधीश व कार्याधीश का सम अधिकार है, इस कारण अधम नामक कम्बूल योग कहा है, यह पूर्वोक्त कम्बूल के समान फल को देता है ॥ ४६ ॥

(१५) अधम कम्बूल योग का उदाहरण—

अधमकम्बूलयोगोऽयम्

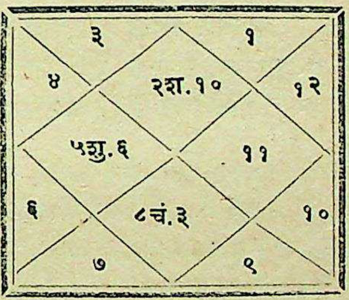

जैसे किसी ने राज्यलाभ के निमित्त प्रश्न किया तो उस समय वृषलग्न उसका स्वामी शुक्र छः अंशों करके सिंह में स्थित है और राज्य (दशम) भाव का स्वामी शनैश्चर दश अंशों से युक्त होकर वृष राशि में है और चन्द्रमा तीन अंशों से अपने नीच राशि (वृश्चिक) पर सप्तम भाव में विद्यमान है और लग्नाधीश (शुक्र) कार्याधीश (शनि) और चन्द्रमा इन तीनों का परस्पर इत्थशाल योग होने से अधम नामक कम्बूल योग भया, यहाँ राज्य की प्राप्ति अतियत्न से कष्टपूर्वक होवे ऐसा कहना।

अधमाधम कम्बूल योग का लक्षण—

नीचारिभस्थखेटेन नीचारिभगतः शशी ।
तदेत्थशाली कम्बूलमधमाधममुच्यते ॥ ४७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४७ ॥

यदि चन्द्रमा अपने नीच राशि में अपने शत्रु की राशि में स्थित हो और अपने शत्रु के घर व अपने नीच राशि में बैठे हुये परस्पर इत्थशाल योग को करता हुआ लग्नेश व कार्येश के साथ मुथशिल योग करे तो अधमाधम नाम कम्बूल योग होता है, यहाँ लग्नाधीश कार्याधीश और चन्द्रमा इन तीनों का अधिकार अधम है इस कारण अधमाधम कम्बूल योग कहा जाता है ॥ ४७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१६) अधमाधम कम्बूल योग का उदाहरण—

जैसे, किसी ने पुत्रलाभ का प्रश्न किया तो उस समय धनलग्न, उसका स्वामी बृहस्पति अपने नीच मकर राशि में १० अंशों से बैठा है, और पुत्रभाव का स्वामी मंगल छः अंशों से अपने नीच कर्क राशि में स्थित है और चन्द्रमा अपने नीच राशि में तीन अंशों से युक्त होकर विद्यमान है और इन तीनों का परस्पर मुथशिल योग होने से अधमाधम कम्बूल योग भया, क्योंकि वहाँ अधम अधिकार सब का है संतानलाभ नहीं होगा ऐसा कहना।

अधमाधमकम्बूलयोगः

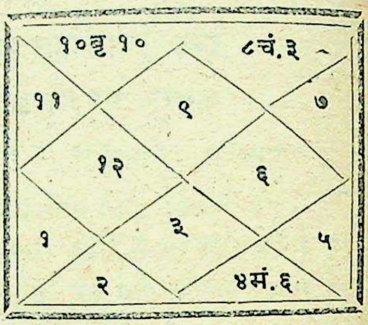

पूर्वोक्त उत्तमोत्तम कम्बूल योग का उदाहरण—

मेषे रविः कुजो वाऽपि कर्कराशिगतः शशी ।
तत्रेत्थशाली कम्बूलमुत्तमोत्तमकार्यकृत् ॥ ४८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४८ ॥

लग्नाधीश मङ्गल कार्याधीश सूर्य ये दोनों मेष राशि में हैं दोनों का मुथशिल योग है और चन्द्रमा कर्क राशि का होकर इत्थशाल योग करे तो यह उत्तमोत्तम नामक कम्बूल योग होता है। (मनवांछित) कार्यों को करनेवाला होता है ॥ ४८ ॥

इसका उदाहरण—जैसे पुत्रलाभ प्रश्न में मेषलग्न का स्वामी मङ्गल अपने घर लग्न में है और कार्येश (पञ्चम भाव का स्वामी) सूर्य अपने उच्च मेष राशि में है और चन्द्रमा अपने घर कर्कराशि में है यहाँ लग्नेश मङ्गल और कार्येश सूर्य और चन्द्रमा ये तीनों अपने उत्तम अधिकार में हैं और परस्पर इत्थशाल योग को करते हैं इससे उत्तमोत्तम नामक कम्बूल योग भया यहाँ पुत्रलाभ अवश्य होवेगा ऐसा कहना।

उत्तमोत्तमकम्बूलयोगः

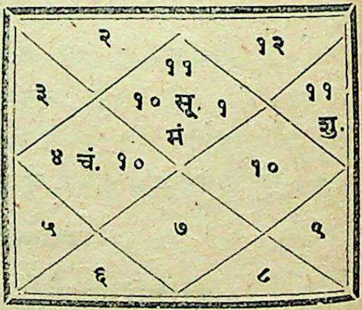

अधमाधम कम्बूल का उदाहरण—

वृश्चिकस्थः शशी भौमः कर्के तत्रेत्थशालतः ।
अधमाधमकम्बूलं कार्यविध्वंसदुःखदम् ॥ ४९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९ ॥

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा, मङ्गल, कर्क राशि में हो यदि दोनों में इत्थशाल योग हो तो अधमाधम कम्बूल योग होगा क्योंकि दोनों अधमाधिकार में हैं ॥ ४९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधमाधमकम्बूलयोगः

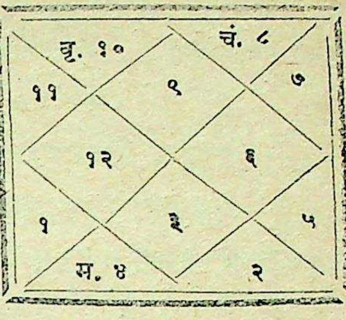

जैसे पुत्र प्रश्न में धन लग्न है उसका स्वामी बृहस्पति अपने नीच (मकर) राशि में है और पञ्चम भाव का स्वामी मङ्गल अपने नीच (कर्क) राशि में स्थित है और चन्द्रमा अपने नीच वृश्चिक राशि का है इनका परस्पर इत्थशाल योग है तीनों का अधम अधिकार होने से अधमाधम कम्बूल योग भया, यहाँ पुत्रलाभ नहीं होवेगा ऐसा कहना ॥ ४९ ॥

एवं पूर्वोक्तभेदानामुदाहरणयोजना ।
उक्तलक्षणसम्बन्धादूहनीया विचक्षणैः ॥ ५० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५० ॥

इस प्रकार पूर्व कहे हुए कम्बूल योग का भेद और उदाहरणों की योजना से पण्डितों को पूर्व कहे हुये योगों के लक्षणों की योजना करनी चाहिये ॥ ५० ॥

किसी आचार्य के मत से एक ही राशि में स्थित मन्दग्रह शीघ्रग्रह दोनों ग्रहों में

मुथशिल योग—

मेषस्थेऽब्जे शनीत्यादिदृष्टान्तान्मन्दशीघ्रयोः ।
एकर्क्षविस्थिताविथशालादीनपरे जगुः ॥ ५१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५१ ॥

मेषराशि का चन्द्रमा उसी के साथ शनैश्चर इत्थशाल योग करे तो वह अधम नाम कम्बूलयोग होता है, इत्यादि दृष्टान्तों के वश शीघ्र गतिवाले ग्रहों और मन्द गतिवाले ग्रहों का ही मुथशिल (मिलाप) होता है क्योंकि ये दोनों एक राशि में हैं इसलिये यह अधमाधम नामक कंबूल योग हुआ एवं अन्य आचार्य एक राशि में स्थित शीघ्रगतिवाले ग्रह और मन्द गतिवाले ग्रहों से इसराफ आदि योगों को कहते हैं ऐसा ही समरसिंह ने भी कहा है।

"मेषस्थेऽब्जे शनिना कर्कस्थे भूभुवा स्त्रियां कविना ।
मकरस्थे गुरुणा सह मीनस्थे ज्ञेन न शुभं च ॥"

मेष में बैठे हुये चन्द्रमा के साथ मेष ही में बैठे हुये शनि के साथ इत्थशाल हो तो चन्द्रमा को मध्यमाधिकार में होने से मध्यमाधम कम्बूल होता है, इसी प्रकार कर्क में बैठे हुये चन्द्रमा और मङ्गल का इत्थशाल हो तो चन्द्रमा के उत्तमाधिकार में होने से उत्तमाधम कम्बूल होता है, कन्या राशि में बैठे हुये चन्द्रमा और शुक्र का इत्थशाल हो तो चन्द्रमा के मध्यमाधिकार में होने से मध्यमाधम कम्बूल होता है, मकर राशि में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बैठे हुये चन्द्रमा और गुरु का इत्थशाल हो तो यह भी मध्यमाधम कम्बूल योग होता है इसी प्रकार मीन राशि में बैठे हुये चन्द्रमा और बुध का इत्थशाल हो तो भी मध्यमाधम कम्बूल होता है, उपरोक्त पाँचों उदाहरणों का फल शुभ नहीं होता है।

दृष्टान्त द्वारा पूर्वोक्त मत का खण्डन—

तदयुक्तं नीचगस्य नीचेन रिपुणा रिपोः ।
इत्थशालःकार्यनाशीत्युक्तं तत्र यतः स्फुटम् ॥ ५२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५२ ॥

एक राशि में बैठे हुये शीघ्रगति और मंदगति ग्रहों के ही मुथाशिल योग विचारना चाहिये, यह जो अन्य आचार्यों का मत है सो अयुक्त है क्योंकि नीच में बैठे हुये ग्रह का नीच स्थित ग्रह के साथ और शत्रु शत्रु के साथ इत्थशाल योग करे तो कार्य का नाश होता है ऐसा वहां (ताजिक संज्ञातन्त्र में समरसिंह ने) कहा है। परन्तु कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता है।

क्योंकि एक ही राशि किसी भी दो ग्रहों की नीच राशि नहीं हो सकती हैं ऐसे अवस्था में एक ही राशि में (नीचगस्य नीचेन) इस प्रमाण से इत्थशाल होना असम्भव है ! दूसरे प्रकार (रिपुणा रिपोः) का सम्भव हो सकता है ॥५२॥

प्रकारान्तर से फलोत्पत्तिज्ञान के लिये कम्बूलयोग के भेद—

लग्नकार्यपयोरित्थशाले चैकोऽस्ति नीचगः ।
स्वर्क्षादिपदहीनोऽन्योत्रेन्दुः कम्बुलयोगकृत् ॥ ५३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५३ ॥

लग्नेश व कार्येश में से एक अपने नीच राशि में बैठा हो और दूसरा अपने स्वर्क्ष आदि पदों से (अपनी राशि, अपने उच्च द्रेष्काण हद्दा नवांश, नीच व शत्रु घर में न हो)। किन्तु सम अधिकार में स्थित हो, और इसी सम अधिकार में स्थित होकर चन्द्रमा यदि इत्थशाल योग को करे तो कम्बूल नामक योग होता है ॥५३॥

दृष्टान्तसहित कम्बूलयोग का फल—

तत्र कार्याल्पता ज्ञेया यथाजात्यन्यमर्थयन् ।
अन्यजातिः पुमानर्थं तथैतत्कवयो विदुः ॥ ५४ ॥

अन्वयः—तत्र कार्याल्पता ज्ञेया यथा अन्यजातिः पुमान् जात्यन्यं अर्थं अर्थयन् तथैतत्कवयो विदुः ॥ ५४ ॥

उक्त कम्बूल योग में वांछित कार्यों की अल्पता जाननी चाहिये, अर्थात् यह कम्बूल योग थोड़े फलों का देने वाला होता है, जैसे अन्य जातिवाला पुरुष विजातीय से जब धन की याचना करता है तब थोड़े अर्थ (धन) को पाता है, तैसे ही यह कम्बूलयोग थोड़े फलों का देनेवाला होता है ऐसा पण्डित लोग कहते हैं ॥ ५४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शून्यमार्गग्रहलक्षण—

यस्याधिकारः स्वर्क्षादिः शुभो नाप्यशुभोऽपि च ।
केनाप्यदृश्यमूर्तिश्च स शून्याध्वग इष्यते ॥ ५५ ॥

अन्वयः—यस्य स्वर्क्षादिशुभाधिकारस्तथा नीचाद्यशुभाधिकारश्च न केनाप्यदृश्यमूर्तिश्च स शून्याध्वगः इष्यते ॥ ५५ ॥

जिस ग्रह का स्वर्क्षादि अधिकार नहीं होवे अर्थात् जिस ग्रह का अपना घर अपना उच्च, अपना हद्दा अपना द्रेष्काण व अपना नवांश इत्यादि शुभफलों का देने वाला अधिकार नहीं हो अर्थात् उक्त अधिकारों में ग्रह न हो और अशुभ भी अधिकार नहीं अर्थात् अपना नीच घर व अपना शत्रुवाला अशुभ फलों का देने वाला अधिकार नहीं होवे, और किसी शुभग्रह से वा पापग्रह से देखा न जावे तो वह शून्याध्वग (शून्यमार्गगामी) कहा जाता है। इस अर्थ में प्रमाण वाक्य कोई नहीं देख पड़ता है, क्योंकि समरसिंह आदि आचार्यों ने नहीं कहा है इस कारण से इसे प्रमाणरहित समझना चाहिए ॥ ५५ ॥

गैरिकम्बूल का लक्षण—

लग्नकार्येशयोरित्थशाले शून्याध्वगः शशी ।
उच्चादिपदशून्यत्वान्नेत्थशालोऽस्य केनचित् ॥ ५६ ॥
यद्यन्यर्क्षं प्रविश्यैष स्वर्क्षोच्चस्थेत्थशालवान् ।
गैरिकम्बूलमेतत्तु पदोनेनाशुभं स्मृतम् ॥ ५७ ॥

अन्वयः—लग्नकार्येशयोरित्थशाले, अत्र उच्चादिपदशून्यत्वात् शून्याध्वगः शशी, अस्य केनचित् (लग्नेशकार्येशयोर्मध्ये) इत्थशालो न, यद्येषः (चन्द्रः) अन्यर्क्षं प्रविश्य स्वर्क्षोच्चस्थेत्थशालवान् तदा एतद्गैरिकम्बूलम् स्यात् पदोनेन अशुभं स्मृतम् ॥ ५६–५७ ॥

लग्नेश व कार्येश का परस्पर इत्थशाल योग होवे और वहाँ चन्द्रमा शून्यमार्गगामी हो, ऐसे चन्द्रमा के साथ लग्नेश व कार्येश इनमें से किसी एक का मुथशिल योग नहीं होवे ॥ ५६ ॥ ऐसा चन्द्रमा यदि राशि के अन्त में होकर आगे की राशि में प्रवेश करे और जिस राशि में प्रवेश किया हो वह राशि जिस ग्रह का अपना घर व अपना उच्च हो वह ग्रह इसी राशि में यदि स्थित होवे और उसी ग्रह के साथ चन्द्रमा यदि मुथशिल योग को करे तो यह गैरिकम्बूल नामक योग होता है, यह गैरिकम्बूल पूर्व कहे हुए कम्बूल भेदों के समान फलों का देने वाला होता है यह विशेष जानना चाहिए और जो अन्यराशि में स्थित चन्द्रमा उसी राशि में स्थित स्वगृह आदि अधिकारों से रहित ग्रह के साथ इत्थशाल योग को करे तो यह गैरिकम्बूल अशुभ फल का देने वाला कहा है ॥ ५७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गैरिकम्बूल योग उदाहरण—

लप्स्ये सुखमिति प्रश्नं सिंहलग्ने रविः क्रिये।
अष्टांशैः सुखपः कुम्भे भौमोंऽशैरविभिस्तयोः ॥ ५८ ॥
इत्थशालोऽस्ति तत्रेन्दुः कन्यायां चरमेंशके।
स्वर्क्षादिपदहीनस्य नेत्थशालस्य केनचित् ॥ ५९ ॥
स स्वोच्चगेन शनिनाऽन्यर्क्षस्थेनेत्थशालकृत्।
गैरिकम्बूलमन्येन साहाय्याल्लाभदायकम् ॥ ६० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

जैसे किसी ने पूछा कि हमको सुख प्राप्त होवेगा इस प्रश्न में प्रश्नलग्न सिंह है उसका स्वामी सूर्य आठ अंशों से मेष राशि में है, और सुख भाव (चौथेघर) का स्वामी मङ्गल बारह अंशों से कुम्भराशि में बैठा है और उन दोनों लग्नेश (सूर्य) और कार्येश (मङ्गल) का ॥ ५८ ॥ परस्पर इत्थशाल योग है, और चन्द्रमा कन्या राशि के चरम अंश (तीसवें अंश) में शुभ अधिकार से हीन होकर लग्नेश व कार्येश इनमें से किसी के साथ इत्थशाल योग नहीं करता है ॥ ५९ ॥ परन्तु तुला राशि में जाने वाला है, वह तुलाराशि शनैश्चर का उच्च है, उसी में बैठे हुए शनैश्चर के साथ शीघ्रगामित्व से तुलाराशि में प्राप्त होकर चन्द्रमा इत्थशाल योग करता है इससे यह गैरिकम्बूल नाम योग सिद्ध हुआ, अब इसका फल वर्णन करते हैं किसी तीसरे की सहायता से सुख का लाभ होगा, अब इसी कहे हुये योग में तुलाराशि में बुध आदि ग्रह स्थित हो कि जिसका शुभ वा अशुभ कोई भी अधिकार नहीं हो वहाँ बैठा हुआ चन्द्रमा जो बुध के साथ इत्थशाल योग करे तो यह गैरिकम्बूल नाम योग अशुभ फल का देने वाला होता है ॥६०॥

गैरिकम्बूलयोगोऽयम्

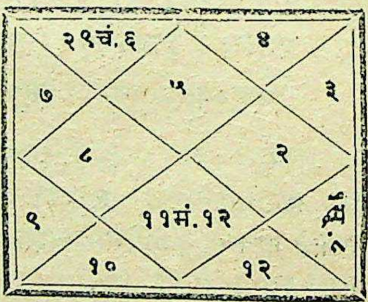

खल्लासर योग का लक्षण—

शून्येध्वनीन्दुरुभयोर्नेत्थशालो नवायुतिः।
खल्लासरो न शुभदः कम्बूलफलनाशनः ॥ ६१ ॥

अन्वयः—इन्दुः शून्येध्वनि, उभयोः (लग्नेशकार्येशयोर्मध्ये) केनचित् इत्थशालोन वा युतिः न (तदा) खल्लासरः स्यात् (अयं) कम्बूलफलनाशनः शुभदः न स्यात् ॥ ६१ ॥

यदि चन्द्रमा शून्यमार्गगामी होकर लग्नेश व कार्येश में से किसी एक के साथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी इत्थशालयोग को नहीं करे अथवा चन्द्रमा लग्नाधीश व कार्याधीश इन में से किसी के साथ नहीं होवे, तो खल्लासर नामक योग होता है, यह योग कम्बूलयोग के फल को नाश करनेवाला शुभफलों (वांछित कार्यों) का देनेवाला नहीं होता है ॥६१॥

रद्दयोग का लक्षण—

अस्तनीचरिपुवक्रहीनभादुर्बलो मुथशिलं करोति चेत् ।
नेतुमेष न विभुर्यतो महोऽन्ते मुखेऽपि न स कार्यसाधकः ॥६१॥

अन्वयः—अस्तनीचरिपुवक्रहीनभादुर्बलो (ग्रहो ज्ञेयः) चेत् (यदि) केनापि मुथशिलं करोति तदा स अन्ते मुखेऽपि कार्यसाधकः न यतः एषः महो नेतुं न विभुः ॥ ६२ ॥

जो ग्रह अस्त हो गया हो या नीच या शत्रु के घर में हो व वक्री हो, वा तेज रहित होवे । ऐसा दुर्बल (बलरहित) ग्रह किसी भाव के स्वामी के साथ इत्थशाल योग को करे तो वह ग्रह अन्त और आदि में उस भाव के कार्यों का साधक नहीं होता है क्योंकि वह ग्रह तेज लेने में समर्थ नहीं होता है ॥ ६२ ॥

रद्दयोग का समय भेद से फल में विशेषता—

केन्द्रस्थ आपोक्लिमगं युनक्ति भूत्वादितो नश्यति कार्यमन्ते ।
आपोक्लिमस्थो यदि केन्द्रयातं विनश्य पूर्वं भवतीह पश्चात् ॥६३॥

अन्वयः—केन्द्रस्थः (कार्येशः) आपोक्लिमगं (लग्नेशं) युनक्ति तदा कार्यम् आदितो भूत्वा अन्ते विनश्यति यदि आपोक्लिमस्थ केन्द्रयातं युनक्ति तदा पूर्वं विनश्य पश्चात् भवति ॥६३॥

यदि कार्येश निर्बल होवे और केन्द्र १।४।७।१० स्थान में स्थित होकर आपोक्लिम ३।६।९।१२ स्थान में स्थित हुए लग्नाधीश के साथ इत्थशाल योग करे तो आदि में कार्य होकर अन्त में नाश हो जाता है और जो बल रहित कार्येश आपोक्लिम में स्थित होकर केन्द्र में वर्तमान लग्नाधीश के साथ इत्थशाल योग करे तो पहले कार्यनाश होकर पश्चात् कार्यसिद्धि होती है ऐसा कहना ॥ ६३ ॥

दुफालिकुत्थयोग का लक्षण—

मन्दः स्वभोच्चादिपदे स्थितश्चेत्पदोनशीघ्रेण कृतेत्थशालः ।
तत्रापि कार्यं भवतीति वाच्यं वक्रादिनिर्वीर्यपदे च चेत्स्यात् ॥६४॥

अन्वयः—मन्दः स्वभोच्चादिपदे स्थितः चेत्पदोनशीघ्रेण इत्थशालः कृतः तत्रापि कार्यं भवति इति वाच्यं चेत् शीघ्रः वक्रादिनिर्वीर्यपदे (पूर्वोक्त अस्तनीचेत्यादि) (तदा कार्यसिद्धिः) न स्यात् ॥ ६४ ॥

मन्दगतिवाला ग्रह अपने घर, उच्च द्रेष्काण, हद्दा और नवांश में स्थित होकर शुभ अधिकार से रहित शीघ्रगति ग्रह के साथ यदि इत्थशाल योग करे तो भी अभीष्ट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कार्य सिद्ध होता है, और यदि शीघ्रगामी ग्रह अस्त हो वा अपने नीच घर व शत्रुराशि में स्थित हो वा वक्री हो तो अभीष्ट (मनवांछित) कार्य की सिद्धि नहीं होती है, ऐसा कहना चाहिये ॥ ६४ ॥

दुत्थोत्थादिवीर योग का लक्षण—

वीर्योनितौ कार्यविलग्ननाथौ स्वर्क्षादिगेनान्यतरो युनक्ति ।
अन्यौ यदा द्वौ बलिनौ तदान्यसाहाय्यतः कार्यमुशन्ति सन्तः ॥६५॥

अन्वयः--स्पष्टम् ॥ ६५ ॥

लग्नेश व कार्येश ये दोनों वीर्य (बल) हीन होय अर्थात् अस्त नीच व शत्रुराशि में हों वा वक्री होके तेजोरहित होवें तथा उन दोनों (लग्नेश व कार्येश) में से कोई एक ग्रह अपने उच्च, अपने द्रेष्काण, अपने हद्दा व अपने नवांश में बैठे हुए तीसरे के साथ इत्थशाल योग को करें तो अन्य किसी की सहायता से वांछित कार्य का लाभ होवेगा। इसको दुत्थ कहते हैं। अथवा जब अन्य दो ग्रह अपने घर व अपने उच्च, अपने हद्दा आदि अधिकारों में होकर बलवान् होवे और लग्नाधीश व कार्याधीश इनमें से किसी एक के साथ इत्थसाल योग करें तो भी किसी अन्य की सहायता से कार्य सिद्ध होवेगा ऐसा महात्मा जनों ने वर्णन किया है इसको दुत्थ से उत्पन्न दिवीर कहते हैं ॥ ६५ ॥

तम्बीरयोग का लक्षण—

बलीराश्यन्तगोऽन्यर्क्षगामी दीप्तांशकैर्महः ।
दत्तेऽन्यस्मै कार्यकरस्तम्बीरो लग्नकार्यपोः ॥ ६६ ॥

अन्वयः--(यदा) लग्नकार्यपोः (मध्ये) बली राश्यन्तगः अन्यर्क्षगामी-(सन्) दीप्तांशकैः अन्यस्मै महः दत्ते तदा तम्बीरः कार्यकरः स्यात् ॥ ६६ ॥

जब लग्नाधीश व कार्याधीश इन दोनों का परस्पर इत्थशाल योग नहीं होवे, तब लग्नेश व कार्येश इनमें कोई बलवान् ग्रह राशि के अन्तिम अंश में होकर आगे राशि में जानेवाला होवे तो वह ग्रह आगे राशि में अपने दीप्तांश के अन्दर अंशों में बैठे हुये ग्रह को अपना तेज देता हो तो यह तम्बीर नामक योग होता है। जिसे फारसी में तदबीर कहते हैं और यदि आगे की राशि में जाने वाला ग्रह अपने घर उच्च, हद्दा, व द्रेष्काण आदि बलों से युक्त होवे तो यह योग अभिष्ट कार्यों की सिद्धि करने वाला होता है ॥ ६६ ॥

अब कुत्थ योग का लक्षण—

लग्नेऽथ केन्द्रे निकटेऽपिवास्य विलग्नदर्शी स्वगृहोच्चदृक्के ।
मुसल्लहे स्वे निजहद्दगो वा बली ग्रहो मध्यगतिस्त्वशीघ्रः ॥६७॥

अन्वयः अथ लग्ने, केन्द्रे अस्य निकटे (पणफरे) विलग्नदर्शी स्वगृहोच्चदृक्के स्वेमुसल्लहे निजहद्दगो मध्यगतिः अशीघ्रः (अल्पगतिः) बलीग्रहोज्ञेयः ॥ ६७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यवन भाषा में कुत्थ माने बल के होते हैं, सभी ग्रहों के वा लग्नेश और कार्येश के बलवान होने से कुत्थ योग होता है, बल अनेक प्रकार के होते हैं, उसमें अनेक भेदों को कहते हैं—सबों की अपेक्षा लग्न में स्थित रवि आदि ग्रह बली होते हैं उसके अभाव में केन्द्र १।४।७।१० स्थान में स्थित ग्रह बली जानना, परन्तु लग्नस्थ ग्रह की अपेक्षा केन्द्रस्थ ग्रह न्यून (कम) बली जानना, उसके अभाव में केन्द्र के निकट पणफर २ । ५ । ८ । ११ स्थान में स्थित ग्रह बली होता है, परन्तु केन्द्रस्थ ग्रह की अपेक्षा इसको न्यून बली जानना उसके अभाव में जो ग्रह लग्न को देखता है वह बली कहा जाता है । तथा जो ग्रह अपने घर अपने उच्च, अपने द्रेष्काण, अपने नवांश, हद्दा में है वह भी बली होता है, तथा मध्यगतिवाला (अर्थात् मध्यगति के तुल्यगति वाला) मध्यगति से अल्प गतिवाला ग्रह बलवान् होता है ॥ ६७ ॥

कुत्थ के अन्य भेदों का वर्णन—

कृतोदयो मार्गगतिः शुभेन युतेक्षितः क्रूरखगस्य दृष्ट्या ।
क्षुताख्ययानाधिगतो न युक्तः क्रूरेण सायं च सितेन्दुभौमाः ॥६८॥
यदोदयन्ते परराविभागेर्जीवाऽर्कजावह्निनराः सवीर्याः ।
अन्ये निशीनस्य नवैकभागे स्थिताः स्थिरर्क्षे च बलेन युक्ताः ॥६९॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

जिस ग्रह का उदय हुआ हो वह बलवान् होता है और जो ग्रह मार्गी होकर शुभ ग्रहों से युक्त वा देखा जावे उसको बली कहते हैं तथा जो पापग्रहों की क्षुताख्या (चौथी, दशवीं, सातवीं वा एक स्थान की) दृष्टि से नहीं देखा जावे वह ग्रह बली होता है, और जो ग्रह क्रूर ग्रहों से युक्त नहीं होवें वह भी बली कहा जाता है इस प्रकार सामान्यता से ग्रहों का बल कहकर समय बल कहते हैं शुक्र चन्द्रमा व मङ्गल ये ३ ग्रह सायंकाल में उदय होवें तो बलवान होते हैं ॥ ६८ ॥ बृहस्पति व शनैश्चर, ये दोनो ग्रह अर्धरात्रि के बाद उदित हों तो बली कहे जाते हैं, तथा पुरुषसंज्ञक ग्रह (सूर्य, मङ्गल व बृहस्पति) ये दिन में बली इनसे भिन्न स्त्री ग्रह (चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि) रात्रि में बली होते हैं और सूर्य जिस नवांश में स्थित हो उसी राशि में यदि ग्रह स्थित हों तो बलवान् होते हैं, इसीसे "अन्ये निशीनस्य नवैकभागे स्थिताः" ऐसा पाठ साधु है और "अन्ये निशीनस्य तथैक भागे" ऐसा भी पाठ कितने पण्डित कहते हैं जैसे कि, कन्या राशि में सूर्य है और बीस अंशों पर होकर मिथुन के नवांश में हुए यदि इसी मिथुन में ग्रह होवे तो बलवान् जानना चाहिये तथा वृष, सिंह, वृश्चिक, और कुम्भ, इन स्थिर राशियों में बैठे हुए ग्रह बलवान् कहे जाते हैं ॥ ६९ ॥

अन्य प्रकार से—

स्त्रियश्चतुर्थात्पुरुषा वियद्भाद्भषट्कगा ओजभगाः पुमांसः ।
समे परे स्युर्बलिनो विमृश्य विशेषमेतेषु फलं निगद्यम् ॥७०॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—चतुर्थात् भषट्कगा स्त्रियः (स्त्रीग्रहाः) वियद्धाद्गषट्कगा पुरुषाः (पुरुषग्रहाः) बलिनः स्युः अन्यत् स्पष्टम्, एतेषु विशेषं विमृश्य फलं निगद्यम् ॥ ७० ॥

स्त्री संज्ञक ग्रह चौथे से लेकर नवमपर्यन्त ६ भावों में हों तो बलवान होते हैं और पुरुषसंज्ञक ग्रह दसवें से लेकर तीसरे स्थानपर्यन्तबली कहे जाते हैं तथा विषमराशि में बैठे हुए पुरुषसंज्ञक ग्रह अतिशय बलवाले होते हैं, और शेष स्त्रीसंज्ञक ग्रह समराशि में होवे तो बली होते हैं इन पूर्वोक्त अनेक बलभेदों में विशेष शुभ अधिकार को विचार कर शुभ फल कहना चाहिये ॥ ७० ॥

दुरफयोग का लक्षण—

लग्नात्षष्ठाष्टमेन्त्येऽनृजुररिगृहगो नीचगो वक्रगामी ।
क्रूरैर्युक्तोऽस्तगो वा यदि च मुथशिली क्रूरनीचारिभस्थैः ॥
क्षुद्दृष्ट्या क्रूरदृष्टो व्ययरिपुमृतिगैरित्थशालं विधित्सुः ।
कुर्वन्वा निर्बलो यः स्वगृहनगभगो राहुपुच्छास्यवर्ती ॥७१॥

अन्वय—स्पष्टम् ॥ ७१ ॥

फारसी में दुरफ कमजोर (निर्बल) को कहते हैं वह निर्बलत्व अनेक प्रकार का होता है सो कहते हैं— वर्षलग्न, मासलग्न व प्रश्न लग्न से जो ग्रह ६।८।१२ स्थानों में से किसी स्थान में हो तो वह बलहीन होता है, वक्री, ग्रह, शत्रु राशि में स्थित ग्रह नीचराशिस्थित ग्रह, निर्बल होता है, तथा वक्राभिलाषी क्रूरग्रह से युक्त ग्रह और अस्तंगत ग्रह निर्बल होता है, पापग्रह के राशि में, शत्रु राशि में वा नीचराशि में स्थित ग्रहों के साथ जो ग्रह इत्थशाल कोकरे, वह निर्बल होता है। और जो ग्रह पापग्रहों से क्षुद्दृष्टि अर्थात् पहले, चौथे, सातवें, दशवें स्थानगत दृष्टि से देखा जावे तो वह निर्बल होता है, तथा जो ग्रह बारहवें, छठें, सातवें स्थान में बैठे हुए ग्रहों के साथ इत्थशाल योग को करे अथवा इच्छा करता हो, तो भी उसे निर्बल कहते हैं और जो ग्रह अपने घर से सातवें स्थान में बैठा हो तो वह निर्बल होता है, जैसे मङ्गल का मेषस्थान है उससे सातवीं तुला राशि हुई यदि इसमें कोई ग्रह स्थित होवे तो उसे निर्बल कहते हैं, अर्थात् जिस राशि में बैठा हुआ ग्रह विदित होवे वह राशि ग्रह के अपने घर से यदि सातवें दीख पड़े तो निर्बल समझना चाहिये, और राहु के भुक्त अंश (पूछ) और भोग्य अंश (मुख) जानना, वहां जो ग्रह स्थित होवे तो उसे बलहीन जानना चाहिये ॥७१॥

अन्य अशुभ प्रकार वर्णन—

अनीक्षमाणस्तनुमस्तभागस्थितः स्वभोच्चादिपदैश्च शून्यः ।
क्रूरेसराफी न स वीर्ययुक्तः कार्यं विधातुं न विभुर्यतोऽसौ ॥७२॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो ग्रह लग्न को नहीं देखता है वह निर्बल होता है और जो अस्त भाग में स्थित हो तो वह भी निर्बली होता है, अर्थात् सूर्य जिस राशि नवांश में हो उससे सातवां जो नवांश उसमें बैठा हुआ ग्रह निर्बली जानना तथा जो ग्रह अपने घर वा उच्च व अपने द्रेष्काण वा नवांशादि अधिकारों से शून्य होवे तो वह निर्बली होता है, और जो ग्रह पापग्रहों के साथ ईसराफ योग करे तो वह बलवान् नहीं होता है, जिससे कि यह ग्रह वांछित कार्य को करने के अर्थ समर्थ नहीं होता है इस कारण आचार्य ने उस ग्रह को बलहीन वर्णन किया है ॥ ७२ ॥

चन्द्रमा का अत्यन्त विशेष वर्णन—

चन्द्रःसूर्याद्द्वादशे वृश्चिकाद्ये खण्डे नेष्टोऽन्त्ये तुलायां विशेषात् ।
राशीशेनादृष्टमूर्तिर्न सर्वैर्दृष्टो ज्ञेयः शून्यमार्गी पदोनः ॥ ७३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७३ ॥

सूर्य जिस राशि में स्थित हो उस राशि से बारहवें चन्द्रमा होवे तथा वृश्चिक राशि के पूर्वार्द्ध (प्रथम खण्ड) में चन्द्रमा स्थित हो तो निर्बली होता है और तुलाराशि के उत्तर खण्ड (पिछले भाग) में स्थित चन्द्रमा विशेष करके इष्ट फलों का देनेवाला नहीं होता है, तैसे ही जिस राशि में चन्द्रमा हो उस राशि के स्वामी से यदि देखा न जावे अथवा सम्पूर्ण ग्रहों से देखा न जावे तो भी निर्बल होता है तथा जो चन्द्रमा शून्य मार्ग में स्थित हो और अधिकारों से रहित हो तो अशुभ फलका देनेवाला जानना चाहिए ॥ ७३ ॥

चन्द्रमा के अन्य दुरफयोग—

क्षीणो भान्त्ये नो शुभो जन्मकाले
पृच्छायां वा चन्द्र एवं विचिन्त्यः ।
शुक्ले भौमः कृष्णपक्षेऽर्कसूनुः क्षुद्दृ-
ष्ट्येन्दुः वीक्षते नोऽशुभोऽसौ ॥ ७४ ॥

अन्वयः—क्षीणः (कृष्णपक्षीय पञ्चमीमारभ्य शुक्लपञ्चमीपर्यन्तमिति-यावत्) भान्त्ये नोशुभः एवं जन्मकाले पृच्छायां वा चन्द्रः विचिन्त्यः । शुक्ले भौमः कृष्णपक्षेऽर्कसूनुः क्षुद्दृष्ट्या इन्दुं विक्षते तदा असौ इन्दुः शुभो न ॥ ७४ ॥

क्षीण चन्द्रमा, जो कृष्णपक्ष की पञ्चमी से शुक्लपक्ष की पञ्चमी तक रहता है तथा राशि के अन्त में अर्थात् अन्तिम नवांश में चन्द्रमा स्थित हो तो निर्बल होता है, इस तरह से जन्मलग्न व प्रश्नलग्न में चन्द्रमा के बल का विशेष कर विचार करना चाहिए, और शुक्लपक्ष में मङ्गल कृष्णपक्ष में शनैश्चर (क्षुद्दृष्टि) से चन्द्रमा को देखते हों तो वह चन्द्रमा शुभ फलों को नहीं देता है ऐसा सिद्धान्त जानना ॥ ७४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चन्द्रमा का विशेष दोषाल्पकत्व—

शुक्ले दिवा नृगृहगोऽर्कसुतः शशाङ्कं
कृष्णे कुजो निशि समर्क्षगतः प्रपश्येत् ।
दोषाल्पतां वितनुतेऽपरथा बहुत्वं प्रश्ने-
ऽथवा जनुषि बुद्धिमतोहनीयम् ॥ ७५ ॥

अन्वयः—शुक्ले दिवा नृगृहगो (विषमराशिगतः) अर्कसुतः शशाङ्कं प्रपश्येत्, कृष्णेनिशिकुजः समर्क्षगतः शशाङ्कं प्रपश्येत तदा दोषाल्पतां वितनुते, अन्यथा बहुत्वं वितनुते, एवं प्रश्नेऽथवा जनुषि बुद्धिमता ऊहनीयम् ॥ ७५ ॥

शुक्लपक्ष में दिन में पुरुष राशि (मे० मि० सिं० ध० कुं०) में स्थित शनैश्चर यदि चन्द्रमा को देखता होवे तो दुरफ योग के अल्प फल को देता है, अन्यथा अर्थात् यदि शनैश्चर नहीं देखता होवे तो दुरफयोग के फल को अधिक देता है, तथा कृष्णपक्ष में रात्रिसमय यदि मंगल समराशि (वृ० क० वृ० म० मी०) में स्थित होकर चन्द्रमा को देखे तो दुरफयोग के फल को न्यून करता है यदि मंगल नहीं देखता होवे तो दोषों को अधिक देता है। यह सम्पूर्ण विचार प्रश्नलग्न अथवा जन्मलग्न में बुद्धिमान् पण्डितों को विचार करने योग्य है और वर्षलग्न आदि में भी विचार करना चाहिए यह षोडशयोगों का विषय समाप्त हुआ ॥ ७५ ॥

सम्पूर्ण ग्रहों के चार हर्ष स्थानों का वर्णन—

नन्दत्रिषड्लग्नभवर्क्षपुत्रव्यया इनाद्धर्षपदं स्वभोच्चम् ।
त्रिभं त्रिभं लग्नभतः क्रमेण स्त्रीणां नृणां रात्रिदिने च तेषाम् ॥७६॥

अन्वयः—इनात् नन्दत्रिषड्लग्नभवर्क्ष पुत्रव्ययो हर्षपदं भवन्ति। तथा स्वभोच्चम् हर्षपदं भवति। लग्नभतः त्रिभं त्रिभं स्त्रीणां नृणां हर्षपदं भवन्ति। तेषां (स्त्रीणां नृणां) रात्रिदिने च हर्षपदं भवन्ति ॥ ७६ ॥

प्रत्येक ग्रहों के चार २ हर्ष बल होते हैं। उनमें पहला हर्ष सूर्य से लेकर नवमादि स्थानों में सभी ग्रह हर्ष बल को प्राप्त करते हैं अर्थात् हर्षित होते हैं। जैसे सूर्य लग्न से नवम में, चन्द्रमा तीसरे, मंगल छठें, बुध लग्न में, बृहस्पति एकादश में, शुक्र पंचम में, शनि बारहवें स्थान में हर्षित होता है। दूसरा हर्ष बलग्रह अपने राशि या उच्च में हो तो हर्षित होता है। तीसरा हर्षबल—लग्न से लेकर तीन २ भाव पर्यन्त स्त्री ग्रह (चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि) और पुरुष ग्रह (रवि, भौम, गुरू) क्रम से हर्षित होते हैं। अर्थात् लग्न से तीसरे भावपर्यन्त स्त्री ग्रह और तीसरे से छठे भाव पर्यन्त पुरुष ग्रह और छठे से नवें भाव तक स्त्री ग्रह और नवें से द्वादश भाव पर्यन्त पुरुष ग्रह हर्षित होते हैं। चौथा हर्षबल—रात्रि में वर्ष प्रवेश स्त्री ग्रह और दिन में हो तो पुरुष ग्रह हर्षित होते हैं ॥ ७६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर्षस्थान बल चक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
०	०	५	०	०	५	०	स्थान
०	०	०	०	५	०	५	उ. स्व.
५	५	५	०	०	०	०	त्रि.
०	५	०	५	०	५	५	रा. दि.
५	१०	१०	५	५	१०	१०	यो.

श्रीगर्गान्वयभूषणो गणितविच्चिन्तामणिस्तत्सुतो-
ऽनन्तोऽनन्तमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यै जनुः पद्धतिम् ।
तत्सूनुः खलु नीलकण्ठविबुधो विद्वच्छिवानुज्ञया
योगान्षोडश हर्षभानि च तथा संज्ञाविवेकेऽभ्यधात् ॥ ७७ ॥

अन्वयः—श्रीगर्गान्वयभूषणः—(श्रीगर्गाचार्यवंशश्रेष्ठः) गणितवित् (गणितं वेत्तीति गणितविज्ज्योतिः शास्त्रविज्ञः) चिन्तामणिरिति नामा कश्चित् आसी-त्तत्सुतः (तस्य पुत्रः) अनन्तमतिः (अनन्तगुणसम्पन्नमतिः) अनन्त नामा, खलमतध्वस्त्यै (दुष्टमतनिरासाय) जनुः पद्धतिं (उत्पन्नबलाकादेस्तज्जन्म-कर्माधिकृत्य शुभाशुभनिरूपकं शास्त्रं व्यधात् (कृतवान्) तत्सूनुः (तस्य पुत्रः) नीलकण्ठविबुधः खलु (निश्चयेन) विद्वच्छिवानुज्ञया संज्ञाविवेके (संज्ञातन्त्रे) षोडश योगान् तथा हर्षभानि हर्षस्थानानि च अभ्यधात् कृतवानित्यर्थः ॥७७॥

इति श्रीदैवज्ञानन्तदैवज्ञसुतनीलकण्ठज्योतिर्विद्विरचितायां नीलकण्ठ्यां संज्ञातन्त्रे ग्रहाणां रूपजातिषोडशयोगादिवर्णनं नाम द्वितीयं प्रकरणम् ॥ २ ॥

श्रीगर्गाचार्यजी के वंश में भूषण, गणित शास्त्र का जानने वाला चिन्तामणि नामक कोई पण्डित हुआ । उन्हीं का पुत्र अनन्तगुणों से सम्पन्न मतिवाला अनन्त नामक दुष्टों के मत को दूर करने के अर्थ जनुः पद्धति (जन्म पद्धति) को रचा तिस अनन्त दैवज्ञ का पुत्र विशेष विद्यावाला नीलकण्ठ नामक विद्वान् शिवजी की आज्ञा से संज्ञा विचार में षोडश योगों को तथा चारों हर्षद स्थानों की रचना किया ॥ ७७ ॥

इति भाषाटीकायां ग्रहाणां रूपजातिषोडशयोगादिवर्णनं नाम द्वितीयं प्रकरणम् ॥ २ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ तृतीयप्रकरणं प्रारभ्यते ॥ ३ ॥

सहम आदि का तीसरा प्रकरण

पुण्यं गुरुर्ज्ञानयशोऽथ मित्रं माहात्म्यमाशा च समर्थता च ।
भ्राता ततो गौरवराजतातमातासुतो जीवितमम्बुकर्म ॥ १ ॥

मान्द्यं च मन्मथकलीपरतः क्षमोक्ता
शास्त्रं सबन्धुसहमं त्वथ वन्दकश्च ।
मृत्योश्च सद्मपरदेशधनान्यदारा
स्यादन्यकर्मसवणिक्त्वथ कार्यसिद्धिः ॥ २ ॥
उद्वाहसूतिसन्तापः श्रद्धाप्रीतिर्बलं तनुः ।
जाड्यव्यापारसहमे पानीयपतने रिपुः ॥ ३ ॥
शौर्योपायदरिद्रत्वं गुरुताम्बुपथाभिधम् ।
बन्धनं दुहिताऽश्वश्च पञ्चाशत्सहमानि हि ॥ ४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १, २, ३, ४ ॥

१ पुण्य, २ गुरु, ३ ज्ञान, (विद्या), ४ यश, ५ मित्र, ६ माहात्म्य, ७ आशा, ८ सामर्थ्य, ९ भ्राता, १० गौरव, ११ राज, १२ तात, १३ माता, १४ सुत, १५ जीव, १६ अम्बु, १७ कर्म ॥ १ ॥ १८ रोग, १९ मदन, २० कलि, २१ क्षमा, २२ शास्त्र, २३ बन्धु, २४ वन्दक, २५ मृत्यु, २६ परदेश, २७ धन, २८ अन्यदारा, २९ अन्यकर्म, ३० वणिक्, ३१ कार्यसिद्धि, ॥ २ ॥ ३२ विवाह, ३३ प्रसूति, ३४ सन्ताप, ३५ श्रद्धा, ३६ प्रीति, ३७ वल, ३८ देह, ३९ जाड्य, ४० व्यापार, ४१ पानीयपतन, ४२ शत्रु ॥३॥ ४३ शौर्य, ४४ उपाय, ४५ दरिद्रत्व, ४६ गुरुता, ४७ अम्बुपथ, ४८ बन्धन, ४९ कन्या, ५० अश्व, ये पचास सहम हैं ॥ ४ ॥

पुण्यसहम का साधन—

सूर्योनचन्द्रान्वितमह्नि लग्नं वीन्द्वर्कयुक्तं निशि पुण्यसंज्ञम् ।
शोध्यर्क्षशुद्धाश्रयभान्तराले लग्नं न चेत्सैकभमेतदुक्तम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—अह्नि सूर्योनचन्द्रान्वितं लग्नं, निशि वीन्द्वर्कयुक्तं (अर्थात्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अर्कमध्ये इन्दुः शोध्यः) लग्नं युक्तं, सर्वत्र सहमानयने विशेषः-शोध्यर्क्ष-,शुद्धाश्रयभान्तराले लग्नं न चेत्तदोक्तं राश्यादिकं सैकभं कार्यम् एतत्पुण्य-संज्ञमुक्तम् ॥ ५ ॥

यदि दिन में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्रमा में सूर्य को घटा कर, और रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य में चन्द्रमा को घटाकर वर्ष लग्न को जोड़ देने से पुण्यसहम होता है। सभी सहमों के साधन में विशेष संस्कार—शोध्य ग्रह (अर्थात् जिस ग्रह को घटावे उसे शोध्यग्रह कहते हैं) की राशि से शुद्धाश्रय (जिस ग्रह में घटावे उसे शुद्धाश्रय कहते हैं) की राशि तक क्रम से गिने यदि इसके बीच में लग्न की राशि न हो तो पूर्वोक्त प्रकार से साधन किये हुये सहम में एक राशि और जोड़ देने से स्पष्ट सहम होता है, यदि शोध्यर्क्ष और शुद्धाश्रय के राशियों के बीच में लग्न की राशि हो तो एक नहीं जोड़ना चाहिये ॥ ५ ॥

स्पष्टग्रहाः ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	लग्न
११	७	११	१०	८	१०	१०	६
०	१	२१	९	४	५	१४	२४
४	३६	५	३३	५७	६	४३	५८
२८	०	३६	१२	३	५१	३३	९

उदाहरण—रात्रि में वर्षप्रवेश है इसलिये सूर्य ११।०।४।२८ में चन्द्रमा ७।१।३६।० को घटाया तो शेष ३।२८।२८।२८ बचा इसमें लग्न ६।२४।२८।९ जोड़ दिया तो १०।२२।५६।३७ यह हुआ यहाँ शोध्य चन्द्रमा और शुद्धाश्रय रवि के बीच में लग्न की राशि नहीं है इसलिये एक राशि और जोड़ दिया तो ११।२२।५६।३७ यह पुण्य सहम हुआ ॥ ६ ॥

गुरु, विद्या, यश सहम का साधन—

व्यत्यस्तमस्माद्गुरुविद्ययोस्तु संसाधनं पुण्यवियुक्सुरेज्यः ।
दिवाविलोमं निशि पूर्ववत्तु यशोभिधं तत्सहमं वदन्ति ॥ ६ ॥

अन्वयः—अस्मात् व्यत्यस्तं गुरुविद्ययोः सहमयोः संसाधनं स्यात् । दिवापुण्यवियुक् सुरेज्यः निशि विलोमं पूर्ववल्लग्नयोगः तत् यशोभिधं सहमं वदन्ति ॥ ६ ॥

जिस रीति से पुण्य सहम साधन किया जाता है उससे विपरीत क्रम से गुरुसहम और विद्यासहम का साधन करना चाहिये। जैसे दिन में वर्षप्रवेश होय तो सूर्य में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चन्द्रमा को घटावे शेष में लग्न जोड़ने से और रात्रि में वर्षप्रवेश होय तो चन्द्रमा में सूर्य को घटावे शेष में लग्न जोड़कर उक्तवत् सैकता करना तो गुरु विद्या यह दोनों सहम सिद्ध होते हैं। यशः सहम का साधन इस प्रकार है कि दिन में वर्षप्रवेश होय तो पुण्य सहम को बृहस्पति में घटावे, रात्रि में वर्षप्रवेश होय तो पुण्य सहम में बृहस्पति को घटावे और लग्न मिलावे संस्कार रीति से सैकता करे तो उसे पण्डितजन यशनामक सहम कहते हैं।

उदाहरण—चन्द्रमा ७।१।३६।० इसमें सूर्य ११।०।४।२८ को घटाया तो शेष ८।१।३१।३२ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो २।२६।२६।४१ यह गुरु विद्या सहम हुआ। पुण्य सहम ११।२२।५६।३७ इसमें बृहस्पति ८।४।५७।३ को घटाया तो शेष ३।१७।५८।३४ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो १०।१२।५७।४३ यह हुआ यहां शोध्य शोधक के बीच में लग्न की राशि नहीं है इसलिये पूर्वोक्त योग में एक राशि और जोड़ दिया तो ११।१२।५७।४३ यह यश सहम हुआ ॥ ६ ॥

मित्रसहम का साधन—

पुण्यसद्मगुरुसद्मतस्त्यजेद्व्यत्ययो निशि सितान्वितं च तत् ।
सैकतातनुवदुक्तरीतितो मित्रनामसहमं विदुर्बुधाः ॥ ७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७ ॥

दिन में वर्षप्रवेश होवे तो गुरुसहम में पुण्यसहम को घटावे और रात्रि में वर्षप्रवेश होय तो इससे विपरीत अर्थात् पुण्य सहम में गुरु सहम को घटावे और शुक्र को जोड़ देवे (यहाँ लग्न के युक्त करने की जगह शुक्र को संयुक्त किया है) अनन्तर शोध्यो राशि और शोधक राशि के मध्य में यदि शुक्र न होवे तो एक राशि को जोड़ देवे त उसे बुधजन मित्र सहम कहते हैं ॥ ७ ॥

मित्र सहम का उदाहरण—

पुण्य सहम ११।२२।५६।३७ है इसमें गुरु सहम २।२६।२६।४१ को घटाया तो यह ८।२६।२६।५६ शेष बचा इसमें शुक्र १०।५।६।५१ को जोड़ दिया तो यह ७।१।३३। ४७ मित्र सहम हुआ ॥ ७ ॥

माहात्म्य और आशासहम का साधन—

पुण्याद्भौमं शोधयेदुक्तवत्स्यान्माहात्म्यं तन्नक्तमस्माद्विलोमम् ।
शुक्रं मन्दादह्नि नक्तं विलोममाशाख्यं स्यादुक्तवच्छेषमूह्यम् ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८ ॥

दिन में वर्षप्रवेश हो तो पुण्यसहम में मंगल को घटाय देवे, और रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो विपरीत अर्थात् मंगल में पुण्यसहम को घटावे अनन्तर लग्न मिलाय उक्तवत् सैकता करे तो माहात्म्यसहम सिद्ध होता है, और यदि दिन में वर्ष प्रवेश होय तो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शनैश्चर में शुक्र को घटावे और रात्रि में इससे विपरीत अर्थात् शुक्र में शनैश्चर को घटा दे अनन्तर लग्न जोड़कर उक्तवत् सैकता करे तो आशासहम (इच्छासहम) सिद्ध होता है।

उदाहरण—

यहाँ रात में वर्षप्रवेश होने से मंगल ११।२१।३५।३६ है इसमें पुण्य सहम ११।२२।५६।३७ को घटाया तो शेष ११।२८।३८।५९ रहा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ जोड़ दिया तो यह ६।२३।३७।८ माहात्म्य सहम हुआ ॥ शुक्र १०।५।६।५१ है इसमें शनि १०।१४।४३।३३ को घटाया तो शेष ११।२०।२३।१८ रहा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो ६।१५।२१।२७ यह आशा (इच्छा) सहम हुआ ॥ ८ ॥

सामर्थ्य और भ्रातृसहम का साधन—

सामर्थ्यमारात्तनुपं विशोध्य नक्तं विलोमं तनुपे कुजे तु ।
जीवाद्विशुद्धयेत्सततं पुरावद्भ्रातार्किहीनाद्गुरुतः सदोह्यः ॥ ९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९ ॥

यदि दिन में वर्षप्रवेश हो तो मंगल में लग्नस्वामी को घटावे और रात्रिसमय वर्षप्रवेश हो तो लग्नस्वामी में मंगल को घटावे अनन्तर लग्न मिलाय उक्तवत् सैकता करने से सामर्थ्य सहम होता है, अब यहाँ यह शंका होती है कि लग्नस्वामी मङ्गल होवे तो क्या करना इसका समाधान यह है कि दिवारात्रि में (सर्वदा) लग्नस्वामी मंगल को बृहस्पति में घटा दे और लग्न जोड़कर उक्तवत् सैकता करे तो सामर्थ्यसहम होता है और भ्रातृसहम का साधन इस प्रकार है कि दिवारात्रि अर्थात् सदैव वर्षप्रवेश होने में बृहस्पति में शनैश्चर को घटावे और लग्न जोड़कर उक्तवत् सैकता करे तो भ्रातृसहम होता है ॥ ९ ॥

उदाहरण—

यहाँ रात्रि में वर्षप्रवेश है इसलिये लग्नेश शुक्र १०।५।६।५१ में मंगल ११।२१।३५।२६ को घटाया तो शेष १०।१३।३१।१५ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो ५।८।२९।२४ यह सामर्थ्य सहम हुआ। बृहस्पति ८।४।५७।३ इसमें शनि १०।१४।४३।३३ को घटाया तो शेष ९।२०।१३।३० बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो ४।१५।११।३६ यह भ्रातृसहम हुआ ॥ ९ ॥

गौरव, राजा वा तात सहमों का साधन—

दिने गुरोश्चन्द्रमपास्य नक्तं रविं क्रमादर्कविधू च देयौ ।
रीत्योक्तया गौरवमर्कमार्केरपास्य वामं निशि राजताता ॥ १० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १० ॥

दिन में वर्षप्रवेश हो तो बृहस्पति में चन्द्रमा को घटावे और शेष में सूर्य को ड़े रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो बृहस्पति में सूर्य को घटाकर चन्द्रमा को जोड़ देवे तो जो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गौरव सहम होता है और शोध्यशोधक के बीच में दिन को सूर्य रात्रि को चन्द्रमा की राशि न होवे तो सैकता करना अर्थात् एकराशि जोड़ना, अब राजसहम और तातसहम के साधन का प्रकार यह है कि दिन में वर्षप्रवेश हो तो शनैश्चर में सूर्य को घटावे, रात्रि में विपरीत अर्थात् सूर्य में शनैश्चर को घटाय लग्न जोड़कर उक्तवत् सैकता करने से राजतात ये दोनों सहम सिद्ध होते हैं ॥ १० ॥

उदाहरण—रात्रि में वर्षप्रवेश है इसलिए बृहस्पति ८।४।५७।३ में सूर्य ११।०।४। २८ को घटाया तो शेष ९।४।५३।३५ बचा इसमें चन्द्रमा ७।१।३६।० को जोड़ दिया तो ४।६।२८।३५ यह गौरव सहम हुआ, सूर्य में ११।०।४।२८ इसमें शनि १०।१४।४३। ३३ को घटाया तो शेष ०।१५।२०।५५ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो ७।१०।१६।४ हुआ यहाँ शोध्यर्क्ष शनि की राशि से शुद्धाश्रय रवि के राशि तक गिनने से बीच में लग्न की राशि नहीं है इसलिए एक राशि और जोड़ दिया तो ८।१०।१६।४ यह राज व तात सहम हुआ ॥ १० ॥

माता, पुत्र, जीवित और अम्बु सहमों का साधन—

मातेन्दुतोपास्यसितं विलोमं नक्तं सुतोऽहर्निशमिन्दुमीज्यात् ।
स्याज्जीविताख्यं गुरुमार्कितोऽह्नि वामं निशीदं सममम्बयाम्बु ॥११॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११ ॥

यदि दिन में वर्षप्रवेश होवे तो चन्द्रमा में शुक्र को घटावे और रात्रि में विपरीत अर्थात् शुक्र में चन्द्रमा को घटावे, शेष में लग्न को जोड़कर उक्तवत् सैकता करे तो मातृसहम होता है और दिन व रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो बृहस्पति में चन्द्रमा को घटाय लग्न जोड़कर सैकता करने से पुत्रसहम होता है, और दिन में वर्षप्रवेश हो तो बृहस्पति को शनैश्चर में घटावे रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो बृहस्पति में शनैश्चर को घटावे अनन्तर लग्न जोड़कर सैकता करने से जीवित नामक सहम होता है, और अम्बुसहम साधन में माता सहम के समान क्रिया होती है ।

उदाहरण—रात्रि में वर्षप्रवेश है इसलिए शुक्र १०।५।६।५१ में चन्द्रमा ७।१। ३६।० को घटाया तो शेष ३।३।३०।५१ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो ९।२८।२९।० यह हुआ इसमें एक राशि और जोड़ दिया क्योंकि शोध्यर्ध और शुद्धाश्रय के मध्य में लग्न की राशि नहीं है अतः १०।२८।२९।० यह मातृसहम हुआ । बृहस्पति ८।४।५७।३ इसमें चन्द्रमा ७।१।३६।० को घटाया तो शेष १।३।२१।३ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को और एक राशि और जोड़ने से ८।२८।१९।१३ यह पुत्रसहम हुआ । बृहस्पति ८।४।५७।३ इसमें शनि १०।१४।४३।३३ को घटाया तो शेष ९।२०। १३।३० बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो ४।१५।११।३६ यह जीवित- सहम हुआ । अम्बुसहम की क्रिया मातृसहम के समान करने से १०।२८।२९।० यह अम्बुसहम हुआ ॥ ११ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर्म, रोग मन्मथ सहमों का साधन—

कर्मज्ञमारान्निशि वामयुक्तं रोगाख्यमिन्दुं तनुतः सदैव ।
स्यान्मन्मथो लग्नपमिन्दुतोऽह्नि वामं निशीन्दुं तनुपं सदार्कात् ॥१२॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १२ ॥

दिन में वर्षप्रवेश हो तो मङ्गल में बुध को घटा देवे और रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो वपरीत अर्थात् बुध में मङ्गल को घटावे तदनन्तर लग्न को जोड़े और उक्तवत् सैकता करने से कर्मसहम होता है और रात्रि या दिन में वर्षप्रवेश हो तो लग्न से चन्द्रमा को घटाय लग्न जोड़कर सैकता करे तो रोगसहम होता है, अब मन्मथ (कामदेव) सहम की रीति यह है कि दिन में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्रमा में लग्न स्वामी को घटावे और रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो लग्न स्वामी में चन्द्रमा को घटावे और लग्न जोड़कर उक्तवत् सैकता करे तो मन्मथसहम होता है यहाँ यह शङ्का है कि लग्न का स्वामी चन्द्रमा हो, तो सूर्य में लग्नस्वामी चन्द्रमा को घटावे उक्तवत् सैकता करे तो मन्मथसहम होता है ॥१२॥

उदाहरण—बुध १०।६।३३।१२ इसमें मंगल ११।२१।३५।३६ को घटाया तो शेष १०।१७।५७।३६ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो ५।१२।५५।४५ यह कर्मसहम हुआ । लग्न ६।२४।५८।६ इसमें चन्द्रमा ७।१।३६।० को घटाया तो शेष ११।२३।२२।६ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को तथा एक राशि और जोड़ दिया तो ७।१८।२०।१८ यह रोगसहम हुआ । लग्नेश शुक्र १०।५।६।५१ इसमें चन्द्रमा ७।१।३६।० को घटाया तो शेष ३।३।३०।५१ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को तथा एकराशि और जोड़ दिया तो १०।२८।२६।० यह मन्मथ सहम हुआ ।

कलि क्षमा शास्त्र सहमों का साधन—

कलिक्षमेस्तो गुरुतो विशुद्धे कुजे विलोमं निशि पूर्वरीत्या ।
शास्त्रं दिने सौरिमपास्य जीवाद्वामं निशि ज्ञस्य युतिः पुरावत् ॥१३॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १३ ॥

दिन में वर्षप्रवेश हो तो बृहस्पति में मङ्गल को घटावे और रात्रि में; विपरीत अर्थात् मङ्गल में बृहस्पति को घटावे और लग्न जोड़कर उक्तवत् सैकता करे तो कलिसहम होता है, क्षमासहम की रीति कलिसहम के समान जानना, शास्त्रसहम का साधन इस प्रकार है कि दिन में वर्षप्रवेश हो तो बृहस्पति में शनैश्चर को घटावे रात्रि में विपरीत अर्थात् शनैश्चर में बृहस्पति को घटावे शेष में बुध को जोड़ देवे और पूर्ववत् शोध्यशोधक के मध्य में बुध न होवे तो एक और जोड़ देवे तो शास्त्रसहम सिद्ध होता है ॥ १३ ॥

उदाहरण—मङ्गल ११।२१।३५।३६ इसमें बृहस्पति ८।४।५७।३ को घटाया तो शेष ३।१६।३८।३३ बचा इसमें लग्न और एक राशि और जोड़ दिया तो ११।११।३६। ४२ यह कलिसहम हुआ । शनि १०।१४।४३।३३ इसमें बृहस्पति ८।४।५७।३ को घटाया

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो शेष २।६।४६।३० बचा इसमें बुध १०।६।३३।१२ को और एक राशि और जोड़ दिया तो १।१६।१६।४२ यह शास्त्र सहम हुआ।

बन्धुबन्दक और मृत्यु सहमों का साधन—

दिवानिशं ज्ञाच्छशिनं विशोध्य बन्ध्वाख्यमेतन्निशि बन्दकं स्यात्।
वामं दिवैतन्मृतिरष्टमर्क्षादिन्दुं विशोध्योक्तवदार्कियोगात् ॥ १४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १४ ॥

दिन में व रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो बुध में चन्द्रमा को घटावे लग्न को जोड़कर उक्तवत् सैकता करने से बन्धुसहम होता है, और रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो बुध में चन्द्रमा को घटावे दिन में वर्ष प्रवेश हो तो विपर्यय अर्थात् चन्द्रमा में बुध को घटावे लग्न जोड़ पूर्ववत् सैकता करे तो बन्दक सहम सिद्ध होता है, तथा दिन व रात्रि में वर्षप्रवेश होने से अष्टमभाव में चन्द्रमा को घटावे लग्न जोड़ने के स्थान में शनैश्चर को जोड़े उक्तवत् सैकता करने से मृत्युसहम होता है।

उदाहरण—बुध १०।६।३३।१२ इसमें चन्द्रमा ७।१।३६।० को घटाया तो शेष ३।७।५७।१२ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।९ जोड़ दिया तो १०।२।५५।२१ यह बन्धु सहम हुआ। यही बन्दक सहम भी हुआ। अष्टम भाव १।२६।१५।५३ में चन्द्रमा ७।१।३६।० को घटाया तो शेष ६।२४।३९।५३ बचा इसमें शनि १०।१४।४३।३३ को जोड़ दिया तो ५।९।२३।२६ यह मृत्यु सहम हुआ।

देशान्तर और अर्थ सहमों का साधन—

देशान्तराख्यं नवमाद्विशोध्य धर्मेश्वरं सन्ततमुक्तवत्स्यात्।
अहर्निशं वित्तपमर्थभावाद्विशोध्य पूर्वोक्तवदर्थसद्म ॥ १५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १५ ॥

दिन में वा रात्रि में वर्ष प्रवेश होने से नवम भाव में नवम भाव के स्वामी को घटावे शेष में लग्न जोड़कर पूर्ववत् सैकता करे तो देशान्तर सहम होता है, और दिन व रात्रि दोनों में वर्ष प्रवेश हो तो दूसरे भाव में भाव के स्वामी को घटाय देवे उसमें लग्न जोड़कर उक्त रीति से सैकता करने से अर्थ सहम होता है ॥ १५ ॥

उदाहरण—नवम भाव २।२७।३३।३८ में नवम भावेश बुध १०।६।३३।१२ को घटाया तो शेष ४।१८।०।२६ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।९ एक राशि और जोड़ दिया तो १२।१२।५८।३५ यह देशान्तर सहम हुआ। द्वितीय भाव ७।२६।१५।५३ इसमें द्वितीय भावेश मङ्गल ११।२१।३५।३६ को घटाया तो शेष ८।४।४०।१८ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।९ जोड़ दिया तो २।२६।३८।२७ यह अर्थ सहम हुआ।

परदारा, अन्यकर्म और वणिक् सहमों का साधन—

सितादपास्यार्कमथान्यदाराह्वयं सदा प्राग्वदथान्यकर्म।
चन्द्राच्छनिं वाममथो निशायां शश्वद्वणिज्यं दिनबन्दकोक्त्या ॥१६॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १६ ॥

दिन में वा रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो शुक्र में सूर्य को घटावे लग्न जोड़ पूर्ववत् सैकता करने से परदारा (अन्यस्त्री) सहम सिद्ध होता है, और दिन में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्रमा में शनैश्चर को घटावे, रात्रि में शनैश्चर से चन्द्रमा को शोधन करके लग्न जोड़कर उक्तवत् सैकता करे तो अन्यकर्म (परकार्यकारी) सहम होता है और दिन में वा रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो वणिक् सहम के साधन में बन्दक सहम के समान क्रिया करे अर्थात् सदा चन्द्रमा में बुध को शोधन करके लग्न जोड़ सैकता करे तो वणिक् सहम होता है ॥ १६ ॥

उदाहरण—शुक्र १०।५।६।५१ इसमें सूर्य ११।०।४।२८ को घटाया तो शेष ११।५। २।२३ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ जोड़ दिया तो ६।०।०।३२ यह परदारा सहम हुआ। शनि१०।१४।४३।३३ इसमें चन्द्रमा ७।१।३६।० को घटाया तो शेष ३।१३।७।३३ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ और एक राशि और जोड़ देने से ११।८।५।४२ यह अन्यकर्म सहम हुआ। चन्द्रमा ७।१।३६।० इसमें बुध १०।६।३३।१२ को घटाया तो शेष ८।२२।२।४८ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो ३।१७।०।५७ वह वणिक् सहम हुआ ॥ १६ ॥

कार्यसिद्धि, विवाह सहमों का साधन—

शनेर्दिवार्कं निशि चन्द्रमार्कविशोध्य सूर्येन्दुभनाथयोगात् ।
स्यात्कार्यसिद्धिः सततं विशोध्य मन्दं सितात्स्यात्तु विवाहसद्म ॥१७॥

अन्वय—स्पष्टम् ॥ १७ ॥

जो दिन में वर्षप्रवेश हो तो शनैश्चर में सूर्य को घटाकर सूर्य जिस राशि में स्थित हो उस राशिस्वामी को जोड़ देवे और रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो शनैश्चर में चन्द्रमा को घटाय चन्द्रमा जिस राशि पर हो उस राशिस्वामी को जोड़ देवे अनन्तर उक्त संस्कारवत् सैकता करे तो कार्यसिद्धि सहमसिद्ध होता है और दिवा व रात्रि में अर्थात् सदा वर्षप्रवेश होने में विवाह सहम साधनार्थ शुक्र में शनैश्चर को घटावे और लग्न मिलाय सैकता करे तो विवाहसहम होता है ॥ १७ ॥

उदाहरण—शनैश्चर १०।१४।४३।३३ इसमें चन्द्रमा ७।१।३६।० को घटाया तो शेष ३।१३।७।३३ शेष बचा इसमें चन्द्रराशीश मङ्गल ११।२१।३५।३६ और एक राशि और जोड़ दिया तो यह ४।४।४३।६ कार्यसिद्धि सहम हुआ। शुक्र १०।५।६।५१ इसमें शनैश्चर १०।१४।४३।३३ को घटाया तो शेष ११।२०।२३।१८ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो ६।१५।२१।२७ यह विवाह सहम हुआ ॥ १७ ॥

प्रसव और संताप सहमों का साधन—

गुरोर्बुधं प्रोज्झ्य भवेत्प्रसूतिर्वामं निशीन्दुं शनितो विशोध्य ।
षष्ठं क्षिपेदुक्तदिशा सदैव सन्तापसद्मारमपास्य शुक्रात् ॥ १८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १८ ॥

दिन में वर्षप्रवेश हो तो बृहस्पति में बुध को घटाये रात्रि में विपरीत अर्थात् बुध में बृहस्पति को घटावे और लग्न जोड़ सैकता करे तो प्रसव सहम होता है, सन्ताप सहम साधनार्थ सदा (दिनरात्रि) वर्षप्रवेश होने से शनैश्चर में चन्द्रमा को घटाय छठे भाव को जोड़ देवे, पूर्ववत् सैकता करे तो सन्ताप सहम होता है, इस श्लोक के चतुर्थ पाद में (आरमपास्य शुक्रात्) इसका सम्बन्ध अगाड़ी के श्लोक से है, अर्थात् शुक्र से मङ्गल को घटावे, यह सिद्धान्त है ॥ १८ ॥

उदाहरण—बुध १०।६।३३।१२ इसमें बृहस्पति ८।४।५७।३ को घटाया तो शेष २।४।३६।६ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ और एक और जोड़ दिया तो ६।२६।३४।१८ यह प्रसूति सहम हुआ। शनि १०।१४।४३।३३ इसमें चन्द्रमा ७।१।३६।० को घटाया ३।१३।७।३३ इसमें छठे भाव ११।२६।१५।५३ को और एक और जोड़ दिया तो ४।६।२३।२६ यह सन्ताप सहम हुआ ॥ १८ ॥

श्रद्धा, प्रीति, बल और देह सहमों का साधन—

श्रद्धा सदा प्रोक्तदिशाथ पुण्यं विद्याख्यतः प्रोह्य सदा पुरोक्त्या ।
प्रीत्याख्यमुक्तं बलदेहसंज्ञे यशः समे जाड्यमपास्य भौमात् ॥ १६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १६ ॥

दिन में वर्षप्रवेश हो अथवा रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो शुक्र में मङ्गल को घटाय लग्न जोड़ पूर्ववत् सैकता करने से श्रद्धा (आस्तिक्यबुद्धि) सहम होता है, और सदैव दिन व रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो विद्यासहम में पुण्यसहम को घटाय लग्न जोड़ उक्तवत् सैकता करने से प्रीति सहम होता है और बल देह इन दोनों सहमों को छठें श्लोक में कहे हुये यशः सहम की रीति अनुसार साधन करे "जाड्यमपास्य भौमात्" यह पाठ अगाड़ी श्लोक से सम्बन्ध रखता है इस कारण इसका अर्थ आगे के श्लोक के टीका में कहेंगे ॥ १६ ॥

उदाहरण—शुक्र १०।५।६।५१ इसमें मङ्गल ११।२१।३५।३६ को घटाया तो शेष १०।१३।३१।१५ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो ५।८।२६।२४ यह श्रद्धा सहम हुआ। विद्यासहम ६।२६।२६।४१ इसमें पुण्यसहम ११।२२।५६।३७ को घटाया तो शेष ३।३।३३।४ यह बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया और एक राशि और जोड़ दिया तो १०।२८।३१।१३ यह प्रीति सहम हुआ। पूर्वोक्त छठे श्लोक में जिस प्रकार से यश सहम का साधन किया है उसी प्रकार से बलदेह सहम का साधन किया तो यह ११।१२।५७।४३ बलदेह सहम हुआ ॥ १६ ॥

जाड्यव्यापार व पानीयपतन सहमों का साधन—

शनिर्विलोमं निशि चान्द्रियोगाद्व्यापारमाराज्ज्ञमपास्य शश्वत् ।
पानीयपातः शशिनं विशोध्य सौरेर्विलोमं निशि पूर्ववत्स्यात् ॥२०॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्व श्लोक में कह आये हैं "जाड्यमपास्य भौमात्" दिन में वर्षप्रवेश हो तो मङ्गल में शनैश्चर को घटावे रात्रि में विलोम अर्थात् शनैश्चर में मंङ्गल को घटाय लग्न जोड़ने के स्थान में बुध को जोड़कर उक्तवत् सैकता करे तो जाड्यसहम होता है, और शश्वत् (निरन्तर) दिन वा रात्रि में, वर्षप्रवेश हो तो मंगल में बुध को घटावे अनन्तर लग्न जोड़ पूर्ववत् सैकता करे तो व्यापार सहम होता है और यदि दिन में वर्षप्रवेश हो तो शनैश्चर में चन्द्रमा को घटावे रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्रमा में शनैश्चर को घटाय लग्न संयुक्त कर उक्तवत् सैकता करने से पानीयपतन [जल में बह जाना] सहम सिद्ध होता है ॥२०॥

उदाहरण—शनि १०।१४।४३।३३ इसमें मङ्गल ११।२१।३५।३६ को घटाया तो शेष १०।२३।७।५७ बचा इसमें बुध १०।६।३३।१२ को और एक और जोड़ दिया तो १०।२।४१।६ यह जाड्य सहम हुआ। मङ्गल ११।२१।३५।३६ इसमें बुध १०।६।३३।१२ को घटाया तो शेष १।१२।२।२४ बचा इसमें लग्न ३।२४।५८।६ और एक राशि और जोड़ दिया तो यह ८।७।०।३३ व्यापार सहम हुआ। चन्द्रमा ७।१।३३।० इसमें शनि १०।१४।४३।३३ को घटाया तो शेष ८।१६।५२।२७ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ जोड़ दिया तो ३।११।५०।३६ यह पानीयपात सहम हुआ ॥ २० ॥

शत्रु, शौर्य सहमों का साधन—

मन्दं कुजात्प्रोज्झ्य रिपुर्विलोमं रात्रौ भवेद्भौमविहीनपुण्यात् ।
शौर्यं विलोमं निशि पूर्ववत्स्यादुपाय ईज्यं शनितो विशोध्य ॥२१॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २१ ॥

दिन में वर्षप्रवेश हो तो मंगल में शनैश्चर को घटावे रात्रि में विपरीत अर्थात् शनैश्चर में मंगल को घटाय लग्न जोड़ उक्तवत् सैकता करे तो शत्रु (वैरी) सहमसिद्ध होता है और दिन में वर्षप्रवेश हो तो पुण्य सहम में मंगल को घटावे रात्रि में विलोम अर्थात् मंगल में पुण्यसहम को घटावे और लग्न जोड़ उक्तवत् सैकता करे तो शौर्य (वीरत्व) सहम होता है, 'उपाय ईज्यं शनितो विशोध्य' इस मूलपाठ का सम्बन्ध अगाड़ी श्लोक से है इसका अर्थ आगे के श्लोक में कहेंगे ॥ २१ ॥

उदाहरण—शनि १०।१४।४३।३३ इसमें मंगल ११।२१।३५।४ को घटाया तो शेष १०।२३।८।२९ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ जोड़ दिया तो ५।१८।६।३८ यह शत्रु सहम हुआ। मंगल ११।२१।३५।४ इसमें पुण्य सहम ११।२३।२८।३७ को घटाया तो शेष ११।२८।६।२७ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया और एक राशि और जोड़ देने से यह ७।२३।४।३६ शौर्य सहम हुआ।

उपाय दरिद्र और गुरुता सहमों का साधन—

वामं निशिज्ञं तु विशोध्य पुण्याज्ज्ञयुग्विलोमं निशि तद्दरिद्रम् ।
सूर्योच्चतः सूर्यमपास्य नक्तं चन्द्रस्तदुच्चाद्गुरुता पुरोक्त्या ॥ २२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २२ ॥

पूर्वश्लोक में लिख आये हैं (उपाय ईज्यं शनितो विशोध्य) कि दिन में वर्षप्रवेश हो तो शनैश्चर में बृहस्पति को घटावे रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो बृहस्पति में शनैश्चर को घटाय लग्न जोड़कर उक्तवत् सैकता करे तो उपायसहम सिद्ध होता है। दिन में वर्षप्रवेश हो तो पुण्य सहम में बुध को घटावे और रात्रि में हो तो बुध में पुण्य सहम को घटावे बुध को जोड़ दे और उक्तवत् सैकता करने से दरिद्रसहम होता है। दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य के परमोच्च ०।१० में सूर्य को घटावे रात्रि में चन्द्रमा के परमोच्च १।३ में चन्द्रमा को घटावे शेष में लग्न जोड़ उक्तवत् सैकता करने से गुरुता नामक सहम पूर्वाचार्य से कहा गया है ॥ २२ ॥

उदाहरण—बृहस्पति ८।५।११।३२ इसमें शनि १०।१४।४३।३३ को घटाया तो शेष ६।२०।२७।५९ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो ४।१५।२६।८ यह उपाय सहम हुआ। बुध १०।६।३३।१३ इसमें पुण्य सहम ११।२३।२८।३७ को घटाया तो शेष १०।३६।२।३६ बचा इसमें बुध १०।६।३३।१३ और एक राशि और जोड़ दिया तो ६।२५।३५।४६ यह दरिद्र सहम हुआ। चन्द्रमा का परमोच्च १।३ इसमें चन्द्रमा ७।१।३६।० को घटाया तो शेष ६।१।२४।० बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ और एक राशि और जोड़ दिया तो १।२६।२२।६ यह गुरुतासहम हुआ ॥ २२ ॥

जलपथ बन्धन सहमों का साधन—

कर्कार्द्धतः प्रोज्झ्य शनिं स्याज्जलाध्वान्यथा निशि।
पुण्याच्छनिं विशोध्याह्नि वामं निशि तु बन्धनम् ॥ २३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २३ ॥

दिन में वर्षप्रवेश हो तो कर्क के आधे तक अर्थात् साढ़े तीन राशि ३।१५ में शनश्चर को घटाय देवे रात्रि में विपरीत अर्थात् साढ़े तीन राशि को शनैश्चर में घटाय देवे अनन्तर लग्न जोड़ सैकता करे तो जलपथसहम होता है, दिन में वर्षप्रवेश हो तो पुण्यसहम में शनैश्चर को घटावे रात्रि में हो तो शनैश्चर में पुण्यसहम को घटावे लग्न मिलाय सैकता करने से बन्धनसहम होता है ॥ २३ ॥

उदाहरण—शनि १०।१४।४३।३३ इसमें कर्कार्ध ३।१५ घटाया तो शेष ६।२६।४३।३३ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो १।२४।४१।४२ यह जलपथ-सहम हुआ। शनि १०।१४।४३।३३ इसमें पुण्य सहम ११।२३।२८।३७ को घटाया तो शेष १०।२१।१४।५६ बचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को जोड़ दिया तो ५।१६।१३।५ यह बन्धन सहम हुआ ॥ २३ ॥

कन्या और अश्वसहम का साधन—

चन्द्रं सितादपास्योक्तं सदा कन्याख्यमुक्तवत्।
पुण्यादर्कमपास्याययोगादश्वोऽन्यथा निशि ॥ २४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिन व रात्रि अर्थात् सर्वदा वर्षप्रवेश में शुक्र में चन्द्रमा को घटाय लग्न जोड़ उक्तवत् सैकता करने से कन्या सहम होता है, और दिन में वर्षप्रवेश हो तो पुण्य सहम में सूर्य को घटाय देवे रात्रि को सूर्य में पुण्य सहम को घटावे अनन्तर शेष में ग्यारहवें भाव को जोड़ सैकता करने से अश्वसहम होता है ॥ २४ ॥

उदाहरण—शुक्र १०।५।६।५१ इसमें चन्द्रमा ७।१।३६।० को घटाया तो शेष ३।३।३०।५१ वचा इसमें लग्न ६।२४।५८।६ को और एक राशि और जोड़ दिया तो १०।२८।२६।० यह कन्या सहम हुआ । सूर्य ११।०।४।२८ इसमें पुण्य सहम ११।२३।२८।३७ को घटाया तो शेष ११।६।३५।५१ बचा इसमें एकादश भाव ४।२७।३४।१८ और एक राशि और जोड़ दिया तो ५।४।१०।६ यह अश्वसहम हुआ ॥ २४ ॥

अथ सहमचक्रम् ।

पुण्य	गुरु	विद्या	यश	मित्र	महात्म्य	आशा	सामर्थ्य	भ्रातृ	गौरव	राज	तात	माता
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
११	२	२	११	७	६	६	५	४	४	८	८	१०
२२	२६	२६	१२	१	२३	१५	८	१५	६	१०	१०	२८
५६	२९	२९	५७	३३	३७	२१	२९	११	२८	१९	१९	२९
३७	४१	४१	४३	४७	८	२७	१४	३९	३५	४	४	०
सुत	जीव	अंबु	कर्म	रोग	मन्मथ	कलि	क्षमा	शास्त्र	बंधु	बंदक	मृत्यु	देशान्त
१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
८	४	१०	५	७	१०	११	११	१	१०	१०	५	१२
२८	१५	२८	१२	१८	२८	११	११	१९	२	२	९	१२
१९	११	३९	५५	२०	२९	३६	३६	१९	५५	५५	२३	५८
१३	३९	०	४५	१८	०	४२	४२	४२	२१	२१	२६	३५
अर्थ	परदारा	अन्यका	बणिक्	कार्य	विवाह	प्रसव	संताप	श्रद्धा	प्रीति	वलसै	देह	जाड्य
२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
२	६	११	३	४	६	९	४	५	१०	११	११	१०
२९	०	८	१७	४	१५	२९	९	८	२८	१३	१२	२
३८	०	५०	०	४३	२१	३४	२३	२९	३१	५७	५७	४१
२७	३२	४२	५७	९	२७	१८	२६	२४	१३	४३	४३	९
व्यापार	पानीय	शत्रु	शौर्य	उपाय	दरिद्र	गुरु	जलपथ	बंधन	कन्या	अश्व		
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०		
८	३	५	७	४	९	१	१	५	१०	५		
७	११	१८	२३	१५	२५	२६	२४	१६	२८	४		
०	५०	६	४	२६	३५	२२	४१	१३	२९	१०		
३३	३६	३८	३६	८	४९	९	४२	५	०	९		

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सहमों का फल निरूपण—

तत्रादौ सहमानां फलपाकसमयः ।

स्वनाथहीनं सहमं तदंशाः स्वीयोदयघ्ना विहृताग्निरत्या ।
तत्सङ्ख्यपाको दिवसैर्हि लब्धैः स्यात्तद्दशायां तदसम्भवे वा ॥ २५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २५ ॥

सहमों के फल का समय कहते हैं, जिस सहम का शुभाशुभ फल के दिन सङ्ख्या जानने की इच्छा हो उस सहम के राशिस्वामि को सहम में हीन करना, शेष को अंश करके सहमराशि के उदय से गुणा करना तदनन्तर तीन सौ से भाग लेना, लब्ध दिवससङ्ख्या जानना, वर्षारम्भ से इतने ही दिन में सहम का फल होता है, यदि आये हुये दिन में सहम के फल का असम्भाव हो तो सहम के स्वामी के दशा में फल होता है ॥ २५ ॥

उदाहरण—जैसे पुण्यसहम ११।२३।५६।३७ में सहमेश गुरु को ८।४।५०।३ को घटाया तो शेष ३।१९।६।३४ इसका अंश १०९।६।३४ हुआ सहम राशि मीन का उदय २२१ से गुणा किया तो गुणनफल २४११३।११।१४ हुआ इसमें ३०० से भाग दिया तो लब्धि ८० दिन और २२ घड़ी और ३८ पल प्राप्त हुआ अर्थात् वर्षारंभ से इतने दिन पर पुण्य सहम के फल का समय होगा ॥ २५ ॥

सहमों का बल वर्णन—

स्वोच्चादिसत्पदगतो यदि लग्नदर्शी
वीर्यान्वितः सहमपो यदि नेक्षतेऽङ्गम् ।
नासौ बली रविशशिश्रितभेशदर्श-
पूर्णान्तलग्नग्रहबलस्य विचारणेत्थम् ॥ २६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २६ ॥

यदि सहम का स्वामी अपने उच्च आदि उत्तम अधिकार में होकर लग्न को देखता होवे तो बली होता है, यदि लग्न को नहीं देखे तो निर्बल होता है, तथा जन्म समय सूर्य और चन्द्रमा जिन २ राशियों पर स्थित हों उन २ राशियों के स्वामी और जन्म के निकट अमावस्या वा पूर्णमासी जितनी घड़ी हो उस समय का लग्न साधन करने पर जो २ लग्न आवें उन २ लग्नों के स्वामी इन चारों के बल का विचार पूर्वोक्त प्रकार से करना चाहिये ॥ २६ ॥

सहमेश के बल का विचार—

पञ्चवर्गी बलेनोनोन हर्षस्थानमाश्रितः ।
अवलोऽयं लग्नादर्शी बली स्वल्पेऽस्ति चेत्पदे ॥ २७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—पञ्चवर्गी बलेन ऊनः हर्षस्थानं न आश्रितः लग्नादर्शी तदा अयं (सहमेशः) अबलः । चेत् स्वल्पे पदे (स्वद्रेष्काणे स्वनवांशे) अस्ति तथा लग्नं पश्यति तदा बली ग्रहो ज्ञेयः ॥ २७ ॥

जो पञ्चवर्गी बल से हीन और पूर्वोक्त चारों हर्षद स्थानों से रहित तथा जो ग्रह लग्न को न देखे तो उसे निर्बल जानना चाहिए एवं जो ग्रह स्वल्प (छोटे) पद (अधिकार) में स्थित होकर लग्न को देखे तो उसको बलवान् जानना, यहाँ जो ग्रह अपने उच्च अपने घर में हो वह उत्तम अधिकार वाला कहाता है, और जो अपने हद्दा में हो वह मध्यम अधिकारवाला, तथा जो अपने त्रैराशिक व अपने नवांश में हो वह स्वल्प अधिकार वाला कहाता है ॥ २७ ॥

सहम फल की वृद्धि और ह्रास का वर्णन—

स्वस्वामिना शुभखगैः सहितं च दृष्टं
स्वामी बली च यदि तत्सहमस्य वृद्धिः ।
यत्स्वामिना शुभखगैश्च न युक्तदृष्टं
तत्सम्भवो न हि भवेदिति चिन्त्यमादौ ॥ २८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २८ ॥

जो सहम अपने स्वामी से वा शुभग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तथा सहमस्वामी बलवान् हो तो उस सहम के फल की वृद्धि होगी और जो सहम अपने स्वामी से अथवा शुभ-ग्रहों से युक्त न हो और न देखा जाता हो तो उस सहम का सम्भव नहीं होगा अर्थात् जैसा नाम कहा है वैसा फल नहीं देगा इत्यादि पहिले ही से चिन्तन कर विचार करना चाहिए ॥ २८ ॥

प्रकारान्तर से सहमों के फलों का ह्रास—

अष्टमाधिपतिना युतेक्षितं पापदृग्युतमथेत्थशालितैः ।
सम्भवेऽपि विलयं प्रयाति तत्तेन जन्मनि पुरेदमीक्ष्यताम् ॥२९॥

अन्वयः—पूर्वार्द्धं स्पष्टम् । फलसम्भवेऽपि तत् विलयं प्रयाति तेन जन्मनि पुरा इदं (सम्भवासम्भवं) ईक्ष्यताम् ॥ २९ ॥

जो सहम वर्षलग्न से अष्टमराशि के स्वामी से युक्त हो वा देखा जाता हो अथवा पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो अथवा अष्टमराशि के स्वामी और पाप ग्रहों से परस्पर इत्थशाल योग होता हो तो वह फल की प्राप्ति के सम्भव को नाश कर देता है अर्थात् जैसा सहम का फल कहा है उसको नहीं कर सकता है, इसीसे जन्म समय में सहम के बलाबल को प्रथम जानकर विचार करे ॥ २९ ॥

वर्ष में साधने योग्य सहमों का विवरण—

आदौ जन्मनि सर्वेषां सहमानां बलाबलम् ।
विमृश्य सम्भवो येषां तानि वर्षे विचिन्तयेत् ॥ ३० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३० ॥

प्रथम जन्मसमय में सम्पूर्ण सहमों के बलाबल का विचार करके जिन सहमों के फलों की प्राप्ति का सम्भव दीख पड़े उन्हीं को वर्ष में साधन करे, और जिन सहमों का स्वामी बलहीन हो उसको वर्ष में कभी न विचारे ॥ ३० ॥

पुण्यसहम का फल—

सबले पुण्यसहमे धर्मसिद्धिर्धनागमः ।
शुभस्वामीक्षितयुते व्यत्यये व्यत्ययं विदुः ॥ ३१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३१ ॥

पुण्य सहम बलयुक्त हो तथा शुभ ग्रह और अपने स्वामी से युक्त हो वा देखा जाता हो तो धर्म की सिद्धि और धन की प्राप्ति होती है। इससे विपरीत हो अर्थात् जो पुण्यसहम निर्बल होकर पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो धर्म और धन का नाश होता है ॥ ३१ ॥

पुण्य सहम का अशुभ फल—

लग्नात् षष्ठाष्टरिःफस्थं धर्मभाग्ययशोहरम् ।
शुभस्वामिदृशां प्रान्ते सुखधर्मादिसम्भवः ॥ ३२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३२ ॥

यदि पुण्य सहम वर्ष लग्न से छठें आठवें बारहवें स्थान में स्थित होवे तो सम्पूर्ण वर्ष धर्म भाग्य व यश इनको हरण करता है, और उसको शुभ ग्रह वा उसका स्वामी देखता होवे तो वर्ष के अन्त में सुख और धर्म आदि की प्राप्ति होती है, अर्थात् वर्ष के पूर्वार्द्ध में अशुभ फल और उत्तरार्ध में शुभफल होता है ॥ ३२ ॥

पापग्रह और शुभग्रह के सम्बन्ध से फल में विशेषता—

पापयुक् शुभदृष्टं चेदशुभं प्राक्ततः शुभम् ।
शुभयुक्तं पापदृष्टमादौ शुभमसत्परे ॥ ३३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३३ ॥

यदि पुण्य सहम पापग्रहों से युक्त और शुभग्रहों से देखा जाता हो तो वर्ष के पूर्वार्ध में अशुभ, और उत्तरार्ध में शुभ फल होता है और जब पुण्य सहम शुभ ग्रहों से युक्त और पाप ग्रहों से देखा जाता हो तो वर्ष के पूर्वार्ध में शुभ और उत्तरार्ध में अशुभ फल होता है ॥ ३३ ॥

पुण्यसहम की प्रशंसा—

यत्राब्दे पुण्यसहमं शुभं सोऽत्र शुभावहः ।
अनिष्टेऽस्मिन् शुभो नेति पुण्यमादौ विचारयेत् ॥ ३४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३४ ॥

जिस वर्ष में पुण्यसहम शुभ हो तो वह वर्ष अच्छे फल को देता है और जिस वर्

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में पुण्यसहम अनिष्ट होवे तो वह वर्ष अशुभ फल को देता है, इसलिये आदि में पुण्य सहम का विचार कर लेना चाहिये ॥ ३४ ॥

पुण्यसहम के अशुभ फल—

सूतौ षष्ठाष्टरिःफस्थे मध्ये पापहतं पुनः ।
पुण्य धर्मार्थसौख्यघ्नं पत्यौ दग्धे फलं तथा ॥ ३५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३५ ॥

जन्म समय में लग्न से ६।८।१२ इन स्थानों में यदि पुण्य सहम स्थित होवे और वर्ष में पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो वह धर्म, अर्थ और सौख्य का नाश करनेवाला होता है, इसी प्रकार पुण्यसहमस्वामी के अस्त होने से फल होता है, अर्थात् धर्मादि का नाश होता है ॥ ३५ ॥

सहमों की उपयोगिता—

सहमान्यखिलानीत्थं सूतौ वर्षे विचिन्तयेत् ।
मान्द्यारिकलिमृत्यूनां व्यत्ययादादिशेत्फलम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः—इत्थं अखिलानि सहमानि सूतौ (जन्मकाले) वर्षे च विचिन्तयेत् । अन्यत्स्पष्टम् ॥ ३६ ॥

इस प्रकार जन्मकाल और वर्ष में सम्पूर्ण सहमों का विचार करे, और रोग, शत्रु, कलह, मृत्यु और दरिद्र, इन सहमों के फल को पुण्य सहम से विपरीत वर्णन करे, अर्थात् पुण्य सहम के विचार में २६ श्लोक से लेकर ३५ श्लोक के अन्दर के श्लोकों से यदि उक्त सहमों का फल शुभ आवे तो अशुभ फल कहना चाहिये और यदि अशुभ फल आवे तो शुभ फल कहना चाहिये ॥ ३६ ॥

कार्यसिद्धि सहम का शुभाशुभ फल—

कार्यसिद्धिसहमं युतं शुभैर्दृष्टमूथशिलगं जयप्रदम् ।
सङ्गरेऽथ शुभपापदृष्टियुक् क्लेशतो जय उदीरितो बुधैः ॥३७॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३७ ॥

यदि कार्यसिद्धि सहम शुभग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तथा शुभग्रहों से इत्थशाल योग होवे तो संग्राम में विजय होता है और यदि कार्यसिद्धि सहम शुभ ग्रहों से व पापग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो कष्ट से जय प्राप्त होती है ॥ ३७ ॥

कलिसहम का शुभाशुभ फल—

कलिसद्ममिश्रखगदृष्टिसंयुतं यदि पापमूथशिलगं कलेर्मृतिम् ।
अथ तत्र सौम्यसहितावलोकिते जयमेति मिश्रदृशितः कलिव्यथे ॥३८॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३८ ॥

जिसके वर्षकाल में कलिसहम शुभग्रहों वा पापग्रहों से दृष्ट युत हो तथा पापग्रहों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के साथ इत्थशाल योग करता हो तो वह मनुष्य लड़ाई के प्रसंग से मृत्यु को पाता है तथा जो कलिसहम शुभग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो संग्राम में विजय होती है अथवा शुभग्रह और पापग्रह दोनों देखते हों तो कलह और दुःख ये दोनों प्राप्त होते हैं ॥ ३८ ॥

विवाह सहम का शुभाशुभ फल—

विवाहसद्माधिपसौम्यदृष्टं युतं शुभैर्मूथशिलं शुभासिम् ।
कुर्याद्यदा मिश्रसमेतदृष्टं कष्टादथक्रूरमृतीश्वरैर्न ॥ ३९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३९ ॥

जिस वर्ष में विवाह सहम अपने स्वामी से युत या दृष्ट हो अथवा अन्य शुभग्रहों से युत वा दृष्ट हो तथा शुभग्रहों से इत्थशाल योग करता हो तो उस वर्ष में विवाह होगा। यदि विवाह सहम शुभग्रह और पापग्रह दोनों से युत वा दृष्टि हो तो कष्ट से (कोशिश से) विवाह होगा। यदि क्रूर ग्रह से विवाह सहम युत दृष्ट हो वा इत्थशाल योग करता हो तथा वर्षलग्न या विवाह सहम से अष्टम भाव के स्वामी से युत या दृष्ट हो या इत्थशाल योग करता हो तो उस वर्ष में विवाह नहीं होगा ऐसा कहना चाहिये ॥ ३९ ॥

यशसहम का शुभाशुभ फल—

यशोधिपे नैधनगे खलेन युतेक्षिते सद्यशसो विनाशः ।
पापार्जितस्यायशसोऽस्तिलाभो नष्टौजसि स्यात्कुलकीर्तिनाशः॥४०॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४० ॥

जिसके वर्ष में यशसहम के स्वामी आठवें स्थान में हों और पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो उसके यशों का नाश होता है और पाप सम्बन्ध से बटोरे हुये अयश का लाभ होता है, और यशस्सहम का स्वामी अष्टम भाव में स्थित होकर अस्त हो जावे तो उस मनुष्य के कुल कीर्ति का नाश होता है ॥ ४० ॥

प्रकारान्तर से यशस्सहम का शुभाशुभ फल—

शुभेत्थशाले शुभदृग्युते वा बलान्विते स्याद्यशसोऽभिवृद्धिः ।
युद्धे जयो वाहनशस्त्रलाभः पापेसराफादयशोऽर्थनाशः ॥ ४१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४१ ॥

यश सहम का स्वामी शुभग्रह के साथ इत्थशाल योग करे अथवा शुभग्रहों से दृष्ट वा युक्त होकर बलवान होवे, तो उसके यश की वृद्धि और युद्ध में जय, तथा वाहन (हाथी, घोड़ा आदि) और हथियार इनका लाभ होवे, और जो यश सहम का स्वामी पापग्रहों के साथ ईसराफ योग करे तो यश की हानि और धन का नाश होवे ॥ ४१ ॥

आशासहम का शुभाशुभ फल—

आशातदीशश्च षडष्टरिःफविवर्जितः सौम्ययुतेक्षितश्च ।
स्याद्वाञ्छितार्थाम्बरवाहनादिलाभः खलेक्षायुतितोऽतिदुःखम् ॥४२॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४२ ॥

आशासहम और आशासहम का स्वामी लग्न से ६।८।१२ इन स्थानों में न हो और शुभग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो अपना मनोरथ सिद्ध होता है तथा वस्त्र और वाहन आदि का लाभ होता है, और जो पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट होवे तो अत्यन्त दुःख प्राप्त होता है ॥ ४२ ॥

रोग सहम का अशुभ फल—

मान्द्याधिपः पापयुतेक्षितश्च पापः स्वयं रोगकरो विचिन्त्यः ।
चेदित्थशालो मृतिपेन मृत्युस्तदा भवेद्धीनबलेतिकष्टात् ॥४३॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४३ ॥

रोगसहम का स्वामी पापग्रहों से युक्त दृष्ट हो वह स्वयं पापग्रह हो तो रोग करने वाला होता है, तथा यदि रोगसहमाधीश लग्न से अष्टम भाव के स्वामी के साथ इत्थशाल करता होवे तो मृत्यु होवे और यदि रोगसहमस्वामी बलहीन होवे तो अतिकष्ट से मरण होवे, ऐसा कहना ॥ ४३ ॥

प्रकारान्तर से रोगसहम का शुभाशुभ फल—

स्वस्वामिसौम्येक्षणभाजि मान्द्ये नाथे सवीर्येऽष्टषडन्त्यवर्जे ।
रोगस्तदा नैव भवेद्विमिश्रं युतेक्षिते रुग्भयमस्ति किञ्चित् ॥४४॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४४ ॥

जिस वर्ष में रोगसहम अपने स्वामी वा शुभग्रहों से युक्त दृष्ट हो तथा रोगसहमाधीश ६।८।१२ इन स्थानों को छोड़कर किसी अन्य स्थानों में स्थित होकर बलवान् होवे, तो उस वर्ष में किसी प्रकार का रोग नहीं होता है, और जो रोगसहम का स्वामी शुभग्रहों वा पापग्रहों से युक्त हो, व देखा जाता हो, तो कुछ थोड़ा रोगभय होता है ॥ ४४ ॥

अर्थ (धन) सहम का शुभाशुभ फल—

अर्थाख्यं शुभनाथदृष्टसहितं द्रव्यागमात्सौख्यदं
पापैर्दृष्टयुतं ग्रहैश्च विलयं कुर्यादथो पापयुक् ।
सद्दृष्टं च शुभेत्थशालि यदि तत्पूर्वं धनं नाशयेत्
पश्चादर्थसमुद्भवं च ससुखं व्यत्यासतो व्यत्ययः ॥ ४५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४५ ॥

जिस वर्ष में अर्थ सहम शुभग्रह व अपने स्वामी से दृष्ट व युक्त हो तो उस वर्ष में द्रव्य की प्राप्ति से सुख होता है और यदि पापग्रहों से दृष्ट व युक्त हो तो धन का नाश करता है, अथवा जो अर्थ सहम पापग्रहों से युक्त होकर शुभग्रहों से देखा जाता हो तथा शुभग्रहों के साथ इत्थशालयोग करता होवे तो पूर्व सञ्चित किये हुए धन का नाश करता है, फिर पीछे कुछ कालान्तर में सुख समेत धन को देता है और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि अर्थ सहम शुभग्रह वा पापग्रहों से देखा जाता हो तथा शुभग्रह पापग्रहों के साथ मुथशिल (इत्थशाल) योग करे तो शुभफल देता है ॥ ४५ ॥

सहमों पर ग्रह दृष्टि का प्रभाव—

रिपुदृष्ट्या रिपोर्भीतिस्तस्करादेर्धनक्षयः ।
मित्रदृष्ट्या मित्रयोगाद्धनं मानं यशः सुखम् ॥ ४६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४६ ॥

यदि सहम शुभग्रह वा पापग्रह से शत्रु दृष्टि से देखा जाता हो तो उस वर्ष में शत्रु से भय तथा चौरादिकों से धन का नाश होता है। यदि मित्र दृष्टि से देखा जाता हो तो मित्र के सहयोग से धन की प्राप्ति, प्रतिष्ठा, यश और सुख होता है ॥ ४६ ॥

पुत्रसहम का शुभाशुभ फल—

सत्स्वामिदृष्टं युतमात्मजस्य लाभं सुखं यच्छति पुत्रसद्म ।
पापान्वितं सौम्यखगेत्थशालीप्राग्दुःखदं पुत्रसुखाय पश्चात् ॥४७॥

अन्वयः—पुत्रसद्म सत्स्वामिदृष्टं युतं तदा आत्मजस्य लाभं सुखं यच्छति । पापान्विते सौम्यखगेत्थशाली प्राग्दुःखदं पश्चात् पुत्रसुखाय भवति ॥ ४७ ॥

पुत्रसहम शुभग्रहों से व अपने स्वामी से देखा जाता हो अथवा युक्त हो, तो पुत्र का लाभ और पुत्र सम्बन्धी सुख प्राप्त होता है तथा जो पुत्र सहम पापग्रह युक्त शुभग्रह से इत्थशाल योग करता होवे तो प्रथम पुत्र सम्बन्धी दुःख होकर पश्चात् पुत्रसुख होता है ऐसा कहना ॥ ४७ ॥

पुनः पुत्रसहम का शुभाशुभ फल—

पापान्वितं पापकृतेसराफं नाशाय पुत्रस्य गतौजसीशे ।
सूतौ सुतेशः सहमेश्वरोऽब्दे पुत्रस्य लब्ध्यै शुभमित्रदृष्टः ॥४८॥

अन्वयः—(पुत्रसहमः) पापान्वितं पापकृतेसराफं ईशे (पुत्रसहमेशे) गतौजसि (तदा) पुत्रस्यनाशाय, सूतौ सुतेशः अब्देसहमेश्वरः शुभ मित्रदृष्टः पुत्रस्य लब्ध्यै भवति ॥ ४८ ॥

यदि पुत्र सहम पापग्रह से युक्त और पापग्रह से इसराफ योग को करे, और पुत्र सहमाधीश बलहीन हो तो पुत्र का नाश होवे तथा जन्मसमय में पञ्चमभाव का स्वामी यदि वर्ष में पुत्र सहमाधीश हो और वह शुभग्रह से देखा जाता हो तो पुत्र होता है ॥ ४८ ॥

पितृसहम का शुभाशुभ फल—

पित्र्यं सदीक्षितयुतं पतियुक्तदृष्टं
तातस्य यच्छति धनाम्बरमानसौख्यम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पत्यौ गतौजसि मृतौ खलमूसरीफे
नाशः पितुश्चरगृहे परदेशयानात् ॥ ४९ ॥

अन्वयः--स्पष्टम् ॥ ४९ ॥

पितृसहम शुभग्रहों से युक्त व दृष्ट हो अथवा अपने स्वामी से युक्त दृष्ट हो तो पिता को धन, वस्त्र, मान और सुख देनेवाला होता है यदि पितृसहम का स्वामी निर्बल अथवा अस्तगत हो वा वर्ष लग्न से आठवें स्थान में स्थित होकर पापग्रहों के साथ मूसरीफ (योग) को करे तो पिता की मृत्यु होती है, चरराशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में स्थित हो तो पिता परदेश में यात्रा करता हुआ मृत्यु को प्राप्त होता है ॥४९॥

पुनः पितृसहम का शुभाशुभ फल—

शुभेत्थशाले खलखेटयोगे गदप्रकोपः प्रथमं महान्स्यात् ।
पश्चात्सुखं विन्दति पूर्णवीर्ये नाथे नृपान्मानयशोऽभिवृद्धिः ॥५०॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५० ॥

यदि पितृसहम का शुभग्रह के साथ इत्थशाल योग हो पापग्रह से युत हो तो वर्ष के पूर्वार्ध में अधिक रोग का कोप हो और उत्तरार्ध में पिता का सुख होवेगा। यदि पितृसहम का स्वामी पूर्ण बली हो तो पिता को राजा से मान और यश की वृद्धि होती है ॥ ५० ॥

बन्धनसहम का शुभाशुभ फल—

बन्धनाख्यसहमं युतेक्षितं स्वामिना न हि तदाऽस्ति बन्धनम् ।
पापवीक्षितयुतेऽस्ति बन्धनं पापजे मुथशिले विशेषतः ॥ ५१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५१ ॥

यदि बन्धनसहम अपने स्वामी से युक्त वा दृष्ट हो तो बन्धन नहीं होगा अर्थात् जेलखाने नहीं जायगा, और जो पापदृष्ट व युक्त हो तो बन्धन होवेगा, तथा जो बन्धनसहम और उसका स्वामी ये दोनों पापग्रहों से इत्थशाल योग को करें तो निश्चय ही बन्धन होगा ॥ ५१ ॥

गौरवसहम का शुभाशुभ फल—

गौरवाख्यसहमं युतेक्षितं स्वामिना शुभखगैः सुखाप्तये ।
राजगौरवयशोम्बराप्तये पापवीक्षितयुते पदक्षतिः ॥ ५२ ॥

अन्वयः--स्पष्टम् ॥ ५२ ॥

गौरवसहम अपने स्वामी व शुभग्रहों से युक्त हो वा देखा जाता हो तो सुख, राजगौरव, यश व वस्त्र, इनकी प्राप्ति होती है और यदि पापग्रहों से युक्त व दृष्ट हो तो अधिकार का क्षय हो जावे अर्थात् वह मनुष्य बेरोजगार हो जावे ॥ ५२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुनः गौरवसहम का शुभाशुभ फल—

शुभाशुभैर्दृष्टयुतं खलैश्चेत्कृतेत्थशालं धनमाननाशम् ।
पूर्वं विधत्ते चरमे शुभेत्थशाले सुखं वाहनशस्त्रलाभम् ॥ ५३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५३ ॥

यदि गौरवसहम शुभ वा पापयुक्त वा दृष्ट हो और पापग्रहों से इत्थशाल योग करे तो वर्ष के पूर्वार्द्ध (प्रथम ६ मास) में धन और मान का नाश होता है, तथा यदि केवल शुभग्रह से इत्थशाल योग करे तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में सुख, वाहन और शस्त्र इनका लाभ होता है ॥ ५३ ॥

कर्मसहम का शुभाशुभ फल—

कर्मभावसहमाधिपाः शुभैः स्वामिना मुथशिला बलान्विताः ।
हेमवाजिगजभूमिलाभदाः पापदृष्टियुतितोऽशुभप्रदाः ॥ ५४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५४ ॥

यदि कर्मभाव व कर्मसहम और दोनों के स्वामी ये चारों बली होकर शुभ ग्रहों व अपने स्वामियों के साथ इत्थशाल योग करें तो सुवर्ण, घोड़ा, हाथी, पृथ्वी का लाभ होता है और यदि पापग्रहों से दृष्ट व युक्त हों तो अशुभ फल को देते हैं, अर्थात् पापयुक्त दृष्ट होने से पूर्वोक्त लाभ नहीं करते हैं ॥ ५४ ॥

प्रकारान्तर से कर्मभावसहम का शुभाशुभ फल—

दग्धा वक्राः कर्मवैकल्यदास्ते युक्ता दृष्टा सौरिणा ते विशेषात् ।
राज्यभ्रंशः कर्मनाशश्च राजकर्मेशौ चेन्मूसरीफौ खलेन ॥ ५५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५५ ॥

कर्मभावस्वामी और कर्मसहमस्वामी ये दोनों अस्तंगत हों वा वक्री होवें तो कार्य को नाश करते हैं तथा दोनों शनैश्चर से देखे जाते हों वा शनियुक्त हों तो विशेष करके कार्य को नाश करते हैं, तथा यदि राजसहम व कर्मसहम दोनों के स्वामी पापयुक्त वा दृष्ट हों अथवा पापग्रहों से मूसरीफ योग करें तो राज्य और कर्म का नाश होता है ॥ ५५ ॥

सहमों के पर्य्यायवाची सहम—

उपदेष्टा गुरुर्ज्ञानं विद्या शास्त्रं श्रुतिस्मृती ।
मोहो जाड्यं बलं सैन्यमङ्गं देहो जलं द्युतिः ॥ ५६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५६ ॥

गुरुसहम को उपदेष्टा, विद्यासहम को ज्ञानसहम, और शास्त्रसहम को श्रुति-स्मृतिसम्बन्धी सहम, जाड्य को मोह, बल को सैन्य, देह को शरीर, जल को द्युति (कान्ति) भी कहते हैं ॥ ५६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुरुता मण्डलेशत्वं गौरवं मानशालिता ।
निग्रहानुग्रहविभू राजा क्षत्रादिलिङ्गभाक् ॥ ५७ ॥
माहात्म्यं मन्त्रगाम्भीर्यं धृतिबुद्ध्यादिशालिता ।
सामर्थ्यं देहजा शक्तिः शौर्यं यत्नोऽरिनिग्रहे ॥ ५८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५७-५८ ॥

गुरुताशब्द से मण्डलेशत्व गौरव को मानशाली, राजशब्द से क्षत्रिय निग्रह अनुग्रह में विभु (समर्थ) जानना । राजशब्द का लक्षण यह है कि—जो बाँधने और अनुग्रह करने में समर्थ होकर छत्र, चामर आदि चिह्नों को धारण करने वाला होता है ॥ ५७ ॥ महत् के भाव को माहात्म्य और महत्त्व कहते हैं, मन्त्र वह है कि जो एकान्त में विचारा जावे, उसका गाम्भीर्य [अप्रकटता] किसी से नहीं कहना, अर्थ धैर्य और परिणामिक बुद्धि से युत हो तो गुप्त मन्त्र (आपस की बातचीत) को प्रकाश नहीं करता है । सामर्थ्य शब्द से देह से उत्पन्न हुई शक्ति और शौर्य शब्द से शत्रु के पकड़ने का यत्न किया जाय उसको कहते हैं ॥ ५८ ॥

आशेच्छोक्ता मतिर्धर्म्या श्रद्धाबन्दः पराश्रयः ।
पानीयपतनं वृष्टिर्जलेऽकस्माच्च मज्जनम् ॥ ५९ ॥
आधिव्याधीतापमान्द्ये सपिण्डा बन्धवः स्मृताः ।
सत्यालीकं वणिग्वृत्तिराधानं प्रसवः स्मृतः ॥ ६० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५९-६० ॥

आशाशब्द से इच्छा से जो कहा जावे, श्रद्धाशब्द से धर्मयुक्त बुद्धि, बन्ध शब्द से पराधीनता, और पानीयपतन शब्द से वृष्टि अथवा अकस्मात् जल में गिरने (डूबने) को कहते हैं ॥ ५९ ॥ तापशब्द से आधि, मान्द्यशब्द से शरीर की पीड़ा करनेवाली व्याधि, बन्धुशब्द से सपिण्ड बान्धव, वणिक् शब्द से सत्य व असत्य जीविका से जीवन और प्रसव शब्द से उत्पन्न होना ॥ ६० ॥

दासत्वं परकर्मोक्तमन्यत्स्पष्टं स्वनामतः ।
निरूप्याणि यथायोग्यं कुलजातिस्वरूपतः ॥ ६१ ॥
शुभयोगेक्षणात्सौख्यं पत्युर्वीर्यानुसारतः ।
दारिद्र्यमतिमांद्यारिकलिषूक्तो विपर्ययः ॥ ६२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६१-६२ ॥

परकर्म शब्द से दासता, अन्य सहम अपने नाम ही से स्पष्ट है, उनका कुल, जाति और स्वरूप से यथायोग्य निरूपण करना चाहिये ॥ ६१ ॥ सहम शुभग्रहों से युत और दृष्ट हो तो अपने स्वामी के बलानुसार सुख देता है, मध्यम बली हो तो मध्यसुख,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा जो हीनबली हो तो स्वप्न में भी सुख प्राप्त नहीं होता है, और दारिद्र्य, अतिमान्द्य, अरि और कलि, इन सहमों के युक्त फल उलटा होता है अर्थात् यदि शुभफल आया हो तो अशुभ और अशुभफल आया हो तो शुभफल कहना ॥ ६२ ॥

सहमों का प्रयोजन—

प्रश्नकालेऽपि सहमं विचार्यं प्रष्टुरिच्छया ।
सर्वेषामुपयोगोऽत्र चित्रं पृच्छन्ति यज्जनाः ॥ ६३ ॥

अन्वयः—प्रश्नकालेऽपि प्रष्टुः इच्छया सहमं विचार्यं अत्र सर्वेषामुपयोगो वाच्यः यज्जनाः चित्रं पृच्छन्ति ॥ ६३ ॥

प्रश्नकाल में पूछनेवाले की इच्छा से पुण्यादि सहमों को विचारना चाहिये यहाँ सभी सहमों का प्रयोजन यह है कि जन्मपत्र के अभाव में प्रश्न समय में सभी सहमों का साधन कर शुभाशुभ का आदेश करना चाहिये क्योंकि मनुष्य अनेक प्रकार के प्रश्नों को करते हैं ॥ ६२ ॥ इति सहम फलानि ।

वर्ष में दशाओं के लाने का प्रकार—

स्पष्टान्सलग्नान्खचरान्विधाय राशीन्विनाऽत्यल्पलवं तु पूर्वम् ।
निवेश्य तस्मादधिकाधिकांशं क्रमादयं स्यात्तु दशाक्रमोऽब्दे ॥ ६४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६४ ॥

वर्ष प्रवेश के समय लग्न और ग्रहों को स्पष्ट करके सब में राशि को छोड़कर जो अल्प अंशवाला ग्रह हो उसके अंशादि को स्थापन करे उसके बाद उससे अधिक अंश वाले को फिर इससे अधिक अंशवाले को इसी क्रम से अधिक २ अंशवाले ग्रहों का स्थापन करे, वर्षप्रवेश में इसी प्रकार से दशा का क्रम होता है ॥ ६४ ॥

पात्यांशसाधन—

ऊनं विशोध्याधिकतः क्रमेण शोध्यं विशुद्धांशकशेषकैक्यम् ।
सर्वाधिकांशोन्मितमेव तत्स्यादनेन वर्षस्य मितिस्तु भाज्या ॥ ६५ ॥

अन्वयः—अधिकतः ऊनं विशोध्य क्रमेण शोध्यम्, विशुद्धांशकशेषकैक्यं तत् सर्वाधिकांशोन्मितमेव स्यात्, अनेन वर्षस्य मितिः भाज्या ॥ ६५ ॥

अधिक अंशादिवाले ग्रह से ऊन (कम) अंशवाले ग्रह को शोधन करे, अर्थात् प्रथम थोड़े अंशवाले ग्रह को स्थापन करे, फिर उसी को दूसरे में घटाकर शेष को स्थापन करे, दूसरे को तीसरे में घटाकर शेष को स्थापन एवं तीसरे को चौथे में इत्यादि क्रम से घटाकर शेष को स्थापन करता जावे, तदनन्तर शेष (योग) बचे हुये अंकों का ऐक्य करे, वह ऐक्य यदि सबों में अधिक अंशवाले अन्तिम (अन्तवाले) ग्रह के बराबर हो जावे तो ठीक है यह समझना चाहिये, पीछे इसी शेषांश योग से वर्षमान सौरमान से ३६० दिन वा सावन मान से दिन ३६५ घड़ी १५ पल ३१ विपल ३० इसमें भाग लेने से जो लब्ध मिले वह ध्रुवांक (दशागुणकांक) होता है ॥ ६५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशादिवस लाने का प्रकार—

शुद्धांशकांस्तान्गुणयेदनेन लब्धध्रुवांकेन भवेद्दशायाः ।
मानं दिनाद्यं खलु तद्ग्रहस्य फलान्यथासां निगदेत्तु शास्त्रात् ॥६६॥

अन्वयः—लब्धध्रुवाङ्केन अनेन तान् शुद्धांशकान् गुणयेत् तत्खलु ग्रहस्य दशायाः दिनाद्यं मानं स्यात्, आसां फलानि शास्त्रात् निगदेत् ॥ ६६ ॥

पूर्वोक्त लब्ध हुए ध्रुवांक (दशागुणकांक) से सर्वशुद्धांशों को गुणना चाहिये, ऐसा करने से उस उस ग्रह के दिनादिक दशा का प्रमाण होता है। ऐसे ही दशा के दिन आदिकों को लाकर इन दशाओं के शुभ व अशुभ फलों को ज्योतिःशास्त्र से कहे ॥६६॥

अंशों के समानता में निर्णय—

शुद्धांशसाम्ये बलिनो दशाद्या बलस्य साम्येऽल्पगतेस्तु पूर्वा ।
साम्ये विलग्नस्य खगेन चिन्त्या बलादिका लग्नपतेर्विचिन्त्या ॥६७॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६७ ॥

यदि एक ग्रह का अंश दूसरे के अंश के बराबर हो तो दोनों में पञ्चवर्गी बल से जो बलवान हो उसी की पहले दशा आरम्भ होती है। यदि बल भी समान होवे तो जिसकी अल्पगति हो उसकी दशा पहले होती है। लग्न के अंशों के बराबर ही यदि किसी ग्रह का अंश हो तो लग्नपति और उस ग्रह के पञ्चवर्गीबल में जो अधिक बली हो उसी की पहले दशा होगी ऐसा समझना चाहिये ॥ ६७ ॥

दशासाधन का उदाहरण—

यहाँ सब ग्रहों की अपेक्षा न्यून अंश ०।४।२८। सूर्य है इस कारण पहले सूर्य को स्थापित किया फिर चन्द्रमा १।३६।० को फिर बृहस्पति ४।५७।३ फिर शुक्र ५।६।५१ इत्यादि ।

वर्षकालीन स्पष्टग्रहाः—

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
११	७	११	१०	८	१०	१०	६
०	१	२१	६	४	५	१४	२४
४	३६	३५	३३	५७	६	४३	५८
२८	०	३६	१२	३	५१	३	९

प्रथम सूर्य का पात्यांश ०।४।२८ इसके बाद इसको चन्द्रमा के हीनांश में घटाया तो शेष १।३१।३२ यह चन्द्रमा का पात्यांश हुआ। इसी प्रकार भी ग्रहों के पात्यांश का साधन करना चाहिये सभी पात्यांशों का योग अन्तिम लग्नांश के तुल्य हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिनात्मक दशा लाने का प्रकार—

पात्यांश योग २४।५८।९ को ६० से गुणाकर विकलात्मक पिण्ड किया तो ८९८८९ हुआ यह भाजक हुआ। वर्ष मान ३६० को दो बार ६० से गुणने से १२९६००० यह भाज्य हुआ इसमें पूर्वोक्त भाजक से भाग दिया तो लब्धि १४।२५।४ यह ध्रुवांक हुआ इससे सूर्य के पात्यांश को गुण दिया तो यह १ दिन। ४ घटी। २४ पल सूर्य की दशा हुई। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के पात्यांशों को ध्रुवा से गुणा कर दशामान बनाना चाहिये।

सौरमानेन दशाचक्रम्।

दशाधिप क्रम		सू.	चं.	बृ.	शु.	बु.	श.	सं.	ल.
हीनांशाः		०	१	४	५	९	१४	२१	२४
		४	३६	५७	६	३३	४३	३५	५८
		२८	०	३	५१	१२	३	३६	९
पात्यंशाः		०	१	३	०	४	५	६	३
		४	३१	२१	९	२६	९	५२	२२
		२८	३२	३	४८	२१	५१	३३	३३
दशादिवसाः		१	२१	४८	२	६४	७४	९९	४८
		४	५९	१८	२१	०	२७	८	४०
		२४	४२	४२	१८	१०	२०	४	२०
दशाप्रवेशांकः	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.
	११	११	११	१	१	३	६	९	११
	०	१	२३	११	१३	१७	२	११	०
	४	८	८	२७	४८	४८	१६	२४	४
	२८	५२	३४	१६	३४	४४	४	८	२८

अन्तर्दशा लाने का प्रकार—

दशामानं समामानं प्रकल्प्योक्तेन वर्त्मना।
अन्तर्दशा साधनीया प्राक्पात्यांशवशेन तु॥
आदावन्तर्दशापाकपतेस्तत्क्रमतोऽपरा॥ ६८॥

अन्वयः—स्पष्टम्॥ ६८॥

जिस ग्रह की दशा में अन्तर्दशा लाना होवे उस ग्रह के दशा मान अर्थात् दिन घड़ी पल को सम (वर्ष) मान कल्पना करे अर्थात् दशा के दिन घड़ी पलों को ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्ष मानकर, फिर कहे हुए मार्ग से अन्तर्दशा का साधन करे अर्थात् दशा के दिन घटी पल को दो बार साठ से गुणा करने पर जो अङ्क आवे उसको भाज्य समझे तदनन्तर पात्यांशों के योगरूप भाजक से भाग लेने पर गुणक (ध्रुवा) होती है फिर उस गुणक से पात्यांशों को गुण देवे तो अन्तर्दशा के दिन घटी पल आवेंगे, और अन्तर्दशा का क्रम यह है कि महादशा में जिसकी दशा प्रथम आवे उसकी आदि में अन्तर्दशा होगी फिर उसी क्रम से दूसरों की होगी ॥ ६८ ॥

अन्तर्दशा साधन का उदाहरण—

जैसे सूर्य की दशा १।४।२४ है इसका सवर्णन किया तो ३८६४ यह भाज्य हुआ। पात्यांश योग २४।५८।६ का सवर्णन किया तो ८६८८६ यह भाजक हुआ इससे पूर्वोक्त भाज्य में भाग देने से लब्धि ०।२।३४ यह अन्तर्दशा की ध्रुवा हुई, इससे सूर्य के पात्यांश ०।४।२८ को गुणा किया तो ०।०।२१ यह दिनादि सूर्य की अन्तर्दशा हुई इसी तरह अन्य ग्रहों की भी अन्तर्दशा साधन करना चाहिये।

सूर्यान्तर्दशा चक्रम्

ग्रह	सू.	चं.	बृ.	शु.	बु.	श.	मं.	ल.
अन्तर्दशा दिनादि	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	३	८	०	११	१३	१७	८
	११	५६	३६	२५	२	१५	३८	३९
स्पष्ट	११	११	११	११	११	११	११	११
	०	०	०	०	०	०	०	१
	४	८	१७	१७	२८	४२	५९	८
	३९	३५	११	३६	५९	१४	५२	३१

मासप्रवेश और दिनप्रवेश लाने की रीति—

एकैकराशिवृद्ध्या चेत्तुल्योंऽशाद्यैर्यदा रविः।
तदा मासप्रवेशो द्युप्रवेशश्चेत्कलासमः ॥ ६९ ॥

अन्वयः—यदा एकैकराशिवृद्ध्या अंशाद्यैः तुल्यः रविः स्यात्तदा मासप्रवेशः स्यात्। एवं एकैकराशिवृद्ध्या अंशाद्यैः रविः यदा कलासमः स्यात्तदा द्युप्रवेशः स्यात् ॥ ६९ ॥

जन्म समय के सूर्य के राशि अंश के तुल्य रवि जिस मास में जिस दिन मिलें उस दिन वर्षप्रवेश होता है यह पहले ही वर्षेष्ट साधन में कह चुके हैं। उसी रवि में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक २ राशि जोड़ने से राश्यादि सूर्य हुये इसमें राशि अंश के तुल्य जिस दिन जिस मास में रवि मिलें उसी दिन उसी मास में मासारम्भ होता है। अर्थात् प्रथम मास में वर्षप्रवेशकालिक सूर्य ही रहेंगे, दूसरे मास में एक राशियुत सूर्य, तीसरे मास में २ राशियुत इत्यादि। इसी प्रकार एक २ अंश सूर्य के अंशों में जोड़ता जाय जोड़ने से जो सूर्य हुये इसके बराबर राशि अंश और कला के सूर्य जिस दिन मिलें उसी दिन दिनप्रवेश होता है ॥ ६९ ॥

मासप्रवेश की इष्ट घटिका लाने का प्रकार—

मासाऽर्कस्य तदासन्नपंक्त्यर्केण सहान्तरम्।
कलीकृत्यार्कगत्याप्तं दिनाद्येन युतोनितम् ॥ ७० ॥
तत्पक्तिस्थं वारपूर्वं मासार्केऽधिकहीनके।
तद्वाराद्ये मासवेशो द्युवेशोप्येवमेव च ॥ ७१ ॥

अन्वयः—मासार्कस्य तदासन्न पंक्त्यर्केण सहान्तरम् कार्यं कलीकृत्य अर्कगत्याप्तं दिनाद्येन तत्पक्तिस्थं वारपूर्वं मासार्केऽधिकहीनके युनोनितम् तद्वाराद्ये मासवेशः स्यादन्यत्स्पष्टम् ॥ ७०-७१ ॥

एक एक राशि के योग से मास प्रवेश का सूर्य होता है, इसीके समीपवर्ती पञ्चांग में स्थित जो पंक्ति का सूर्य और मासप्रवेश का सूर्य इन दोनों का अन्तर करे फिर उसकी कला करे तदनन्तर पंक्तिस्थ सूर्य की गति से भाग लेने पर वार, घटी, पल मिलेंगे इनको पंक्तिस्थ वारादि में युक्त करे अथवा घटा देवें अर्थात् पंक्तिस्थ सूर्य से जब मासप्रवेश का सूर्य अधिक होवे तो पंक्तिस्थ वारादि में युक्त करना चाहिये और यदि मासप्रवेश के सूर्य से पंक्तिस्थ सूर्य अधिक होवे तो घटा देवे, फिर उस शेष वारादि अर्थात् वार घटीपलात्मक समय में मास का प्रवेश होवेगा एवं दिनप्रवेश निकालने की रीति भी जानना ॥ ७१ ॥

उदाहरण—वर्षप्रवेशकालिक स्पष्ट सूर्य ११।०।४।२८ है उसमें एक राशि जोड़ देने से दूसरे मास का स्पष्ट सूर्य १२।०।४।२८ हुआ इसके आसन्न में वैशाख कृष्ण १३ रविवार के पंक्ति में १२।६।३९।२३ सूर्य है दोनों का अन्तर करने से ६।३४।५५ ये अंक हुये। ६ को ६० से गुणा किया तो ३६० हुआ इसमें ३४ जोड़ दिया ३९४ हुआ इसको फिर ६० से गुणा किया तो २३६४० हुआ इसमें ५५ जोड़ दिया तो २३६९५ हुआ यह भाज्य हुआ इसमें रविगति ५८।२७ को ६० से गुणाकर २७ जोड़कर ३५०७ से भाग दिया तो लब्धि ६ वार शेष को ६० से गुणकर भाग देने से लब्धि ४५ घटी फिर शेष को ६० से गुणकर भाग देने से लब्धि २३ पल हुए, यहाँ मासार्क से पंक्तिस्थ सूर्य अधिक है इसलिये पंक्तिस्थ वारादि १।४७।५ में पूर्वोक्त लब्धि ६।४५।२३ को घटाया तो शेष २।१।४२ मिला यहाँ वार में एक कम है इसलिये वार में एक और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जोड़ दिया तो वैशाख कृष्ण ६ सोमवार को १ घटी ४२ पल पर दूसरे मास का प्रवेश हुआ इसी इष्टकाल पर से सूर्यादि ग्रहों को और द्वादश भावों को स्पष्ट करने से मास-प्रवेश कालिक स्पष्ट ग्रह और भाव हो जायँगे ॥ ७१ ॥

कविवंशवर्णनमाह—

आसीदसीमगुणमण्डितपण्डिताग्र्यो-
व्याख्यद्भुजङ्गपगवीः श्रुतिवित्सुवृत्तः ।
साहित्यरीतिनिपुणोगणितागमज्ञ-
श्चिन्तामणिर्विपुलगर्गकुलावतंसः ॥ ७२ ॥

अन्वयः—चिन्तामणिः-(चिन्तामणिसंज्ञकः) आसीत् (बभूव) कीदृश-श्चिन्तामणिः असीमगुणमण्डितपण्डिताग्र्यः असीमा (निर्मर्यादा) अनन्ता गुणाः साधुत्वादयः तैर्मण्डिता (भूषिता) युक्ता इति यावत् ये पण्डिताः शास्त्रज्ञास्तेष्वग्र्यः (श्रेष्ठः) अतिपण्डित इत्यर्थः। पुनः कीदृशः भुजंगपः (शेषनागः) तस्य गावो (वाण्यः महाभाष्यरूपाः) व्याख्यत् (सदा-महाभाष्याध्यापक इत्यर्थः) पुनः कीदृशः श्रुतिवित् वेदविद्यामर्मज्ञः) पुनः सुवृत्तः (समीचीनाचरणः) पुनः साहित्यरीतिनिपुणः पुनः गणितागमज्ञः पुनः विपुलगर्गकुलावतंसः गर्गगोत्रोत्पन्न इत्यर्थः ॥ ७२ ॥

मर्यादा रहित अनन्त गुणों से भूषित जो शास्त्रज्ञ विद्वान् उनमें श्रेष्ठ, महाभाष्य वाले, वेदविहित कर्मों के करने वाले तथा सुन्दर आचरणों के करने वाले, अलंकार के ज्ञान में निपुण अर्थात् अति पण्डित और ज्योतिष शास्त्र के जानने वाले विपुल गर्ग कुल के भूषण रूप ऐसे चिन्तामणि नामक होते भये ॥ ७२ ॥

तदात्मजोऽनन्तगुणस्त्वनन्तो योधोसदुक्तीः किल कामधेनुम् ।
सन्तुष्टये जातकपद्धतिं च न्यरूपयद्दुष्टमतं निरस्य ॥ ७३ ॥

अन्वयः—तदात्मजः (चिन्तामणिदैवज्ञस्य पुत्रः) अनन्तः अनन्ताख्य दैवज्ञः प्रसिद्धोऽस्ति पृथिव्यामनन्तगुणः (असंख्ययेगुणाश्रयीभूतः) स कः असंदिग्धकामधेनुं (कामधेनु संज्ञा) तिथ्यादिपञ्चांगसाधकज्यौतिषशास्त्रे प्रसिद्धं ग्रन्थं तदुक्तीरधोक् दुदोह किमर्थं सन्तुष्टये च पुनः दुष्टमतं निरस्य जातकपद्धतिं न्यरूपयन्निरूपितवानित्यर्थः ॥ ७३ ॥

उस चिन्तामणि नामक दैवज्ञ का पुत्र अनन्त गुणों से भूषित अनन्त नामक पृथिवी में प्रसिद्ध होता भया, जो कि सज्जनों के आनन्दार्थ ज्योतिःशास्त्र में प्रकट कामधेनु नामक ग्रन्थ के ऊपर टीका को रचता भया, और दुष्टमत को दूर करके जातकशास्त्र के मार्ग को निरूपण करता भया कि जिससे उत्पन्न बालकों के जन्मकाल में जन्मपत्र द्वारा शुभ और अशुभ फलों का निरूपण होता है ॥ ७३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पद्माम्बयाऽसावि ततो विपश्चिच्छ्रीनीलकण्ठः श्रुतिशास्त्रनिष्ठः ।
विद्वच्छिवप्रीतिकरं व्यधत्त संज्ञाविवेकं सहमावतंसम् ॥ ७४ ॥

अन्वयः—ततोऽनंतदैवज्ञात्पत्न्याम्बया पद्मानाम्ना या अम्बा (माता) तया श्रीनीलकण्ठः पाण्डित्यादिशोभायुतो नीलकण्ठरूपः पुत्रोऽसावि (प्रसूतः) कथम्भूतः विपश्चित् पण्डितः श्रुतिशास्त्रनिष्ठः वेदशास्त्रसम्पन्नः संज्ञाविवेकं (संज्ञाविचारं) ग्रंथं कृतवान् कथम्भूतं, सहमावतंसं सहमनिरूपकं शास्त्रम-वतंसा भूषणं यस्य तं अत्र ग्रंथे सहमविचारं सम्यक् निरूपितवान् पुनः कीदृशं विद्वच्छिवप्रीतिकरं पण्डितशिवप्रीतिदम् ॥ ७४ ॥

इति श्रीदैवज्ञानन्तसुतदैवज्ञनीलकण्ठविरचितायां नीलकण्ठयां संज्ञातन्त्रे सहमादिनिरूपणन्नाम तृतीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥

अनन्तर उस अनन्त दैवज्ञ से पद्मानाम माता ने पाण्डित्यादि शोभायुत नीलकण्ठ रूप ही पुत्र को उत्पन्न किया जो कि सम्पूर्ण विद्याओं का ज्ञाता और वेदविहित कर्मों का करने वाला ऐसा नीलकण्ठ संज्ञातन्त्र को रचता भया जिसमें सहमों का निरूपण अच्छे प्रकार से किया गया और जो विद्वान् रूप शिवजी के लिये ही प्रीति को देता है ऐसा यह परमोत्तम संज्ञातन्त्र है ॥ ७४ ॥

इति भाषाटीकायां संज्ञातन्त्रे सहमादिनिरूपणं नाम तृतीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ श्रीनीलकण्ठदैवज्ञविरचितम्—

द्वितीयं वर्षतन्त्रं प्रारभ्यते

ग्रन्थकर्त्ता का मंगलाचरण—

स्वस्वाभिलाषं न हि लब्धुमीशा निर्विघ्नमीशानमुखाः सुरौघाः ।
विना प्रसादं किल यस्य नौमि तं ढुण्ढिराजं मतिलाभहेतुम् ॥१॥

अन्वयः—अहं तं मतिलाभहेतुं ढुंढिराजं नौमि (तं कं) यस्य प्रसादं विना ईशानमुखाः सुरौघाः निर्विघ्नं स्वस्वाभिलाषं लब्धुमीशाः नहि (भवन्ति) ॥१॥

मैं श्रीनीलकंठ उन बुद्धि के लाभ में कारण (अर्थात् बुद्धि को बढ़ाने वाले श्रीगणेशजी को नमस्कार करता हूँ। "वे कौन से गणेश हैं" जिनकी अप्रसन्नता से शंकर आदि देवसमूह अपने २ अभीष्ट की सिद्धि को निर्विघ्नतापूर्वक नहीं पाते हैं अर्थात् इनके प्रसन्नता से ही शिवादि देवों की भी अभिलाषायें पूरी होती हैं ॥१॥

वर्षतन्त्र का प्रयोजन—

जातकोदितदशाफलं च यत्स्थूलकालफलदं स्फुटं नृणाम् ।
तत्र न स्फुरति दैवविन्मतिस्तद्ब्रुवेऽब्दफलमादिताजिकात् ॥२॥

अन्वयः—यत् (यस्मात्कारणात्) जातकोदितदशाफलं नृणां स्थूलकाल-फलदं इति स्फुटं, तत्र दैवविन्मतिः न स्फुरति तद् (तस्मात्कारणात्) आदि-ताजिकात् अब्दफलं ब्रुवे ॥ २ ॥

जातकशास्त्र में कहे हुए शुभ व अशुभ फल मनुष्यों को बहुत काल में फल देने-वाले होते हैं यह स्पष्ट है, उस फल में पण्डितों की बुद्धि काम नहीं देती कि किस समय क्या फल होवेगा, इसलिये पूर्वताजिक ग्रन्थों से वर्ष में होने वाले शुभ व अशुभ फल को वर्णन करता हूँ ॥ २ ॥

गताः समाः पादयुताः प्रकृतिघ्नसमागणात् ।
खवेदाप्तघटी युक्ता जन्मवारादिसंयुताः ॥ ३ ॥
अब्दप्रवेशे वारादिः सप्ततष्टेऽत्र निर्दिशेत् ।
शिवघ्नोऽब्दः स्वखाद्रीन्दुलवाढ्यः खाग्निशेषितः ॥ ४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जन्मतिथ्यन्वितस्तत्रतिथावब्दप्रवेशनम् ।
तत्कालेऽर्को जन्मकालरविणा स्याद्यतः समः ॥ ५ ॥
एकैकराशिवृद्ध्या चेत्तुल्योंऽशाद्यैर्यदा रविः ।
तदा मासप्रवेशोद्युप्रवेशश्चेत्कलासमः ॥ ६ ॥
तत्कालिकास्तु खचराः सुधिया विधेयाः
स्पष्टा विलग्नमुखभावगणो विधेयः ।
वीर्यं तथोक्तविधिना निखिलग्रहाणा-
मब्दाधिपस्य विधये कथयामि युक्तिम् ॥ ७ ॥

पण्डितों को चाहिये कि पहले तत्काल ग्रहों को और लग्नादि भावों का स्पष्ट साधन करे, तदनन्तर पूर्वोक्त रीति से पंचवर्गी व द्वादशवर्गी के द्वारा सम्पूर्ण ग्रहों के बल का साधन करे, वर्षेश जानने की युक्ति कहता हूँ ॥ ८ ॥

जन्मलग्नपतिरब्दलग्नपो मुन्थहाधिप इतस्त्रिराशिपः ।
सूर्यराशिपतिरह्नि चन्द्रभाधीश्वरो निशि विमृश्य पञ्चकम् ॥ ८ ॥
बली य एषां तनुमीक्षमाणः स वर्षपो लग्नमनीक्षमाणः ।
नैवाब्दपो दृग्व्यतिरेकतः स्याद्बलस्य साम्ये विदुरेवमाद्याः ॥९॥
दृगादिसाम्येप्यथ निर्बलत्वे वर्षाधिपः स्यान्मुथहेश्वरस्तु ।
पञ्चापि चेन्नो तनुमीक्षमाणा वीर्याधिकोब्दस्य विभुर्विचिन्त्यः ॥१०॥
बलादिसाम्ये रविराशिपोह्नि निशीन्दुराशीडिति केचिदाहुः ।
येनेत्थशालोब्दविभुः शशी स वर्षाधिपश्चन्द्रभपोऽन्यथात्वे ॥११॥

अन्वयः—स्पष्टम् पूर्वं व्याख्यातम् च । ३।४।५।६।७।८।९।१०।११ तीसरे श्लोक से लेकर ग्यारहवें तक का भाषानुवाद क्रम से संज्ञातन्त्र पृ. ८, ११, ४७, ४८ और १३० में हो चुका है ।

प्रश्न से वर्ष का शुभाशुभ विचार—

द्विघ्नं प्रश्नांगभागाद्यं शरलब्धं स्फुटेन्थिहा ।
प्रश्नांगाद्वायनफले तुयशो लग्नपो भवेत् ॥ १२ ॥

अन्वयः—प्रश्नाङ्गाद्वायनफले (प्रश्नलग्नाद्वर्षफलविचारे) प्रश्नाङ्गभागाद्यं द्विघ्नं शरलब्धं तदा इंथिहा स्फुटा स्यात् अत्र तुर्येशो लग्नपो भवेत् ॥ १२ ॥

यदि प्रश्न लग्न से ही वर्ष के शुभाशुभ का विचार करना हो तो प्रश्नकालिक लग्न के राशि अंश कला विकला को २ से गुण देना और गुणनफल में ५ से भाग दे देना तो राश्यादि मुन्था होगा और यहाँ लग्नेश चतुर्थ भाव के स्वामी होते हैं ॥ १२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रश्नलग्न से वर्ष का शुभाशुभ विचार—

उदाहरण—जैसे किसी ने वर्ष का शुभाशुभ फल जानने के लिये प्रश्न किया तो उस समय लग्न ६।३।१०।१५ है। इसके अंशादि ३।१०।१५ को दूना किया तो ६।२०।३० हुये इसमें पाँच का भाग देने से राश्यादि १।१०।६।० मुन्था हुई। अतः प्रश्नलग्नपति शनि, वर्षलग्नपति (चतुर्थपति) मंगल, मुन्थापति शुक्र, त्रिराशिपति मंगल, सूर्यराशिपति शनि ये ही पंचाधिकारी हुये इनसे वर्षेश निर्णय कर शुभाशुभ फल कहना चाहिए ॥ १२ ॥

लग्नम्

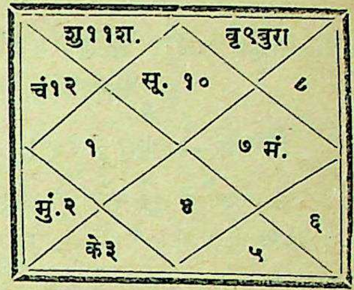

वर्षेश के स्थितिवश फल—

अब्दाधिपो व्ययषडष्टमभिन्नसंस्थोलब्धोदयोब्दजनुषोः सदृशो बलेन।
निश्शेषमुत्तमफलं विदधाति काये नैरुज्यराज्यबललब्धिरतीव सौख्यम् ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १३ ॥

यदि वर्ष का स्वामी १२।६।८ इन स्थानों को छोड़कर अन्य किसी स्थान में स्थित हो, यहाँ यह शङ्का है कि १२।६।८ स्थान में स्थित ग्रह वर्षेश नहीं हो तो (**पञ्चापिचेन्नोतनुमीक्षमाणाः**) इत्यादि वचन हैं कि जो लग्न को नहीं देखने से भी पञ्चाधिकारियों में से अधिक बलवाला ग्रह वर्षेश होता है, इस कारण यह वाक्य कहा और वर्षप्रवेश समय व जन्म समय में उदय को प्राप्त हो, अर्थात् बलहीन नहीं होवे, ऐसा वर्षेश सम्पूर्ण उत्तम फल को करता है, शरीर में आरोग्यता, राज्य, बल की प्राप्ति और बहुत सुख को देता है ॥ १३ ॥

पञ्चवर्गी बल के अनुसार वर्षेश का फल—

बलपूर्णेऽब्दपे पूर्णं शुभं मध्ये च मध्यमम्।
अधमे दुःखरोगादिभयानि विविधाः शुचः ॥ १४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १४ ॥

वर्ष का स्वामी पूर्णबली हो अर्थात् पञ्चवर्गी में १० विश्वा से अधिक बलवाला हो, तो सम्पूर्ण वर्ष पर्यन्त शुभफल होता है, मध्यबली अर्थात् दस तक बल होवे तो मध्यम फल होता है, और जो हीनबल हो अर्थात् पाँच विश्वा से न्यून (कमती) बल हो तो दुःख, शरीर में रोग, व शत्रुगणों से भय तथा अनेक प्रकार की चिन्ता को करता है ॥ १४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर्षेश सूर्य का फल—

सूर्येऽब्दपे बलिनि राज्यसुखात्मजार्थ-
लाभः कुलोचितविभुः परिवारसौख्यम् ।
पुष्टं यशो गृहसुखं विविधा प्रतिष्ठा
शत्रुर्विनश्यति फले जनिखेटयुक्त्या ॥ १५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १५ ॥

जिस वर्ष में सूर्य वर्षेश हो और पञ्चवर्गी में पूर्णबली (अर्थात् दस विश्वा से अधिक बलवाला हो) तो उस वर्ष में, राज्य, सुख, पुत्र, धन का लाभ होता है, कुल के अनुसार प्रभुता, परिवार से सुख, शरीर में बल, यश, गृह का सुख, अनेक प्रकार की प्रतिष्ठा (सम्मान) और शत्रुओं का नाश होता है। जन्मकालिक ग्रह के अनुसार फल कहना चाहिये अर्थात् जन्मकाल में सूर्य बलवान् हो तो वर्ष में सभी फल उत्तम होंगे तथा जन्म में उत्तम बली हो और वर्ष में मध्यम बली हो तो मध्यम ही फल कहना इसी प्रकार तारतम्य से फल कहना चाहिये ॥ १५ ॥

मध्ये रवौ फलमिदं निखिलं तु मध्यं
स्वल्पं सुखं स्वजनतोऽपि विवादमाहुः ।
स्थानच्युतिर्न च सुखं कृशता शरीरे
भीतिर्नृपान्मुथशिलो न शुभेन चेत्स्यात् ॥१६॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १६ ॥

जो वर्षेश सूर्य मध्यम बली हो तो पूर्व कहा हुआ सम्पूर्ण फल मध्यम होता है और थोड़ा सुख, व स्वजनों से कलह, स्थान का नाश, सुख की हानि, देह में दुर्बलता और राजा से भय हो यदि वर्षेश शुभग्रह के साथ इत्थशाल योग करता हो तो अशुभ फल नहीं होता है ॥ १६ ॥

सूर्ये बलेन रहितेऽब्दपतौ विदेश-
यानं धनक्षयशुचेऽरिभयं च तन्द्रा ।
लोकापवादभयमुग्ररुजोऽतिदुःखं
पित्रादितोऽपि न सुखं सुतमित्रभीतिः ॥१७॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १७ ॥

जो सूर्य निर्बल होकर वर्ष का स्वामी होवे तो विदेशगमन, धननाश, शोक, शत्रु-भय, आलस्य, लोकापवाद, (मिथ्याकलङ्क) भय, कठिन रोग, अति दुःख, पिता आदि से भी सुख की हानि, पुत्र और मित्रों से भय होता ॥ १७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्षेश चन्द्रमा का फल—

चन्द्रेऽब्दपे मुथशिलं येनासावब्दपोऽस्य चेत् ।
कम्बूलमिदुना जन्म निशि वर्षं तदोत्तमम् ॥ १८ ॥

अन्वयः—चंद्रेऽब्दपे असौ चंद्रः येन मुथशिलं स अब्दपः, चेत् अस्य इन्दुना कम्बूलं निशि जन्म तदा उत्तमम् ज्ञेयम् ॥१८॥

जिस वर्ष में चन्द्रमा वर्षेश हो, वह यदि किसी ग्रह के साथ इत्थशाल योग करता हो तो वही वर्षेश होता है इस वर्षेश के साथ यदि चन्द्रमा का कम्बूल योग होता हो और रात्रि का जन्म हो तो उत्तम वर्ष होता है ॥१८॥

वीर्यान्विते शशिनि वित्तकलत्रपुत्र-
मित्रालयस्य विविधं सुखमाहुरार्याः ।
स्रग्गन्धमौक्तिकदुकूलसुखानुभूति-
लाभः कुलोचितपदस्य नृपैः सखित्वम् ॥१९॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १९ ॥

जिस वर्ष में चन्द्रमा पूर्ण बली होकर वर्षेश होवे तो उसे धन, स्त्री, पुत्र, मित्र, घर व अनेकविध सुख, माला, सुगन्धित चन्दन इतर, मोती, दुपट्टे व परमैश्वर्य व कुल के उचित पद इन सबों की प्राप्ति होती है राजा का मन्त्री होता है ॥१९॥

वर्षाधिपे शशिनि मध्यबले फलानि-
मध्यान्यमूनि रिपुता सुतमित्रवर्गे ।
स्थानान्तरे गतिरथो कृशता शरीरे
श्लेष्मोद्भवश्च यदि पापकृतेसराफः ॥ २० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २० ॥

जो चन्द्रमा मध्यम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे तो ऊपर कहा हुआ फल मध्यम होता है और अपने पुत्र व मित्रवर्ग से शत्रुता होती है तथा अपने स्थान से भ्रष्ट होकर दूसरे स्थान को प्राप्त होता हुआ दुबले शरीर वाला हो जाता है, और यदि पापग्रह के साथ चन्द्रमा का ईसराफयोग होवे तो वह श्लेष्मरोग से पीडित होकर ज्वर, खाँसी आदि रोगों से क्लेशयुक्त होता है ॥ २० ॥

नष्टेऽब्दपे शशिनि शीतकफादिरोग-
श्चौर्यादिभीः स्वजनविग्रहमप्युशन्ति ।
दूरे गतिः सुतकलत्रसुखाप्तयश्च
स्यान्मृत्युतुल्यमतिहीनबले शशांके ॥ २१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २१ ॥

जिसके वर्ष समय में चन्द्रमा अतिहीन बली अथवा नष्ट कहिये सूर्य के साथ स्थित होने से अस्त होकर वर्ष का स्वामी होवे तो वह प्राणी शीतज्वर (जूड़ी) कफज्वर खासी आदि रोगों से पीड़ित व चोर आदि दुष्टों से भयभीत व अपने बन्धुजनों से कलहादि दुःख से क्लेशित होता है, ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है, और जो चन्द्रमा अत्यन्त हीन-बल किन्तु नीच का होकर वर्षेश होवे तो वह प्राणी दूर देश का जानेवाला स्त्री पुत्रादिकों के सुख की प्राप्ति को भोगता हुआ मृत्यु के समान दुःख को प्राप्त होता है ॥२१॥

वर्षेश मंगल का फल—

भौमेऽब्दपे बलिनि कीर्तिजयारिनाश-
सेनापतित्वरणनायकता प्रदिष्टा ।
लाभः कुलोचितधनस्य नमस्यता च
लोकेषु मित्रसुतवित्तकलत्रसौख्यम् ॥ २२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २२ ॥

जिसके वर्ष में मंगल पूर्ण बली होकर वर्षपति होवे वह प्राणी कीर्तिवाला, जयवाला, शत्रुओं का नाश करने वाला होकर सेनापति होता है जिससे वह रणनायक (संग्राम का स्वामी) कहा जाता है और कुल के उचित धन को पाकर लोक में पूजित होकर मित्र, पुत्र, धन, स्त्री के सुख को पाता है ॥ २२ ॥

मध्येऽब्दपेऽवनिसुते रुधिरस्रुतिश्च
कोपाधिको झकटशस्त्रहतिक्षतिश्च ।
स्वामीत्वमात्मगणतो बलगौरवं च
मध्यं सुखं निखिलमुक्तफलं विचिन्त्यम् ॥२३॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २३ ॥

यदि मंगल मध्यम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे तो उस वर्ष में रक्तश्रुति अर्थात् फोड़ा फुन्सी आदि से रुधिर व पीव बहै और क्रोध अधिक हो, झगड़े लड़ाई में चोट व किसी हथियार के लगने से घायल व अपने गणों का स्वामी व बल और गुरुतासहित मध्यम सुख को प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

हीनेऽब्दपेऽसृजिभयं रिपुतस्कराग्नि-
लोकापवादभयमात्मधियाविनाशः ।
कार्यस्य विघ्नमतिरोगभयं विदेश-
यानं क्षयोऽपनयतो गुरुदृष्ट्यभावे ॥२४॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिसके वर्ष प्रवेश समय में मंगल हीनबली होकर वर्षेश होवे तो वह शत्रुओं व चोरों व अग्नि और लोक के अपवाद (मिथ्याकलंक) रूप भय से युक्त होकर अपनी बुद्धि से नाश को प्राप्त होता है, तथा जिस कार्य को आरम्भ करता है उसमें विघ्न होते हैं, और बड़े रोगों से भययुक्त होकर विदेश को जाता है और मंगल को बृहस्पति नहीं देखता होवे तो अनीति से नाश हो जाता है ॥ २४ ॥

बुध वर्षेश का फल—

सौम्येऽब्दपे बलवति प्रतिवादलेख्य-
सच्छास्त्रसद्व्यवहृतौ विजयोऽर्थलाभः ।
ज्ञानं कलागणितवैद्यभवं गुरुत्वं
राजाश्रयेण नृपता नृपमन्त्रिता वा ॥ २५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २५ ॥

जिसके वर्ष प्रवेश समय में पूर्ण बलवान् होकर बुध वर्ष का स्वामी होवे तो वह प्रतिवाद (शीघ्र उत्तर देने) व लिखने व अच्छे शास्त्रों में प्रवीण होकर समीचीन व्यवहारों में विजय वा धन को पाता है और ज्ञानवान् व सब कलाओं (कारीगरी की विद्याओं) में कुशल (निपुण) होकर गणित तथा विद्या की गुरुता को जानता हुआ राजा के आश्रय से राजा के समान वा राजा का मन्त्री होता है ॥ २५ ॥

अब्दाधिपे शशिसुते खलु मध्यवीर्ये
स्यान्मध्यमं निखिलमेतदथाध्वयानम् ।
वाणिज्यवर्तनमथात्मजमित्रसौख्यं
सौम्येत्थशालवशतोपरथानसम्यक् ॥ २६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २६ ॥

जिसके वर्षप्रवेश समय में बुध मध्यम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे, तो पूर्वोक्त सब फल मध्यम होता है, और वह प्राणी यात्रा द्वारा व्यापार कर्म को करता है उसी से अपने पुत्र व मित्रवर्ग को सुख देता है, परन्तु बुध शुभग्रहों के साथ इत्थशाल करता हो तो शुभफल होता है, इससे अन्यथा हो तो अशुभ फल होता है ॥ २६ ॥

सौम्येऽब्दपेऽधमबले बलबुद्धिहानि-
र्धर्मक्षयः परिभवो निजवाक्यदोषात् ।
विक्षेपतो विपदतीव मृषैव साच्यं
हानिः परव्यवहृतेः सुतवित्तमित्रैः ॥ २७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २७ ॥

जिसके वर्षप्रवेश समय में बुध अधम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे तो उस प्राणी के बल बुद्धि की हानि होती है, और वह धर्म का नाश करता हुआ अपने वाक्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोष से तिरस्कार (अनादरभाव) को प्राप्त होकर अनेकानेक विपत्तियों को सहन करता हुआ, बाहर झूठी गवाही देता हुआ पराये व्यवहार से अपने पुत्र, मित्र, व धन से हानि को प्राप्त होता है ॥ २७ ॥

बृहस्पति वर्षेश का फल—

जीवेऽब्दपे बलयुते परिवारसौख्यं
धर्मो गुणग्रहिलता धनकीर्तिपुत्राः ।
विश्वास्यती जगति सन्मतिविक्रमाप्ति-
र्लाभो निधेर्नृपतिगौरवमप्यरिघ्नम् ॥ २८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २८ ॥

जिसके वर्षप्रवेश समय में बृहस्पति पूर्ण बली होकर वर्ष का स्वामी होवे तो वह परिवार से सुखी, धर्मात्मा, गुणों का ग्राहक होता है, और कीर्ति, धन, पुत्र इनका सुख व लोक में विश्वासी, उत्तम बुद्धि, बल की प्राप्ति, निधि (खजाना) का लाभ, राजा से बड़ाई, शत्रुओं का नाश, इन सब फलों को करता है, अर्थात् सम्पूर्ण उत्तम फल होते हैं ॥ २८ ॥

अब्दाधिपे सुरगुरौ किल मध्यवीर्ये
स्यान्मध्यमं फलमिदं नृपसङ्गमश्च ।
भिज्ञश्च शास्त्रएरताप्यशुभेसराफे
दारिद्र्यमर्थविलयश्च कलत्रपीडा ॥ २९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २९ ॥

जिसके वर्षप्रवेश समय में बृहस्पति मध्यम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे, तो पूर्व कहा हुआ सम्पूर्ण उत्तम फल मध्यम होता है, वह प्राणी ज्ञानवान् होकर शास्त्रों के अभिप्रायों का ज्ञाता होता है, जो बृहस्पति पाप ग्रहों से ईसराफ योग करे तो वह प्राणी दरिद्री होकर अपने स्त्री सहित कष्ट पाता है, तथा सञ्चित धन का नाश होता है ॥२९॥

जीवेऽब्दपेऽधमबले धनधर्मसौख्य-
हानिस्त्यजन्ति सुतमित्रजनास्सभार्याः ।
लोकापवादभयव्याकुलतातिकष्टं-
वृत्तिस्तनौ कफरुजो रिपुभीः कलिश्च ॥ ३० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३० ॥

जिसके वर्ष प्रवेश समय में बृहस्पति अधम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे तो धन, धर्म, सुख की हानि होती है, मित्र, कुटुम्बीजन तथा स्त्री सहित उसको छोड़ देते हैं, लोक के अपवाद अर्थात् मिथ्या कलङ्क रूप भय से व्याकुल होकर कष्ट को प्राप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होता है, और उसके शरीर में कफ रोग आकर घर कर लेते हैं जिससे निर्बल होकर वह मनुष्य कलह आदि करता है, और शत्रु से भय को प्राप्त होता है ॥ ३० ॥

वर्षेश शुक्र का फल—

शुक्रेऽब्दपे बलिनि नीरुजता विलास-
सच्छास्त्ररत्नमधुराशन भोगतोषाः ।
क्षेमप्रतापविजया वनिताविलासो-
हास्यं नृपाश्रयवशेन धनं सुखं च ॥ ३१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३१ ॥

जिसके वर्षप्रवेश समय में शुक्र उत्तम बली होकर वर्षेश होवे तो वह प्राणी रोग रहित (आरोग्य शरीर) व सुन्दर शास्त्र और रत्नों का विलासी होकर मधुर पदार्थों को भोजन करने वाला व भोगों से सन्तुष्ट व कल्याण युक्त व शत्रुओं का जीतने वाला व वनिताओं के हाव भाव कटाक्षों से आनन्दित हँसता हुआ प्रतिदिन प्रसन्न मनवाला व राजा के आश्रयवश धन और सुख को प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥

अब्दाधिपे भृगुसुते खलु मध्यवीर्ये
स्यान्मध्यमं निखिलमेतदथाल्पवृत्तिः ।
गुप्तं च दुःखमखिलं सुनिबद्धवृत्तिः
पापारिवीक्षतयुते विपदोऽर्थनाशः ॥ ३२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३२ ॥

जिसके वर्षप्रवेश समय में शुक्र मध्यम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे, तो पूर्व कहा हुआ फल मध्यम हो और वह थोड़ी जीविका वाला होता है और सम्पूर्ण दुःख छिपा हुआ हो, कोई दुःख देखने में प्रगट न होवे, और जीविका बँधी हुई होवे अर्थात् जितनी बँधी हो उससे अधिक प्राप्ति नहीं होवे, जो शुक्र पापग्रहों से वा शत्रु से दृष्ट व युक्त हो तो विपत्ति और धन का नाश होवे ॥ ३२ ॥

शुक्रेऽब्दपेऽधमबले मनसोऽतितापो
लोकोपहासविपदौ निजवृत्तिनाशः ।
द्वेषः कलत्रसुतमित्रजनेषु कष्टाद्-
न्नाशनं च विफलं क्रियया न सौख्यम् ॥ ३३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३३ ॥

जिसके वर्षप्रवेश समय में शुक्र अधम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे, तो उस प्राणी के मन को बहुत ताप हो, लोक में उपहास हो, विपत्ति हो, अपनी जीविका का नाश हो, और स्त्री, पुत्र, मित्रों से द्वेषभाव हो जावे तथा कष्ट से अन्न मिले जो २ कार्य आरम्भ करे वह निष्फल होवे ॥ ३३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर्षेश शनि का फल—

मन्देऽब्दपे बलिनि नूतनभूमिवेश्म-
क्षेत्राप्तिरर्थनिचयो यवनावनीशात् ।
आरामनिर्मितजलाशयसौख्यमङ्ग-
पुष्टिः कुलोचितपदाप्तिगुणाग्रणित्वम् ॥ ३४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३४ ॥

जिसके वर्षप्रवेश समय में शनि उत्तम बली होकर वर्ष का स्वामी होवे, तो उसको नवीन भूमि, घर, खेत की प्राप्ति होवे और यवन राजा से धन मिले, तथा बगीचा, बनाये हुए जलाशय (कूप, तालाब, बावली) से सुख हो, शरीर पुष्ट रहे और अपने कुल के उचित पद को प्राप्त तथा गुणियों में अग्रगण्य होता है ॥ ३४ ॥

अब्दाधिपे रविसुते खलु मध्यवीर्ये
स्यान्मध्यमं निखिलमन्नभुजिस्तु कष्टात् ।
दासोष्ट्रमाहिषकुलान्यरतिस्तु लाभः
पापं फलं भवति पापयुगीक्षणेन ॥ ३५ ॥

अन्वय—स्पष्टम् ॥ ३५ ॥

जिसके वर्ष समय में वर्ष का स्वामी शनैश्चर होवे और मध्यम बली हो तो पूर्व कहा हुआ फल मध्यम होवे और वह बड़े कष्ट से भोजनों को पाता है और दास व ऊँट व महिषों के समूहों को प्राप्त होकर अपने कुल से अन्य स्त्रियों में अथवा वेश्याओं में रमण करता है, सामान्य लाभ से युक्त होता है, जो शनैश्चर को पापग्रह देखता हो वा युक्त हो तो वह पापफल को प्राप्त होता है ॥ ३५ ॥

मन्दे बलेन रहितेऽब्दपतौ क्रियाणां
वन्ध्यत्वमर्थविलयो विपदोऽरिभीतिः ।
स्त्रीपुत्रमित्रजनवैरकदन्नभुक्तिः
सौम्येत्थशालयुजि सौख्यमपीषदाहुः ॥ ३६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३६ ॥

जिसके वर्ष प्रवेश समय में हीन बलवाला शनैश्चर वर्ष का स्वामी हो, तो उसके सम्पूर्ण क्रियाओं में बाधा होती है तथा धन का नाश, विपत्ति, शत्रु से भय और स्त्री, पुत्र, मित्रजन इनसे वैर होता है तथा सावां, काकुनि आदि दुष्ट अन्न भोजनार्थ प्राप्त होते हैं, जो शनैश्चर के साथ शुभग्रहों का इत्थशाल हो तो कुछ सुख भी होता है, ऐसा आचार्यों ने कहा है ॥ ३६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्षेश से सम्पूर्ण वर्ष का शुभाशुभ फल—

वर्षेश्वरो भवति यः सदशाधिपोऽब्दे
ज्ञेयोऽखिलेब्दजनुषोर्वलमस्य चिन्त्यम् ।
वीर्यान्वितेऽत्र निखिलं शुभमब्दमाहु-
र्हीने त्वनिष्टफलता समता समत्वे ॥ ३७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३७ ॥

जो ग्रह वर्ष का स्वामी होता है, वही सम्पूर्ण वर्ष भर दशा का स्वामी होता है, इसके जन्म और वर्ष सम्बन्धी पञ्चवर्गी बल को देखना चाहिये यदि दोनों में बलवान् हो तो सम्पूर्ण वर्ष पर्यन्त शुभ फल देता है, हीनबल हो तो अनिष्ट फल और मध्यबली हो तो मध्यम फल देता है ॥ ३७ ॥

इत्थशाल द्वारा वर्षेश का फल—

येनेत्थशालोऽब्दपतेर्ग्रहोऽसौ स्वीयस्वभावात्सुफलं ददाति ।
शुभेसराफे शुभमस्ति किंचिदनिष्टमेवाशुभमूसरीफे ॥ ३८ ॥

अन्वयः—येन (ग्रहेण) अब्दपतेः इत्थशालः, असौ (ग्रहः) स्वीयस्वभावात् सुफलं ददाति शेषं स्पष्टम् ॥ ३८ ॥

वर्ष का स्वामी जिस ग्रह के साथ इत्थशाल योग करे, वह ग्रह अपने स्वभाव (संज्ञातंत्र में कहे हुए स्वरूप) के अनुकूल से शुभ फल को देता है, और वर्ष स्वामी शुभ ग्रह के साथ ईसराफ योग करे तो शुभ फल होता है, पाप ग्रह के साथ ईसराफ योग करे तो कुछ अनिष्ट फल होता है ॥ ३८ ॥

हद्दाद्वारा वर्षेश का फल—

हद्दे यादृशि यः खेट आधत्तेऽत्र च यो ग्रहः ।
जन्मन्यब्दे च तादृक्चेत्तदात्मफलदस्त्वसौ ॥ ३९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३९ ॥

वर्षेश अपने मित्र अथवा शत्रु के हद्दांश में हो, और मित्रदृष्टि वा शत्रुदृष्टि से तेज को धारण करता हो अर्थात् इत्थशाल योग करता होवे, तथा जन्म समय वर्ष समय में उक्त प्रकार के समान हो तो शुभ वा अशुभ फल हद्दा अनुसार देता है अर्थात् शुभ ग्रह होवे तो शुभ फल और पाप ग्रह होवे तो अनिष्ट फल को देनेवाला होता है ॥३९॥

जन्मकालीन शुभ व अशुभ फल के देनेवाले ग्रहों के द्वारा वर्षेश का फल—

यो जन्मनि फलं दातुं विभुर्मूसरिफोस्य चेत् ।
अब्दलग्नाऽब्दपभवस्तस्मिन्नब्दे न तत्फलम् ॥ ४० ॥
व्यत्यासे फलमादेश्यमित्थशाले विशेषतः ।
नोभयं चेत्तदाप्यस्ति जन्माश्रयमिति स्फुटम् ॥ ४१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४०-४१ ॥

जो ग्रह जन्मकाल में अपने भाव का फल देने में समर्थ हो और उसके वर्ष लग्न स्वामी और वर्षेश के साथ ईसराफ योग होवे तो उस वर्षेश में जन्मकालीन भाव से उत्पन्न हुआ फल नहीं होता है ॥ ४० ॥ इससे विपरीत हो अर्थात् ईसराफ योग नहीं होवे तो जन्मकालीन भाव से उत्पन्न फल होता है तथा जो इत्थशाल योग होवे तो विशेष करके वह फल होता है और जो ईसराफ व मूसरीफ दोनों योग नहीं होवें तो भी जन्मकाल से उत्पन्न भावफल होता है यह प्रत्यक्ष विहित है, क्योंकि कोई बाधा करने वाला नहीं है ॥ ४१ ॥

पहले श्लोक में कहे हुए प्रगट अर्थ का उदाहरण—

पुत्राधिपो जन्मनि पुत्रभावं पश्यन्सुतं दातुमसौ समर्थः ।
वर्षे स यत्राब्दपमूसरीफे पुत्रस्य नाशो भवतीह वर्षे ॥४२॥

जन्मसमय में पञ्चमभाव का स्वामी (पाँचवे) भाव को देखता हो तो वह पुत्र देने में समर्थ होता है अर्थात् पुत्र को देता है। वही पञ्चमेश वर्ष कुण्डली में किसी भाव में बैठकर यदि वर्षेश के साथ ईसराफ योग करता हो तो उस वर्ष में पुत्र का नाश होता है ॥ ४२ ॥

(हद्दे यादृशि) गुरु इत्यादि का उदाहरण—

अब्देश्वरो गुरुर्मित्रहद्दे मित्रदृशा शशी ।
महोत्राघादमूदृक्स वर्षेब्दस्तेन शोभनः ॥ ४३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४३ ॥

वर्ष का स्वामी बृहस्पति जन्मसमय मित्र हद्दा में है और मित्रदृष्टि से चन्द्रमा के साथ इत्थशाल योग है अर्थात् चन्द्रमा बृहस्पति में अपने तेज को देता है, इस कारण वर्ष शुभ जानना चाहिए ॥ ४३ ॥

उपसंहार (समाप्ति)—

एवमुन्नेयमन्यच्च शुभाशुभफलं बुधैः ।
बलाबलविवेकेन योगत्रयविमर्शतः ॥ ४४ ॥

इति श्रीनीलकण्ठ्यां वर्षतंत्रे वर्षेशफलनिरूपणाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

इसी प्रकार अन्य शुभ व अशुभ फल बलाबल के विचार और इत्थशाल, कम्बूल, ईसराफ, इन योगों के ज्ञान से पण्डितों को जानना चाहिये ॥ ४४ ॥

इति नीलकण्ठीभाषाटीकायां वर्षतंत्रे वर्षेशफलनिरूपणाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ मुंथहानिरूपणाध्यायो द्वितीयः प्रारभ्यते ।

मुन्थहा निरूपण नामक दूसरा अध्याय—

स्वजन्मलग्नात्प्रतिवर्षमेकैकराशिभोगान्मुथहाभ्रमेण ।
स्वजन्मलग्नं रवितष्टयातशरद्युतं सा भमुखेंथिहा स्यात् ॥ १ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १ ॥

अपने जन्मलग्न से प्रति वर्ष एक एक राशि भोग करता हुआ मुन्थहा भ्रमण करता है, अर्थात् जन्मलग्न से प्रत्येक वर्ष एक एक राशि आगे बढ़ता है. अपनी जन्मलग्न की संख्या में गतवर्ष संख्या जोड़ कर बारह का भाग देवे शेष राश्यादि मुन्थहा होता है, इसका उदाहरण संज्ञा तन्त्र (पृ० ४६) में कह चुके हैं ॥ १ ॥

मुन्थहा की दैनिक गति—

प्रत्यहं शरलिप्ताभिर्वर्द्धते सानुपाततः ।
सार्धमंशद्वयं मास इत्याहुः केऽपि सूरयः ॥ २ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २ ॥

प्रतिदिन मुन्थहा अनुपात (त्रैराशिक) से पाँच २ कला बढ़ती है, इस प्रकार एक मास में अढ़ाई अंश की गति होती है यह कितने विद्वानों ने कहा है ॥ २ ॥

स्वामी और शुभ ग्रहों की दृष्टि द्वारा मुन्थहा का फल—

स्वामिसौम्येक्षणात्सौख्यं क्षुतदृष्ट्या भजं रुजः ।
भावालोकनसंयोगात्फलमस्या निरूप्यते ॥ ३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३ ॥

अपने स्वामी शुभ ग्रह के देखे जाने से मुन्थहा सुख को देता है, वा मुन्थहा को शुभग्रह स्वामी वा पापग्रहस्वामी क्षुद्र दृष्टि से देखता हो तो भय को देता है अब तन्वादि द्वादश भावों में स्थित, वा ग्रहों की दृष्टि तथा संयोग से मुन्थहा का फल निरूपण किया जाता है ॥ ३ ॥

चतुर्थादि भाव में स्थित मुन्थहा का फल—

वर्षलग्नात्सुखास्तान्त्यरिपुरन्ध्रेष्वशोभना ।
पुण्यकर्मायगास्वाम्यं दत्तेऽन्यत्रोद्यमाद्धनम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्ष लग्न से ४।७।१२।६।८ इन स्थानों में मुन्था हो तो अशुभ जानना, और ६।१०।११ इन स्थानों में जाने से स्वामित्व को देती है, अन्य (१।२।३।५) स्थान में स्थित हो तो उद्यम करने से धन की प्राप्ति होती है ॥ ४ ॥

लग्न में मुन्थहा का फल—

शत्रुक्षयं मानसतुष्टिलाभम्प्रतापवृद्धिर्नृपतेः प्रसादम् ।
शरीरपुष्टिं विविधोद्यमांश्च ददाति वित्तं मुथहा तनुस्था ॥ ५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५ ॥

लग्न में स्थित मुन्थहा, शत्रुनाश, मन में प्रसन्नता, लाभ, प्रताप की वृद्धि, राजा की प्रसन्नता व देह को बलवान् करती है और अनेक उद्यमों से धन को देती है ॥ ५ ॥

दूसरे भाव में मुन्थहा का फल—

उत्साहतोऽर्थागमनं यशश्च स्वबन्धुसन्माननृपाश्रयश्च ।
मिष्टान्नभोगो बलतुष्टिसौख्यं स्यादर्थभावे मुन्थहा यदाब्दे ॥ ६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६ ॥

वर्ष प्रवेशसमय में मुन्थहा दूसरे भाव में होवे तो उत्साह से धन की प्राप्ति, लोक में यशस्वी और अपने बन्धुजनों से सम्मान को पाना, राजा के आश्रय से मिष्टान्नभोग, बल, पुष्टि, सुख प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

तीसरे भाव में मुन्थहा का फल—

पराक्रमाद्वित्तयशः सुखानि सौन्दर्यसौख्यं द्विजदेवपूजा ।
सर्वोपकारस्तनुपुष्टिकीर्तिर्नृपाश्रयश्चेन्मुथहा तृतीया ॥ ७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७ ॥

यदि मुन्थहा तीसरे भाव में होवे तो अपने ही पराक्रम से धन, यश, सुख, ब्राह्मण और देवताओं की पूजा सब का उपकार, दृढशरीर, यश, राजा का आश्रय यह सब फल होता है ॥ ७ ॥

चौथे भाव में मुंथा का फल—

शरीरपीडा रिपुभीः स्ववर्ग्यवैरं मनस्तापनिरुद्यमत्वे ।
स्यान्मुन्थहायां सुखभावगायां जनापवादामयवृद्धिदुःखम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८ ॥

चौथे भाव में मुन्था होवे तो शरीरपीडा, शत्रुभय, अपने कुटुम्बिजनों से वैर, मन को ताप, निरुद्यमता (बेरोजगार) मनुष्यों में अपवाद, (कलङ्क) रोग और दुःख की वृद्धि को करता है ॥ ८ ॥

पञ्चमभाव में मुन्था का फल—

यदीन्थिहा पञ्चमगाब्दवेशे सद्बुद्धिसौख्यात्मजवित्तलाभः ।
प्रतापवृद्धिर्विविधा विलासा देवद्विजार्चा नृपतेः प्रसादः ॥ ९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९ ॥

वर्ष प्रवेश समय में मुन्था पाँचवें स्थान में स्थित हो तो सुन्दर वृद्धि व सुख, पुत्र, द्रव्य, इनका लाभ, प्रताप की वृद्धि, अनेक प्रकार के विलास, देवता और ब्राह्मणों में भक्ति, राजा की प्रसन्नता ये सब शुभफल होते हैं ॥ ९ ॥

छठे भाव में मुंथहा का फल—

कृशत्वमङ्गेषु रिपूदयश्च भयं तुजस्तस्करतो नृपाद्वा ।
कार्यार्थनाशो मुथहारिगा चेद्दुर्बुद्धिवृद्धिः स्वकृतोऽनुतापः ॥१०॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १० ॥

यदि मुंथहा छठे भाव में स्थित हो तो शरीर में दुर्बलता, शत्रुओं का उदय, रोग, चोर, वा राजा से भय, कार्य और धन का नाश, दुष्ट बुद्धि की वृद्धि, अपने किये हुए कृत्यों से पछतावा, ये अशुभ फल होते हैं ॥ १० ॥

सातवें भाव में मुन्था का फल—

कलत्रबन्धुव्यसनारिभीतिरुत्साहभंगो धनधर्मनाशः ।
द्यूनोपगा चेन्मुथहा तनोः स्याद्रुजा मनोमोहविरुद्धचेष्टा ॥ ११ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११ ॥

वर्षप्रवेश समय में मुन्थहा सातवें स्थान में होवे, तो स्त्री व बन्धुजनों से दुःख, शत्रुभय, उत्साहभंग, धन और धर्म का नाश, मन को मोह, विरुद्ध चेष्टा ये अशुभ फल होते हैं ॥ ११ ॥

आठवें स्थान में मुन्था का फल—

भयं रिपोस्तस्करतो विनाशो धमार्थयोर्दुर्व्यसनामयश्च ।
मृत्युस्थिता चेन्मुथहा नराणां बलक्षयः स्याद्गमनं सुदूरे ॥१२॥

अन्वयः—स्पष्टम ॥ १२ ॥

यदि आठवें स्थान में मुंथा स्थित हो तो मनुष्यों को शत्रुभय, चौरभय, चोर से धन का नाश, धर्म और अर्थ का नाश, कष्ट देने वाला रोग, बल का क्षय, दूरदेशगमन, ये अशुभ फल होते हैं ॥ १२ ॥

नवमस्थान में मुन्थहा का फल—

स्वामित्वमर्थागमोनृपेभ्यो धर्मोत्सवः पुत्रकलत्रसौख्यम् ।
देवद्विजार्चा परमं यशश्च भाग्योदयो भाग्यगतेन्थिहायाम् ॥१३॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १३ ॥

नवमस्थान में मुंथहा होने से स्वामित्व, राजा से धन की प्राप्ति, धर्म का उत्सव, पुत्र स्त्री करके सुख, देवता और ब्राह्मणों का पूजन, परम यश, भाग्य का उदय, ये सब उत्तम फल प्राप्त होते हैं ॥ १३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशम स्थान में मुन्था का फल—

नृपप्रसादं स्वजनोपकारं सत्कर्मसिद्धिं द्विजदेवभक्तिम् ।
यशोभिवृद्धिं विविधार्थलाभं दत्तेऽम्बरस्था मुथहा पदाप्तिम् ॥१४॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १४ ॥

दशम भाव में स्थित मुंथा राजा की प्रसन्नता, अपने जनों का उपकार करना व कराना, अच्छे कर्मों की सिद्धि, ब्राह्मण और देवताओं में भक्ति, यश की वृद्धि, अनेक प्रकार के धन का लाभ व स्थान की प्राप्ति, इन सबको देता है ॥ १४ ॥

ग्यारहवें स्थान में मुन्थहा का फल—

यदीन्थिहा लाभगता विलाससौभाग्यनैरुज्यमनः प्रसादाः ।
भवन्ति राजाश्रयतो धनानि सन्मित्रपुत्राभिमतास्तयश्च ॥ १५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १५ ॥

यदि मुंथा ग्यारहवें स्थान में स्थित होवे तो स्त्रियों के विलास से युक्त, सुन्दर भाग्य, आरोग्यता, चित्त में प्रसन्नता राजा के आश्रय से धन की प्राप्ति, उत्तम मित्र, पुत्र, वांछित पदार्थों की प्राप्ति, ये उत्तम फल होते हैं ॥ १५ ॥

बारहवें स्थान में मुन्थहा का फल—

व्ययोऽधिको दुष्टजनैश्च संगो रुजा तनौ विक्रमतोऽर्थसिद्धिः ।
धर्मार्थहानिर्मुथहा व्ययस्था यदा तदा स्याज्जनतोपि वैरम् ॥१६॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १६ ॥

बारहवें स्थान में मुथहा स्थित हो तो अधिक व्यय (ज्यादा खर्च) दुष्ट मनुष्यों से संग, देह में रोग, अपने पराक्रम से अर्थसिद्धि, धर्म व धन की हानि अपने वा अन्य जनों से वैर, ये अशुभ फल होते हैं ॥ १६ ॥

क्रूरग्रहों से क्षुतदृष्टि से दृष्ट प्रत्येक भावों में मुन्थहा का फल—

क्रूरैर्दृष्टः क्षुतदृशा यो भावो मुंथहात्र चेत् ।
शुभं तद्भावजं नश्येदशुभं चापि वर्द्धते ॥ १७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १७ ॥

पापग्रह जिस भाव को क्षुत दृष्टि (अशुभ दृष्टि) से देखता हो और यदि उसी भाव में मुन्था स्थित हो तो उस भाव से उत्पन्न शुभ फल नाश होता है और उस भाव सम्बन्धी अशुभ फल बढ़ता है ॥ १७ ॥

पुनः भावस्थित मुंथहा का फल—

शुभस्वामियुक्तेक्षिता वीर्ययुक्से-
न्थिहा स्वामिसौम्यैस्थशालं प्रपन्ना ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुभं भावजं वर्धयेन्नाशुभं सा-
ऽन्यथात्वेन्यथा भाव ऊह्यो विमृश्य ॥ १८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १८ ॥

जो मुंथा शुभग्रह स्वामी से युक्त हो वा देखी जाती हो, अथवा पंचवर्गी में उत्तम बलवाली हो अथवा शुभग्रह स्वामी के साथ इत्थशाल करे, तो वह उस भाव सम्बन्धी फल को बढ़ाती है और अशुभ फल का नाश करती है, अन्यथा जो मुंथा शुभ स्वामी से युक्त न हो और न शुभ ग्रहों के साथ इत्थशाल करती हो किन्तु पाप ग्रहों से दृष्ट होकर पाप ग्रहों के साथ मिलाप करती हो तो, वह अपने भाव सम्बन्धी अशुभ फल को बढ़ाती हुई शुभ फल का नाश करती है, अन्यथा वह भाव अपने भाव सम्बन्धी अशुभ फल को बढ़ाता हुआ शुभ फल का नाश करता है और जो मुंथहा शुभ वा पापग्रह से दृष्ट होकर शुभ व पाप ग्रहों से मिलाप करती हो तो उस ग्रह के बल से विचार शुभ व अशुभ को जानना चाहिए ॥ १८ ॥

पाप ग्रहों से युक्त मुन्था का फल—

जनुर्लग्नतोऽस्तान्त्यषण्मृत्युबन्धुस्थिताद्देहताक्रूरखेटैस्तु सा चेत् ।
विनश्येत्स यत्रेन्थिहाभाव एवं शुभस्वामिदृष्टौ न नाशः शुभं च ॥१९॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १९ ॥

जन्म लग्न से ७।१२।६।८।४ इन स्थानों में से किसी स्थान में पाप है युक्त मुन्था वर्ष प्रवेश समय में स्थित हो तो जिस भाव में स्थित हो उस भाव का नाश होता है, और जो मुन्था शुभग्रह स्वामी से देखी जाती हो, तो उस भाव का नाश नहीं होता है ॥ १९ ॥

पापग्रह और शुभग्रहों का फल—

यदोभयत्रापि हता भावो नश्येत्स सर्वथा ।
उभयत्र शुभत्त्वे तु भावोसौ वर्द्धतेतराम् ॥ २० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २० ॥

जन्म लग्न से वा वर्ष लग्न से पूर्वोक्त अनिष्ट स्थान में स्थित पापयुक्त मुन्था हो तो मनुष्य को उस भाव सम्बन्धी अशुभ फल को अवश्य देती है और जो मुन्था दोनों जगह (जन्मकाल व वर्ष लग्न) में शुभ ग्रहों से युक्त हो तो यह मुन्थायुक्त भाव अतिशय वृद्धि को प्राप्त होता है अर्थात् यह मुन्थायुक्त भाव अवश्य फल को देता है २०

वर्ष में अनिष्ट स्थान में स्थित मुन्था का फल—

वर्षेप्यनिष्टगेहस्था यद्भावे जनुषि स्थिता ।
क्रूरोपघातात्तं भावं नाशयेच्छुभयुक्शुभाः ॥ २१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्ष प्रवेश समय में वर्ष लग्न से भी अनिष्ट स्थान अर्थात् चौथे, छठे, सातवें, आठवें, बारहवें स्थान में मुन्था स्थित हो तो जन्म समय में जन्म लग्न से जिस भाव में मुन्था स्थित हो यदि वह भाव वर्ष समय में पापग्रहों से संयुक्त हो तो उस जन्मस्थित मुन्थहायुक्त भाव को नाश करती है और यदि वर्ष में अनिष्ट स्थानस्थ मुन्थहा शुभ ग्रहों से युक्त हो तो शुभ फल देती है ॥ २१ ॥

इसका उदाहरण—

धनुर्लग्नतस्तुर्यगा सौम्ययुक्ताब्दवेशेपितृस्वस्य लाभं विधत्ते ।
नृपाद्भीतिदा पापयुक्तातिकष्टाष्टमादावपीत्थं विमर्शो विधेयः ॥२२॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २२ ॥

वर्ष में जन्म लग्न से चौथे स्थान में स्थित मुन्थहा वर्षप्रवेश समय में शुभग्रह से युक्त हो तो पिता के धन का लाभ होता है और पापग्रह से युक्त हो तो राजा से भय, अति कष्ट प्राप्त होता है एवं आठवें आदि अनिष्ट स्थानों का विचार करना ॥ २२ ॥

वर्षेश के बल से मुन्था का फल—

यस्मिन्भावे स्वामिसौम्येक्षिता चेद्भावो जन्मन्येष यस्तस्य वृद्धिः ।
एवं पापैर्नाश उक्तस्तु तस्तेत्यूह्यं वीर्याद्वर्षपः सौख्यमेव ॥२३॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २३ ॥

वर्ष प्रवेश समय में वर्ष लग्न से मुन्थहा जिस भाव में हो और उस भाव के स्वामी व शुभ ग्रह से दृष्ट हो, वह राशि जन्म समय में जिस भाव में हो उस भाव का फल प्राप्त होता है, पापयुक्त होने से उस भाव का नाश होता है और वर्ष स्वामी बलवान् होवे तो मुन्थहाकृत अशुभ फलों को नाश कर सुख को देता है ॥ २३ ॥

प्रथम सूर्य के सम्बन्ध से मुन्था का फल—

यदीन्थिहा सूर्यगृहे युता वा सूर्येण राज्यं नृपसङ्गमं च ।
दत्ते गुणानां परमामवाप्तिं स्थानान्तरस्येति फलं दृशोऽपि ॥२४॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २४ ॥

जो मुन्थहा सूर्य की राशि (सिंह) में स्थित हो वा सूर्य से युक्त हो तो धन, राज्य और राजा से मित्रता को देती है और वह गुणों के परम उत्कृष्ट स्थान को पाकर अर्थात् गुणज्ञ होकर विदेशी होता है और जो सूर्य मुन्थहा को देखता होवे तो भी यही फल जानना ॥ २४ ॥

चन्द्रमा के सम्बन्ध से—

चन्द्रेण युक्तेन्दुगृहेऽथ दृष्टेन्दुनापि वा धर्मयशोभिवृद्धिम् ।
नैरुज्यसन्तोषमतिप्रवृद्धिं ददाति पापेक्षणतोतिदुःखम् ॥ २५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिसके वर्षप्रवेश समय में मुथहा चन्द्रमा से युक्त हो वा चन्द्रमा के घर (कर्कराशि) में स्थित हो अथवा चन्द्रमा देखता हो तो धन व यश की वृद्धि, आरोग्यता, सन्तोष, बुद्धि की वृद्धि इन शुभ फलों को देती है, यदि मुथहा पापग्रहों से देखी जाती हो तो अति दुःख को देती है ॥ २५ ॥

मङ्गल के सम्बन्ध से—

कुजेन युक्ता कुजभे कुजेन दृष्टा च पित्तोष्णरुजं करोति ।
शस्त्राभिघातं रुधिरप्रकोपं सौरीक्षिता सौरिगृहे विशेषात् ॥२६॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २६ ॥

जिसके वर्ष प्रवेश समय में मुथहा मंगल से युक्त हो व मंगल की राशि में हो अथवा मंगल से दृष्ट हो तो पित्तज्वर करता है और हथियार से घाव, रुधिर विकार को करता है, यदि मुथहा शनैश्चर से दृष्ट शनैश्चर के घर (मकर कुम्भ) में हो तो पूर्व कहा हुआ फल विशेषता से होता है ॥ २६ ॥

बुध के सम्बन्ध से—

बुधेन शुक्रेण युतेक्षिता वा तद्भेऽपि वा स्त्रीमतिलाभसौख्यम् ।
धर्मं यशश्चाप्यतुलं विधत्ते कष्टं च पापेक्षणयोगतः स्यात् ॥२७॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २७ ॥

जो मुथहा बुध और शुक्र से युक्त वा दृष्ट अथवा इनके राशि ३।६।२।७ में स्थित हो तो स्त्रियों से सुख व मति (बुद्धि) का विकाश व धन-लाभ, सुख, धर्म और अतुल यश प्राप्त होता है और पापग्रहों के देखने व योग से मुथहा अति कष्ट को देती है अर्थात् उस मनुष्य को बहुत कष्ट प्राप्त होता है ॥ २७ ॥

बृहस्पति के सम्बन्ध से—

युतेक्षिता या गुरुणा गुरोर्भे यदीन्थिहा पुत्रकलत्रसौख्यम् ।
ददाति हेमाम्बररत्नभोगं शुभेत्थशालादिह राज्यलाभः ॥२८॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २८ ॥

यदि मुथहा बृहस्पति से दृष्ट वा बृहस्पति की ९।१२ राशि में स्थित हो तो पुत्र स्त्री के सुख को देता है और सुवर्ण, वस्त्र, रत्न, भोग इनको भी देता है, शुभ ग्रह के साथ इत्थशाल योग हो तो राज्य का लाभ करता है ॥ २८ ॥

शनि के सम्बन्ध से—

शनेर्गृहे तेन युतेक्षिता वा यदीन्थिहा वातरुजं विधत्ते ।
मानक्षयं वह्निभयं धनस्य हानिं च जीवेक्षणतः शुभाप्तिम् ॥२९॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २९ ॥

यदि मुथहाश नि की राशि (मकर कुम्भ) में अथवा शनैश्चर से युक्त अथवा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शनैश्चर की दृष्टि से युक्त हो तो वात रोग को करता है और मान का क्षय, अग्नि से भय धन की हानि करता है, तथा यदि पूर्वोक्त मुथहा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो वह मनुष्य शुभ फल पाता है ॥ २९ ॥

राहुमुखगत मुथहा का फल—

तमोमुखे चेन्मुथहा धनाप्तिं यशः सुखं धर्मसमुन्नतिं च ।
सितज्ययोगेक्षणतः पदाप्तिं सुवर्णरत्नाम्बरलब्धयश्च ॥३०॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३० ॥

जिसके वर्ष प्रवेश समय में मुथहा राहु के मुख में हो तो धन की प्राप्ति हो; और यश, सुख व धर्म की उन्नति हो तथा पूर्वोक्त मुथहा शुक्र बृहस्पति के योग से व दृष्टि से युक्त होने पर पद (अधिकार) की प्राप्ति को, और सुवर्ण, रत्न, वस्त्र, इनको प्राप्त करता है, अर्थात् ये सब उत्तम फल को प्राप्त होते हैं ॥ ३० ॥

अथ राहु के मुख, पृष्ठ, पूंछ का लक्षण—

भोग्या राहोर्लवास्तस्य मुखं पृष्ठं गता लवाः ।
ततस्सप्तमभं पुच्छं विमृश्येति फलं वदेत् ॥ ३१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३१ ॥

जिस राशि पर राहु स्थित है उसके वक्रगति से जो भोग्य अंश हैं उनको मुख कहते हैं और जो भुक्त अंश हैं वे पृष्ठसंज्ञक जानना चाहिये, जैसे धन के उन्नीस अंश पर राहु है तो उन्नीस अंश मुखसंज्ञक हैं और वक्रगति से जो ग्यारह अंश हैं वह पृष्ठ-संज्ञक हैं, और जिस राशि पर राहु स्थित है उससे सातवीं राशि को पुच्छ कहते हैं, जैसे कि धन राशि से सातवीं मिथुन राशि पुच्छसंज्ञक जानो, इनको विचार कर फल कहे ॥ ३१ ॥

राहु की पीठ व पुच्छ में स्थित मुंथहा का फल—

तत्पृष्ठभागे न शुभप्रदा स्यात्तत्पुच्छभागाद्रिपुभीतिकष्टम् ।
पापेक्षणादर्थसुखस्य हानिश्चेज्जन्मनीत्थं गृहवित्तनाशः ॥३२॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३२ ॥

जिसके वर्ष प्रवेश समय में राहु के पृष्ठभाग में मुथहा स्थित हो तो उसको अशुभ फल देता है और राहु के पूंछ में मुथहा हो तो शत्रु का भय व कष्ट को उत्पन्न करता है, और जिसके पूर्वोक्त मुथहा को पाप ग्रह देखते हों तो उसके धन और सुख की हानि होती है और यदि जन्मकाल में इस प्रकार की मुंथा होवे, तो घर और धन का नाश होता है ॥ ३२ ॥

जन्मकालीन ग्रहों के शुभाशुभ फल—

ये जन्मकाले बलिनोऽब्दवेशे चेद्दुर्बलास्तैरशुभं समांते ।
विपर्यये पूर्वमनिष्टमुक्तं तुल्यं फलं स्यादुभयत्र साम्ये ॥ ३३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३३ ॥

जो ग्रह जन्म समय में बलवान् हों वे ग्रह वर्ष प्रवेश समय में निर्बल हों तो वर्ष के अन्त में अशुभ फल देते हैं, इससे विपरीत हो अर्थात् जन्म समय में निर्बल और वर्ष समय में जो ग्रह बलवान् हों तो वर्ष के आदि में अशुभ फल देते हैं और जो जन्म काल व वर्षकाल में तुल्यबल होवें तो समान फल होता है ॥ ३३ ॥

मुथहा स्वामी का अशुभ फल—

षष्ठेऽष्टमेऽन्त्ये भुवि चेन्थिहेशोऽस्तगोऽथ वक्रोऽशुभदृष्टयुक्तः ।
क्रूराच्चतुर्थास्तगतश्च भव्यो न स्याद्रुजं यच्छति वित्तनाशम् ॥३४॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३४ ॥

जिसके वर्ष काल में मुन्था का स्वामी छठे, आठवें, बारहवें, चौथे, इन अनिष्ट स्थानों में स्थित हो अथवा अस्त हो गया हो वा वक्री हो, तथा पापग्रहों से युक्त, दृष्ट हो, अथवा क्रूर ग्रहों के साथ से ४।७ स्थान में हो तो शुभ फल नहीं देता है । किन्तु रोग व धन की हानि करता है ॥ ३४ ॥

प्रकारान्तर से मुथहा स्वामी का अशुभ फल—

यद्यष्टमेशेन युतोथ दृष्टः क्षुताख्यदृष्ट्या न शुभस्तदापि ।
योगद्वये स्यान्निधनं यदैकयोगस्तदा मृत्युसमत्वमाहुः ॥ ३५ ॥

अन्वयः—यदि (मुथहेशः) अष्टमेशेन युतः इत्येको योगः अथवा क्षुताख्य (चतुर्थदशमसप्तमैक) दृष्ट्या दृष्टः इत्यपरो योगः तदापि न शुभः । (पूर्वोक्त) योगद्वये निधनं (मरणं) यदैकयोगस्तदा मृत्युसमत्वमाहुः ॥ ३५ ॥

यदि मुंथा का स्वामी वर्ष लग्न से अष्टम स्थान के स्वामी से युत हो एक योग, अथवा अष्टमेश से क्षुत दृष्टि से देखा जाता हो यह दूसरा योग है । यदि दोनों योग हों तो मृत्यु कहना चाहिये । दोनों में से कोई एक योग हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होगा ॥३५॥

मुथहा और मुथहा के स्वामी का शुभाशुभ फल—

मुथहा तत्पतिर्वापि जन्मनीक्षितयुक् शुभैः ।
वर्षारम्भे शुभं दत्तेऽब्दे चेदन्त्येऽन्यथाऽशुभम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३६ ॥

इति श्रीनीलकण्ठीवर्षतन्त्रे मुथहानिरूपणो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

जिसके जन्म कुण्डली में मुन्था व उसका स्वामी शुभग्रहों से युक्त व दृष्ट हों तो वर्ष के अन्त्यभाग में शुभफल को देते हैं, और इससे अन्यथा अर्थात् पापग्रहों से युक्त व दृष्ट हो तो वर्ष के अन्त्यभाग में अशुभ फल को देते हैं ॥ ३६ ॥

इति नीलकण्ठी भाषाटीकायां मुथहाफलनिरूपणो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथाऽरिष्टविचाराध्यायस्तृतीयः प्रारभ्यते-

लग्नेशेऽष्टमगेऽष्टेशे तनुस्थे वा कुजेक्षिते ।
ज्ञजीवयोरस्तगयोः शस्त्रघातो विपन्मृतिः ॥ १ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १ ॥

जिसके वर्ष समय में लग्न का स्वामी आठवें स्थान में हो अथवा आठवें घर का स्वामी लग्न में हो और मंगल की दृष्टि हो अथवा बुध और बृहस्पति ये दोनों अस्तगत हों अर्थात् सूर्य के साथ अस्तभाव को प्राप्त हों तो किसी हथियार के लगने से अनेक विपत्तियों से मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ १ ॥

अब्दलग्नेशरंध्रेशौ व्ययाष्टहिबुकोपगौ ।
मुंथहासंयुतौ मृत्युप्रदौ तद्धातुकोपतः ॥ २ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २ ॥

वर्षलग्न का स्वामी और आठवें घर का स्वामी, ये दोनों मुन्था से युत होकर बारहवें चौथे इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित होवें तो उन ग्रहों के जो वातपित्तादि धातु उनसे उत्पन्न विकार से मृत्यु के देने वाले होते हैं ॥ २ ॥

जन्मलग्नाधिपोऽवीर्यो मृतीशेचास्तगो यदा ।
सूर्यदृष्टो मृतिं दत्ते कुष्टं कण्डूं तथापदः ॥ ३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३ ॥

जन्मलग्न का स्वामी वर्ष में निर्बल हो, और वर्ष लग्न से अष्टम स्थान का स्वामी अस्त हो अथवा सप्तम हो और सूर्य देखता हो तो मृत्यु देता है अथवा कुष्ठरोग वा खजुली इत्यादि रक्त विकार से कष्ट होता है ॥ ३ ॥

अस्तगौ मुथहालग्ननाथौ मन्देक्षितौ यदा ।
सर्वनाशो मृतिः कष्टमाधिव्याधिभयं रुजः ॥ ४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४ ॥

जिसके वर्षकाल में मुथहा लग्न का स्वामी और वर्ष लग्न का स्वामी ये दोनों सूर्य के साथ अस्त को प्राप्त होकर शनैश्चर से देखे जाते हों, तो उस प्राणी के सर्व अर्थात्

नोट—यहाँ "अस्तगो" इस पाठ में मतभेद है क्योंकि सूर्य के साथ अस्त होने से दृष्ट्यभाव होता है । किसी २ के मत से "अस्तगो" के स्थान में "लग्नगो" ऐसा पाठ होना चाहिये । मेरे विचार से अस्तगो यही पाठ रहना चाहिये क्योंकि यहाँ सूर्य ही की दृष्टि ली गई है क्योंकि अस्त हुये ग्रह को कालांश के अन्तर्गत सूर्य देखता ही रहेगा ।

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्रव्य, स्त्री, पुत्र आदिकों का नाश, मृत्यु कष्ट व आधि, (मानसी दुःख) व्याधी (शरीर व्यथा) भय, रोग आदि सब होते हैं ॥ ४ ॥

क्रूरमूसरिफोऽब्देशो जन्मेशः क्रूरितः शुभैः ।
कम्बूलेऽपि विपन्मृत्युरित्थमन्याधिकारतः ॥ ५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५ ॥

जिसके वर्षकाल में वर्ष का स्वामी पापग्रह के साथ ईसराफ योग को करे और जन्मलग्न का स्वामी अस्तगत आदि से क्रूरभाव को प्राप्त होवे और वर्ष स्वामी व जन्मलग्न स्वामी इनमें से किसी एक का शुभग्रह के साथ कम्बूल योग होवे और ग्रहों के वा जन्मलग्नेश और वर्षेश इन दोनों के वा इनमें से किसी एक के साथ यदि चन्द्रमा मुथशिलयोग को करता हो तो उस प्राणी की नाना प्रकार के दुःखों से मृत्यु होती है अर्थात् वह अनेक क्लेशों को भोगता हुआ पतित होता है, फिर शुभ कम्बूल के अभाव से क्या ही कहना है, ऐसा ही अन्य अधिकार से होता है ॥ ५ ॥

क्रूरा वीर्याधिकाः सौम्या निर्बला रिपुरन्ध्रगाः ।
तदाधिव्याधिभीतिः स्यात्कलिहानिस्तथा विपत् ॥ ६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६ ॥

जो क्रूरग्रह अधिक बली हों और शुभग्रह निर्बल हों और छठे आठवें स्थान में स्थित हों तो आधि, व्याधि, कलह, हानि तथा विपत ये अशुभफल होते हैं ॥ ६ ॥

नीचे शुक्रो गुरुः शत्रुभागे सौख्यलवोऽपि न ।
लग्नेशेऽष्टमगेऽष्टेशे तनौ वा मृतिमादिशेत् ॥ ७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७ ॥

जो वर्षकालमें शुक्र नीच राशि में स्थित हो और बृहस्पति शत्रु के नवांश में हो तो उस वर्ष में सुख नहीं होता है, तथा वर्ष लग्नेश अष्टम स्थान में हो और अष्टमेश लग्न में हो तो मृत्यु होती है ॥ ७ ॥

निर्बलौ धर्मवित्तेशौ दुष्टखेटास्तनौ स्थिताः ।
लक्ष्मीश्चिरार्जिता नश्येद्यदि शक्रोऽपि रक्षिता ॥ ८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८ ॥

वर्षकाल में नवम और दूसरे स्थान का स्वामी बलहीन हो और लग्न में पापग्रह स्थित होवें तो बहुत काल की सञ्चित हुई लक्ष्मी का नाश होता है, यदि इन्द्र भी वज्र को लेकर रक्षा करे, तो भी रक्षा नहीं हो सकती है ॥ ८ ॥

नीचे चन्द्रेऽस्तगाः सौम्या वियोगः स्वजनैः सह ।
शरीरपीडामृत्युर्वा साधिव्याधिभयं द्रुतम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्षकाल में चन्द्रमा नीचराशि में स्थित हो और शुभग्रह अस्त हो गये हों तो अपने भाई बन्धुओं से वियुक्त (जुदा) होता हुआ पीड़ायुक्त शरीर वाला होकर मर जाता है अथवा मानसी व्याधिसमेत रोगों से पीडित होकर शीघ्र ही भय को प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

अब्दलग्नं जन्मलग्न राशिभ्यामष्टमं यदा ।
कष्टं महाव्याधिभयं मृत्युः पापयुतेक्षणात् ॥ १० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १० ॥

वर्षकाल में जन्मलग्न वा जन्मराशि से वर्षलग्न आठवें हों तो कष्ट और महाव्याधियों से भय होता है और वह वर्षलग्न पापग्रहों से युक्त हो अथवा उसको पापग्रह देखते हों तो मृत्यु होती है ॥ १० ॥

जन्मन्यष्टमगः पापो वर्षलग्ने रुगाधिदः ।
चन्द्राऽब्दलग्नपौ नष्टबलौ चेत्स्यात्तदा मृतिः ॥ ११ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११ ॥

जन्मकाल में लग्न से आठवें कोई पापग्रह स्थित हो और वही पापग्रह यदि वर्षलग्न में स्थित होवे तो रोग और आधि (मानसी पीड़ा) को देता है और चन्द्रमा तथा वर्षलग्न का स्वामी हीनबली हो अथवा चन्द्रराशीश और वर्ष लग्न स्वामी ये दोनों पञ्चवर्गी बल से नष्टबली हों तो उस प्राणी की मृत्यु होवे ॥ ११ ॥

जन्माब्दलग्नपौ पापयुक्तौ पतितभस्थितौ ।
रोगाधिदौ मृत्युकरावस्तगौ नेक्षितौ शुभैः ॥ १२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १२ ॥

जिसके वर्षकाल में जन्मलग्न का स्वामी व वर्षलग्न का स्वामी ये दोनों ग्रहों से युक्त होकर वर्षलग्न से चौथे, छठे, बारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित होवें, तो उस प्राणी को रोग और मानसी व्याधि को देते हैं, यदि वे दोनों सूर्य के सान्निध्यवश से अस्त होकर शुभग्रहों से न देखे जावें अर्थात् अस्त को प्राप्त हों और उनको शुभ ग्रह न देखें, तो उस प्राणी को मृत्युकारक होते हैं अर्थात् ऐसे योग में वह प्राणी मर जाता है ॥ १२ ॥

व्ययाम्बुनिधनारिस्था जन्मेशाब्दपमुन्थहाः ।
एकर्क्षगास्तदा मृत्युः पापच्चुतदृशा ध्रुवम् ॥ १३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १३ ॥

जिसके वर्षकाल में जन्मलग्नस्वामी, वर्षस्वामी और मुथहा ये तीनों एक ही राशि में हो, अथवा वर्षलग्न से बारहवें, चौथे, आठवें और छठे स्थानों में से किसी स्थान में स्थित होवें तो उस प्राणी की मृत्यु होती है, और यदि पूर्वोक्त जन्मलग्न स्वामी, वर्ष· स्वामी और मुथहा ये तीनों पाप ग्रहों से क्षुतदृष्टि अर्थात् चौथे, सातवें, दसवें और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहले इन स्थानों में स्थित दृष्टि करके देखें जावें तो उस प्राणी की निश्चय मृत्यु होती है ॥ १३ ॥

चन्द्रोऽव्यये शनियुतः शुभः षष्ठेऽर्थनाशकृत् ।
चित्तवैकल्यमशुभेसराफान्न शुभेक्षणात् ॥ १४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १४ ॥

जिसके वर्षकालिक लग्न से बारहवें स्थान में शनैश्चर से युक्त चन्द्रमा स्थित होवे और छठे स्थान में शुभ ग्रह स्थित हो, तो उस प्राणी के धन का नाश करता है और जब पाप ग्रहों के साथ योग कारक ग्रहों का यथासम्भव ईसराफ योग होवे तो उस प्राणी के चित्त का वैकल्य अर्थात् बुद्धि का विपर्यास होता है, यदि वहां शुभग्रहों की दृष्टि होवे तो धन का नाश और चित्त का वैकल्य ये दोनों नहीं होते हैं ॥ १४ ॥

चन्द्रोऽर्कमण्डलगतो रिपुरिष्फाष्टबन्धुगः ।
त्रिदोषतस्तस्य रुजो विविधेज्यं दृशा शुभम् ॥ १५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १५ ॥

वर्षकाल में चन्द्रमा अस्तभाव को प्राप्त होकर वर्षलग्न से छठे, बारहवें, आठवें, चौथे इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित हो तो वात, पित्त, कफ से उत्पन्न अनेक रोग उस मनुष्य को होते हैं, तथा यदि उक्त चन्द्रमा को बृहस्पति देखता हो तो उस मनुष्य को शुभ फल होता है। यहाँ मणित्थ आचार्य्य का मत है कि चन्द्रमा सूर्य के मण्डल में स्थित हो अथवा छठे, बारहवें और आठवें इन भावों में स्थित हो तो उस मनुष्य का त्रिदोषज (वात, पित्त, कफ से उत्पन्न) रोग होते हैं और चन्द्रमा की दशा में बड़ा कष्ट होता है। उक्तं च मणित्थेन—

"रात्रीश्वरे भास्करमण्डलस्थे षष्ठे व्यये वा मृतिभावसंस्थे ।
त्रिदोषतोसौ बहुभिः प्रकारैः करोति कष्टं विविधं दशायाम् ॥ १५ ॥"

हद्दाहायनलग्नेशौ सप्ताष्टान्त्ये खलान्वितौ ।
स्वदशायां निधनदौ शुभदृष्ट्या शुभं वदेत् ॥ १६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १६ ॥

जिसके वर्ष समय लग्न में हद्दा का स्वामी और वर्षलग्न का स्वामी ये दोनों सातवें, आठवें, बारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट होवे तो वे अपनी दशा में अथवा अन्तर्दशा में उस मनुष्य को मार डालते हैं, और जब उन स्वामियों को शुभ ग्रह मित्रदृष्टि से देखते हों तो मरण नहीं होता है, किन्तु उनकी दशा व अन्तर्दशा में सुखी हो के कल्याण को प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

अब्दलग्नाद्दज्वनृजू व्ययार्थस्थौ रुजा तदा ।
एवं वर्षाब्दलग्नेशजन्मेशैरपि बन्धनम् ॥ १७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १७ ॥

जिसके वर्षप्रवेश में मार्गी ग्रह और वक्री ग्रह ये दोनों क्रम से वर्षलग्न से बारहवें, दूसरे स्थान में हों अर्थात् बारहवें मार्गी पाप ग्रह हों, और दूसरे स्थान में वक्री पापग्रह हों, तो शरीर में रोगों की उत्पत्ति होती है, इसी प्रकार वर्षस्वामी व वर्षलग्नस्वामी व जन्मलग्नस्वामी से बारहवें और दूसरे स्थान में मार्गी और वक्रीग्रह हों, तो उसको कारागार की प्राप्ति होती है अर्थात् वह किसी मुकद्दमे में फँसकर जेलखाने में वास करता है ॥ १७ ॥

नीचे त्रिराशिपे पापदृष्टे कार्यं विनश्यति ।
इन्थिहेशेऽब्दपे वारिभेऽस्तं याते रुजो विपत् ॥ १८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १८ ॥

जिसके वर्षकाल में त्रैराशिपस्वामी यदि नीच राशि में स्थित और पाप ग्रहों से देखा जाता हो तो विचारे हुए कार्य नाश होते हैं, तथा मुन्थहा का स्वामी, वर्षस्वामी शत्रुराशि में सूर्य के सामीप्य वश से अस्त को प्राप्त होवें तो शरीर में नाना प्रकार के रोग होते हैं यह विपत्रूप फल प्राप्त होता है ॥ १८ ॥

अपवादसहित चन्द्रमा के अरिष्ट—

चन्द्रो रिष्फषडष्टभूद्युनगतो दृष्टोऽशुभैर्नो शुभैः
सोऽरिष्टं विदधाति मृत्युमथवा भौमेक्षणादग्निभीः ।
शस्त्राद्वा शनिराहुकेतुभिररेर्भीतिं रुजं वायुजां
दारिद्र्यं रविणा शुभं शुभदृगेज्यालोकनादादिशेत् ॥ १९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १९ ॥

जिसके वर्षकाल में बारहवें, छठे, आठवें, पहले और सातवें, इन स्थानों में से किसी स्थान में चन्द्रमा स्थित हो और उस चन्द्रमा को पाप ग्रह देखते हों, और शुभ-ग्रह न देखते हों तो अरिष्ट होता है यदि अधिक पापग्रह देखते हों तो मृत्यु होती है अथवा ऐसे चन्द्रमा को केवल मंगल ही देखता हो तो अग्नि से वा हथियार से भय होता है। यदि शनि, राहु और केतु देखते हों तो शत्रु से भय और रवि देखते हों तो वायु सम्बन्धी रोग और दरिद्रता (धन की आमदनी कम) होती है । ऐसे चन्द्रमा को शुभग्रह शुभदृष्टि (मित्रदृष्टि) से देखते हों तो पूर्वोक्त अनिष्ट फलों का नाश होकर शुभफल होते हैं अथवा यदि केवल बृहस्पति ही चन्द्रमा को देखता हो तो भी शुभ-फल होते हैं ॥ १९ ॥

मुथहाकृत अरिष्ट—

क्रूरान्वितेक्षितयुतो शनिनेन्थिहाधि-
व्याधिप्रदा जनुषि रिष्फसुखारिरन्ध्रे ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्यूने च वर्षतनुनैधनगा मृतिं सा
दत्तेखलेक्षितयुतेत्यपि चिन्त्यमार्यैः ॥ २०॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २० ॥

इति श्रीनीलकण्ठ्यां वर्षतन्त्रेऽरिष्टाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

जिसके वर्षकाल में पापग्रहों से युक्त मुन्था को शनैश्चर देखता हो, अथवा युक्त हो तो उस प्राणी को मानसी व्याधि और रोग को देती है, तथा वह मुन्था जन्मलग्न में बारहवें, चौथे, छठे, आठवें और सातवें इन स्थानों में से किसी स्थान में हो और वर्ष-लग्न से आठवें स्थान में हो, विशेष करके उसको पापग्रह देखते हों वा संयुक्त हों, तो मुन्थहा उस प्राणी की मृत्यु करती है, यह भी श्रेष्ठ पण्डितों को विचार करना चाहिये ॥ २० ॥

इति नीलकण्ठीभाषाटीकायां वर्षफलतन्त्रेऽरिष्टाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथारिष्टभङ्गो नाम चतुर्थाध्यायो व्याख्यायते ।

लग्नाधिपो बलयुतः शुभेक्षितयुतोऽपि वा ।
केन्द्रत्रिकोणगोऽरिष्टं नाशयत्सुखवित्तदः ॥ १ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १ ॥

जिसके वर्षकालिक लग्न का स्वामी पञ्चवर्गी के बल से बलिष्ठ (उत्तम बली) होकर शुभग्रहों से युक्त और देखा जाता हुआ केन्द्र १।४।७।१० स्थान में वा त्रिकोण ९।५ में स्थित हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट को नाश करते हुये सुख और धन को देता है ॥ १ ॥

गुरुः केन्द्र त्रिकोणे वा पापादृष्टः शुभेक्षितः ।
लग्नचन्द्रेन्थिहाऽरिष्टं विनाशार्थसुखं दिशेत् ॥ २ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २ ॥

जिसके वर्षकाल में बृहस्पति केन्द्र वा त्रिकोण स्थान में स्थित हो और उसको पापग्रह नहीं देखे किन्तु शुभग्रह देखते हों तो वह लग्न चन्द्रमा और मुंथहा इन सबसे उत्पन्न अरिष्ट को नाश करके पीछे से धन व सुख को देता है ॥ २ ॥

सुखं स्वामियुतं सद्भिर्दृष्टं सौख्ययशोऽर्थदम् ।
लग्ने तृतीयेऽथ गुरुर्लग्नेट्सौख्यार्थदः सुखे ॥ ३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३ ॥

जिसके वर्षकाल में वर्षलग्न से चतुर्थ स्थान अपने स्वामी से युक्त हो, अथवा शुभग्रहों से देखा जाता हो तो वह सौख्य, यश और धन इनको देनेवाला होता है, तथा बृहस्पति लग्न में अथवा तीसरे स्थान में हो वा चौथे स्थान में जन्मलग्न का स्वामी विद्यमान होवे तो सौख्य व धन का देनेवाला होता है ॥ ३ ॥

लग्नेद्युनेशस्तनुगः सुरेज्यः क्रूरैरदृष्टः शुभमित्रदृष्टः ।
रिष्टं निहंत्यर्थयशः सुखाप्तिं दिशेत्स्वपाके नृपतिप्रसादम् ॥४॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४ ॥

जिसके वर्षलग्न में सातवें स्थान का स्वामी लग्न में स्थित हो और उसी लग्न में बृहस्पति स्थित हो, दोनों (सप्तमेश व बृहस्पति) को पापग्रह न देखते हों, किन्तु शुभग्रह वा मित्रग्रह देखते हों तो वे अरिष्ट को दूर करते हैं और अपनी दशा में राजा, धन, यश और सुख की प्राप्ति इन सबको देते हैं ॥ ४ ॥

बलान्वितौ धर्मधनाधिनाथौ क्रूरैरदृष्टौ तनुगौ यदास्ताम् ।
राज्यं गजाश्वाम्बररत्नपूर्णं रिष्टस्य नाशोऽप्यतुलं यशश्च ॥ ५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५ ॥

जिसके वर्षलग्न से नवम स्थान का स्वामी और धनस्थान का स्वामी ये दोनों पंचवर्गी बल से बलिष्ठ और पापग्रहों से नहीं देखे जाते हुए लग्न में बैठे होंवे, तो उस प्राणी के अरिष्ट का नाश होता है और वह प्राणी हाथी, घोड़े कपड़े व रत्नों से परिपूर्ण राज्य को प्राप्त होकर लोक में अतुल यश को पाता है अर्थात् जब पंचवर्गी के उत्तम बल से संयुक्त और पापग्रहों से नहीं देखे जाते हुए धर्म धन के स्वामी लग्न में होवें तब वह उक्त फल को प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

त्रिषष्ठलाभोपगतैरसौम्यै केन्द्रत्रिकोणोपगतैश्च सौम्यैः ।
रक्ताम्बरस्वर्णयशस्सुखाप्तिर्नाशोऽप्यरिष्टस्य तनोश्च पुष्टिः ॥ ६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६ ॥

जिसके वर्षकाल में वर्षलग्न से तीसरे, छठे और ग्यारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में पापग्रह स्थित हों और केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ इन स्थानों में से किसी स्थान में शुभ ग्रह-विद्यमान होवें, तो वह रत्न, कपड़े, सोना, यश और सुख इनको प्राप्त होकर परमानन्द में मग्न रहता है, उसके अरिष्टों का नाश होता है और उसके शरीर की पुष्टि होती है ॥ ६ ॥

यदा सवीर्यो मुथहाधिनाथो लग्नाधिपो जन्म विलग्नपो वा ।
केन्द्रत्रिकोणायधनस्थिताश्चेत्सुखार्थहेमाम्बरलाभदाः स्युः ॥ ७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७ ॥

जिसके वर्षकाल में मुथहा स्वामी वा वर्ष और जन्मलग्नस्वामी ये तीनों पञ्चवर्गी के बल से युक्त होकर केन्द्र १।४।७।१० और ९।५ ग्यारहवें और दूसरे इन स्थानों में से किसी स्थान में हों तो उसको अर्थ, सुख, धन, सुवर्ण और वस्त्र को देते है ॥७॥

तुङ्गे शनिर्वा भृगुजो गुरुर्वा शुभेत्थशालाद्यवनाद्धनाप्तिम् ।
बली कुजो वित्तगतो यशोऽर्थतेजांस्यकस्माच्च सुखानि दद्यात् ॥८॥

अन्वयः – स्पष्टम् ॥ ८ ॥

जिसके वर्षप्रवेश समय में शनि, शुक्र, गुरु, तीनों अपने उच्च स्थानों में स्थित हों और शुभग्रहों के साथ इत्थशाल को करें तब यवन (मुसलमान) लोगों से धन की प्राप्ति होती है अर्थात् शनि, शुक्र, गुरु, इनमें से कोई एक ग्रह शुभ ग्रहों से इत्थशाल को करता हुआ अपने उच्च घर में स्थित हो तो वह म्लेच्छ (मुसलमान) से धन को पाता है और जो उक्त तीनों ग्रह शुभ ग्रहों के साथ इत्थशाल (मिलाप) करते हुए अपने अपने उच्च स्थानों में वास करें, तो बहुत से धन की प्राप्ति होती है तथा बलवान् मंगल यदि दूसरे स्थान में स्थित हो उस के अर्थ, यश, तेज और अकस्मात् सुख को देता है ॥ ८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूर्यज्यशुक्रा मिथ इत्थशालं कुर्युस्तदा राज्ययशस्सुखार्थाः ।
सूर्यःकुजो वोपचये ददाति भद्रं यशोमङ्गलमिन्थिहायाः ॥ ९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९ ॥

जिसके वर्षकाल में सूर्य, गुरु, शुक्र ये तीनों ग्रह परस्पर इत्थशाल योग को करे तो उस प्राणी के अर्थ, राज्य, यश, सुख और धन इन सबों को देते हैं, तथा वर्ष समय जिस किसी स्थान में मुन्था स्थित हो उस स्थान से ३।६।१०।११ इन स्थानों में से किसी स्थान में सूर्य स्थित होवे, अथवा मंगल ही स्थित हो, तो कल्याण, यश, मङ्गल (विवाहादिकृत्य) इनको देता है ॥ ९ ॥

शुक्रज्ञचन्द्रा हद्दे स्वे पापास्त्र्यायगता यदि ।
स्वबाहुबलतो हेम सुखं कीर्तिं नरोऽश्नुते ॥ १० ॥

अन्वयः--स्पष्टम् ॥ १० ॥

जो शुक्र, बुध, चन्द्र ये तीनों अपने हद्दा में हों और सूर्य, मंगल शनश्चर से तीनों तीसरे या ग्यारहवें स्थान में स्थित हों तो वह मनुष्य अपने बल से अर्थात् अपने ही पराक्रम से सुवर्ण, सुख और कीर्ति इनका भोक्ता होता है, (इस श्लोक में चन्द्रमा अपने हद्दा में स्थित हो) ऐसा कहा है परन्तु हद्दा चक्र में चन्द्रमा की गणना नहीं है इस कारण हद्दा शब्द से अन्य स्वगृहादि अधिकार समझना चाहिये। अथवा चन्द्रमा शुक्र बुध के हद्दा में हो तो उक्त फल होता है ऐसी मेरी सम्मति है ॥ १० ॥

अन्य शुभ योग ।

बुधशुक्रौ मूसरिफ गुरुर्विक्रमभावगः ।
तदा राज्ययशोहेममुक्ताविद्रुमलब्धयः ॥ ११ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११ ॥

जिसके वर्ष में बुध, शुक्र ये दोनों मूसरीफ योग करें और बृहस्पति वर्षलग्न से तीसरे स्थान में हो वह राज्य, यश, सुवर्ण, मोती और मूँगा, इन सबों को प्राप्त करता है ॥ ११ ॥

भौमो मित्रगृहेऽब्देशः कम्बूलःस्वगृहादिगैः ।
गजाश्वहेमाम्बरभूलाभं दत्ते सुखाधिकम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १२ ॥

जिसके वर्षकाल में मङ्गल वर्ष का स्वामी होकर अपने मित्र घर में स्थित हो और अपने घर व उच्चादि स्थानों में स्थित ग्रहों के साथ इत्थशाल योग करे, और स्वगृह, उच्च आदि स्थानों में बैठे हुये चन्द्रमा के साथ भी इत्थशाल योग करता हो तो कम्बूल योग होता है। ऐसा मङ्गल उसको हाथी, घोड़ा, सोना, कपड़े, पृथ्वी का लाभ और अधिक सुख देता है ॥ १२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इत्थं जन्मनि वर्षे च योगकर्तुर्बलाबलम् ।
विमृश्य कथयेद्राजयोगं तद्भङ्गमेव च ॥ १३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १३ ॥

जन्मकाल और वर्षकाल में राजयोग करनेवाले ग्रह के बलाबल को विचार करके राजयोग वा राजयोगभङ्ग को कहे ॥ १३ ॥

अब्देन्थिहेशादिखगाः खलैश्चेद्युतेक्षिता अस्तगनीचगा वा ।
सौम्या बलोना नृपयोगभङ्गं तदा वदेद्वित्तसुखक्षयश्च ॥ १४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १४ ॥

जिसके वर्षकाल में वर्षस्वामी, मुन्थहास्वामी आदि शब्द से वर्षलग्न स्वामी, जन्मलग्न स्वामी, ये पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हों और शुभग्रह हीनबली हो तो राजयोग का भङ्ग तथा पूर्वोक्त वर्षेशादि ग्रह सूर्य के सान्निध्यवश अस्तङ्गत हों—अथवा नीच राशि में स्थित हों और शुभ ग्रह पञ्चवर्गी बल से हीन बली हों, तो भी राजयोग का फल नहीं होता है । इन दोनों योगों में धन और सुख का नाश होता है ॥ १४ ॥

श्रीगर्गान्वयभूषणो गणितविच्चिन्तामणिस्तत्सुतोऽ-
नन्तोऽनन्तमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यै जनुः पद्धतिम् ।
तत्सूनुः खलु नीलकण्ठविबुधो विद्वच्छिवाऽनुज्ञयाऽ-
वोचद्वर्षपमुन्थहाफलमथारिष्टादिसद्योगयुक् ॥ १५ ॥

इति श्रीनीलकण्ठ्यां वर्षतंत्रेऽरिष्टभङ्गाध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

अन्वयः--श्रीगर्गान्वयभूषणो (श्रीगर्गवंशे श्रेष्ठः) गणितवित् (ज्योतिषशास्त्रविज्ञः) चिन्तामणिरितिनामा कश्चिदासीत् तत्सुतः अनन्तमतिः (अनंतगुणसम्पन्नमतिः) अनंतनामा खलमतध्वस्त्यै (दुष्टमतनिरासाय) जनुः पद्धतिं व्यधात (कृतवान्) खलु (निश्चयेन) तत्सूनुः (तस्य पुत्रः) नीलकण्ठविबुधः विद्वच्छिवानुज्ञया वर्षपमुंथहाफलम् अथ अरिष्टादि सद्योगयुक् अवोचत् ॥ १५ ॥

श्री गर्गाचार्यजी के वंश में श्रेष्ठ गणितशास्त्र के जाननेवाले चिन्तामणि नामक कोई हुआ, उनका पुत्र अनन्त बुद्धियों से सम्पन्न (बड़े बुद्धिमान्) दैवज्ञ अनन्त नामक दुष्टों के मतों को दूर करने के अर्थ जातकपद्धति को रचते हुए उन्हीं का पुत्र पण्डित नीलकण्ठ नामक जिसने विद्वान् शिवजी महराज की आज्ञा से वर्षेश, मुथहा और मुन्थहेश का फल कहा इसके उपरान्त अरिष्टयोग और अरिष्टभङ्गको वर्णन किया ॥१५॥

इति नीलकण्ठीभाषाटीकायां वर्षफलतन्त्रे अरिष्टभङ्गाध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ द्वादशभावविचाराध्यायः पंचमः प्रारभ्यते ।

बारहों भावों के विचार का पाँचवाँ अध्यायः—

यो भावः स्वामिसौम्याभ्यां दृष्टो युक्तोऽयमेधते ।
पापदृष्टयुतो नाशो मिश्रैर्मिश्रफलं वदेत् ॥ १ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १ ॥

जो भाव अपने स्वामी और शुभ ग्रह से देखा जाता हो अथवा संयुक्त हो तो उस भाव के फल की वृद्धि होती है, परन्तु उक्त भाव का स्वामी शुभग्रह वा पापग्रह हो, यहाँ शुभ पाप का नियम नहीं है । जो भाव अपने स्वामी वा शुभग्रहों को छोड़कर अन्य पापग्रहों से देखा जाता हो वा युक्त हो तो उस भाव का नाश हो जाता है, अर्थात् वह भावफल करने को समर्थ नहीं होता है । तथा जो भाव मिश्र अर्थात् शुभग्रह व पापग्रह दोनों से देखा जाता हो अथवा युक्त हो तो उस भाव का मिश्र (शुभाशुभ मिला हुआ) फल होता है ॥ १ ॥

लग्नस्वामी का शुभाशुभ फल—

लग्नाधिपे वीर्ययुते सुखानि नैरुज्यमर्थागमनं विलासः ।
स्यान्मध्यवीर्येऽल्पसुखार्थलाभः क्लेशाधिकत्वं विपदल्पवीर्ये ॥२॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २ ॥

लग्न का स्वामी पंचवर्गी बल से बल वाला होवे तो सुख, आरोग्यता और द्रव्य का आगम व आनन्द को करता है, तथा जो मध्यम बली होवे तो थोड़ा सुख हो और थोड़ा ही धनलाभ होवे और जो अल्प (थोड़ा) बली हो तो क्लेश अधिक हो और विपत् (आपदा) होती है ॥ २ ॥

वर्ष में अधिकारी ग्रहों का हीन बली रहते विशेष फल—

जन्माब्दाङ्गपतीन्थिहापतिसमानाथाद्यधीकारवान्
सूर्यो नष्टबलस्त्वगक्षिविलयं कुर्यान्निरुत्साहताम् ।
नीचत्वं पितृमातृतोप्यभिवश्चन्द्रेऽक्षिकार्यक्षयो
दारिद्र्यं च पराभवो गृहकलिर्व्याध्यादिभीतिस्तदा ॥३॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३ ॥

जिसके वर्षकाल में जन्मलग्नस्वामी, वर्षलग्नस्वामी, मुंथास्वामी, वर्षस्वामी और आदि शब्द से त्रिराशिप व दिनरात्रि के स्वामी इन अधिकारों में से किसी अधिकार को प्राप्त होकर सूर्य नष्टबल अर्थात् पाँच विश्वों से अल्पबल वाला हो तो वह उस प्राणी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की त्वचा (खाल) और नेत्रों को नष्ट करता है, अर्थात् ऐसा सूर्य होवे तो वह मनुष्य कोढ़ी होकर आँखों से अन्धा हो जाता है और उत्साह से रहित अधम जीता हुआ माता पिता से क्लेशित होता है तथा जिस प्राणी के पूर्वोक्त अधिकारियों में से किसी अधिकार में स्थित चन्द्रमा नष्टबल हो तो उस प्राणी के नेत्र और वांछित कार्यों का नाश होता है, और वह दरिद्री होकर जहाँ जाता है वहाँ अनादर को प्राप्त होता हुआ आपस में कलह करता है और मानसी व्याधि व रोगों से भयभीत होता है ॥ ३ ॥

मंगल का फल—

भौमे चलत्वं भीरुत्वं बुधे मोहपराभवौ ।
जीवे धर्मक्षयः कष्टफला जीवनवृत्तयः ॥ ४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४ ॥

यदि वर्षप्रवेश समय में उक्त अधिकारियों में से जिस किसी अधिकार को प्राप्त होकर मङ्गल नष्टबली हो तो उस प्राणी का मन चलायमान रहता है और वह चोर आदिकों से भयभीत होता है और उक्त अधिकारियों में बुध नष्टबली हो तो मोह, पराभव रूपी फल को देता है। तथा जिसके उक्त अधिकारियों में बृहस्पति नष्ट बली हो तो धर्म का क्षय होता है और बड़े कष्ट से कन्द, मूल, फलादि खाके जीविका करनेवाला वह प्राणी होता है। अथवा कष्ट रूप से ही जीविका करने वाला समझना ॥ ४ ॥

शुक्र और शनैश्चर के फल—

शुक्रे विलाससौख्यानां नाशः स्त्रीभिः समं कलिः ।
सौरे भृत्यजनाद् दुःखं रुजो वातप्रकोपतः ॥ ५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५ ॥

जिसके वर्षकाल में उक्त अधिकारियों में से जिस किसी अधिकार को प्राप्त होकर शुक्र बलहीन हो तो उसके विलास (क्रीड़ा आदि) और सुख का नाश होता है और वह स्त्रियों के साथ कलह करनेवाला होता है। एवं उक्त अधिकारी में से किसी अधिकार में प्राप्त होकर शनि नष्ट बली हो तो सेवक से क्लेश होता है, तथा वातरोग से पीड़ा होती है ॥ ५ ॥

वर्षलग्न के फल—

लग्नं पापयुतं सौम्यैरदृष्टं सहितं नृणाम् ।
विवादं वञ्चनां दुष्टमशनं चापि विन्दति ॥ ६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६ ॥

जिसके वर्षप्रवेश समय में वर्षलग्न पापग्रहों से युक्त हो और शुभ ग्रहों से न देखा जाय न युक्त हो तो वह मनुष्यों से विवाद (झगड़ा) और चौरादिकों से ठग जाना व दुष्ट भोजन इन अशुभ फलों को प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधिकारियों के बलवान रहते हुए फल का वर्णन करते हैं—

जन्माब्दाङ्गपरन्ध्रपाब्दमुथहानाथा बलाढ्यास्तदा
रम्यं वर्षमुशन्ति सर्वमतुलं सौख्यं-यशोऽर्थागमः ।
षष्ठाष्टान्त्यगता न चेदिह पुनस्ते दुःखभीतिप्रदाः
निर्वीर्या यदि वर्षमेतदशुभं वाच्यं शुभेक्षां विना ॥ ७ ॥

अन्वयः—यदा जन्माब्दाङ्गपरन्ध्रपाब्दमुथहानाथाः बलाढ्यास्तथा षष्ठाष्टान्त्यगता न चेत्तदा सर्वं वर्षं रम्यं उशन्ति, अतुलं सौख्यं यशोऽर्थागमश्च उशन्ति । पुनस्ते (जन्माङ्गाब्दाङ्गपरन्ध्रपाब्दमुथहानाथाः) चेत्षष्ठाष्टान्त्यगता तदा इहास्मिन्वर्षे दुःखभीतिप्रदाः यदि ते निर्वीर्या तदा शुभेक्षां विना एतद्वर्षमशुभं वाच्यम् ॥ ७ ॥

जिस वर्ष में जन्मलग्न का स्वामी, वर्षलग्न का स्वामी, वर्षलग्न से आठवें स्थान का स्वामी और मुथहा का स्वामी ये बलिष्ठ होते हुए यदि छठे, आठवें और बारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित नहीं हों तो सम्पूर्ण वर्ष सुन्दर कहा जाता है, उस वर्ष में अतुल सौख्य, यश और धन की प्राप्ति होती है । यदि ये पूर्वोक्त जन्मलग्न आदिकों के स्वामी बली होते हुए छठे, आठवें और बारहवें स्थान में स्थित हों तो दुःख व चौरादिकों से भय होता है, यदि ये चारों शुभ ग्रहों से न देखे जावें तो ये सम्पूर्ण वर्ष अशुभ फल को देनेवाला होता है और यदि उक्त चारों को शुभ ग्रह देखते हो तो पूर्व कहा हुआ सम्पूर्ण फल कहना चाहिये ॥ ७ ॥

धननाश योग—

सूतौ धनप्रदः खेटो धनाधीशश्च तौ यदि ।
वर्षे नष्टौ वित्तनाशान्यनिक्षेपापवाददौ ॥ ८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकाल में धन का देने वाला ग्रह और धनस्थान का स्वामी ये दोनों यदि वर्ष में नष्टबली होवे तो उस पुरुष का धननाश हो और किसी अन्य मनुष्य के यहाँ धरे हुए धन का अपवाद अर्थात् जिसके यहाँ धन रखने को दिया है वह बदल जाय कि हमारे पास नहीं धरा है, और यदि पूर्वोक्त दोनों ग्रह बलिष्ठ होवें तो धनलाभ करनेवाले होते हैं ॥ ८ ॥

एवं समस्तभावानां सूतौ नाथाश्च पोषकाः ।
अब्दे नष्टबलास्तेषां नाशायोह्या विचक्षणैः ॥ ९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९ ॥

इसी प्रकार जिसके जन्मकाल में सम्पूर्ण भावों में जिन जिन भावों के फल देनेवाले ग्रह स्थित होवें, और उन भावों के स्वामी भी फल करने को समर्थ होवें, यदि वे ही वर्षकाल में बलवान होवें तो उस मनुष्य के अर्थ अपने भाव सम्बन्धी फल को देते हैं,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और जब उक्त ग्रह वर्ष में नष्ट बलवाले होवें तो उन भावों को नष्ट करते हैं, अर्थात् उन भावों का जैसा फल है उसको नहीं दे सकते हैं, ऐसा पण्डितों को जानना चाहिए ॥९॥

इति प्रथमभाव विचार—

धनभाव का विचार—

वित्ताधिपो जन्मनि वित्तगोऽब्दे जीवो यदा लग्नपतीत्थशाली ।
तदा धनाप्तिः सकलेऽपि वर्षे क्रूरेसराफे धनधान्यहानिः ॥ १० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १० ॥

जिसके जन्मकाल में बृहस्पति धन भाव का स्वामी होकर वर्ष में दूसरे स्थान में स्थित हो और लग्नस्वामी के साथ इत्थशाल योग को करता हो तो उसको धन की प्राप्ति सम्पूर्ण वर्ष भर होती है। यदि बृहस्पति लग्नस्वामी को छोड़ अन्य किसी पापग्रह के साथ इसराफ योग को करे तो सम्पूर्ण वर्ष पर्यन्त धनधान्य की हानि को करता है ॥ १० ॥

दूसरा धनलाभ योग—

जन्मन्यर्थावलोकीज्योऽब्देऽब्देशो बलवान् यदा ।
तदा धनाप्तिर्बहुला विनायासेन जायते ॥ ११ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११ ॥

जिसके जन्मकाल में बृहस्पति दूसरे स्थान को देखता हो और यदि वर्ष का स्वामी होकर बलवान् होवे तो उस वर्ष में उसको विना परिश्रम धनलाभ होता है ॥ ११ ॥

सम्पूर्ण भावों में अतिदेश—

एवं यद्भावपो जन्मन्यब्दे तद्भावगो गुरुः ।
लग्नेशेनेत्थशाली चेत्तद्भावजसुखं भवेत् ॥ १२ ॥

अन्वयः—एवं जन्मनि यद्भावपो गुरुः चेदब्दे तद्भावगो लग्नेशेन इत्थशाली तद्भावजसुखं भवेत् ॥ १२ ॥

इस प्रकार जन्मकाल में बृहस्पति जिस भाव का स्वामी हो यदि वर्ष समय में भी उसी भाव में स्थित हो और वर्षलग्नस्वामी के साथ इत्थशाल योग को करे तो उसको उसी भाव का फल मिलता है, उस भाव से उत्पन्न सुख को प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

दृष्टिवश से पूर्वोक्त योग—

तथा जनुषि यं पश्येद् भावमब्देऽब्दपो गुरुः ।
तदा तद्भावजं सौख्यमुक्तं ताजिकवेदिभिः ॥ १३ ॥

अन्वयः—तथा जनुषि यं भावं गुरुः पश्येत् अब्दे चेदब्दपः तदा तद्भावजं सौख्यं ताजिकवेदिभिः उक्तम् ॥ १३ ॥

वैसे ही जन्मकाल में बृहस्पति जिस भाव को देख रहा हो और वही यदि वर्ष

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समय वर्ष का स्वामी हो तो उस भावसम्बन्धी सुख को प्राप्त होता है, यह ताजिक शास्त्र के जाननेवालों ने कहा है ॥ १३ ॥

थोड़े धन की प्राप्ति का योग और दण्डयोग—

जन्मषष्ठाधिपः सौम्यः षष्ठेऽब्दे स्वल्पलाभदः ।
पापार्दिते गुरौ रन्ध्रेऽर्थे वा दण्डः पतेद् ध्रुवम् ॥ १४ ॥

अन्वयः— जन्मनि षष्ठाधिपः सौम्यः अब्दे (वर्षे) षष्ठः (षष्ठस्थानस्थः) तदा स्वल्पलाभदः । एवं पापार्दिते गुरौ रंध्रे (वर्षलग्नादष्टमस्थे) अर्थे तदा ध्रुवम् दण्डः पतेत् ॥ १४ ॥

जिसके जन्मकाल में बुध छठें भाव का स्वामी होकर वर्षलग्न से छठें भाव में स्थित हो तो उसको थोड़े धन का देनेवाला होता है । बृहस्पति पापग्रहों से पीडित होकर वर्षलग्न से आठवें भाव में अथवा धन भाव में स्थित हों तो निश्चय उसको राजदण्ड का भय होता है, अर्थात् उसको किसी मुकदमें में फँसकर जुर्माना होता है ॥ १४ ॥

अन्य धनलाभ योग—

गुरुर्वित्ते शुभैर्दृष्टयुतो वा राज्यसौख्यदः ।
जन्मन्यब्दे च मुथहा राशिं पश्यन्विशेषतः ॥ १५ ॥

अन्वयः— जन्मन्यब्दे च गुरुर्वित्ते शुभैर्दृष्टयुतो वा राज्यसौख्यदः तत्र मुथहाराशिं पश्यन् विशेषतः राज्यसौख्यदः भवति ॥ १५ ॥

जन्म और वर्षकाल में बृहस्पति धनभाव में स्थित हो, और उसको शुभग्रह देखते हों वा शुभग्रहों से युक्त हो तो उसको राज्य और सुख को देते हैं, ऐसा बृहस्पति जिस राशि में मुंथा हो उस राशि को देखता हो तो विशेष करके राज्य वा सुख का देनेवाला होता है, अर्थात् बृहस्पति शुभ ग्रहों से दृष्ट वा युक्त होकर धन स्थान में स्थित हो और वर्षकाल में भी उक्त स्वरूप से स्थित होकर मुथहा को देखता हो तो विशेष करके राज्य देता है ॥ १५ ॥

धनयोग और उसके नाशयोग—

एवं सितेऽब्दपे भूरि द्रव्यं धान्यं च जायते ।
वित्तलग्नेशसंयोगो वित्तसौख्यविनाशदः ॥ १६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १६ ॥

पूर्वोक्त प्रकार से शुक्र वर्ष का स्वामी होता हुआ धन स्थान में स्थित हो और उसको शुभग्रह देखते हों वा शुभयुक्त हो, तो बहुत धन व धान्य प्राप्त होता है । धन भवन में धनभाव का स्वामी और लग्नस्वामी इनका योग होवे तो वह धन के सुख को नाश करता है ॥ १६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्य धनप्राप्ति योग—

एवं बुधे सवीर्ये स्याल्लिपिज्ञानोद्यमैर्धनम् ।
जन्मलग्नगतास्सौम्यावर्षेऽर्थे धनलाभदाः ॥ १७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १७ ॥

ऐसे ही (पूर्वोक्तप्रकार) बुध बलिष्ठ होकर वर्ष का स्वामी होता हुआ धन भाव में स्थित हो और वह शुभग्रहों से युक्त व दृष्ट हो तो लिखने व ज्ञानरूपी (व्याख्यानादि) उद्यम से धन प्राप्त होता है, तथा जिसके जन्मलग्न में शुभग्रह स्थित हों और वेही यदि वर्षसमय धनभाव में स्थित हों तो धन लाभ को कराने वाले होते हैं अर्थात् उस वर्ष में धन का लाभ होता है ॥ १७ ॥

बहु धनलाभ योग—

मालसद्मनि वित्ते वा बुधेज्यसितसंयुते ।
तैर्वा दृष्टे धनं भूरि स्वकुले राज्यमाप्नुयात् ॥ १८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १८ ॥

जिसके वर्षप्रवेश समय में मालसद्म (धनसहम) और धनभाव ये दोनों बुध, बृहस्पति और शुक्र से संयुक्त हों वा इनसे देखे जाते हों तो उसको बहुत धन व अपने कुलमें राज्य इनको पाता है—यवन भाषा में माल धन को कहते हैं ॥ १८ ॥

अन्य धनलाभ योग—

अर्थार्थसहमेशौ चेच्छुभैर्मित्रदृशेक्षितौ ।
बलिनौ सुखतो लाभप्रदौ यत्नादरेर्दृशा ॥ १९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १९ ॥

जिसके वर्ष में धनभाव का स्वामी और धनसहम का स्वामी ये दोनों यदि शुभ ग्रहों से मित्र दृष्टि से देखे जाते हों, और पञ्चवर्गी में बलवान् हों तो उसको सुख सहित लाभ को देते हैं और जो पूर्वोक्त अर्थसहम के स्वामी और धनभवन के स्वामी को शत्रु दृष्टि से शुभ ग्रह देखते हों तो बड़े यत्न से लाभ को देनेवाले होते हैं ॥ १९ ॥

अन्य धनयोग व उसके नाश योग—

मित्रदृष्ट्या मुथशिलेऽर्थाङ्गयोः सुखतो धनम् ।
तयोर्मूसरिफे वित्तनाशदुर्नयभीतयः ॥ २० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २० ॥

जिसके वर्ष काल में धनभाव और वर्षलग्न इनके स्वामियों का मित्र दृष्टि से इत्थशाल योग होवे, तो उसको विना प्रयास धन प्राप्त होता है और उन दोनों का ईसराफ योग होवे तो उसके धन का नाश होता है, और अनीति से बर्ताव करता हुआ वह मनुष्य भयभीत होता है ॥ २० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्य धनयोग—

जन्मनीत्योऽस्ति यद्राशौ सराशिर्वर्षलग्नगः ।
शुभस्वामीक्षितयुतो नैरुज्यस्वाम्यावित्तदः ॥ २१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २१ ॥

जन्मसमय बृहस्पति जिस राशि में हो यदि वह राशि वर्ष लग्न हो और शुभग्रहों वा अपने स्वामी से दृष्ट युक्त हो तो आरोग्यता, प्रभुता और वित्त (धन को) देती है ॥२१॥

अन्य धनलाभ व धननाश योग—

सूतौ लग्ने रविर्वर्षे धनस्थो धनसौख्यदः ।
शनौ वित्ते कार्यनाशो लाभोऽल्पोऽथ धनव्ययः ॥२२॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २२ ॥

जन्मसमय सूर्य लग्न में हो और वर्ष समय धनस्थान में स्थित हो तो धन व सुख को देता है, और जो धनभाव में शनि हो तो कार्य को नाश करता है और थोड़ा लाभ कराकर धन को खर्च करा देता है ॥ २२ ॥

शनि के दौष्ट्यपवाद धनानाश योग—

भ्रातृसौख्यं गुरुयुते भूतयः स्युः शुभेक्षणात् ।
क्रूरयोगेक्षणात्सर्वं विपरीतं फलं भवेत् ॥ २३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २३ ॥

जिसके वर्षसमय धनभाव में स्थित शनैश्चर बृहस्पति से युक्त हो तो उसको अपने भाई बन्धुओं से सुख होता है, और पूर्वोक्त शनि को शुभ ग्रह देखते हों तो उसको बड़े ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं यदि शनि पापग्रहों से युक्त दृष्ट हों तो सम्पूर्ण फल विपरीत होता अर्थात् धन की हानि होती है ॥ २३ ॥

जन्मसमय धनेश गुरु का वर्षसमय लग्नादि बारह भावों में पृथक् २ फल—

वित्तेशो जन्मनि गुरुर्वर्षे वर्षेशतां दधत् ।
यद्भावगस्तमाश्रित्य लाभदो लग्न आत्मनः ॥ २४ ॥
वित्ते सुवर्णरूप्यादेर्भ्रात्रादेः सहजर्क्षगः ।
पितृमातृक्षमादिभ्यो वित्तं सुहृदि पञ्चमे ॥ २५ ॥
सुहृत्तनयतः षष्ठेरिवर्गाद्धानिभीतिदः ।
स्त्रीभ्यो द्यूनेऽष्टमे मृत्युरर्थहेतुः पथोंऽकगे ॥ २६ ॥
खे नृपादेर्नृपकुलादायेऽन्त्ये व्ययदो भवेत् ।
इत्थं विमृश्य सुधिया वाच्यमित्थं परे जगुः ॥ २७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

जन्म समय धनभाव का स्वामी बृहस्पति वर्ष काल में वर्ष का स्वामी होता हुआ, जिस भाव में स्थित हो उसी भाव का फल देता है जैसे लग्न में स्थित हो तो शरीर को पुष्ट करता है ॥ २४ ॥ धनभाव में हो तो सुवर्ण चांदी आदि का लाभ करता है और जो तीसरे भाव में स्थित हो तो भाई आदि के आश्रय से लाभ व सुख करता है तथा जो चौथे भाव में स्थित हो तो पिता, माता, खेती व ग्राम आदिकों से सुख प्राप्त करता है और पञ्चम स्थान में हो. ॥ २५ ॥ तो मित्रों व लड़कों से सुख देता है, छठें स्थान में स्थित हो तो शत्रुवर्ग से हानि और भय को देता है, और जो सातवें भाव में स्थित हो तो स्त्री से सुख देता है, तथा जो आठवें घर में स्थित हो तो मृत्यु देता है और नवम स्थान में स्थित हो तो मार्ग चलते चलते द्रव्य दिलाता है ॥ २६ ॥ दशम स्थान में हो तो राजा के आश्रय से भाग्यवृद्धि करता है और जो ग्यारहवें स्थान में हो तो राजकुल से धन को बढाता है, और जो बारहवें स्थान में स्थित हो तो बहुत खर्च कराता है इस प्रकार विचार कर पण्डितों को कहना चाहिये ऐसा आचार्यों ने कहा है ॥ २७ ॥

इति धनभावविचारः ।

अथ सहजभावविचारः ।

सहजभाव का शुभाशुभ फल—

अब्देशेऽर्के सिते वापि सबले पापवर्जिते ।
सौख्यं मिथः सोदराणां व्यत्ययाद्व्यत्ययं वदेत ॥ २८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २८ ॥

यदि वर्ष का स्वामी सूर्य वा शुक्र हो और पंचवर्गी बल से बलिष्ठ होवे और पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट न हो तो उसको भाइयों का सुख प्राप्त होता है, इससे विपरीत अर्थात् वर्षेश सूर्य शुक्र निर्बली होकर पापग्रहों से दृष्टयुक्त हो तो भाइयों में कलह आदि होवे ॥ २८ ॥

दग्धे कलिः सहजपेऽब्दपतौ तयोर्वा
जीवे बलेन रहिते सहजे सहोत्थैः ।
वैरं तृतीयभवनाधिपतीसराफे
मान्द्यं कलिं स्वजनसोदरतश्च विन्द्यात् ॥ २९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—सहजपेऽब्दपतौ दग्धे कलिः, तयोः सूर्यशुक्रयोर्मध्ये वर्षस्वामी-भूत्वा दग्धश्चेत्तदा कलिः । सहजे बलेन रहिते जीवे सहोत्थैः वैरं, वर्षस्वामी तृतीयभवनाधिपतीसराफे मान्द्यं स्वजन सोदरतश्च कलिं विन्द्यात् ॥ २९ ॥

जिसके वर्षकाल में तीसरे भाव का स्वामी वर्षेश होकर सूर्य के साथ अस्त हो जाय अथवा दुष्ट स्थान में स्थित हो तो वह युद्धादि करके कलह करता है और सूर्य या शुक्र में कोई एक वर्ष का स्वामी होकर यदि अस्तङ्गत हो जावे तो भी वह युद्धादि से कलह करता है और जो बृहस्पति अधम बल से युक्त होकर तीसरे भवन में स्थित हो तो भाइयों के साथ बैर होता है, जो वर्षस्वामी तीसरे भाव के स्वामी के साथ ईसराफ योग को करता हो तो उसके शरीर में बड़ा भारी कष्ट आकर प्राप्त होता है, उसी से वह निर्बल होकर अपने मित्रवर्ग से वा अपने बन्धुओं से लड़ाई को करने वाला होता है ॥ २६ ॥

यदेत्थशालः सहजेश्वरेण गुरुस्तृतीये सहजात्सुखाप्तिः ।
सारे विधौ स्यात्कलहस्तृतीये दृष्टौ युतौ नो गुरुणा यदा तौ ॥३०॥

अन्वयः—यदा वर्षलग्न-वर्षस्वामिना वा सहजेश्वरेण इत्थशालः (इत्येको योगः) अथवा गुरुस्तृतीये (इत्यपरो योगः) योगद्वयेऽपि सहजात्सुखाप्तिः । तृतीये सारे विधौ तौ यदि गुरुणा दृष्टौ युतौ नो तदा भ्रातृभिः कलहः स्यात् ॥ ३० ॥

वर्षलग्नस्वामी वा वर्षेश इन दोनों में से किसी एक का तीसरे भाव के स्वामी के साथ इत्थशाल योग होवे तो भाइयों से सुख की प्राप्ति होती है और बृहस्पति तीसरे भाव में स्थित हो तो भी भाइयों से सुख मिलता है और जो तीसरे भाव में मंगल सहित चन्द्रमा स्थित हो और यदि वे दोनों बृहस्पति से नहीं देखे जावें अथवा न युक्त हों तो भाइयों से लड़ाई होती है ॥ ३० ॥

अन्य भ्रातृसुखकारक योग—

सहजे सहजाधीशेऽधिकारिणि समागते ।
लग्नपो वा मुथशिले मिथः सौख्यं सहोत्थयोः ॥ ३१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३१ ॥

जिसके वर्षकाल में तीसरे भाव का स्वामी पांचों अधिकारों में से किसी अधिकार में होकर तीसरे भाव में स्थित हो और उसी के साथ वर्षस्वामी व वर्षलग्नस्वामी इन दोनों में से किसी एक का इत्थशाल योग होवे, तो उसके भाइयों को परस्पर सुख प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भ्रातृदुष्ट योग—

क्रूरेसराफे कलहः शनौ भौमर्क्षगे रुजः ।
ज्ञर्क्षेऽसृज्यनुजे मान्द्यं वदेत्सहजगे स्फुटम् ॥ ३२ ॥

अन्वयः—क्रूरेसराफे (सहजेशेन सह पापग्रहः चेत् इसराफ योगं करोति) तदा परस्परं कलहः, शनौ भौमर्क्षगे सहजगे (भ्रातरि) रुजः, असृजि ज्ञर्क्षे सहजगे अनुजे मान्द्यं स्फुटं वदेत् ॥ ३२ ॥

जिसके वर्षसमय में तीसरे भाव के स्वामी के साथ पापग्रह इसराफ योग को करे तो भाइयों में परस्पर कलह होता है, तैसे ही शनि मंगल के घर (मेष वृश्चिक) में से किसी राशि में स्थित होकर तीसरे भाव में हो तो भाई रोग से पीड़ित होते हैं, तैसे ही मंगल बुध के घर अर्थात् मिथुन कन्या में से किसी राशि में स्थित होकर तीसरे स्थान में स्थित हो तो भाइयों को रोग होता है यह निःशंक होकर पण्डित फल कह देवें ॥३२॥

भाइयों को सौख्यकारी योग—

मन्दर्क्षगेऽसृजि बुधे कुजर्क्षे सहजे शुभैः ।
युतेक्षिते सोदराणां मिथः सौख्यं भवेद्बहु ॥ ३३ ॥

अन्वयः—मन्दर्क्षगे सहजे असृजि एवं बुधे कुजर्क्षे सहजे शुभैर्युतेक्षिते सोदराणां मिथः बहुसौख्यं भवेत् ॥ ३३ ॥

यदि वर्षलग्न से तीसरे स्थान में शनि की राशि (मकर, कुंभ) में मंगल हो अथवा उक्त स्थान में मंगल की राशि (मेष, वृश्चिक) में बुध बैठा हो और शुभग्रहों से युक्त या देखा जाता हो तो परस्पर भाइयों का अनेक सुख मिलता है ॥ ३३ ॥

अन्य भ्रातृ सौख्य का योग—

जन्माब्दपौ बुधसितौ सबलौ तृतीये
सोदर्यबन्धुगणसौख्यकरौ गुरुश्च ।
वीर्यान्वितेन्दुगृहगोभृगुजोऽधिकारी
सूत्यब्दयोः सहजबन्धुगणस्य वृद्ध्यै ॥३४॥

अन्वयः—जन्माब्दपौ बुधसितौ सबलौ तृतीये एवं गुरुश्चेत्तदा सोदर्यबन्धुगणसौख्यकरः, भृगुजोऽधिकारीभूत्वा सूत्यब्दयोः वीर्यान्वितेन्दुगृहगो सहजबन्धुगणस्य वृद्ध्यै भवति ॥ ३४ ॥

जिसके जन्मकाल वा वर्षकाल में बुध, शुक्र ये दोनों बलवान् होकर तीसरे भाव में स्थित हो एवं बृहस्पति बलवान् होकर तीसरे घर में स्थित हो तो भाई और बन्धुगणों के सुख को करते हैं, इसी प्रकार शुक्र अधिकारी होकर जन्म व वर्ष में बलवान चन्द्रमा जिस राशि में बैठा हो उसी राशि में बैठा हो तो भाइयों की वृद्धि होती है ॥३४॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहज भाव में दुःखकारक योग—

पापान्विते तु सहजे सहमेशभावे नाथेक्षणेन रहिते सहजस्य दुःखम् ।
एवं सहोत्थसहमेऽपि वदेत्तदीशौ दग्धौ यदा सहजनाशकरौ विचिन्त्यौ॥३५॥

अन्वयः—सहजे पापान्विते सहमेशभावनाथेक्षणेन रहिते सहजस्य दुःखम् । एवं सहोत्थसहमेऽपि वदेत् । तदीशौ (भ्रातृभाव-भ्रातृसहमस्वामिनौ) यदा दग्धौ तदा सहजनाशकरौ विचिन्त्यौ ॥ ३५ ॥

जिसके वर्षकाल में तीसरा भाव पापग्रहों से युक्त होवे और उसको भ्रातृ सहम का स्वामी और सहजभाव का स्वामी ये दोनों नहीं देखते हों तो उसके भाई को दुःख होता है, ऐसे ही भ्रातृसहम भी पापग्रहों से युक्त होवे और उसको उसका स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी ये दोनों नहीं देखें तो भी भाइयों को कष्ट होवे और भ्रातृभाव और भ्रातृसहम के स्वामी सूर्य के साथ अस्तङ्गत होकर अपने नीच आदि बुरे स्थान में स्थित होवें तो वह उसके भाइयों को नष्ट करते हैं, ऐसा पंडितों को कहना चाहिए ॥३५॥

भाइयों के बुरे योग—

तृतीयपादब्दपतौ द्युनस्थे लग्नेश्वरे वा सहजैर्विवादः ।
तृतीयपो जन्मनि तादृगब्दे शुभेक्षितस्तत्र सहोत्थतुष्ट्यै ॥३६॥

अन्वयः—तृतीयपाद् अब्दपतौ लग्नेश्वरे वा द्युनस्थे तदा सहजैर्विवादः । जन्मनि तृतीयपस्तत्र शुभेक्षितस्तादृगब्दे चेत् तदा सहोत्थतुष्ट्यै भवति ॥३६॥

जिसके वर्षकाल में तीसरे भाव के स्वामी से वर्षेश सातवें स्थान में स्थित हों, अथवा लग्न स्वामी तीसरे घर के स्वामी से सातवें स्थान में स्थित हों तो उसका भाइयों से युद्ध होता है । जिसके जन्म समय तीसरे स्थान का स्वामी सहज भाव में स्थित हो और उसको शुभग्रह देखते हों अथवा यदि वही (तीसरे भाव का स्वामी) शुभ ग्रहों से युक्त हो एवं वर्षकाल में भी तीसरे घर का स्वामी अपने स्थान में स्थित हो और उसको शुभग्रह देखते हों तो उसके भाइयों को सन्तोष होता है अर्थात् सब प्रसन्नतापूर्वक रहते हैं ॥ ३६ ॥

इति सहजभाव विचारः ॥

चौथे भाव का विचार—

तुर्ये रवीन्दू पितृमातृपीडा पापान्वितौ पापनिरीक्षितौ च ।
जन्मस्थसूर्यर्क्षगतेऽर्कपुत्रेऽवमानना वैरकली च पित्रा ॥ ३७ ॥

अन्वयः—तुर्ये रवीन्दू पापान्वितौ पापनिरीक्षितौ च तदा क्रमेण पितृमातृपीडा, जन्मस्थसूर्यर्क्षगतेऽर्कपुत्रे पित्रा अवमानना वैरकली च स्याताम् ॥ ३७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिसके वर्षकाल में सूर्य पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट होकर चौथे घर में स्थित हो तो उसके पिता को पीड़ा होती है। ऐसे ही चन्द्रमा पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट होकर चौथे भाव में स्थित हो तो माता को पीड़ा होती है तथा सूर्य चन्द्र दोनों पापयुक्त वा पापदृष्ट होकर चतुर्थ भाव में स्थित हों तो पिता माता दोनों को क्लेश होवे एवं जन्मसमय सूर्य जिस राशि में हो वर्ष समय उसी राशि में शनि स्थित हो तो उसके पिता का अपमान होता है और वह मनुष्य भी पिता के साथ वैर और कलह को करता है जिससे जगत् में उपहास होता है ॥ ३७ ॥

चन्द्रे जनन्येवमुशन्ति बन्धौ सुखाधिपे प्रीतिसुखानि पित्रोः ।
तुर्याधिपे लग्नपतीत्थशाले वीर्यान्विते सौख्यमुशन्ति पित्रोः ॥ ३८ ॥

अन्वयः—एवम् चन्द्रे (जन्मस्थ चन्द्राक्रान्तराशौ शनौ सति) जनन्यैव (वैरकली स्यातां) । बंधौ सुखाधिपे पित्रोः प्रीति सुखानि वीर्यान्विते तुर्याधिपे लग्नपतीत्थशाले पित्रोः सौख्यमुशन्ति ॥ ३८ ॥

इसी भाँति जन्म समय जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो वर्ष समय उसी राशि में शनैश्चर हो तो माता के साथ वैर और कलह होवे। चौथे स्थान का स्वामी चौथे घर में होवे तो माता-पिता का सुख अथवा माता पिता को सुख प्राप्त होता है और चौथे स्थान का स्वामी उत्तम बली होकर वर्षलग्न के स्वामी के साथ इत्थशाल योग को करे तो वह माता पिता को सुख देता है यह श्रेष्ठ पण्डितों ने कहा है ॥ ३८ ॥

माता पिता के अरिष्ट योग—

सौख्याधिपो जनुषि नष्टबलोऽब्दसूत्योः
पित्रोरनिष्टकृदथो सहमे तयोस्तु ।
दग्धे तुरीयगृहगे च यदीन्थिहाया-
नाशस्तयोस्सहमयोरपि दग्धयोः स्यात् ॥ ३९ ॥

अन्वयः—जनुषि सौख्याधिपः अब्दसूत्योः नष्टबलः पित्रोरनिष्टकृद्भवति । अथ तयोः (मातापित्रोः) सहमे दग्धे यदींथिहायाः तुरीयगृहगे (तदा तयोः) नाशः स्यात् एवं सहमयोरपि दग्धयोः तयोः नाशः स्यात् ॥ ३९ ॥

जिसके जन्मकाल में और वर्षकाल में चौथे भाव का स्वामी नष्ट बली होवे तो उसके माता-पिता को दुःख करते है और जो मातृपितृसहम पापग्रहों से पीड़ित होता हुआ मुंथा से चौथे स्थान में स्थित हो तो उसके माता-पाता का नाश होता है और जो मातृपितृसहम ये दोनों दग्ध हों अर्थात् अस्तादि दोषों से युक्त हों तो भी माता-पिता का नाश होता है ॥ ३९ ॥

माता-पिता के क्लेशयोग—

जन्मन्यम्बुगृहं यच्च तत्पतिस्तत्पदोपगौ ।
शन्यारौ क्लेशदौ पित्रोर्न चेत्सौम्यनिरीक्षितौ ॥ ४० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४० ॥

जिसके जन्मकाल में चौथे घर व चौथे स्थान का स्वामी इन दोनों के स्थानों में शनि मङ्गल स्थित हों और शुभग्रहों से यदि युक्त वा दृष्ट न हों तो उसके माता-पिता को कष्ट देते हैं ॥ ४० ॥

शुभ-अशुभ योग—

मातुः पितुश्च सहमे तनुपेत्थशाले
तुर्येपि चेत्थमवगच्छ सुखानि पित्रोः ।
चेदष्टमाधिपतिना कृतमित्थशालं
पित्रोर्विपद्भयमनिष्टकृतेसराफे ॥ ४१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४१ ॥

जिसके वर्षकाल में माता-पिता के सहम लग्नस्वामी के साथ इत्थशाल योग करता हो तो उसके माता-पिता को सुख प्राप्त होता है, एवं चौथा भाव वर्षलग्नस्वामी के साथ इत्थशाल करे तो भी माता-पिता को सुख जाने । मातृपितृसहम वर्षलग्न से आठवें घर के स्वामी के साथ इत्थशाल योग करे तो उसके माता-पिता बड़े दुःख को प्राप्त होते हैं और जो मातृपितृसहम पापग्रहों से मिलाप करते हुए ईसराफ योग करें तो माता-पिता को भय प्राप्त होता है ॥ ४१ ॥

इति सुखभावविचारः ॥

पञ्चम भाव का विचार—

पुत्रायगो वर्षपतिर्गुरुश्चेत्सूर्यारसौम्योशनसोथवेत्थम् ।
सत्पुत्रसौख्याय खलार्दितास्ते दुःखप्रदाः पुत्रत एव चिन्त्याः ।४२।

अन्वयः—चेत् वर्षपतिः गुरुः पुत्रायगः तदा सत्पुत्रसौख्याय भवति, अथ इत्थम् सूर्यारसौम्योशनसो तदापि सत्पुत्रसुखाय, ते खलार्दितास्तदा पुत्रत एव दुःखप्रदा एव चिन्त्यम् ॥ ४२ ॥

जिसके वर्षकाल में वर्ष का स्वामी होकर बृहस्पति पाँचवें व ग्यारहवें स्थान में स्थित हो तो अच्छे पुत्रों का सुख होता है, अथवा सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र इनमें से कोई एक वर्ष का स्वामी होता हुआ पाँचवें और ग्यारहवें स्थान में स्थित हो तो वह पुत्रों को सुख देता है । तथा जो बृहस्पति, सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र ये पाँचों ग्रह यदि पाप ग्रहों से पीड़ित हों तो पुत्र से दुःख देते हैं, यह समझना चाहिये ॥४२॥

पुत्रप्राप्ति के योग—

पुत्रे सुतस्य सहमे सबले सुताप्तिः
सौम्येक्षितेऽप्यतिसुखं यदि तत्र वर्षेट् ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सौम्येक्षितः शुभगृहे सकुजो बुधश्चे-
त्पुत्रायगः सुतसुखं विबलः सुतार्तिम् ॥ ४३ ॥

अन्वयः—पुत्रे सुतस्य सहमे सबले सुताप्तिः, यदि तत्र (सुतभवने) वर्षेट् सौम्येक्षितेऽपि अतिसुखं स्यात्। सकुजो बुधश्चेत् शुभगृहे पुत्रायग सौम्येक्षितः सुतसुखं स्यात्, विबलस्तदासुतार्त्तिम् दद्यात् ॥ ४३ ॥

जिसके वर्ष समय पाँचवे भाव में बलसहित पुत्रसहम होवे तो उसको पुत्र की प्राप्ति होती है, यदि उस पाँचवें घर में वर्ष का स्वामी स्थित हो और शुभग्रह देखते होवें तो बालकों को बहुत सुख होता है, तथा जिसके वर्ष में मंगल सहित बुध शुभग्रह की राशि में स्थित, शुभ ग्रह से दृष्ट पाँचवें या ग्यारहवें स्थान में स्थित हो तो पुत्रों को सुख करता है, और यदि मंगल सहित बुध बलवान होता हुआ उक्त स्थानों में स्थित हो तो पुत्र को रोग होता है ॥ ४३ ॥

जीवो जन्मनि यद्राशावब्देऽसौ सुतगो बली।
पुत्रसौख्याय भौमो ज्ञो वर्षेशोऽत्र सुताप्तिदः ॥ ४४ ॥

अन्वयः—जन्मनि जीवो यद्राशौ अब्दे असौ सुतगो बली चेत्तदा पुत्र-सौख्याय भवति ॥ अत्र (पंचमभावे) भौमो ज्ञो वर्षेशः सन् स्थितस्तदा सुताप्तिदः ॥ ४४ ॥

जन्म समय बृहस्पति जिस राशि में स्थित हो वह राशि यदि वर्ष काल में बलिष्ठ होकर पांचवें घर में हो तो पुत्रों को सुख देता है, तथा वर्षकाल में मङ्गल बुध इन दोनों में से कोई एक भी वर्ष का स्वामी होता हुआ पांचवें भाव में स्थित हो तो पुत्र को देता है ॥ ४४ ॥

पुत्रप्राप्ति और पुत्रदौष्ट्य योग—

यत्रेज्यो जनुषि गृहे विलग्नमेतत्पुत्राप्त्यै बुधसितयोरपीत्थमूह्यम्।
यद्राशौ जनुषि शनिः कुजश्च सोऽब्दे पुत्रार्त्तिस्तनुसुतगः करोति नूनम् ॥४५॥

अन्वयः—जनुषि यत्रगृहे इज्यो (असौ अब्दे) विलग्नम् तदा पुत्राप्त्यै भवति, इत्थंबुधसितयोरपि ऊह्यम्। जनुषि यद्राशौ शनिः कुजश्च सोऽब्दे तनुसुतगस्तदा नूनम् पुत्रार्त्तिः करोति ॥ ४५ ॥

जन्मसमय बृहस्पति जिस स्थान में स्थिर हो यदि वह स्थान वर्ष समय लग्न में हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है, एवं बुध, शुक्र के स्थान को भी जानना, तथा अशुभ योग यह है कि जन्म समय शनि मंगल जिस राशि में स्थित हों वह राशि वर्षकाल लग्न में वा पंचम भाव में हो अथवा शनि, मङ्गल एक साथ लग्न में वा पांचवे स्थान में स्थित हो तो निश्चय करके पुत्रों को पीड़ा करते हैं ॥ ४५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्य पुत्रप्राप्तियोग—

पुत्रे पुण्यस्य सहमे पुत्राप्त्यै शुभदृष्टियुक् ।
लग्नपुत्रेश्वरौ पुत्रे पुत्रदौ बलिनौ यदि ॥ ४६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४६ ॥

वर्ष में पांचवें पुण्य सहम शुभग्रहों की दृष्टि से युक्त हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है, तथा लग्नेश और पुत्र भावेश बलवान् होकर पंचम भाव में स्थित हो पुत्र को देते हैं ॥ ४६ ॥

शुभाशुभ योग—

चन्द्रो जीवोऽथ वा शुक्रः स्वोच्चगः सुतदः सुते ।
वक्री भौमः सुतस्थश्चेदुत्पन्नसुतनाशनः ॥ ४७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ।

जो वर्ष काल में चन्द्र, गुरु, अथवा शुक्र अपने उच्च राशि में प्राप्त होकर पंचम भाव में स्थित हों तो पुत्र को देते हैं तथा यदि वक्री मङ्गल पांचवें स्थान में हो तो उत्पन्न पुत्र को नाश करता है ॥ ४७ ॥

पुत्रप्राप्ति व पुत्रनाश योग—

पुत्राधिपो जन्मनि भार्गवोऽब्दे पुत्रे विलग्नाधिपतीत्थशाली ।
पुत्रप्रदो मन्दपदस्थपुत्रे पापाधिकारीक्षित आत्मजार्तिः ॥४८॥

अन्वयः—जन्मनि पुत्राधिपः भार्गवः अब्दे विलग्नाधिपतीत्थशाली पुत्रे पुत्रप्रदः, शेषं स्पष्टम् ॥ ४८ ॥

जन्मकाल में पंचम भाव का स्वामी शुक्र वर्ष के पंचम भाव में स्थित हो और वर्ष लग्नस्वामी के साथ इत्थशाल योग को करे तो पुत्र को देता है, तथा मन्द (शनि) का स्थान वर्ष में पांचवां हो और पंचाधिकारियों में स्थित पापग्रह देखता हो तो पुत्रों को पीड़ा होती है ॥ ४८ ॥

यद्राशिगो ग्रहः सूतौ स राशिस्तत्पदाभिधः ।
बलीजन्मोत्थसौख्याय वर्षे तद्दुःखदोऽन्यथा ॥ ४९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४९ ॥

जन्मकाल में जो ग्रह जिस राशि में स्थित हो वह राशि उस ग्रह का पद (स्थान) होता है, वह राशि वर्षकाल में उसी भाव को प्राप्त होकर यदि बलवान् होवे, तो जन्मकालीन उस भाव से उत्पन्न शुभ फलों का देने वाला होता है, अन्यथा अर्थात् वर्ष समय में उक्त स्थान में स्थित राशि यदि निर्बल हो तो उस भाव से उत्पन्न भया फल नष्ट हो जाता है ॥ ४९ ॥

इति पंचमभाव विचारः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठें भाव का विचार—

मन्देऽब्दपेऽनृजुगतौ पतिते रुगार्तिः
स्यात्सन्निपातभवभीररिगेऽत्र शूलम् ।
गुल्माक्षिरोगविषमज्वरभीर्गुरौ तु
पापार्दितेऽनिलरुजोपिकबूलशून्ये ॥ ५० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५० ॥

जो वर्षकाल में शनि वर्षस्वामी होकर वक्री व पापग्रहों से पीड़ित होता हुआ छठें स्थान में हो तो वह रोग से पीड़ित होता है और सन्निपात से उत्पन्न मरण समान क्लेश शूल, पीडा, उदररोग, नेत्ररोग, विषमज्वर इन रोगों से भय होता है, एवं बृहस्पति वर्षेश वक्री ग्रह व पापग्रहों से पीड़ित होता हुआ छठें भाव में स्थित हो और बृहस्पति चन्द्रमा के साथ कम्बूलयोग नहीं करे तो उसको वातविकार से उत्पन्न हुए रोग और कामला (कवल) रोग होता है ॥ ५० ॥

अन्य अशुभ फल—

स्यात्कामलाख्यरुगपीत्थमसृज्यसृग्भीः
पित्तं च रिष्फगरवौ दृशि शूलरोगः ।
पित्तं पुनारिपुगृहेऽत्र भृगौ नृभेऽरौ
श्लेष्माभयेक्षितयुतेऽपि कफोऽरिगेन्दौ ॥ ५१ ॥

अन्वयः—स्यात्कामलाख्यरुगपीति पूर्वेण सम्बन्धः इत्थममुना प्रकारेण असृजि असृग्भीः रवौपित्तं, रिःफगरवौ (तादृशरवौ द्वादशस्थे) दृशि शूलरोगः स्यात् । भृगो रिपुगृहे पुनः पितं यदा नृभे अरौ भयेक्षितयुते (षष्ठेशेन युतेक्षिते) श्लेष्मा, अरिगे इन्दौ कफः कफसम्बन्धी रोगः स्यात् ॥ ५१ ॥

मङ्गल वर्षेश होकर पापग्रहों से पीड़ित व वक्रगति वाला होता हुआ छठें भाव में स्थित हो तो रुधिर विकार से रोग उत्पन्न होता है, ऐसे ही जिसके सूर्य वर्ष का स्वामी होकर पापग्रहों से पीड़ित होता हुआ छठे भाव में स्थित हो तो पित्त से रोग उत्पन्न होता है अथवा बारहवें स्थान में उक्त स्वरूप से सूर्य स्थित हो तो नेत्रों में शूल होता है, तथा शुक्र वर्ष स्वामी होकर पापग्रहों से पीड़ित हो छठे भाव में स्थित हो और उसको छठे भाव का स्वामी देखता हो अथवा शुक्र छठें भाव के स्वामी से युक्त हो तो श्लेष्मा रोग होता है, एवं चन्द्रमा वर्षेश होकर छठे भाव में स्थित हो तो कफ सम्बन्धी रोग होता है ॥ ५१ ॥

बुध का फल—

एवं बुधे पापयुतेऽब्दपेऽरौ वातोत्थरोगो जनिलग्ननाथः ।
पापोऽब्दपेन क्षुतदृष्टिदृष्टो रोगप्रदो मृत्युकरः सपापः ॥ ५२ ॥

अन्वयः— एवं अब्दपे पापयुतेऽरौ तदा वातोत्थरोगः, जनिलग्ननाथः पापः अब्दपेन क्षुतदृष्टि दृष्टः रोगप्रदः तथा जनिलग्ननाथः पापः वर्षे सपापः अब्दपेन क्षुतदृष्टिदृष्टस्तदा मृत्युकरः ॥ ५२ ॥

इस प्रकार बुध वर्ष का स्वामी छठे घर में स्थित हो और वक्री ग्रह व पापग्रहों से युक्त हो तो वात से रोग उत्पन्न होता है जन्मकालीन लग्न का स्वामी पापग्रह हो वर्तमान वर्ष के स्वामी से क्षुतदृष्टि से देखा जाता हो तो वह रोग देने वाला होता है। जन्मकालीन लग्न का स्वामी पापग्रह हो वर्षकाल में पापग्रहों से युक्त हो और उसको वर्षस्वामी क्षुतदृष्टि से देखता हो तो वह मृत्यु को देने वाला होता है ॥ ५२ ॥

शनिकृत अरिष्ट योग—

सूत्यार्किभे लग्नगते रुक्षशीतोष्णरुग्भयम् ।
शनीक्षिते याप्यता स्यात्सपापे मृत्युमादिशेत् ॥ ५३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५३ ॥

जन्म समय शनैश्चर जिस राशि में स्थित हो वह राशि वर्ष समय लग्न में स्थित हो तो शरीर में रुखाई, जूड़ी, ज्वर आदि रोगों का भय होता है, शनैश्चर जन्म समय जिस राशि में हो वर्ष समय वही राशि उसका पद हुआ, यदि वर्षसमय शनि उस स्थान (पद) को देखे तो वैद्यक शास्त्र में प्रसिद्ध रोग की याप्य अवस्था होती है तथा जो शनि पापग्रहों से युक्त होकर जन्मकालीन पापयुक्त अपने पद को देखे तो वह प्राणी मृत्युवश ह कर यमालय को जाता है ॥ ५३ ॥

भौमकृत अरिष्ट योग—

एवं भौमे क्षुतदृशा रक्तपित्तरुजोऽग्निभीः ।
ततोऽन्ये बहुला रोगाः शुभदृष्टौ रुगल्पता ॥ ५४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५४ ॥

एवं मङ्गल जन्म समय जिस राशि में स्थित हो वह राशि यदि वर्षकाल में वर्ष लग्न हो और उसको मंगल क्षुत (१।४।७।१०) दृष्टि से देखता हो तो उसको रक्त, पित्त दोष से उत्पन्न रोग व अग्निभय, व अन्य बहुत रोग होते हैं, तथा उस लग्न राशि को शुभ ग्रह देखते हों तो उसके शरीर में थोड़े रोग होते हैं ॥ ५४ ॥

अन्य अरिष्ट योग—

लग्नाधिपाब्दपतिषष्ठपतीत्थशालो रोगप्रदः खचरधातुविकारतः स्यात् ।
कान्दर्पिकामयभयं पतिते सितेऽर्के स्थानेऽथ षष्ठ इह रुक्सहमं सपापम् ॥ ५५ ॥

अन्वयः—लग्नाधिपाब्दपतिषष्ठपतीत्थशालो खचरधातुविकारतः रोगप्रदः स्यात् । अथ सितस्थाने षष्ठेऽर्के सिते पतितस्थाने (स्थिते), रुक्सहमं सपापं तदा इहयोगे कांदर्पिकामयभयं स्यात् ॥ ५५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर्षकाल में वर्षलग्न स्वामी वर्षस्वामी और छठे स्थान का स्वामी इनका परस्पर इत्थशाल योग होवे अथवा दो का इत्थशाल हो तो इत्थशाल कारक ग्रह के धातु विकार से रोग उत्पन्न होता है, तथा जन्म समय शुक्र जिस राशि में हो वह राशि वर्ष-काल में छठे घर में हो उसमें सूर्य स्थित हो और छठें, आठवें बारहवें शुक्र हो तो वह मनुष्य काम से उन्मत्त होकर अयोग्य स्त्रियों से रमण करता हुआ हास्य भाव को प्राप्त होता है, यदि रोग सहम पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो भी वह प्राणी काम सम्बन्धी रोग से पीड़ित होकर व्याकुल होता है ॥ ५५ ॥

अन्य रोगोत्पत्ति योग—

सपापे गुरौ रन्ध्रगे लग्न आरे सतन्द्रास्तिमूर्च्छाङ्गनाशः सचन्द्रे ।
खलाः सूतिकेन्द्रेऽब्दलग्ने रुगाप्त्यै कफोद्व्यङ्घ्रिगैरीक्ष्यमाणे सिते स्यात् ५६

अन्वयः—स पापे गुरौ रन्धगे आरे लग्ने सतन्द्रामूर्छास्ति तथा स पापे गुरौ रंध्रस्थे स चन्द्रे आरे लग्ने अङ्गनाशः। सूतिकेन्द्रे खलाश्चेत् अब्दलग्ने रुगाप्त्यै, सितेकफोट्व्यंघ्रिगैः पापैः ईक्ष्यमाणे कफः (कफोत्पत्तिः) स्यात् ॥५६॥

जिसके वर्षकाल में पापयुक्त बृहस्पति वर्षलग्न से अष्टम स्थान में हो और मंगल वर्षलग्न में हो तो उसको आलस्य सहित मूर्छा होती है तथा चन्द्र युक्त मंगल लग्न में हो और पापयुक्त गुरु अष्टम भाव में हो तो उसके किसी अंग का नाश होता है तथा जन्मसमय केन्द्र में पापग्रह हों यदि वर्ष समय वे ही पापग्रह लग्न में हों तो उसको रोग करते हैं, और शुक्र को नर राशि में स्थित पापग्रह देखते हों तो कफ रोग को उत्पन्न करते है ॥ ५६ ॥

दिनेऽब्दप्रवेशो विलग्नेऽब्दसूत्योर्यदा दृक्कहद्दागृहाद्योऽधिकारः ।
रवेर्वा कुजस्यात्र पीडा ज्वरात् स्याद्दृशा सौम्यखेटोत्थयान्ते सुखाप्तिः ॥५७॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५७ ॥

जो दिन में वर्षप्रवेश हो और जन्मकाल वर्षकाल के लग्न में सूर्य वा मंगल का द्रेष्काण वा हद्दा वा स्वगृहादि अधिकार हो तो उस वर्ष में ज्वर पीड़ा होती है और लग्न में स्थित मंगल, सूर्य को शुभग्रह देखते हों तो वर्ष के अन्त में सुख की प्राप्ति होती है ॥ ५७ ॥

रोगनाश व रोगोत्पत्ति योग—

निशि सूतौ वर्द्धमाने चन्द्रे भौमेत्थशालतः ।
रुग्नश्येदेधते मन्देत्थशालाद्व्यत्ययोऽन्यथा ॥ ५८ ॥

अन्वयः—निशिसूतौ वर्धमाने चन्द्रे भौमेत्थशालतः रुग्नश्येत्, मन्देत्थ-शालतः रुग् एधते अन्यथा व्यत्ययः ॥ ५८ ॥

जिसका रात्रि में जन्म हो और शुक्लपक्ष का वर्द्धमान चन्द्रमा वर्षकाल में मंगल के साथ इत्थशाल योग को करता हो तो उसका रोग नाश होता है, तथा चन्द्रमा शनि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के साथ इत्थशाल करता हो तो रोग को बढ़ाता है, इससे विपरीत अर्थात् कृष्ण पक्ष में जन्म हो और चन्द्रमा वर्ष में मंगल से इत्थशाल करता हो तो रोग की वृद्धि हो शनि के साथ इत्थशाल करे तो रोग का नाश करे ॥ ५८ ॥

अन्य दो योग—

रवावीदृशि वित्केतुयुतेऽब्दंनिखिलं गदः ।
अधिकारी बली सूतावब्दे केतुज्ञयुक् तथा ॥ ५६ ॥

अन्वयः—ईदृशि रवौ वित्केतुयुते निखिलं अब्दं गदः, सूतौ अधिकारी वली अब्दे केतुज्ञयुक् तदापि निखिलं अब्दं गदः स्यात् ।

वर्ष में सूर्य केतु और बुध से युक्त होकर, मङ्गल के साथ इत्थशाल योग को करे तो वर्ष पर्यन्त रोग करता है, तथा जन्म काल में कोई ग्रह किसी अधिकार में हो अथवा अपने उच्चादि में हों के बलिष्ठ हो और यदि वर्षकाल में वही ग्रह केतु, बुध से, युक्त होवे तो वर्ष भर रोग को देता है ॥ ५६ ॥

शूलयोग—

चतुर्थेऽस्ते च मुथहा क्षुतदृष्ट्या शनीक्षिता ।
शूलपीड़ा पापखगैर्दृष्ठा तत्परिणामजा ॥ ६० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६० ॥

वर्षलग्न से चौथे और सातवें स्थान में मुथहा स्थित हो और शनैश्चर क्षुत दृष्टि से देखता हो तो शूलपीड़ा होवे और मुथहा को पापग्रह देखते हों तो शूलनाश होकर फिर शूलरोग हो जावे ॥ ६० ॥

ग्रहों के वश से पिटक (फोडा) आदि के योग

जन्मस्थजीवसितराशिगते महीजे
सूर्यांशुगे पिटकशीतलकादिमान्द्यम् ।
शीतोष्णगण्डभवरुक् स बुधे च सेन्दौ
कुष्ठं भगन्दररुजोऽपि सगण्डमालाः ॥ ६१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६१ ॥

जिसके जन्मकाल में बृहस्पति वा शुक्र की राशि में स्थित मंगल सूर्य के नवांश में हो तो उसके शरीर में छोटी २ फुन्सियाँ व शीतला आदि रोग और जूड़ी, बुखार, गण्ड रोग उत्पन्न होते हैं एवं जन्मसमय जिस राशि में गुरु वा शुक्र स्थित हों और वर्षप्रवेश समय उसी राशि में बुध चन्द्रमा हों तो उसको कुष्ठ, भगन्दर, गण्डमाला ये रोग होते हैं ॥ ६१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्य अनिष्ट योग—

जन्मलग्नेन्थिहानाथौ षष्ठौ पापान्वितेक्षितौ ।
निर्बलौ ज्वरपीडाङ्गवैकल्याददतिकष्टदौ ॥ ६२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६२ ॥

जन्मलग्नस्वामी और मुथहास्वामी ये दोनों वर्षलग्न से छठे स्थान में स्थित हों और पापग्रहों से युक्त दृष्ट हों तो ज्वर, अंगपीड़ा आदि अतिकष्टों को देनेवाले होते हैं ॥ ६२ ॥

रोगप्राप्ति और स्त्रीप्राप्ति योग—

मुन्थहालग्नतन्नाथाः पापान्तःस्थास्तु रोगदाः ।
षष्ठेशे षष्ठगे सौम्ये स्त्रियाः प्राप्तिरितीर्यते ॥ ६३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६३ ॥

जिसके वर्षकाल में मुंथा, वर्षलग्न तथा, वर्ष स्वामी, मुथहास्वामी, ये चारों पापग्रहों के मध्य मे स्थित हों तो रोग को देनेवाले होते हैं, और जो इनमें से कोई एक ही पापग्रह के मध्य में हों तो भी उसको रोग देता है तथा जिसके वर्ष समय छठे स्थान का स्वामी शुभग्रह होकर छठे स्थान में हो तो स्त्री की प्राप्ति होती है। यहां समरसिंह का मत है कि, छठे स्थान का स्वामी शुभग्रह होकर छठे भाव में स्थित हो तो भामिनी को रोग की प्राप्ति होती है ॥ ६३ ॥

रोग का स्थान—

रोगकर्ता यत्र राशावंशे स्यादनयोर्बली ।
तत्स्थानं तस्य रोगस्य वाच्यं राशिस्वरूपतः ॥ ६४ ॥
जन्मषष्ठाधिपे भौमे वर्षे षष्ठगते च रुक् ।
क्रूरेत्थशाले विपुलः शुभदृग्योगतस्तनुः ॥ ६५ ॥

अन्वयः—रोगकर्त्ता यत्र राशौ अंशे स्यात् अनयोर्यः वली तत्स्थानं तस्य रोगस्य राशिस्वरूपतः वाच्यं ॥ ६४ ॥

जन्मषष्ठादिपे भौमे वीर्ये षष्ठगते तदा रुक् भवति क्रूरेत्थशालेविंपुलः रुक्-शुभदृग्योगतः तनुअल्पो रुक् भवति ॥ ६५ ॥

पूर्वोक्त प्रकार से रोगकर्ता ग्रह जिस राशि-नवांश में हो उन राशि नवांशों के बीच जो राशि वली हो वह राशि उस रोग के राशिस्वरूप (वात पित्त कफ प्रयुक्त) करके उसका स्थान (घर) कहना चाहिये[1] ॥ ६४ ॥

---

[1] अथवा मेषादि बारह राशियों को क्रम से शिर, मुख, ऊर, हृदय, पेट, कटि, वस्ति [नाभि और इन्द्रिय का मध्य स्थान] इन्द्रिय, ऊरू, जानू, जङ्घा और दोनों चरण कल्पना करके उक्त रोगकर्त्ता ग्रह की राशि अंश में बलवान् राशि जिस अंग में पड़े उसी अंग में राशि के गुणानुसार तद्विषयक रोग कहे, यह मेरी सम्मति है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जन्म समय छठे भाव का स्वामी मङ्गल हो और वर्ष समय वही मंगल छठे स्थान में स्थित हो तो वह रोग करता है तथा पूर्वोक्त मङ्गल छठे भाव में स्थित होकर पाप ग्रहों के साथ इत्थशाल योग करता हो तो बड़ा भारी रोग करता है और जो उक्त मंगल को शुभग्रह देखते हों अथवा वह मंगल ही शुभ ग्रहों से युक्त हो तो थोड़ा रोग होता है ॥ ६५ ॥

इति षष्ठभावविचारः ॥

सप्तम भाव का विचार—

बली सितोऽब्दाधिपतिः स्मरस्थः स्त्रीपक्षतः सौख्यकरो विचिन्त्यः ।
ईज्येक्षितोऽत्यन्तसुखं कुजेनाधिकारिणा प्रीतिकरो मिथः स्यात् ॥ ६६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६६ ॥

वर्षकाल में बलवान् शुक्र वर्ष का स्वामी होकर सातवें भाव में स्थित हो तो उसको स्त्री पक्ष से सुख होता है तथा जो पूर्वोक्त शुक्र को गुरु देखे तो उसे बड़ा सुख देता है, और पञ्चाधिकारियों में से किसी अधिकार में स्थित होकर मंगल उक्त शुक्र को देखता हो तो परस्पर दोनों (पति–पत्नियों) में बहुत प्रीति होती है ॥ ६६ ॥

जारतायोग और विवाहयोग—

बुधेक्षिते जारता स्याल्लघ्व्यामन्देन वृद्धया ।
गुरुदृष्ट्या नवा भार्या सन्ततिस्त्वरितं ततः ॥ ६७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६७ ॥

जिसके वर्षकाल में शुक्र वर्ष का स्वामी होकर सातवें स्थान में स्थित हो और उसको बुध देखे तो वह थोड़ी उमरवाली स्त्री के साथ जारकर्म (व्यभिचार) करता है, और जो उस शुक्र को शनि देखता हो तो बूढ़ी स्त्री के साथ जारता (गुप्त मैथुन) होता है तथा जो उक्त शुक्र को बृहस्पति देखते हों तो उसका विवाह नवीन भार्या के साथ होता है, और उससे अति शीघ्र बालक उत्पन्न होता है[1] ॥ ६७ ॥

---

१ ऊपर के श्लोक में 'गुरुदृष्ट्या, ऐसा पाठ असंगत मालूम होता है, क्योंकि श्लोक ६६ में 'ईज्येक्षितोऽत्यन्तसुखं' ऐसा कह आये हैं। यहां यदि 'गुरुयुक्ते नवा भार्या' ऐसा पाठ हो तो संगत होता है जैसा कि जातक सार में बचन है—

'संयुक्ते सुरपूजिते नववधूप्राप्तिश्च सद्वंशतः' ताजिक सुधानिधावप्युक्तम्—

'गुरुयुतेऽपि च नूतनवल्लभा भवति तत्र च सन्ततिराशु वा' यही पाठ ग्रन्थकार को अभीष्ट था, और रहा भी होगा परन्तु लेखकाध्यापकाध्येतृ दोष से उपरोक्त पाठ हो गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्त्री सौख्य और विवाह योग—

जन्मलग्नाधिपेऽस्तस्थे दारसौख्यं बलान्विते ।
जन्मशुक्रर्क्षमस्तेऽब्दे स्त्रीलाभाय सितेऽब्दपे ॥ ६८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६८ ॥

जन्म लग्न का स्वामी बली होकर वर्षलग्न से सातवें स्थान में स्थित हो तो उसकी स्त्री को सुख होता है, तथा जन्म समय शुक्र जिस राशि में हो वह राशि वर्ष लग्न से सातवें हो और शुक्र वर्ष का स्वामी हो तो स्त्री की प्राप्ति होती है ॥ ६८ ॥

स्त्री लाभ और स्त्री कष्टयोग—

लग्नास्तनाथयोरित्थशाले स्त्रीलाभमादिशेत् ।
सहमेशो भावपो वा विनष्टः कष्टदः स्त्रियाः ॥ ६९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६९ ॥

वर्षलग्न स्वामी और सातवें घर का स्वामी इन दोनों का परस्पर इत्थशाल हो तो स्त्री लाभ योग कहना अर्थात् विवाह द्वारा स्त्री का लाभ होवे, और जो स्त्री सहम का स्वामी वा सातवें भाव का स्वामी विनष्ट (क्रूर ग्रहों के बीच वा क्रूरदृष्ट) हो तो स्त्री को कष्ट देने वाला होता है ॥ ६९ ॥

अस्याधिकस्त्रीसुखयोग—

नष्टेन्दौ शुक्रपदगे मैथुनं स्वल्पमादिशेत् ।
जन्मशुक्रर्क्षगो भौमः स्त्रीसुखोत्सवकृद्बली ॥ ७० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७० ॥

जो वर्ष समय शुक्रस्थित राशि में अर्थात् शुक्र के साथ क्षीण चन्द्रमा स्थित हो तो थोड़ा मैथुन करे, तथा जन्मसमय शुक्र जिस राशि पर हो उस राशि पर बली मंगल होवे तो स्त्री के सुखों के उत्सवों को करने वाला होता है ॥ ७० ॥

स्त्रीसुख सम्बन्धी चार योग—

जन्मास्तपेऽब्दपसितेन युगीक्षिते स्यात्स्त्रीसङ्गमो बहुविलाससुखप्रधानः ।
केन्द्रत्रिकोणगगुरौ जनिशुक्रभस्थे स्त्रीसौख्यमुक्तमिति हद्दविवाहयोश्च॥७१॥

अन्वयः—जन्मास्तपेऽब्दपसितेन युगीक्षिते स्त्रीप्रसंगमो बहुविलाससुखप्रधानः स्यात्, जनिशुक्रभस्थे केन्द्रत्रिकोणगगुरौ स्त्रीसौख्यमुक्तं, एवं हद्दविवाहयोश्च अर्थात् वर्षलग्ने यो हद्दास्वामी स जनिशुक्रभस्थे केन्द्रत्रिकोणगे तदापि स्त्रीप्राप्तिकरः एवं विवाहसहमं तत्स्वामी वा जनि शुक्रभस्थे केन्द्रत्रिकोणगे स्त्रीप्राप्तिकरः स्यात् ॥ ७१ ॥

जिसके वर्ष समय जन्मलग्न से सप्तम घर का स्वामी वर्षेश शुक्र से युक्त हो, अथवा दृष्ट होवे तो उसको बहुत विलासों और सुख-समूहों से स्त्री का समागम होता है तथा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जन्म समय शुक्रस्थित राशि में बृहस्पति होकर वर्ष में केन्द्र त्रिकोण में स्थित हो तो स्त्री सुख कहना, एवं वर्षकाल में हद्दा स्वामी जन्मकालीन शुक्रस्थित राशि में स्थित होकर केन्द्र त्रिकोण में हो तो स्त्रीसुख कहना, तथा विवाह सहम का स्वामी जन्मकालीन शुक्राधिष्ठित राशि में स्थित होकर वर्ष समय केन्द्र त्रिकोण में हो तो स्त्रीसुख कहना तथा विवाहसहम का स्वामी जन्मकालीन शुक्राधिष्ठित राशि में स्थित होकर वर्ष समय केन्द्र त्रिकोण स्थान में स्थित हो तो स्त्री सुख कहना ॥ ७१ ॥

स्त्रीक्लेश और विवाह योग—

अधिकारीपदस्थेऽर्के स्त्रीभ्यो व्याकुलतानिशम् ।
इन्थिहाधिकृतस्थाने गुरुदृष्ट्या विवाहकृत् ॥ ७२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७२ ॥

जिसके वर्षकाल में पञ्चाधिकारियों में से किसी अधिकारी ग्रह के स्थान में सूर्य स्थित हो तो उसको स्त्रियों को पाने की व्याकुलता होती है एवं मुन्थहा किसी अधिकारी के स्थान में स्थित हो और उसको बृहस्पति देखे तो विवाह को करने वाला होता है ७२

स्त्री के क्लेश योगों का वर्णन—

इन्थिहार्कारयुग्द्यूने क्रूरिते सहमे स्त्रियाः ।
स्त्रीपुत्रेभ्यो भवेत्कष्टं पापदृष्ट्या विशेषतः ॥ ७३ ॥

अन्वयः—इन्थिहार्कारयुग्द्यूने स्त्रीपुत्रेभ्यः कष्टं भवेत्, स्त्रियाः सहमे क्रूरिते तदापि स्त्रीपुत्रेभ्यः कष्टं, पाप दृष्ट्या विशेषतः कष्टं स्यात् ॥ ७३ ॥

वर्षकाल में वर्षलग्न से सातवें घर में सूर्य और मङ्गल से मुन्थहा युक्त हो तो स्त्री पुत्रों से कष्ट होता है तथा स्त्रीसहम पापग्रहों से युक्त हो वर्ष लग्न से सातवें घर में स्थित हो तो भी स्त्री व पुत्रों से कष्ट प्राप्त होता है और जो पापग्रह मुन्थहा को देखते हों तो विशेष करके स्त्री व पुत्रों से कष्ट होता है ॥ ७३ ॥

विवाह योग—

सूतौ द्यूनाधिपः शुक्रोऽब्देद्यूने बलवान्भवेत् ।
लग्नेशेनेत्थशालश्चेत्स्त्रीलाभं कुरुते ध्रुवम् ॥ ७४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७४ ॥

जन्म समय में सप्तम स्थान का स्वामी शुक्र वर्ष समय में बलवान् होकर सातवें घर में स्थित हो और वर्षलग्न स्वामी के साथ इत्थशाल योग तो उसको निश्चय स्त्रीलाभ को करता है ॥ ७४ ॥

स्त्री प्राप्ति के तीन योग—

भौमेब्दपे सितदृशा शुक्रेऽब्देशे कुजेक्षया ।
तद्दृष्टे दारसहमे स्त्रीलाभो भवति ध्रुवम् ॥ ७५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—भौमेऽब्दपे सितदृशा इत्येको योगः, शुक्रेऽब्देशे कुजेक्षया इति द्वितीयो योगः, दारसहमे तद्दृष्टे (शुक्रभौमाभ्यां) दृष्टे इत्यपरो योगः, योगत्रयेऽपि ध्रुवम् स्त्रीलाभो भवति ॥ ७५ ॥

यदि मङ्गल वर्ष स्वामी हो और उसको शुक्र देखता हो, तथा शुक्र वर्षस्वामी हो उसको मङ्गल देखता हो तथा स्त्रीसहम को मङ्गल व शुक्र देखते हों इन तीनों योगों में से कोई भी एक योग हो तो निश्चय स्त्री का लाभ होता है ॥ ७५ ॥

फिर विवाह के दो योग—

सूतौ वा दारसहमे तद्दृष्टं योषिदाप्यते ।
स्वामिदृष्टं स्त्रीसहमं शुक्रदृष्टं विवाहकृत् ॥ ७६ ॥

अन्वयः—सूतौ दारसहमे तद्दृष्टे (शुक्रभौमाभ्यां दृष्टं) योषिदाप्यते । स्त्रीसहमस्वामिशुक्राभ्यां च दृष्टं तदा विवाहकृद्भवति ॥ ७६ ॥

जिसके वर्षलग्न में स्त्रीसहम शुक्र और मंगल से देखा जाता हो तो उसको स्त्री की प्राप्ति होती है, तथा स्त्री सहम अपने स्वामी और शुक्र से देखा जाता हो तो वह विवाह का करने वाला होता है, और जो स्त्रीसहम का स्वामी अपने घर को देखता हो और उसी को शुक्र देखता हो तो अवश्य उसका विवाह होता है ॥ ७६ ॥

स्त्री सुख प्राप्तियोग—

सूतौ द्यूनाधिपे वर्षे सहमेशे स्त्रियाः सुखम् ।
जन्मास्तपेन्थिहानाथवर्षेशाः खे द्युने तथा ॥ ७७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७७ ॥

जिसके जन्मसमय सप्तम घर का स्वामी वर्षकाल में स्त्रीसहम का स्वामी हो तो उसको स्त्री से सुख प्राप्त होता है, तथा जन्मलग्न से सातवें भाव का स्वामी और वर्ष में मुंथहा स्वामी, वर्षस्वामी ये तीनों दशम स्थान में अथवा सातवें घर में हों तो भी उसको स्त्री से सुख की प्राप्ति होती है ॥ ७७ ॥

विदेश गमन योग—

मुंथहातो द्युनसंस्थः स्वगृहोच्चगतः शशी ।
विदेशगमनं कुर्यात् क्लेशः पापेक्षणाद्भवेत् ॥ ७८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७८ ॥

वर्षकाल में अपने घर व अपने उच्च में बैठा हुआ चन्द्रमा मुन्थहा से सातवें स्थान में स्थित हो तो विदेश गमन कराता है, यदि उक्त चन्द्रमा को पापग्रह देखते हों तो कष्ट होता है ॥ ७८ ॥

इति सप्तमभाव विचारः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अष्टम भाव का विचार—

भौमेऽब्दपे क्रूरहतेऽयसाघातो बलोज्झिते ।
अग्निभीरग्निभे क्रूरनराद्द्विपदभे मृतिः ॥ ७९ ॥
वियत्यवनिपामात्यरिपुतस्करजं भयम् ।
तुर्ये मातुः पितृव्याद्वा मातुलात्पितृतो गुरोः ॥ ८० ॥

अन्वयः—भौमेऽब्दपे क्रूरहते बलोज्झितेऽयसाघातः, भौमऽग्निभे अग्निभीः, द्विपदभे क्रूरनराद् मृतिः । एतादृशे भौमे वियति अवनिपामात्य-रिपुतस्करजं भयम् ज्ञेयमन्यत्स्पष्टम् ॥ ७९-८० ॥

वर्षकाल में मङ्गल वर्ष का स्वामी होता हुआ क्रूर ग्रहों से हत व निर्बल होकर जिस किसी घर में स्थित हो तो उसके अङ्ग में लोहे से घाव होता है, एवं मङ्गल अग्नितत्त्व (मेषसिंह धन) राशि में हो तो अग्नि से भय होता है तथा द्विपद (मिथुन कन्या धन का पूर्वार्द्ध) राशि में स्थित हो तो उग्रस्वभाववालों (चौरादिकों) से मृत्यु होवे, अर्थात् वह चौरादिकों से मारा जावे ॥ ७१ ॥ तथा मङ्गल वर्षेश हो और निर्बल तथा क्रूर ग्रहों से पीड़ित होकर दशम भाव में स्थित हो तो उसको राजा के मन्त्री, शत्रु और चौरों से भय कहना और जो पूर्वोक्त मङ्गल चतुर्थ स्थान में स्थित हो तो उसको माता, चाचा, मामा, पिता और गुरु इनसे भय होवे ॥ ८० ॥

महामृत्यु योग—

लग्नेन्थिहापतिसमापतयो मृतीशाश्चेदित्थशालिन इमे निधनप्रदाः स्युः ।
चेत्पाकरिष्टसमये मृतिरेव तत्र सार्के कुजे नृपभयं दिवसेऽब्दवेशे ॥ ८१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८१ ॥

वर्षलग्न का स्वामी, मुन्थहा का स्वामी और वर्षस्वामी ये तीनों आठवें भाव के स्वामी के साथ इत्थशाल योग करते होवे तो मृत्युयोग के करने वाले होते हैं, तथा यदि जन्मकालिक पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो मरण ही होता है, तथा दिन को वर्ष-प्रवेश हो और सूर्य के सहित मङ्गल हो तो राजभय होता है ॥ ८१ ॥

चार मृत्युयोग—

सूर्ये मूसरिफे सितेन जनने वर्षेऽधिकारी तथा
केन्द्रे राजगदाढ्यं च रुगसृक्स्थानेऽधिकारीन्दुजे ।
सौम्ये क्रूरदृशा कुजस्य रुगसृग्दोषोदिनांशुस्थिते
दग्धे बन्धमृती विदेशत इति प्राहुर्बुधे तादृशे ॥ ८२ ॥

अन्वयः—जनने सूर्ये सितेन मूसरिफे तथा वर्षे अधिकारी भूत्वा केन्द्रे तदा राजगदाढ्यम् इत्येको योगः । द्वितीयः—जनने असृक्स्थाने अधिकारी-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

न्दुजे रुक् स्यात्। तृतीयः—सौम्ये (अधिकारिणि सति) कुजस्य क्रूरदृशा (दृष्टे) अस्रृक् दोषात् रुजः स्यात्। चतुर्थो योगः—तादृशे बुधे अंशुस्थिते (कुजांशस्थिते) दग्धे विदेशत बन्धमृती इति बुधः प्राहुः ॥ ८२ ॥

जिसके जन्मसमय सूर्य शुक्र के साथ मूसरिफ योग करे और वर्ष समय पञ्चाधिकारियों में से किसी अधिकार में प्राप्त होकर केन्द्र १।४।७।१० में स्थित होवें, तो राजा से और रोग से भय होवे तथा जन्म समय जिस राशि में मङ्गल हो वर्ष में उस राशि पर बुध अधिकारी होकर स्थित हो तो रोग होता है, तथा बुध अधिकारी होकर मंगल का क्रूर दृष्टि से देखा जाता हो तो रुधिर विकार से रोग उत्पन्न होवे तथा पंचाधिकारी में बुध मंगल से देखा जाता हो अथवा युद्ध में मंगल से पराजित हो तो राजद्रोह में फँसकर बन्धन में पड़के मृत्यु पाता है ॥ ८२ ॥

रोग का योग—

भौमस्थानेऽधिकारीन्दौ गुप्तं नृपभयं रुजः।
मन्दोधिकारी खे लोहहतेः पीडाकरः स्मृतः ॥ ८३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८३ ॥

जन्म समय मंगल जिस राशि में हो उस राशि पर वर्ष समय अधिकारयुक्त चन्द्रमा स्थित हो तो गुप्त राजभय और रोग होता है, तथा जो शनैश्चर किसी (पंचाधिकारी) अधिकार में प्राप्त होकर वर्षलग्न से दशम स्थान में स्थित हो तो लोह के प्रहार से पीड़ा होती है ॥ ८३ ॥

अल्पमृत्युयोग—

भौमेऽष्टमे भयं वह्नेः प्रहारो वा नृपाद्भयम्।
आरे खस्थे चतुष्पाद्भयः पातो दुःखं रुजोऽसृजः ॥ ८४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८४ ॥

जिसके वर्ष समय वर्षलग्न से आठवें स्थान में मंगल स्थित हो उसको अग्नि से भय, हथियार से घाव और राजा से भय होता है। वर्षलग्न से दशम स्थान में मंगल स्थित हो तो किसी चौपाये घोड़ा आदि से गिर कर दुःख पाता है और रक्त विकार से रोग उत्पन्न होता है ॥ ८४ ॥

धननाश और विवादयोग—

वित्ताष्टगेज्यो धनहा यद्यब्देशोऽशुभेक्षितः।
मन्दे द्यूने दुर्वचनापवादकलिभर्त्सनम् ॥ ८५ ॥

अन्वयः—यदि अब्देशो ईज्यो वित्ताष्टगः अशुभेक्षितः तदा धनहा भवति शेषं स्पष्टम् ॥ ८५ ॥

यदि बृहस्पति वर्ष का स्वामी होकर दूसरे वा आठवें घर में स्थित हो और उसको पापग्रह देखते हों तो वह धन का नाश करने वाला होता है, तथा वर्षलग्न से सातवें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थान में शनि स्थित हो तो दुर्वचन, अपवाद, कलह और धिक्कार इन सबों को प्राप्त होता है ॥ ८५ ॥

महा अल्प मृत्यु—

पतिते ज्ञे क्रूरदृशारेत्थशाले मृतिं वदेत् ।
कुजहद्दास्थिते नाशः सौम्यदृष्ट्या शुभं भवेत् ॥ ८६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८६ ॥

जिसके वर्षकाल में बुध पतित होकर क्रूर दृष्टि से मंगल के साथ इत्थशाल योग को करे तो उसकी मृत्यु कह देवे, और जो उक्त बुध मंगल के हद्दा में स्थित हो तो द्रव्यादिकों का नाश होता है, यदि इन दोनों योग में बुध को शुभग्रह देखे तो शुभ कहना ॥ ८६ ॥

कलहयोग—

लग्नाधिपे नष्टदग्धे योषिद्वादोऽशुभान्विते ।
जन्मन्यष्टमगो जीवो नाधिकारी कलिः पृथुः ॥ ८७ ॥

अन्वयः—लग्नाधिपे नष्टदग्धेऽशुभान्विते योषिद्वादः शेषं स्पष्टम् ॥ ८७ ॥

जो वर्षकाल में लग्न का स्वामी नष्टबल होता हुआ दग्ध (अस्तंगत) होके पापग्रहों से युक्त हो तो अपनी स्त्री तथा अन्य स्त्रियों से कलह होता है, तथा जन्मकुण्डली में अष्टम स्थान में बृहस्पति हो वर्षकाल में पंचाधिकारियों में से किसी अधिकार में न हो तो बहुत कलह होवे ॥ ८७ ॥

जय और वाद योग—

जयः शुक्रेक्षणादुक्तः प्रत्युत्तरवशेन तु ।
भौमेऽन्त्यगे धने सूर्ये वादात्क्लेशं विनिर्दिशेत् ॥ ८८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८८ ॥

जिसके वर्षकाल में पूर्वोक्त बृहस्पति को शुक्र देखता हो तो स्त्रियों के झगड़े में प्रत्युत्तर के वश से उसका जय कहना तथा मंगल वर्षलग्न से बारहवें स्थान में स्थित हो और सूर्य दूसरे स्थान में स्थित हो तो लड़ाई (गाली आदि) से क्लेश की प्राप्ति होवे ऐसा कहना ॥ ८८ ॥

अन्य कलि व रोग योग—

रिपुगोत्रकलिर्भीतिः संख्ये कुजहतेऽब्दपे ।
दग्धो जन्माङ्गपो वर्षेऽष्टमो रोगकली दिशेत् ॥ ८९ ॥

अन्वयः—अब्दपे कुजहते रिपुगोत्रकलिः तथा संख्ये (संग्रामे) भीतिः । जन्माङ्गपो दग्धः वर्षे अष्टमो तदा रोगकली दिशेत् ॥ ८९ ॥

जिसके वर्षकाल में वर्ष का स्वामी मङ्गल से हत (पीड़ित) होवे, तो उसके शत्रुओं व कुटुम्बियों से कलह होता है और संग्राम में भय होता है, तथा जिसके जन्म-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लग्न का स्वामी वर्ष में अस्त होकर आठवें स्थान में स्थित हो तो उसको रोग और कलह के कारण पीड़ा देता है ॥ ८९ ॥

अन्य कलह योग—

सूत्यब्दयोरधिकृतो भौमस्थाने गुरुर्हतः ।
पापैर्वादः स्फुटोप्येवं तादृशीन्दौ शनेः पदे ॥ ९० ॥

अन्वयः—सूत्यब्दयोरधिकृतो गुरुः भौमस्थाने पापैर्हतः तदा (लोकैः) स्फुटो वादः स्यात् शेषं स्पष्टम् ॥ ९० ॥

जन्मकाल और वर्षकाल में बृहस्पति अधिकारी होकर जन्मकुण्डली में स्थित मङ्गल की राशि में स्थित हों और पापग्रहों से पीडित हो तो लोगों के साथ स्फुट (प्रगट) वाद होता है, तथा जन्मकाल और वर्षकाल में अधिकारी होकर चन्द्रमा जन्मसमय में शनि जिस राशि में हो उस राशि पर स्थित हो और पापग्रहों से हत हो तो प्रगट कलह होता है ॥ ९० ॥

विदेशगमनादि योग—

सूत्यब्दयोरधिकृते चन्द्रे बुधपदे हते ।
क्रूरैर्विदेशगमनं वादः स्याद्विमनस्कता ॥ ९१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९१ ॥

जिसके जन्मकाल और वर्षकाल में अधिकारी होकर चन्द्रमा जन्मसमय में बुध जिस राशि में स्थित हो उसी राशि पर वर्ष में भी स्थित हो और पापग्रहों से पीडित होवे तो वह मनुष्य विदेश गमन में अन्य जनों के साथ विवाद (झगड़ा) करने से दुष्ट स्वभाववाला हो जावे ॥ ९१ ॥

अन्य अल्पमृत्यु योग—

मेषे सिंहे धनुष्यारेऽब्दपे रन्ध्रेऽसितो भयम् ।
मृतौ मृतीशलग्नेशौ मृत्युदौ पापदृग्युतौ ॥ ९२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९२ ॥

जिसके वर्षकाल में मेष, सिंह और धन इन राशियों में से किसी राशि में मङ्गल स्थित हो, और वर्षस्वामी वर्षलग्न से आठवें स्थान में स्थित हो तो खड्ग से भय हो और जो मेष, धन, इन राशियों में से कोई राशि आठवें स्थान में हो, वहीं वर्षस्वामी होकर मङ्गल स्थित हो तो खड्ग से भय हो, तथा वर्ष लग्न से आठवें भाव का स्वामी और वर्षलग्न स्वामी आठवें हो, और पापग्रहों की दृष्टि हो वा पापग्रह युक्त हो तो मृत्यु को देते हैं ॥ ९२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सामान्य वर्षयोग—

यत्रर्क्षे जन्मनि कुजः सोऽब्दलग्नोपगो यदा ।
बुधो वर्षपतिर्नष्टबलस्तत्र न शोभनम् ॥ ९३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९३ ॥

जन्मसमय मङ्गल जिस राशि में हो वह राशि यदि वर्षलग्न में हो और वहाँ बुध वर्षेश व बलरहित होकर स्थित हो तो वर्षपर्यन्त अशुभ फल होवे ॥ ९३ ॥

वाहन से भय और गिरने का योग—

सार्के शनो भौमयुते खाष्टस्थे वाहनाद्भयम् ।
सार्के भौमेऽष्टमस्थे तु पतनं वाहनाद्वदेत् ॥ ९४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९४ ॥

जिसके वर्षकाल में सूर्य के साथ शनि मङ्गल युक्त होकर वर्षलग्न से आठवें व दसवें स्थान में स्थित हो तो वाहन (सवारी) से भय होता है, तथा सूर्यसहित मङ्गल वर्षलग्न से आठवें स्थान में स्थित हो तो सवारी से गिरने से पीड़ा होवे ॥ ९४ ॥

महामृत्यु योग—

सारेऽब्दपेऽष्टमे मृत्युश्चन्द्रेऽन्त्यारिमृतौ मृतिः ।
उदिते मृतिसद्मेशे निर्बले जीविते मृतिः ॥ ९५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९५ ॥

जिसके वर्षकाल में मङ्गल के साथ वर्ष का स्वामी वर्षलग्न से आठवें स्थान में स्थित हो तो मृत्यु करता है, एवं वर्ष लग्न से बारहवें, आठवें, छठें इन स्थानों में से किसी स्थान में चन्द्रमा स्थित हो तो भी मरण योग जानना तथा जो मृत्यु सहम का स्वामी उदय होकर बल से रहित होवे, तो उस जन्तु की मृत्यु होती है ॥ ९५ ॥

अन्य महामृत्युयोग—

पुण्यसद्मेश्वरः पुण्यसहमादष्टमो यदा ।
मृत्यष्टमेशः पुण्यस्थो मृतिदः पापदृग्युतः ॥ ९६ ॥
मृत्यष्टमगतो राशिः पुण्यसद्मनि नाथयुक् ।
अब्दलग्नादष्टमर्क्षे चेदित्थं स्यान्मृतिस्तदा ॥ ९७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९६-९७ ॥

पुण्यसहम का स्वामी पुण्यसहम से अष्टम स्थान में हो और पापग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो मरण होता है, तथा जन्मकाल में आठवें स्थान का स्वामी वर्षसमय पुण्यसहम में स्थित हो और पापदृष्ट वा युक्त हो तो मृत्यु को देनेवाला जानना ॥ ९६ ॥ जन्मसमय लग्न से आठवीं राशि पुण्यसहम में स्थित होकर जो अपने स्वामी से युक्त हो तो मृत्यु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होती है इसी प्रकार वर्षलग्न से अष्टम राशि पुण्यसहम में स्थित होकर अपने स्वामी से युक्त हो तो मृत्यु होती है ॥ ९७ ॥

पुण्यसद्माशुभाक्रान्तं मृतीशोऽन्त्यारिरन्ध्रगः ।
मुन्थेहेशोऽब्दपो वापि मृत्युं तत्र विनिर्दिशेत् ॥ ९८ ॥
सक्रूरे जन्मपे मृत्यौ मृतिश्चेदिन्थिहार्कियुक् ।
भौमक्षुतेक्षणात्तत्र मृत्युः स्यादात्मघाततः ॥ ९९ ॥

अन्वयः—पुण्यसद्म अशुभाक्रान्तं मृतीशो अन्त्यारिरन्ध्रगः तदा मृत्युं वदेत्। मुन्थहेशोऽब्दपो वा तत्र तथैव (अशुभाक्रान्तः अन्त्यारिरन्ध्रगः) तदा मृत्युं विनिर्दिशेत्। जन्मपे सक्रूरे मृत्यौ मृतिः । चेदिन्थिहार्कियुक् भौमक्षुतेक्षणात्तत्र आत्मघाततः मृत्युः स्यात् ॥ ९८–९९ ॥

जिसके वर्षकाल में पुण्यसहम पापग्रहों से युक्त हो और यदि आठवें स्थान का स्वामी बारहवें, छठें, आठवें इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित हो तो मृत्यु कहना, तथा मुन्थहा का स्वामी और वर्ष का स्वामी पापग्रह से युक्त होकर बारहवें, छठें और आठवें इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित हो तो उसके मृत्यु को कह देवे ॥ ९८ ॥ वर्षकाल में जन्मलग्न का स्वामी पापग्रह से युक्त होकर आठवें स्थान में स्थित हो तो मृत्यु होती है, तथा जिस किसी स्थान में शनैश्चर से युक्त होकर स्थित हो और उसको मङ्गल क्षुत् (१।४।७।१०) स्थान की दृष्टि से देखता हो तो इस योग में आत्मघात से मृत्यु कहना ॥ ९९ ॥

मन्दोऽष्टमे मृतीशेत्थशालान्मृत्युकरः स्मृतः ।
शुभेत्थशालात्सर्वेऽपि योगा नाशुभदायकाः ॥ १०० ॥
सूतिरन्ध्रपतिर्मन्दोऽष्टमोऽब्दे लग्नपेन चेत् ।
इत्थशाली क्रूरदृशा तत्काले मृत्युदायकः ॥ १०१ ॥

अन्वयः – स्पष्टम् ॥ १००–१०१ ॥

वर्षकाल में शनैश्चर आठवें स्थान में स्थित होके आठवें स्थान के स्वामी के साथ इत्थशाल योग करे तो मृत्युकारक होता है, तथा पूर्वोक्त सम्पूर्ण मृत्युयोगों में अरिष्टकारक ग्रहों का शुभ ग्रहों के साथ इत्थशाल योग होवे तो अरिष्टकारक ग्रह अशुभ फल के देने वाले नहीं होते हैं, किन्तु शुभ फल को देते हैं ॥१००॥ जन्मसमय अष्टम स्थान का स्वामी शनैश्चर वर्षकाल के आठवें स्थान में स्थित होता हुआ वर्षलग्नस्वामी के साथ क्रूरदृष्टि (१।४।७।१०) से इत्थशाल योग को करता हो तो तत्काल मृत्यु को देने वाला होता है ॥ १०१ ॥

इति अष्टमभाव विचारः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवम भाव का विचार—

यात्रा करने में लाभयोग—

भौमेऽब्दपे त्रिनवगे क्रूरायुक्ते बलान्विते ।
गुणावहस्तदा मार्गश्चरं कार्यं स्थिरं ततः ॥ १०२ ॥
त्रिधर्मस्थोऽब्दपः सूर्यः कम्बूलो मार्गसौख्यदः ।
अन्यप्रेषणयानं स्यात्स चेन्नाधिकृतो भवेत् ॥ १०३ ॥

अन्वयः—भौमेऽब्दपे त्रिनवगे क्रूरायुक्ते बलान्विते तदा मार्गः गुणावहः चरं कार्यं ततः स्थिरं भवति । अब्दपः सूर्यः कम्बूली सन् त्रिधर्मस्थः मार्गं सौख्यदः, स चेन्नाधिकृतो भवेत्तदा अन्यप्रेषणयानं स्यात् ॥ १०२-१०३ ॥

जिसके वर्षकाल में मंगल वर्ष का स्वामी होता हुआ पापग्रहों के योग से रहित व बल से युक्त होकर वर्षलग्न से तीसरे अथवा नवें स्थान में स्थित हो तो उसको मार्ग चलने से लाभ आदि कराने वाला होता है और शीघ्र होने वाला कार्य भी विलम्ब से होता है ॥१०२॥ जो वर्ष का स्वामी सूर्य कम्बूलयोग को करता हुआ वर्षलग्न से तीसरे व नवें स्थान में स्थित हो तो यात्रा में सुख का देने वाला होता है, और यदि वह (सूर्य) पंचाधिकारियों में से किसी अधिकार में न हो तो किसी के भेजने से गमन होता है ॥ १०३ ॥

अन्यगमन योग तथा चिन्तित यात्रायोग—

शुक्रेऽब्दपे त्रिनवगे मार्गे सौख्यं विलोमगे ।
अस्ते वा कुगतिः सौम्ये देवयात्रा तथाविधे ॥ १०४ ॥
क्रूरार्दिते कुयानं स्याद्गुरावेवं विचिन्तयेत् ।
इत्थशाले लग्नधर्मपत्योर्यात्रास्त्यचिन्तिता ॥ १०५ ॥

अन्वयः—शुक्रेऽब्दे त्रिनवगे मार्गे सौख्यं, एवं शुक्रेऽब्दपे विलोमगे (वक्रिणि) अस्ते वा कुगतिः स्यात् तथाविधे सौम्ये (बुधेऽब्दपे त्रिनवगे) देवयात्रा स्यात् । एतादृशे शुक्रे बुधे क्रूरार्दिते कुयानं स्यात्, गुरौ देवयात्रां विचिन्तयेत् लग्नधर्मपत्योः इत्थशाले सति अचिन्तिता यात्रा स्यात् ॥१०५॥

जो शुक्र वर्ष का स्वामी होता हुआ वर्षलग्न से तीसरे नवें घर में स्थित हो तो उसको मार्ग में सुख होता है, और जो पूर्वोक्त शुक्र वक्री हो अथवा सूर्य के सान्निध्यवश अस्त हो जावे तो उसका कुत्सित (बुरा) गमन होता है, अर्थात् यात्रा करने में कार्य-लाभ नहीं होता तथा वर्षेश बुध बलवान् हो और वर्षलग्न से तीसरे या नवें स्थान में स्थित हो तो किसी देवता के उद्देश्य से गमन होता है । यही तीर्थयात्रा का उपलक्षण जानना ॥ १०४ ॥ जो वह शुक्र, बुध, पापग्रहों से पीड़ित वा युक्त हो तो यात्रा कुत्सित (अच्छा नहीं) कहना, एवं बृहस्पति वर्षेश बली होकर वर्षलग्न से तीसरे नवें स्थान में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थित हो तो देवयात्रा हो और जो गुरु वर्षेश पापपीडित वा पापयुक्त हो तो कुयान (नेष्टगमन) होता है, तथा वर्षलग्न स्वामी के साथ नवमभाव स्वामी का इत्थशाल योग होवे तो अचिन्तित (नहीं स्मरण की हुई) यात्रा होती है ॥ १०४-१०५ ॥

चिन्तितयात्रा योग—

लग्नेशो धर्मपं यच्छन्स्वं महश्चिन्तिताध्वदः ।
एवं लग्नाब्दपोर्योगे मुंथहाङ्गपयोरपि ॥ १०६ ॥

अन्वयः—लग्नेशः स्वंमहः धर्मपं यच्छन् तदा चिन्तितान्ध्वदः स्यादन्यत् स्पष्टम् ॥ १०६ ॥

जो वर्षलग्न का स्वामी नवमभाव स्वामी के साथ इत्थशाल योग करे तो वह चिन्तित गमन को देता है, एवं वर्षलग्नस्वामी वर्षेश के साथ योग करे तथा मुंथहा स्वामी, वर्षलग्नस्वामी के साथ मुथशिल योग करे तो भी चिन्तित गमन को देता है ॥ १०६ ॥

समीचीन यात्रायोग—

गुरुस्थाने कुजे धर्मे सद्यात्रा भृत्यवित्तदा ।
ज्ञस्थाने लग्नपो भौमो दृष्टः सद्यानसौख्यदः ॥ १०७ ॥
स्वस्थानगो वा बलवांल्लग्नदर्शी सुयानदः ।
जन्माधिकारी ज्ञो मन्दस्थाने क्रूरयुतो यदा ॥ १०८ ॥
पन्था रिपोर्ज्ञकटकाद् गुरुरध्वेन्दुजीवयोः ।
धर्मे शनिर्नाधिकारी पन्थानमशुभं वदेत् ॥ १०९ ॥

अन्वयः—गुरुस्थाने कुजे धर्मे सद्यात्रा भृत्यवित्तदा, ज्ञस्थाने भौमे लग्नपो दृष्टः सद्यानसौख्यदः । अथवा भौमः स्वस्थानगः बलवान् लग्नदर्शी तदा सुयानदः, यदा जन्माधिकारी ज्ञः मन्दस्थाने (वर्षेनवमगे) क्रूरयुतः तदा रिपोर्ज्ञकटकाद् पन्था स्यात् । एवं इन्दुजीवयोः गुरुः अध्वा स्यात् नाधिकारी शनिः धर्मे पन्थानं अशुभं वदेत् ॥ १०७-१०९ ॥

जन्मकाल में बृहस्पति जिस राशि में स्थित हो उसी राशि में वर्षसमय मंगल नवम स्थान में स्थित हो तो समीचीन यात्रा हो यात्रा में सेवक और धन की प्राप्ति होती है, तथा जन्मसमय बुध जिस राशि में हो उस राशि में वर्षसमय मंगल स्थित हो और उसको वर्षलग्नस्वामी देखता हो तो उत्तम सवारी तथा सौख्य का देनेवाला होता है ॥ १०७ ॥ जन्मकाल में मंगल अपने स्थान (मेष वा वृश्चिक) में स्थित हो वर्ष-काल में भी अपनी राशि पर बली होकर लग्न को देखता हो और नवम घर में स्थित हो तो यात्रा उत्तम सवारी को देती है । जन्मकाल में बुध अधिकारी होकर जन्मकालिक शनिस्थित राशि में होकर वर्षसमय नवम स्थान में स्थित हो और पापग्रह से युक्त हो ॥ १०८ ॥ तो शत्रु के साथ कलह के प्रसङ्ग से मार्गगमन होता है, एवं चन्द्रमा,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बृहस्पति जन्म समय का अधिकारी होकर जन्मकालीन शनिस्थित राशि को प्राप्त होकर वर्षसमय नवम स्थान में पापग्रहों से युक्त हो तो शत्रु के साथ कलह से बहुत बड़ी यात्रा होती है यदि वर्षकाल में शनि पञ्चाधिकारियों से रहित होकर नवम स्थान में स्थित हो तो अशुभ यात्रा होती है ॥ १०९ ॥

दूर यात्रा योग—

इत्थं गुरौ दूरयात्रा नृपसङ्गस्ततो गुणः ।
कुजेऽब्दपे नष्टबले स्वजनाद् दूरतो गतिः ॥ ११० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११० ॥

इस प्रकार वर्षकाल में बृहस्पति पञ्चाधिकारियों में अधिकाररहित होकर नवम स्थान में स्थित हो तो दूर गमन होता है, तथा यात्रा में किसी राजा के सङ्ग से द्रव्य प्राप्त होता है तथा मङ्गल वर्ष का स्वामी होता हुआ पञ्चवर्गी के उत्तम बल से नष्टबल होकर वर्ष-लग्न से नवम स्थान में स्थित हो तो अपने कुटुम्ब से दूर गमन होता है ॥ ११० ॥

प्रबल विदेशयात्रा योग—

द्यूनेन्थिहा धर्म इन्दौ सबलेऽध्वा विदेशगः ।
वर्षेशो बलवान्पापायुतः केन्द्रेऽधिकारवान् ॥ १११ ॥
अधिकारे गतिः सङ्ख्ये सेनापत्येऽपि वा वदेत् ।
एवं बुधे कुजे जीवयुतेऽर्कान्निर्गते पुनः ॥ ११२ ॥
परसैन्योपरिगतिर्जयः ख्यातिसुखावहः ।
जीवान्नवमगे भौमे शुभा यात्रा नृणां भवेत् ॥ ११३ ॥

अन्वयः—द्यूने इन्थिहा सबले इन्दौ धर्मे विदेशगः अध्वा भवति, वर्षेशो बलवान् पापायुतः अधिकारवान् केन्द्रे तदा अधिकारे गतिः संख्ये सेनापत्य-मपि वा वदेत्, एवं बुधे कुजे वा अर्कान्निर्गते जीवयुते सति परसैन्योपरि गतिर्जयः ख्यातिसुखावहः स्यात्, जीवात् नवमगे भौमे नृणां यात्रा शुभा भवेत् ॥ १११—११३ ॥

जिसके सातवें स्थान में मुन्थहा और नववें स्थान में बलसहित चन्द्रमा हो तो विदेश में लाभकारक मार्ग जानना, तथा वर्ष का स्वामी बली व पापग्रहों के योग से रहित पञ्चधिकारियों के बीच अधिकारी होकर केन्द्र १ । ४ । ७ । १० स्थान में स्थित हो ॥ १११ ॥ उसका किसी अधिकार में गमन अथवा रणभूमि के स्वामित्व में गमन होता है, इसी प्रकार बुध और मङ्गल बलिष्ठ व उदित व बृहस्पति से युक्त होकर केन्द्र में स्थित हो तो ॥ ११२ ॥ पर सेना के ऊपर गमन (धावा करना) होता है, कि जिससे वह मनुष्य जय, ख्याति (प्रसिद्ध) और सुख को प्राप्त होता है, वर्षकाल में बृहस्पति से नवम स्थान में मङ्गल स्थित हो तो मनुष्यों को शुभ यात्रा होती है ॥११३॥

इति नवमभावविचारः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशमभाव का विचार।

राज्य धन सुख आदि लाभ योग—

सबलेऽब्दपतौ खस्थे राज्यार्थसुखकीर्तयः।
स्थानान्तराप्तिरन्यस्मिन्केन्द्रे गृहसुखाप्तयः॥ ११४॥
इत्थं बली रविर्भूस्थः पूर्वार्जितपदाप्तिकृत्।
एकादशेऽस्मिन्सख्यं स्यान्नृपामात्यगणोत्तमैः॥ ११५॥

अन्वयः—सबलेऽब्दपतौ खस्थे राज्यार्थसुखकीर्तयः, अन्यस्मिन्केन्द्रे स्थानान्तराप्तिः गृहसुखाप्तयश्च भवन्ति। इत्थं रविर्भूस्थः पूर्वार्जितपदाप्तिकृत्, अस्मिन् एकादशे नृपामात्यगणोत्तमैः सख्यम् स्यात्॥ ११४—११ ॥

जो बलसहित वर्ष का स्वामी दशम स्थान में स्थित हो तो राज्य, धन, सुख और कीर्ति सब प्राप्त होते हैं, तथा बलवान् वर्षेश दशम को छोड़ अन्य केन्द्र १।४।७ १० में स्थित हो तो दूसरे स्थान की प्राप्ति, गृहसुख आदि की प्राप्ति होती है॥ ११४॥ इसी प्रकार बलवान् सूर्य का स्वामी होकर वर्षलग्न से चौथे स्थान में स्थित हो तो वह पूर्व कमाये हुये पद (स्थान) की प्राप्ति का करनेवाला होता है, तथा ऐसा सूर्य जो वर्षलग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो वह राजा और उत्तम मन्त्रीगणों से मित्रता करता है॥ ११५॥

राज्यप्राप्तियोग और राजा से बन्धनयोग—

रविस्थानेन्थिहा लग्ने खे वा राज्याप्तिसौख्यदा।
नीचेऽर्कः पापसंयुक्तो भूपाद्बन्धवधं दिशेत्॥ ११६॥

अन्वयः—स्पष्टम्॥ ११६॥

जन्म समय में सूर्य जिस राशि में हो उसी राशि में मुन्था होकर वर्षलग्न वा दशम स्थान में हो तो राज्य की प्राप्ति और सुख देता है। तथा सूर्य नीच राशि (तुला) में पापग्रहों से युक्त होकर वर्षलग्न से दशम स्थान में स्थित हो तो राजा की आज्ञा से उस मनुष्य का बन्धन और वध (मरण) कहे॥ ११६॥

अन्य स्थानप्राप्तियोग—

सिंहे रविर्बली खस्थः स्थानलाभो नृपाश्रयः।
स्थानान्तराधिकाराप्तिरिन्दुरारपदे बली॥ ११७॥

अन्वयः—स्पष्टम्॥ ११७॥

जन्म समय सूर्य सिंह राशि में हो और वर्षकाल में सिंह राशि में बलवान् सूर्य दशम स्थान में स्थित हो तो राजा की आज्ञा से उस मनुष्य को स्थानलाभ होवे, और राजा का आश्रय हो, तथा जन्म समय मङ्गल जिस राशि में हो यदि वर्ष में उसी राशि पर बलयुक्त होकर चन्द्रमा स्थित हो तो दूसरे स्थान के अधिकार की प्राप्ति होती है॥ ११७॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूसरे राज्यप्राप्ति योग—

खेशलग्नेशवर्षेशेत्थशाली राज्यदायकः ।
वर्षेशे राज्यसहमेऽर्केत्थशाले महानृपः ॥ ११८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११८ ॥

जो वर्षकाल में दशम भाव का स्वामी, वर्षलग्न स्वामी और वर्षेश इन तीनों का इत्थशाल योग होवे तो राज्य का देनेवाला होता है, तथा वर्षेश राज्य सहम में स्थित हो और सूर्य के साथ इत्थशाल योग को करे तो बड़ा भारी राजा होने का योग जानना ॥ ११८ ॥

द्रव्यनाशयोग—

शनिस्थाने कुजः पश्यन्मुन्थहां पापकर्मतः ।
नृपभीतिं वित्तनाशं दद्याद्दशमगो यदि ॥ ११९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११९ ॥

जिसके जन्म समय शनिस्थित राशि पर वर्षलग्न से दशम घर में मङ्गल स्थित हो और मुन्थहा को देखता हो तो उस मनुष्य को पापकर्म से राजभय और धन नाश को देता है ॥ ११९ ॥

पाप और पुण्यवृद्धि के योग—

ईदृशे त्रिनवस्थेऽस्मिन्दग्धे नष्टेऽघसञ्चयः ।
मन्दोऽब्दपोऽधिकारी त्रिधर्मगोधर्मवृद्धिदः ॥ १२० ॥

अन्वयः—ईदृशे भौमे त्रिनवस्थे अस्मिन् दग्धे नष्टे सति अघसंचयः स्यात् । शेषं स्पष्टम् ॥ १२० ॥

पूर्वोक्त मङ्गल तीसरे या नवम स्थान में बैठा हो और अस्तगत हो वा निर्बल हो तो पाप का संचय (पाप की वृद्धि) होती है । तथा शनि वर्ष का स्वामी और अधिकारी होकर वर्षलग्न से तीसरे व नवें स्थान में स्थित हो तो धर्म की वृद्धि होवे, जिससे कि सुख प्राप्त होता है ॥ १२० ॥

दुष्टयोग—

तस्मिन्दग्धे विनष्टे च पापकृद्धर्मनिन्दकः ।
ईदृशीदृक्फलं सूर्ये गुरावित्थं नयार्थभाक् ॥ १२१ ॥

अन्वयः—तस्मिन् (अब्दपे शनौ) दग्धे विनष्टे च पापकृद्धर्मनिन्दक स्यात्, ईदृशि सूर्ये ईदृक् फलं स्यात्, इत्थं गुरौ नयार्थभाक् भवति ॥१२१॥

जिसके वर्षकाल में शनैश्चर वर्ष का स्वामी होकर अधिकारी वा दग्ध (अस्तङ्गत) व बलरहित होकर वर्षलग्न से तीसरे व नववें स्थान में स्थित हो तो वह मनुष्य पापी व धर्मनिन्दक होता है । तथा सूर्य वर्ष का स्वामी होके अधिकारी अस्तङ्गत व हीनबल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता हुआ वर्षलग्न से तीसरे वा नवें स्थान में स्थित हो तो भी पूर्वोक्त फल कहना। वर्षसमय में बृहस्पति वर्ष का स्वामी होके अधिकारी वा दग्ध बलरहित होता हुआ वर्षलग्न से तीसरे वा नवमें स्थित हो तो वह पुरुष नीतिमार्ग से द्रव्य को पाता है ॥१२१॥

मुन्थहा सम्बन्धी शुभाशुभ फल—

तत्रस्था मुन्थहा पुण्यागमं पापं खलाश्रयात् ।
सूतौ खेशे रवौ खस्थे वर्षे मुथशिलं यदि ॥ १२२ ॥
लग्नाधिपेन राज्याप्तिरुक्ता वीर्यानुमानतः ।
धर्मकर्माधिपौ दग्धौ धर्मराज्यक्षयावहौ ॥ १२३ ॥

अन्वयः—तत्रस्था मुथहा पुण्यागमं करोति खलाश्रयात् पापं, सूतौ खेशे रवौ वर्षे खस्थे यदि लग्नाधिपेन मुथशिलं तदा वीर्यानुमानतः राज्याप्तिः उक्ता, धर्मकर्माधिपौ दग्धौ धर्मराज्यक्षयावहौ भवतः ॥ १२२–१२३ ॥

जिसके वर्षकाल में वर्षलग्न से तीसरे वा नववें घर में मुन्थहा हो तो उसको पुण्य का लाभ हो और जो उक्त मुन्था को पापग्रह देखते हो वा पापग्रहों से संयुक्त हो तो पाप का लाभ होता है तथा जन्मलग्न से दशम घर का स्वामी सूर्य वर्षसमय में दशम घर में स्थित हो और वर्षलग्न स्वामी के साथ यदि इत्थशाल योग होवे ॥ १२२ ॥ तो उसके बलानुसार (सूर्य के विश्वात्मक बल प्रमाण) से राज्य की प्राप्ति होवे, ऐसा आचार्यों ने कहा है, धर्म और कर्म भाव के स्वामी अस्त होवे तो धर्म और राज्य का नाश करते हैं अर्थात् धर्मभाव का स्वामी धर्मक्षय दशम भाव का स्वामी राज्यक्षय करता है ॥ १२२–१२३ ॥

इति दशमभावविचारः ॥

एकादशभाव का विचार ।

लाभयोग—

अब्दपे ज्ञेऽर्थगे लाभो वाणिज्याच्छुभदृग्युते ।
सेन्थिहेऽस्मिन् लग्नगते लाभः पठनलेखनात् ॥ १२४ ॥

अन्वयः—अब्दपे ज्ञे अर्थगे शुभदृग्युते वाणिज्याल्लाभः, अस्मिन् (तादृशे बुधे) सेन्थिहा पठनलेखनाल्लाभः स्यात् ॥ १२४ ॥

जिसके वर्षकाल में वर्ष का स्वामी बुध वर्षलग्न से धनस्थान में स्थित हो और उसको शुभग्रह देखते हों अथवा शुभग्रहों से युक्त हो तो उसको वाणिज्य (व्यापारकर्म) से लाभ होता है, तथा वर्षस्वामी बुध शुभग्रहों से युक्त दृष्ट होकर मुन्थहासहित वर्षलग्न में स्थित हो तो लिखने पढ़ने से लाभ होता है ॥ १२४ ॥

अस्मिन्षष्ठाष्टान्त्यगते सक्रूरे नीचकर्मकृत् ।
क्रूरेक्षणे न वा लाभोऽस्तङ्गते लिखनादितः ॥ १२५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—अस्मिन् (एतादृशे बुधे) सक्रूरे षष्ठाष्टान्त्यगते नीचकर्म कृद्भवति, एतादृशे बुधे क्रूरेक्षणे न लाभः अथवा अस्तंगते सति लिखनादितः लाभो न स्यात् ॥ १२५ ॥

पूर्वोक्त वर्षस्वामी बुध लग्न से छठें, आठवें, इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित हो और पापग्रहों से युक्त हो तो वह पुरुष नीच कर्म करने वाला होवे, अथवा पूर्वोक्त बुध वर्षेश होके छठे, आठवें, ग्यारहवें स्थान में स्थित हुआ पापग्रहों से देखा जाता हो वा अस्तङ्गत हो तो लिखने पढ़ने से लाभ न हो ऐसा कहना ॥ १२५ ॥

शुभाशुभ योग—

जीवेऽब्दपे क्रूरहते लग्ने हानिर्भयं नृपात् ।
अस्मिन्नधिकृते द्यूने व्यवहाराद्धनाप्तयः ॥ १२६ ॥

अन्वयः—जीवेऽब्दपे क्रूरहते लग्ने हानिः नृपात् भयं च शेषं स्पष्टम् ।१२६।

जो बृहस्पति वर्षेश हो और पापग्रहों से पीड़ित होके वर्षलग्न में स्थित हो तो द्रव्य की हानि और राजा से भय होता है तथा बृहस्पति वर्षेश उच्चाधिकार आदि को प्राप्त होके वर्षलग्न से सातवें घर में स्थित हो तो वाणिज्य से धन का लाभ होता है ॥१२६॥

धनप्राप्ति योग—

लग्नायेशेत्थशाले स्याल्लाभः स्वजनगौरवम् ।
सर्वेऽपि लाभे वित्ताप्त्यै सबला निर्बला न तु ॥ १२७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १२७ ॥

जिसके वर्षकाल में लग्नस्वामी और लाभस्वामी इन दोनों का परस्पर इत्थशाल योग होवे तो उस मनुष्य को लाभ और अपने जनों में गौरव (बड़ाई) होती है, तथा यदि सम्पूर्ण ग्रह बली होकर लाभस्थान में स्थित हों तो द्रव्य प्राप्त होता है और जो सम्पूर्ण ग्रह बलहीन होकर लाभ घर में स्थित हों तो द्रव्य-प्राप्ति नहीं होती है ॥ १२७ ॥

गड़े हुये द्रव्य के प्राप्ति का योग—

सवीर्यो ज्ञः समुथहो लग्नेऽर्थसहमे शुभाः ।
तदा निखातद्रव्यस्य लाभः पापदृशा न तु ॥ १२८ ॥

अन्वयः—सवीर्यो ज्ञः समुथहो लग्ने अर्थसहमे शुभाः तदा निखातद्रव्यस्य लाभः स्यात्, पापदृशा न लाभः स्यात् ॥ १२८ ॥

जिसके वर्षकाल में बलवान् मुन्थहासहित बुध वर्षलग्न में स्थित हो और शुभग्रह द्रव्यसह्म में स्थित हों तो उस वर्ष में गड़े हुये द्रव्य का लाभ होता है, और उक्त योग पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो गड़े हुए द्रव्य का लाभ कदापि नहीं होता है ॥ १२८ ॥

इति लाभभावविचारः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बारहवें भाव का विचार—

लग्नाब्दपौ हतबलौ व्ययषण्मृतिस्थौ
यद्राशिगौ तदनुसारि फलं विचिन्त्यम् ।
षष्ठेऽब्दपे भृगुसुतेऽथ विनष्टवीर्ये
दृष्टे खलैः क्षुतदृशाद्विपदर्क्षसंस्थे ॥ १२९ ॥
भृत्यक्षतिस्तुरगहा चतुरंघ्रिभस्थेऽ-
न्यस्मिन्नपीदमुदितं फलमब्दनाथे ।
खस्थे कुजे [1]शशियुते तुरगादिनाशः
स्याद्व्याकुलत्वमशुभोपहते व्यये वा ॥ १३० ॥

अन्वयः—लग्नाब्दपौ हतबलौ व्ययषण्मृतिस्थौ यद्राशिगौ तदनुसारि फलं विचिन्त्यम् । अथ भृगुसुतेऽब्दपे विनष्टवीर्ये खलैः क्षुतदृशा दृष्टे द्विपदर्क्ष-संस्थे भृत्यक्षतिः स्यात्, चतुरंघ्रिभस्थे तुरगहा, अन्यस्मिन्नपि (अब्दनाथे) इदमुदितं फलं वाच्यम् । कुजे शशियुते खस्थे तुरगादिनाशः व्याकुलत्वं च स्यात्, शशियुते कुजे अशुभोपहते व्यये तादृग्फलं वाच्यम् ॥ १२८-१३० ॥

जिसके वर्षकाल में वर्षलग्न का स्वामी और वर्षस्वामी ये दोनों निर्बल हों और बारहवें, छठें, आठवें इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित होवे जिस राशि पर स्थित हो उस राशि में जैसा फल कहा गया हो वैसा ही फल कहना । जैसे वर्षस्वामी चतुष्पद राशि में स्थित होकर दुष्टस्थान में हो तो चौपायों का नाश करता है तथा वर्षेश शुक्र छठें स्थान में हो और बलरहित व पापग्रहों की क्षुत् १।४।७।१० दृष्टि से देखा जाता हुआ द्विपद राशि में स्थित हो तो सेवकों का नाश करता है ॥ १२९ ॥ जो उक्त शुक्र चतुष्पद राशि में हो तो घोड़ा आदि चौपायों की हानि जानना एवं अन्य ग्रह वर्षेश होकर छठें, आठवें, बारहवें स्थान में स्थित होते हुए द्विपदादि राशियों में हों तो पूर्वोक्त फल कहना तथा वर्षस्वामी मङ्गल चन्द्रमा से युक्त होकर वर्षलग्न से दशम स्थान में स्थित हो तो उसके घोड़ा आदिकों का नाश और मन में व्याकुलता होती है अथवा उक्त मङ्गल चन्द्रमासहित पापग्रहों से पीड़ित द्वादश भाव में स्थित हो तो पूर्वोक्त फल कहना चाहिए ॥ १३० ॥

---

१ इस श्लोक में 'खस्थे कुजे शशियुते ।' यह पाठ असङ्गत मालूम होता है क्योंकि समरसिंह ने 'शनियुजि कुजे गमने बह्वाकुल्यं तुरङ्गनाशश्च' ऐसा लिखा है और ताजिकालङ्कार में भी 'भौमे मन्दयुते स्थिते च दशमे स्यादाकुलत्वं मनस्यश्वानां क्षति' समरसिंह के मत की पुष्टि होती है । अतः उक्त स्थान में 'खस्थे कुजे शनियुते' ऐसा पाठ समझना चाहिये ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

षष्ठे रवौ खलहते चतुरंघ्रिभस्थे भृत्यैः समं कलिरथाष्टमरिष्फगेऽपि ।
मन्देऽब्दपे बलयुते रिपुरिष्फसंस्थे भूवासनद्रुमजलाशयनिर्मितिश्च ॥१३१॥

अन्वयः—रवौ सूर्ये षष्ठे खलहते चतुरंघ्रिभस्थे, अथाष्टमरिःफगेऽपि भृत्यैःसमं कलिः स्यात् । अब्दपे मन्दे बलयुते रिपुरिःफसंस्थे भूवासनद्रुम-जलाशयनिर्मितिश्च स्यात् ॥ १३१ ॥

जो सूर्य वर्ष का स्वामी होकर पापग्रहों से युक्त होकर चतुष्पद राशि में छठे स्थान में हो अथवा आठवें, बारहवें स्थान में स्थित हो तो सेवकों के साथ कलह होवे, तथा वर्षका स्वामी बल सहित शनि हो और छठे वा बारहवें स्थान में स्थित हो तो उजाड़ भूमि को बसाता हुआ बाग, कुवाँ, तालाब आदि का निर्माण कराता है अर्थात् वह मनुष्य उजाड़ भूमि ग्राम को बसाता है और वहीं बाग, कुँवा, तालाब बनवाता है॥१३१॥

अन्यस्थानों में गये हुए ग्रहों का फल—

स्वर्क्षोच्चगे कर्मणि सूर्यपुत्रे नैरुज्यमर्थाधिगमश्च जीवे ।
सूर्ये नृपाद्बाहुबलात्कुजेऽर्थोबुधेभिषग्ज्योतिषकाव्यशिल्पैः ॥ १३२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १३२ ॥

जिसके वर्षकाल में शनैश्चर वर्षेश होता हुआ अपनी राशि व अपने उच्च राशि में स्थित हो और वर्षलग्न से दशम घर में हो तो शरीर आरोग्य और धन की प्राप्ति होती है, एवं बृहस्पति वर्षेश होकर अपनी राशि व उच्च राशि में होके दशम भाव में हो तो आरोग्यता व धन मिलता है, एवं सूर्य वर्षेश होता हुआ अपनी राशि व अपने उच्च राशि में होके दशम घर में स्थित हो तो राजा से धन प्राप्त होता है, एवं मंगल वर्षेश होता हुआ अपने राशि व उच्चराशि में विद्यमान होकर दशम स्थान में स्थित हो तो उसको अपने भुजबल से धन प्राप्त होता है, तथा बुध वर्षेश होता हुआ अपने राशि व उच्च राशि में प्राप्त होकर दशम स्थान में हो तो औषधी, ज्योतिष, कविता और कारीगरी आदि करके धन का लाभ होता है ॥ १३२ ॥

निर्बल शनि आदि का फल—

मन्देऽब्दपे गतबले नैराश्यं दौःस्थ्यमादिशेत् ।
सूर्येऽब्देशे शशिस्थाने मन्देऽब्दजनुषोर्हते ॥ १३३ ॥
सर्वकर्मसु वैकल्यं वक्रेऽस्ते च तथा पुनः ।
कर्मकर्मेशसहमनाथाः शनियुतेक्षिताः ॥ १३४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १३३-१३४ ॥

जो शनैश्चर वर्ष का स्वामी होता हुआ बलहीन हो वर्षलग्न से दसवें घर में स्थित हो तो वह मनुष्य आशाहीन होकर चंचलता को प्राप्त होता है, तथा जो वर्षस्वामी सूर्य हो और शनैश्चर जन्म और वर्षसमय चन्द्रमा जिस राशि पर स्थित हो, उस राशि में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बलरहित होकर स्थित हो तो वह मनुष्य सम्पूर्ण कामों के करने में विकल और सामर्थ्य-रहित होता है तैसे ही शनि वक्री वा अस्तंगत हो तो भी उक्त फल कहना चाहिये, तथा दशम भाव और दशम भावेश और कर्म सहमेश ये तीनों शनैश्चर से युक्त वा दृष्ट हों तो सब कर्मों में भूल हो जाती है ॥ १३३-१३४ ॥

दुष्टस्थान में स्थित वर्षपति का फल ।

षडष्टव्ययगेऽब्देशे कर्मेशे च बलोज्झिते ।
सुतावब्दे च न शुभं तत्राब्दे मृतिपे तथा ॥ १३५ ॥

अन्वयः—अब्देशे षडष्टव्ययगे सूतौ अब्दे च कर्मेशे बलोज्झिते न शुभं, तत्राब्दे मृतिपे तथा (तद्वत्षडष्टव्ययगे) तदा न शुभः ॥ १३५ ॥

जो वर्षकाल में वर्ष का अधिपति निर्बल होकर वर्षलग्न से छठें, आठवें वा बारहवें स्थान में स्थित हो, तथा दशम भाव का स्वामी जन्मकाल व वर्षकाल में निर्बल होकर छठें आठवें वा बारहवें स्थान में हो तो कल्याण नहीं होता है, एवं अष्टम स्थान का स्वामी छठें, आठवें वा बारहवें स्थान में हो तो भी कुशल नहीं जानना ॥१३५॥

वर्ष में सामान्य शुभाशुभ फल ।

यत्र भावे शुभफलो दुष्टो वा जन्मनि ग्रहः ।
वर्षे तद्भावगस्तादृक् तत्फलं यच्छति ध्रुवम् ॥१३६॥

अन्वयः—जन्मनि यत्र भावे शुभफलो दुष्टफलो वा ग्रहः (तिष्ठति) वर्षे तद्भावगस्तादृक् तत्फलं ध्रुवम् यच्छति ॥ १३६ ॥

जन्म समय जिस भाव में अशुभ फल का देनेवाला जो कोई ग्रह हो यदि वही ग्रह वर्षकाल में उसी के समान होकर उसी भाव में स्थित हो तो उस भाव के शुभ वा अशुभ फल को निश्चय करके देता है ॥ १३६ ॥

वर्ष में ग्रहों का फल पाककाल ।

ये जन्मनि स्युः सबला विवीर्या वर्षे शुभं प्राक्चरमे त्वनिष्टम् ।
दद्युर्विलोमं विपरीततायां तुल्यं फलं स्यादुभयत्र साम्ये ॥१३७॥

अन्वयः—जन्मनि ये सबलाः स्युस्ते वर्षे विवीर्याः (तदाते) प्राक् शुभं दद्युः चरमे त्वनिष्टम् दद्युः । विपरीततायां विलोमं दद्युः, उभयत्र साम्ये तुल्यं फल दद्युः ॥ १३७ ॥

जन्म समय में जो ग्रह बलवान् होकर वर्ष समय में बलहीन होवे तो वह पूर्वार्ध में शुभ और उत्तरार्ध में अशुभ फल देते हैं, इससे विपरीत हो तो विपरीत फल जानना, अर्थात् जन्मकाल में निर्बल हो, और वर्षकाल में सबल हो तो पूर्वार्ध में अनिष्ट और उत्तरार्ध में शुभ फल जानना, तथा जो समान बल हो तो सम्पूर्ण वर्ष पर्यन्त समान फल होता है, जो जन्म समय श्रेष्ठ बली हो तो वर्ष भर श्रेष्ठ फल, हीनबली हो तो वर्ष भर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनिष्ट फल देते हैं, इस प्रकार ग्रहों से उत्पन्न फल उन ग्रहों की दशा अन्तर्दशा में विचार करना चाहिये ॥ १३७ ॥

अधिकार का उपसंहार (समाप्ति)

श्रीगर्गान्वयभूषणो गणितविच्चिन्तामणिस्तत्सुतोऽ-
नन्तोऽनन्तमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यै जनुःपद्धतिम् ।
तत्सूनुः खलुः नीलकण्ठविबुधो विद्वच्छिवाऽनुज्ञया
सत्तुष्ट्यै व्यदधाद्धि केवलमिदं भावेषु सत्ताजिकात् ॥१३८॥

इति श्रीनीलकण्ठ्यां वर्षतन्त्रे तन्वादिभावविचारो
नामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अन्वयः—श्रीगर्गान्वये (श्रीगर्गाचार्यवंशे) भूषणः (अलंकारः) गणितवित् (ज्योतिश्शास्त्राभिज्ञः) चिन्तामणिरितिनामा कश्चिदासीत् तत्सुतः अनन्तनामा खलमतध्वस्त्यै जनुःपद्धतिं व्यधाद्रचितवान् खलु (निश्चयेन) तत्सूनुः (तस्य पुत्रः) नीलकण्ठनामाविबुधो विद्वच्छिवाऽनुज्ञया सत्तुष्ट्यै (सतां तुष्ट्ये) सत्ताजिकाद्भावेषु इदं विवेचनं व्यदधाद् व्याख्यातवानिति भावः ॥१३८॥

श्रीयुत गर्गाचार्य के वंश में भूषण (अलंकाररूप) ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता कोई चिन्तामणि नाम का विद्वान् हुआ उसका पुत्र अनन्त मतिवाला अनन्तनाम दुष्टों के मतखण्डन के लिये जन्मपद्धति को रचा उसका पुत्र बड़ा विद्वान् नीलकण्ठ नामक शिवजी के अनुज्ञा से सज्जनों को प्रसन्नता के अर्थ समीचीन ताजिक ग्रन्थों के भावफल में से अभिप्रायों को लेकर इस रचना को किया ॥ १३८ ॥

इति नीलकण्ठीभाषाटीकायां वर्षतन्त्रे तन्वादिद्वादशभावविचारो
नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ दशाफलाध्यायः षष्ठः प्रारभ्यते ।

पूर्णबलयुक्त लग्नदशा का[1] फल—

हेममुक्ताफलद्रव्यलाभमारोग्यमुत्तमम् ।
कुरुते स्वामिसम्मानं दशालग्नस्य शोभना ॥ १ ॥

अन्वयः—लग्नस्य शोभना दशा हेममुक्ताफलद्रव्यलाभं शरीरारोग्यम् स्वामिसम्मानं च कुरुते ॥ १ ॥

लग्न की शोभन दशा सुवर्ण, मोंती, उत्तम धन के लाभ, आरोग्यता और स्वामी से सन्मान इन सबों को करती है ॥ १ ॥

मध्यम बलयुक्त लग्न का फल—

लाभं दिष्टेन पित्तस्य मानहीनस्य सेवनम् ।
मनसो विकृतिं कुर्याद्दशा लग्नस्य मध्यमा ॥ २ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २ ॥

जो लग्न की दशा मध्यम बलवाली हो तो भाग्य से धन का लाभ और मान से हीन मनुष्य की सेवा व मन के विकार को करता है ॥ २ ॥

अधम बलवाली लग्नदशा का फल—

विदेशगमनं क्लेशं बुद्धिनाशं कदव्ययम् ।
मानहानिं करोत्येव कष्टा लग्नदशा फलम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३ ॥

लग्न की अधमदशा विदेशगमन, क्लेश, बुद्धिनाश, व्यर्थव्यय (निष्प्रयोजन धन-नाश) मानहानि, इनको करती है ॥ ३ ॥

क्रूर लग्न की दशा का फल—

क्रूरलग्नदशा मध्यमा सौख्यं स्वल्पं धनव्ययम् ।
अङ्गपीडां त्वपुष्टिं च कुरुते मृत्युविग्रहम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४ ॥

जो क्रूर लग्न की मध्यदशा होवे तो थोड़ा सौख्य, धन का खर्च, शरीर में पीड़ा और अपुष्टि (दुर्बलता) मृत्यु, लड़ाई करती है ॥ ४ ॥

---

१ दशाओं को स्पष्ट करने की रीति पूर्व (१२७ पृष्ठ में) लिख चुके हैं इस कारण यहां लिखने की आवश्यकता नहीं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्ण बलयुक्त सूर्य की दशा का फल—

दशा रवेः पूर्णबलस्य लाभं गजाश्वहेमांबररत्नपूर्णम् ।
मानोदयं भूमिपतेर्ददाति यशश्च देवद्विजपूजनादेः ॥ ५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५ ॥

जो पूर्ण बली सूर्य की दशा हो तो हाथी, घोड़ा सुवर्ण, वस्त्र, रत्न राजा से सन्मान प्रतिष्ठा का उदय, देवता व ब्राह्मणों के पूजन आदि से यश इनको देती है ॥ ५ ॥

मध्यम बलवाली सूर्य की दशा का फल—

दशारवेर्मध्यबलस्य पूर्वमिदं फलं मध्यममेव दत्ते ।
ग्रामाधिकारव्यवसायधैर्यैः कुलाऽनुमानाच्च सुखादिलाभः ॥६॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६ ॥

जो मध्यम बलयुक्त सूर्य की दशा हो तो पूर्वोक्त फल मध्यम देती है, ग्राम के अधिकार से और उद्योग से व धीरज करके व कुल के अनुमान से सुख आदि प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

अल्पबली सूर्य की दशा का फल—

दशारवेरल्पबलस्य पुंसां ददाति दुःखं स्वजनैर्विवादात् ।
मतिभ्रमं पित्तरुजं स्वतेजो विनाशनं घर्षणमप्यरिभ्यः ॥ ७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७ ॥

जो अल्पबली सूर्य की दशा हो तो मनुष्यों को अपने जनों के साथ लड़ाई होने से दुःख को देती है, और मतिभ्रम, पित्त से रोग अपने तेज का विनाश शत्रु से घर्षण (दवाव) यह अशुभ फल होता है ॥ ७ ॥

नष्टबली सूर्यदशा का फल—

दशारवेर्नष्टबलस्य पुंसां नृपाद्रिपोर्वा भयमर्थनाशम् ।
स्त्रीपुत्रमित्रादिजनैर्विवादं करोति बुद्धिभ्रममामयं च ॥ ८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८ ॥

नष्ट बलवाली सूर्य की दशा मनुष्यों को राजा और शत्रु से भय और धननाश को करती है, तथा स्त्री, पुत्र, मित्र आदि जनों से विवाद (लड़ाई) बुद्धिभ्रम और रोग को करती है ॥ ८ ॥

सूर्य के विशेष स्थान स्थिति से दशा का फल—

लग्नाद्रविः षट्त्रिदशायसंस्थो निन्द्योऽपि दत्ते शुभमर्धमेव ।
मध्यत्वमूनः शुभतां च मध्यायातीत्थमत्यन्तशुभः शुभः स्यात् ॥९॥

अन्वयः—लग्नात् षट्त्रिदशायसंस्थो रविः निन्द्योऽपि अर्धमेव शुभं दत्ते शेषं स्पष्टम् ॥ ९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्षलग्न से सूर्य छठें, तीसरे, दशवें, ग्यारहवें इन स्थानों में स्थित हो तो अनिष्ट दशा का फल भी आधा शुभ देता है और मध्यम बल हो तो शुभ फल हो और हीन-बली हो तो मध्यम फल हो और पूर्ण बली हो तो बहुत ही शुभ फल होता है ॥ ९ ॥

पूर्णबली चन्द्रमा के दशा का फल—

इन्दोर्दशा पूर्णबलस्य दत्ते शुक्लाम्बरस्रङ्मणिमौक्तिकाद्यम् ।
स्त्रीसङ्गमं राज्यसुखं च भूमिलाभंयशः कान्तिबलाभिवृद्धिम् ॥१०॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १० ॥

चन्द्रमा की पूर्ण बलवाली दशा मनुष्यों को सफेद वस्त्र, माला, मणि, मोती आदि को देती है और स्त्रीसङ्गम, राज्यसुख, भूमिलाभ, यश, कान्ति और बल की वृद्धि इन सब को देती है ॥ १० ॥

मध्यबली चन्द्रमा की दशा का फल—

इन्दोर्दशा मध्यबलस्य सर्वमिदं फलं मध्यममेव दत्ते ।
वाणिज्यमित्राम्बरगेहसौख्यं धर्मे मतिः कर्षणतोऽन्नलाभम् ॥११॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११ ॥

मध्यम बलवाली चन्द्रमा की दशा पूर्व कहा हुआ सब फल मध्यम देती है, तथा वाणिज्य (व्यापार) मित्र, वस्त्र, गृह व सुख, धर्म में बुद्धि और खेती से अन्न का लाभ इन सबों को देती है ॥ ११ ॥

अल्पबलयुक्त चन्द्रदशा का फल—

इन्दोर्दशा स्वल्पबलस्य दत्ते कफामयं कान्तिविनाशमाहुः ।
मित्रादिवैरं जननं कुमार्या धर्मार्थनाशं सुखमल्पमत्र ॥ १२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १२ ॥

थोड़े बलवाली चन्द्रमा की दशा कफरोग और कान्तिविनाश को देती है ऐसा कहना, तथापि मित्रादि से वैर और कन्या का जन्म, धर्म व धन का नाश, थोड़ा सुख यह फल होता है ॥ १२ ॥

नष्टबलयुक्त चंद्रमा की दशा का फल—

इन्दोर्दशा नष्टबलस्य लोकापवादभीतिं धनधर्मनाशम् ।
शीतामयं स्त्रीसुतमित्रवैरं दौःस्थ्यं च दत्ते विरसान्नभुक्तिम् ॥१३॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १३ ॥

नष्ट बलवाली चन्द्रमा की दशा लोकापवाद से भय और धन व धर्म का नाश शीत रोग, स्त्री, पुत्र, मित्र से वैर, चंचलचित्त, विना स्वाद वाले अन्नों का भोजन इनको देती है ॥ १३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनिष्ट स्थानों से भिन्नस्थान में चंद्रमा का फल—

षष्ठाष्टमान्त्येतरराशिसंस्थो निन्द्योऽपि दत्तेऽर्धसुखं दशायाम् ।
मध्यत्वमूनः शुभतां च मध्यो यातीत्थमिन्दुः शुभतां च मध्ये ॥१४॥

अन्वयः—षष्ठाष्टमान्त्येतरराशिसंस्थः इन्दुः निन्द्योऽपि दशायां अर्धं सुखं दत्ते । शेषं स्पष्टम् ॥ १४ ॥

छठें, आठवें बारहवें, इनसे इतर राशि में स्थित निन्द्य भी चन्द्रमा अपनी दशा में आधा सुख देता है, और हीन बली चन्द्रमा मध्यम फल और मध्यम बली चन्द्रमा शुभ फल देता है, और जो चन्द्रमा पूर्ण बली हो तो अत्यन्त शुभ फल देनेवाला जानना ॥१४॥

पूर्णबली मङ्गल की दशा का फल—

दशापतिः पूर्णबलो महीजः सेनापतित्वं तनुते नराणाम् ।
जयं रणे विद्रुमहेमरक्तवस्त्रादिलाभं प्रियसाहसत्वम् ॥ १५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १५ ॥

जो दशा का स्वामी मङ्गल पूर्णबली होवे तो मनुष्यों को सेनापतित्व (फौज का मालिक) बनाता है और संग्राम में जय, व मूँगा, सोना लाल कपड़े आदि के लाभ और प्रियसाहस इनको देता है ॥ १५ ॥

दशापतिर्मध्यबलो महीजः कुलाऽनुमानेन धनं ददाति ।
राजाधिकारं त्वथ तत्परत्वं तेजस्विता कान्तिबलाभिवृद्धिम् ॥१६॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १६ ॥

जो दशा का स्वामी मङ्गल मध्यबली हो तो कुल के अनुमान से धन को देता है तथा राजा से किसी अधिकार का लाभ और उस अधिकार में प्रधानत्व और तेज व बलवृद्धि इन सबको देता है ॥ १६ ॥

अल्पबली मङ्गल की दशा का फल—

दशापतिः स्वल्पबलो महीजो ददाति पित्तोष्णरुजं शरीरे ।
रिपोर्भयं बन्धनमास्यतोऽसृक्स्रवं च वैरं स्वजनैश्च शश्वत् ॥१७॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १७ ॥

जो अल्पबली मङ्गल की दशा हो तो शरीर में पित्त और ताप से रोग, और शत्रु से भय तथा बन्धन, मुख से रुधिर टपकना और निरन्तर अपने भाई बन्धुओं से भय इन सबों को देता है ॥ १७

नष्टबली मङ्गल की दशा का फल—

दशापतिर्नष्टबलो महीजो विवादमुग्रं जनयेद्व्रणं वा ।
चौराद्भयं रक्तरुजं ज्वरं च विपत्तिमन्यस्वहृतिं च खर्जूम् ॥१८॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो मङ्गल नष्ट बलवाला होकर दशा का स्वामी होवे तो उग्र विवाद (कठिन झगड़ा) वा संग्राम और चोरों से भय, रक्तविकार, ज्वर और विपत्ति, विजातीय जन से धन हरण और खाज को उत्पन्न करता है ॥ १८ ॥

तीसरे, छठें, ग्यारहवें स्थित मंगल का फल—

त्रिषडायगतो भौमो नष्टवीर्यः शुभार्द्धदः ।
मध्ये हीनः शुभो मध्यः शुभोऽत्यन्तशुभावहः ॥ १९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १९ ॥

जो तीसरे, छठें, ग्यारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में नष्टबली मङ्गल स्थित हो तो आधा शुभफल देता है और जो हीनबली मङ्गल उक्त स्थानों में से किसी स्थान में हो तो मध्यम फल देता है, मध्यम बली हो तो शुभफल, पूर्णबली मङ्गल स्थित हो तो अत्यन्त शुभफल को करता है ॥ १९ ॥

पूर्णबली बुध का दशाफल—

दशापतिः पूर्णबली बुधश्चेद्यशोऽभिवृद्धिं गणितात्सुशिल्पात् ।
तनोति सेवां सफलां नृपादेर्दौत्यं च वैदूष्यगुणोदयं च ॥ २० ॥

अन्वयः—बुधः महाबलश्चेद्दशापतिस्तदा गणितात्सुशिल्पात् यशोभिवृद्धिं नृपादेः सफलां सेवां दौत्यं च वैदूष्य गुणोदयं च तनोति ॥२०॥

जो दशा स्वामी बुध पूर्णबली हो तो गणित व सुन्दर कारीगरियों से यश की वृद्धि तथा राजादिकों की सफल सेवा दूत कर्म और निन्दारहित गुणों के उदय को करता है ॥

मध्यबली बुध की दशा का फल—

दशापतिर्मध्यबलो बुधश्चेद् गुरोः सुहृद्भ्यो लिपिकाव्यशिल्पैः ।
धनाप्तिदायी सुतमित्रबन्धुसमागमान्मध्यममेव सौख्यम् ॥२१॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २१ ॥

यदि मध्यबली बुध दशा का स्वामी हो तो गुरुजनों से व मित्रजनों से तथा लिखना काव्य और कारीगरी करके धन की प्राप्ति करता है और लड़कों, मित्रों व बन्धुओं के समागम से मध्यम ही सौख्य को देता है ॥ २१ ॥

स्वल्पबलयुक्त बुध की दशा का फल—

दशापतौ स्वल्पबले बुधे स्यान्मानस्य नाशः स्वजनापवादः ।
अकार्यकोपस्खलनाद्यनिष्टं धनव्ययं रोगभयं च विन्द्यात् ॥२२॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २२ ॥

जो बुध अल्पबली होकर दशा का स्वामी हो तो मान का नाश और अपने जनों से कलह, बिना प्रयोजन क्रोध आदि से अनिष्ट धन का खर्च, रोगभय यह अशुभ फल जानना ॥ २२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हीनबली बुध की दशा का फल—

दशापतौ हीनबले बुधे स्यात्स्वबुद्धिदोषो वधबन्धभीतिः ।
दूरे गतिर्वातकफामयार्तिर्निखातद्रव्यस्य च नापि लाभः ॥ २३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २३ ॥

जो दशा का स्वामी बुध हीनबलवाला हो तो अपनी बुद्धि के दोष से वध, बन्धनभय (जेलखाने से डर) और दूरगमन वात व कफरोग से पीड़ा और गड़े हुये द्रव्य का न मिलना इन सबको देता है ॥ २३ ॥

अनिष्ट स्थानों से भिन्न स्थान में बुध का फल—

षडष्टान्त्येतरर्क्षस्थो नष्टी ज्ञोऽर्धशुभप्रदः ।
मध्यो हीनः शुभो मध्यः शुभोऽत्यन्तं शुभावहः ॥ २४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २४ ॥

जो वर्षसमय में वर्षलग्न से छठे, आठवें, बारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में नष्टबली बुध स्थित हो तो अपनी दशा में आधा शुभफल देता है, अल्पबली हो तो शुभफल, पूर्णबली हो तो शुभफल, पूर्णबली हो तो अत्यन्त शुभफल देता है ॥ २४ ॥

पूर्णबलवाली बृहस्पति की दशा का फल—

गुरोर्दशा पूर्णबलस्य दत्ते मानोदयं राजसुहृद्गुरुभ्यः ।
कीर्त्यर्थलाभोपचयं सुखानि राज्यं सुताप्तिं रिपुरोगनाशम् ॥२५॥

अन्वयः—पूर्णबलस्य गुरोर्दशा राजसुहृद्गुरुभ्यः मानोदयं कीर्त्यर्थ-लाभोपचयं सुखानि राज्यं सुखाप्तिं रिपुरोगनाशनम् दत्ते ॥ २५ ॥

वर्षप्रवेश समय बृहस्पति की दशा पूर्णबली हो तो राजा व मित्र तथा गुरुजनों से मान (सम्मान) का उदय हो और कीर्तिधन के लाभ की वृद्धि, सुख, राज्य, पुत्र की प्राप्ति तथा शत्रु व रोग का नाश इनको देता है ॥ २५ ॥

मध्यबली बृहस्पति की दशा का फल—

गुरोर्दशा मध्यबलस्य धर्मे मतिं सखित्वं नृपमन्त्रिवर्गैः ।
तनोति मानार्थसुखादिलाभं सिद्धिं सदुत्साहबलातिरेकाम् ॥२६॥

अन्वयः—मध्यबलस्य गुरोर्दशा धर्मे मतिं नृपमन्त्रिवर्गैः सखित्वं मानार्थं सुखादिलाभं सदुत्साहबलातिरेकाम् सिद्धिं च तनोति ॥ २६ ॥

जो मध्यबली बृहस्पति की दशा हो तो धर्म में मति मन्त्रिजनों में मित्रता और मान से धन सुख का लाभ, बल के अतिरेकवाली सिद्धि अर्थात् विना प्रयास बांछित कार्यों की सिद्धि को देती है ॥ २६ ॥

अल्पबली बृहस्पति की दशा का फल—

दशा गुरोरल्पबलस्य दत्ते रोगं दरिद्रत्वमथारिभीतिम् ।
कर्णामयं धर्मधनप्रणाशं वैराग्यमर्थं च गुणं न किंचित् ॥ २७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—अथ अल्पबलस्य गुरोर्दशा रोगं दरिद्रत्वं अरिभीतिं कर्णामयं धर्मधन प्रणाशं वैराग्यं च दत्ते अर्थगुणं किंचिन्न दत्ते । २७ ॥

जिसके अल्प बलवाली बृहस्पति की दशा होवे तो रोग, दरिद्रता, शत्रु से भय, कान का रोग, धर्म और धन का नाश व वैराग्य को देता है और धर्म धनादि गुणो को नहीं देता है ॥ २७ ॥

नष्टबली बृहस्पति की दशा का फल—

गुरोर्दशा नष्टबलस्य पुंसां ददाति दुःखानि रुजं कफार्तिम् ।
कलत्रपुत्रस्वजनाऽरिभीतिं धर्मार्थनाशं तनुपीडनं च ॥ २८ ॥

अन्वयः—नष्टबलस्य गुरोर्दशा पुंसां दुःखानि रुजं कफार्त्तिम् कलत्रपुत्र-स्वजनारिभीतिं धर्मार्थनाशं तनुपीडनं च ददाति ॥ २८ ॥

जो नष्टबली बृहस्पति की दशा होवे तो वह मनुष्यों को दुःख कफ रोग को देती है और स्त्री, पुत्र, अपने जनों और शत्रुजनों से भय, धर्म व धन का नाश तथा शरीर में पीड़ा इन अशुभ फलों को देती है ॥ २८ ॥

अनिष्ट स्थानों से भिन्न स्थानों में स्थित बृहस्पति का फल—

षडष्टरिष्फेतरगो गुरुर्निन्द्योऽर्द्धसत्फलः ।
मध्यो हीनः शुभो मध्यो मध्यः शुभोऽत्यंतं शुभावहः ॥ २९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २९ ॥

छठें, आठवें, बारहवें स्थान से इतर स्थानों में नष्टबली बृहस्पति हो तो अपनी दशा में आधा शुभफल देता है और जो हीनबली बृहस्पति उक्त स्थानों में हो तो मध्यम फल जानना, तथा मध्यम बली बृहस्पति उक्त स्थानों में हो तो अपनी दशा में शुभफल देता है और जो पूर्णबली बृहस्पति उक्त स्थानों में हो तो अपनी दशा में अत्यन्त शुभफल देता है ॥ २९ ॥

पूर्णबली शुक्र की दशा का फल—

दशा भृगोः पूर्णबलस्य सौख्यं स्रग्गन्धहेमाम्बरकामिनीभ्यः ।
हयादिलाभं सुतकीर्तितोषनैरुज्यगान्धर्वरतिं पदाप्तिम् ॥ ३० ॥

अन्वयः—पूर्णबलस्य भृगोः दशा स्रग्गन्धहेमाम्बरकामिनीभ्यः सौख्यं ददाति तथा हयादिलाभं सुतकीर्तितोषनैरुज्यगान्धर्वरत्ति पदाप्तिम् च ददाति ॥ ३० ॥

पूर्णबली शुक्र की दशा में सौख्य, माला, सुगन्धि, सुवर्ण, वस्त्र, स्त्री से सुख, घोड़े आदि का लाभ, पुत्रप्राप्ति, कीर्ति, प्रसन्नता, आरोग्यता, गान में प्रीति, स्थान की प्राप्ति इनकी प्राप्ति होती है ॥ ३० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मध्यमबली शुक्र की दशा का फल—

दशा भृगोर्मध्यबलस्य दत्ते वाणिज्यतोऽर्थागमनं कृषेश्च ।
मिष्टान्नपानाम्बरभोगलाभं मित्रांश्च योषित्सुतसौख्यलाभम् ॥३१॥

अन्वयः—मध्यबलस्य भृगोर्दशा वाणिज्यतः कृषेश्च अर्थागमनं दत्ते मिष्टान्नपानाम्बरभोगलाभं मित्रांश्च योषित्सुतसौख्यलाभम् दत्ते ॥ ३१ ॥

मध्यबली शुक्र की दशा में व्यापार से तथा खेती से धन का लाभ होता है और मीठे अन्न का भोजन वस्त्र व भोगों का लाभ, मित्र और स्त्रीपुत्रों से सौख्य का लाभ होता है ॥ ३१ ॥

अल्पबली शुक्र की दशा का फल—

दशा भृगोरल्पबलस्य दत्ते मतिभ्रमं ज्ञानयशोऽर्थनाशम् ।
कदन्नभोज्यं व्यसनामयार्त्ति स्त्रीपक्षवैरं कलिमप्यरिभ्यः ॥३२॥

अन्वयः—अल्पबलस्य भृगोर्दशा मतिभ्रमं ज्ञानयशोऽर्थनाशम् कदन्नभोज्यं व्यसनामयथार्त्ति स्त्रीपक्षवैरं अरिभ्यः कलिञ्च दत्ते ॥ ३२ ॥

जिसके वर्षप्रवेश समय अल्पबलवाली शुक्र की दशा हो तो मतिभ्रम, ज्ञान, यश और धन का नाश और कुत्सित (सामा काकुनि) अन्न का भोजन, दुःख, रोग से पीडा और ससुरारवालों से वैर, शत्रुओं से भी कलह इन अशुभ फलों को देती है ॥३२॥

नष्टबली शुक्र की दशा का फल—

दशा भृगोर्नष्टबलस्य दत्ते विदेशयानं स्वजनैर्विरोधम् ।
पुत्रार्थ भार्याविपदो रुजश्च मतिभ्रमोऽपि व्यसनं महान्तम् ॥३३॥

अन्वयः—नष्टबलस्य भृगोर्दशा विदेशयानं स्वजनैर्विरोधम पुत्रार्थभार्याविपदो रुजश्च दत्ते मतिभ्रमः महान्तं व्यसनमपि दत्ते ॥ ३३ ॥

जो नष्टबली शुक्र की दशा हो तो विदेशगमन और स्वजनों से विरोध को देती है, और पुत्र, धन और भार्या से विपत्तियों को और रोग, मतिभ्रम, तथा महान् दुःख इन सबो को देती है ॥ ३३ ॥

अनिष्ट स्थानों से इतर स्थान में स्थित शुक्र का फल—

षडष्टरिष्फेतरगो भृगुर्निन्द्योऽर्धसत्फलः ।
मध्यो हीनः शुभो मध्यः शुभौऽत्यन्तं शुभावहः ॥३४॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३४ ॥

छठें, आठवें, बारहवें स्थान से अन्य स्थानों में स्थित शुक्र नष्टबली होने पर भी आधा फल करता है, और जो अल्पबली शुक्र उक्त स्थानों में से अन्य स्थान में स्थित हो तो मध्य फल जानना तथा मध्यबली हो तो शुभ फल जानना, पूर्णबली हो तो अत्यन्त शुभ फल जानना ॥ ३४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्णवली शनि की दशा का फल ।

दशा शनेः पूर्णबलस्य दत्ते नवीनवेश्मांबरभूमिसौख्यम् ।
आरामतोयाश्रयनिर्मितिश्च म्लेच्छातिसङ्गो नृपतेर्धनाप्तिः ॥ ३५॥

अन्वयः—पूर्णबलस्य शनेः दशा नवीनवेश्माम्बरभूमिसौख्यं दत्ते, आरामतोयाश्रयनिर्मितिः म्लेच्छातिसंगो नृपतेर्धनाप्तिश्च दत्ते ॥ ३५ ॥

पूर्णबली शनि की दशा नवीन घर, वस्त्र, भूमि, सौख्य, इनको देती है और बाग कुआँ तालाब, को बनवाता हुआ वह मनुष्य म्लेच्छों के अत्यन्त सङ्ग के द्वारा राजद्वार पर पहुंचकर राजा से धन को पाता है ॥ ३५ ॥

मध्यबली शनैश्चर का फल--

दशा शनेर्मध्यबलस्य दत्ते खरोष्ट्रमाषाण्डजतो धनाप्तिम् ।
वृद्धाङ्गनासङ्गमदुर्गरक्षाऽधिकारचिंताविरसान्न भोग ॥३६॥

अन्वयः—मध्यबलस्य शनेर्दशा खरोष्ट्रमाषांडजतो धनाप्तिं दत्ते, वृद्धाङ्गनासङ्गमः दुर्गरक्षाऽधिकारचिंता विरसान्न भोगश्च दत्ते ॥ ३६ ॥

मध्यबली शनैश्चर की दशा हो तो गधा, ऊँट, उड़द, अण्डज (मुर्गी, बतक, कबूतर) आदि से धन की प्राप्ति, बूढ़ी स्त्री के साथ भोग और किला की रक्षा के अधिकार की चिन्ता, रसरहित अन्नों का भोजन इन सबों को देता है ॥ ३६ ॥

अल्पबली शनिकी दशा का फल—

दशां शनेरल्पबलस्य पुंसां तनोति दुःखं रिपुतस्करेभ्यः ।
दारिद्र्यमात्मीयजनापवादं रोगं च शीतानिलकोपमुग्रम् ॥३७॥

अन्वयः—अल्पबलस्य शनेः दशा पुंसां रिपुतस्करेभ्यः दुःखं तनति, आत्मीयजनापवादं दारिद्र्यम्, उग्रं शीतानिलकोपं रोगं च तनोति ॥ ३७ ॥

अल्प बलवाली शनि की दशा मनुष्यों को शत्रु व चोरों से दुःख को करती है और अपने जनों से अपवाद, दरिद्रता और शीतवात के उग्र कोप से रोग को करती है ॥३७॥

दशा शनेर्नष्टबलस्य पुंसामनेकधातुव्यसनानि दत्ते ।
स्त्रीपुत्रमित्रस्वजनैर्विरोधं रोगाभिवृद्धिं मरणेन तुल्यम् ॥ ३८ ॥

अन्वयः—नष्टबलस्य शनेर्दशा पुसां अनेकधातुव्यसनानि दत्ते, स्त्रीपुत्रमित्रस्वजनैर्विरोधं मरणेन तुल्यं रोगाभिवृद्धिं च दत्ते ॥ ३८ ॥

शनि की दशा जो नष्टबली हो तो मनुष्यों को अनेक धातुओं (वात, पित्त, कफ रूप) से दुःख को देती है और स्त्री, पुत्र, मित्र, तथा अपने जनों से विरोध को करती है और मरण समान रोग को बढ़ाती है ॥ ३८ ॥

तीसरे, छठे, ग्यारहवें स्थान में स्थित शनैश्चर का फल—

त्रिषष्ठलाभोपगतो मन्दो निन्द्योऽर्द्धसत्फलः ।
मध्यो हीनः शुभो मध्यः शुभोऽत्यंतं शुभावहः ॥ ३९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३९ ॥

जो तीसरे, छठें, ग्यारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में शनि स्थित हो तो नष्टबली भी शनि आधा शुभ फल देता है और हीनबली हो तो मध्यम फल, मध्यमबली हो तो शुभ फल और पूर्णबली हो तो अत्यन्त शुभ फल को देता है ॥ ३९ ॥

द्रेष्काणवश लग्नदशा का फल—

दशा तनोः स्वामिबलेन तुल्यं फलं ददातीत्यपरो विशेषः ।
चरे शुभा मध्यफलाऽधमा च द्विमूर्तिभेऽस्माद्विपरीतमूह्यम् ॥४०॥
अनिष्टमिष्टं च समस्थिरर्क्षे क्रमाद् दृकाणैः फलमुक्तमाद्यैः ।
सत्स्वामियोगेक्षणतः शुभं स्यात्पापेक्षणात्कष्टफलं च वाच्यम् ॥४१॥

अन्वयः—तनोः दशा स्वामिबलेनतुल्यं फलं ददाति, अपरो विशेषः चरे लग्ने (प्रथमे द्रेष्काणे) शुभा (द्वितीये) मध्यफला (तृतीये) अधमा दशा स्यात् द्विमूर्त्तिभे अस्माद्विपरीतम् ऊह्यम् । स्थिरर्क्षे (प्रथमे द्रेष्काणे) अनिष्टं (द्वितीये) इष्टम् (तृतीये) समः क्रमात् आद्यैः दृक्काणैः (लग्नदशायाः) फलं उक्तम्, (लग्नं) सत्स्वामियोगेक्षणतः (दशाफलं) शुभं पापेक्षणात् कष्टफलं च वाच्यम् ॥४० ४१॥

इति श्रीनील० वर्षतन्त्रे दशाफलवि० षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

लग्नदशा[1] अपने स्वामी के बल के समान फल को देती है अर्थात् लग्न के स्वामी का जैसा बल होगा उसी के समान फल को देती है । अब अन्य विशेष कहते है, यदि चर लग्न का पहला द्रेष्काण हो तो लग्न की दशा शुभ फल देती है, दूसरा द्रेष्काण हो तो मध्यम फल, तीसरा द्रेष्काण हो तो अधम फल जानना, तथा द्विस्वभाव लग्न हो तो चर लग्न से विपरीत कहना अर्थात् द्विस्वभाव लग्न का प्रथम द्रेष्काण हो तो अधम फल, दूसरा द्रेष्काण हो तो मध्यम फल, तीसरा द्रेष्काण हो तो अधम फल जानना, तथा द्विस्वभाव लग्न हो तो चर लग्न से विपरीत कहना अर्थात् द्विस्वभाव लग्न का प्रथम द्रेष्काण हो तो अधम फल, दूसरा द्रेष्काण हो तो मध्यम फल, तीसरा द्रेष्काण हो तो शुभ फल जानना ॥ स्थिर लग्न का प्रथम द्रेष्काण हो तो लग्न अपनी दशा में अनिष्ट फल देती है, दूसरा द्रेष्काण हो तो शुभ फल देती है, तीसरा द्रेष्काण हो तो समान फल देती है, यह क्रम से पूर्वाचार्यों ने द्रेष्काण वश लग्नदशा का फल कहा, लग्न शुभ-ग्रहों व अपने स्वामी से युत वा दृष्ट हो तो अशुभ फल भी शुभ हो जाता है, यदि शुभ फल हो तो शुभेतर (अच्छे से अच्छा) हो जाता है, तथा लग्नस्वामी पापग्रहों से दृष्ट व युक्त हो तो कष्टकारक फल कहना ॥ ४०–४१ ॥

इति ताजिकनीलकण्ठीभाषाटीकायां वर्षतन्त्रे दशाफलविचारो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

दशाफलविचार में विशेषता—

१ यहां ग्रहों का दशाफल ग्रन्थकर्ता ने चार प्रकार से कहा है, सो इस प्रकार जानना कि ५ विश्वा तक बल हो तो नष्टबल, उपरान्त १० विश्वा बल पर्यन्त हीनबल, दश से १५ तक समान बल, १५ से २० तक पूर्ण बल कहना ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथान्तर्दशा तथा भावस्थग्रह फलाध्यायः ।

अन्तर्दशा तथा भावों में स्थित ग्रहों का फलाध्याय—

दशामानं समामानं प्रकल्प्योक्तेन वर्त्मना ।
अन्तर्दशाः साधनीयाः प्राक्पात्यांशवशेन तु ॥ १ ॥
आदावन्तर्दशापाकपतेस्तत्क्रमतोऽपराः ।
शुभेक्षणान्वयान्मैत्र्या तत्फलं परिकल्पयेत् ॥ २ ॥

अन्वयः—दशमानमित्यादिपद्यद्वयं पूर्वमेव व्याख्यातं स्पष्टं च ॥ १—२ ॥

दशामान इत्यादि श्लोकों में अन्तर्दशा साधन करने का प्रकार पूर्व संज्ञा तन्त्र (प्रकरण ३ में श्लो० ६८) में कह चुके हैं इससे यहाँ लिखना आवश्यक नहीं है, यहाँ अन्तर्दशा का भी फल चार प्रकार का बल देख के कहना, अन्तर्दशापति शुभग्रहों की दृष्टि वा शुभग्रह युक्त हों वा शुभग्रह से मैत्री हो तो उसी के अनुसार देखकर फल का विचार कहना ॥ १—२ ॥

चन्द्रारजीवाः सौम्येज्यशुक्रा रविविधू तथा ।
मन्देज्यशुक्राः सूर्येन्दुभौमाः सौम्येज्यसूर्यजाः ॥ ३ ॥
जीवज्ञशुक्राः सूर्यादेः शुभा अन्तर्दशा इमाः ।
अन्येषामशुभा ज्ञेया इति वामनभाषितम् ॥ ४ ।

अन्वयः—सूर्यादेः (आरम्य क्रमेण) चन्द्रारजीवाः, सौम्येज्यशुक्राः, रविविधू, मन्देज्यशुक्राः, सूर्येन्दुभौमाः, सौम्येज्यसूर्यजा, जीवज्ञशुक्राः, इमाः अन्तर्दशा शुभा अन्येषां अशुभा ज्ञेया इति वामनभाषितम् ॥ ३—४ ॥

सूर्यदशा में चं. मं. बृ. की अन्तर्दशा और चन्द्रमा की दशा में बु. बृ. शु. की अन्तर्दशा, तथा मङ्गल की दशा में सू. चं. की अन्तर्दशा, बुध की दशा में श. बृ. शुक्र की अन्तर्दशा, बृहस्पति की दशा में सू. चं. मं. की अन्तर्दशा, शुक्र की दशा में बु. बृ श. की अन्तर्दशा, शनि की दशा में बृ. बु. शु. की अन्तर्दशा शुभ फल देती है यह सूर्यादि ग्रहों की दशा में शुभान्तर्दशा है, अन्य अन्तर्दशा अशुभ जानना यह वामनाचार्य ने कहा है ॥ ३—४ ॥

लग्न में स्थित ग्रहों का फल—

सूर्यारमन्दास्तनुगाज्वरार्तिधनक्षयं पापयुगिन्दुरित्थम् ।
शुभान्वितः पुष्टतनुश्च सौख्यञ्जीवज्ञशुक्रा धनधान्यलाभम् ॥ ५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—सूर्यारमन्दास्तनुगा ज्वरार्तिधनक्षयं कुर्युः, इत्थं पापयुग् इन्दुस्तदापि ज्वरार्तिधनक्षयं च कुर्यात्, यदा पुष्टतनुः (इन्दुः) शुभान्वितः तदा सौख्यं करोति, एवं जीवज्ञशुक्राः धनधान्यलाभं कुर्युः ॥ ५ ॥

सूर्य, मंगल, शनि, इनमें से कोई भी ग्रह लग्न में स्थित हो तो ज्वरपीडा और धनहानि को करता है, इसी प्रकार पापग्रह सहित चन्द्रमा लग्न में स्थित हो तो ज्वर की पीड़ा और धनक्षय करता है, और जो शुभग्रहों से युक्त पुष्ट शरीरवाला (सम्पूर्ण) चन्द्रमा लग्न में स्थित हो तो वह सौख्य को करता है, बुध, शुक्र लग्न में हों तो धनधान्य के लाभ को करते हैं ॥ ५ ॥

धनभाव में स्थित ग्रहों का फल—

चन्द्रज्ञजीवास्फुजितो धनस्था धनागमं राज्यसुखं च दद्युः ।
पापा धनस्था धनहानिदाः स्युर्नृपाद्भयं कार्यविघातमार्किः ॥ ६ ॥

अन्वयः—चन्द्रज्ञजीवास्फुजितो धनस्था धनागमं राज्यसुखं च दद्युः, पापा धनस्था धनहानिदाः स्युः, आर्किः कार्यविघातम् नृपाद्भयं च करोति ॥ ६ ॥

चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र ये जो धनभाव में स्थित हों तो धन का आगम और राज्य व सुख को देते हैं, तथा जो पापग्रह धनभाव में स्थित हों तो धनहानि को देते हैं और शनैश्चर धनभाव में हो तो राजा से भय और कार्य का नाश करता है ॥ ६ ॥

तीसरे भाव में स्थित ग्रहों का फल—

दुश्चिक्यगाः खलखगा धनधर्मराज्य-
लाभप्रदा बलयुताः क्षितिलाभप्रदाः स्युः ।
सौम्याः सुखार्थसुतमानयशोविलासं-
लाभाय हर्षमतुलं किल तत्र चन्द्रः ॥ ७ ॥

अन्वयः—दुश्चिक्यगाः खलखगाः धनधर्मराज्यलाभप्रदाः स्युः, चेत् बलयुतास्तदाक्षितिलाभदाः स्युः सौम्याः सुखार्थसुतमानयशोविलासं लाभाय, तत्र चेच्चन्द्रस्तदा अतुलं हर्षं करोति ॥ ७ ॥

तीसरे स्थान में पापग्रह स्थित हों तो धन, धर्म तथा राज्यलाभ देते हैं. और जो बल से युक्त पापग्रह तीसरे भाव में हो तो पृथ्वी के लाभ को देते हैं तथा शुभग्रह तीसरे स्थान में होवें तो सुख, धन, पुत्र, मान, यश और विलास को देते है तहाँ चन्द्रमा स्थित हो तो निश्चय करके अत्यन्त आनन्द को करते हैं ॥ ७ ॥

चौथे भाव में स्थित ग्रहों का फल—

चन्द्रः सुखे खलयुतो व्यसनं रुजं च
पुष्टः शुभेन सहितः सुखमातनोति ।
सौम्याः सुखं विविधमत्र खलाः सुखार्थ-
नाशं रुजं व्यसनमप्यतुलं भयं च ॥ ८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—चन्द्रः सुखं खलयुतः व्यसनं रुजं च आतनोति, पुष्टः शुभेन सहितः सुखमातनोति। सौम्या (सुखे) विविधं सुखं, अत्र खलाः सुखार्थनाशं रुजं व्यसनं अतुलं भयं च आतनोति ॥ ८ ॥

चौथे भाव में पापग्रहयुक्त चन्द्रमा स्थित हों तो कष्ट और रोग को देता है, और जो शुभग्रहों से युक्त व पूर्ण होकर चन्द्रमा स्थित हो तो सुख देता है, तथा शुभग्रह चौथे घर में स्थित हो तो विविध सुख को देते हैं और जो चौथे घर में पापग्रह स्थित हों तो सुख और धन का नाश, रोग, कष्ट और अतुल भय को देते हैं ॥ ८ ॥

पंचम भाव में स्थित ग्रहों का फल—

पुत्रवित्तसुखसञ्चयः शुभः पुत्रगो भृगुसुतोऽतिहर्षदः।
पुत्रवित्तधन[1]बुद्धिहारकास्तस्करा भयकलिप्रदाः खलाः ॥ ९ ॥

अन्वयः—शुभः पुत्रगः तदा पुत्रवित्तसुखसञ्चयः करोति भृगुसुतः (पञ्चमे) अतिहर्षदः, खलाः पुत्रवित्तसुखबुद्धिहारकास्तथा तस्करा भयकलिप्रदाः ॥ ९ ॥

जो शुभग्रह पञ्चम घर में स्थित हो तो पुत्र, धन, सुख इनके समूहों को देते हैं, पञ्चम स्थान में स्थित शुक्र अति आनन्द को देता है, तथा पापग्रह जो पञ्चम स्थान में स्थित हो तो पुत्र, धन, सुख बुद्धि, इनको हरनेवाले होते हुए चोरभय, रोग और कलह को देते हैं ॥ ९ ॥

छठें भाव में स्थित ग्रहों का फल—

षष्ठे पापा वित्तलाभं सुखाप्तिं भौमेऽत्यन्तं हर्षदः शत्रुनाशम्।
सौम्ता भीतिं वित्तनाशं कलिं च चन्द्रो रोगं पापयुक्तः करोति ॥१०॥

अन्वयः - षष्ठे पापाः वित्तलाभं सुखाप्तिं च कुर्युः, भौमे अत्यन्तं हर्षदः शत्रुनाशम्, सौम्या भीतिं वित्तनाशं कलिं च कुर्युः, चन्द्रः पापयुक्तः रोगं करोति ॥ १० ॥

जो छठें स्थान में पापग्रह स्थित हो तो द्रव्य का लाभ और सुख की प्राप्ति को करते हैं, और मङ्गल अत्यन्त हर्ष को देता है और शत्रुओं का नाश करता है, पञ्चम भाव में स्थित शुभग्रह धननाश और कलह को करते हैं, तथा पापग्रह के साथ चन्द्रमा रोग को करता है ॥ १० ॥

सप्तम स्थानमें स्थित ग्रहों का फल—

सपापः शशी सप्तमे व्याधिभीतिं खलाः स्त्रीविनाशं कलिं भृत्यभीतिम्।
शुभाः कुर्वते वित्तलाभं सुखाप्तिं यशोराजमानोदयं बन्धुसौख्यम् ॥११॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११ ॥

---

१ "सुखबुद्धिहारकाः" इति पाठः समीचीनः वित्तशब्दमुच्चार्य पुनर्धनशब्दस्योपादानं पुनरुक्तिदोषसङ्गादिति ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पापग्रह के सहित चन्द्रमा सप्तम स्थान में स्थित हो तो व्याधि (रोग) भय को करता है, पापग्रह सातवें स्थान में हो तो स्त्री का नाश, सेवक से भय को करते हैं, यदि शुभग्रह सातवें स्थान में स्थित हों तो धनलाभ और सुख की प्राप्ति, मान का उदय बन्धुजनों से सौख्य करते हैं ॥ ११ ॥

आठवें भाव में स्थित ग्रहों का फल—

चन्द्रोऽष्टमे निधनदः खलखेटयुक्तः
पापाश्च तत्र मृतितुल्यफलं च विंद्यात् ।
सौम्याः स्वधातुवशतो रुजमर्थहानिं
मानक्षयं मुथशिले शुभजं शुभश्च ॥ १२ ॥

अन्वयः—खलखेटयुक्तः चन्द्रः अष्टमे निधनदः अन्यत् स्पष्टम् ॥ १२ ॥

जो वर्षप्रवेशसमय पापग्रहयुक्त चन्द्रमा आठवें स्थान में स्थित हो तो मरण को देता है, और यदि केवल पापग्रह ही स्थित हों तो मरणतुल्य फल देते हैं ऐसा जानना, तथा जो शुभग्रह आठवें स्थान में स्थित हों तो अपने धातुवश से रोग व धनहानि और मानक्षय को देते हैं तथा जो अष्टम भावस्थ शुभग्रहों के साथ इत्थशाल योग होवे तो अनिष्ट फल भी शुभ हो जाता है ॥ १२ ॥

नवमेंभावगत ग्रहों का फल—

तपसि सोदरभीः पशुपीडनं खलखगेऽतिमुदो रविरत्र चेत् ।
शुभखगा धनधर्मविवृद्धिदाः खलखगे च शुभान्यपरे जगुः ॥१३॥

अन्वयः—तपसि खलखगे सोदरभीः पशुपीडनं च स्यात्, अत्र चेत् रविः तदा अतिमुदः भवति, शुभखगाः धनधर्मविवृद्धिदाः, खलखगेऽपि शुभानि (फलानि भवन्ति) इत्यपरे जगुः ॥ १३ ॥

नवम स्थान में जो पापग्रह स्थित हो तो भाइयों से भय पशुओं को पीड़ा हो और नवम भाव से सूर्य स्थित हो तो अति आनन्द होता है, तथा जो शुभग्रह नवम स्थान में स्थित हो तो धन और धर्म की वृद्धि होती है, कोई आचार्य कहते हैं कि पापग्रह भी नवम भाव में शुभ फल को देते हैं ॥ १३ ॥

दशम भाव में स्थित ग्रहों का फल—

गगनगो रविजः पशुवित्तहा रविकुजौ व्यवसायपराक्रमैः ।
धनसुखानि परे च धनात्मजाऽवनिपसंगसुखानि वितन्वते ॥१४॥

अन्वयः—गगनगो रविजः पशुवित्तहा, रविकुजौ व्यवसायपराक्रमैः धनसुखानि करोति, परे (ग्रहाः) धनात्मजाऽवनिपसङ्गसुखानि वितन्वते ॥१४॥

दशम स्थान में स्थित शनि पशु और धन का नाश करता है सूर्य मंगल दोनों दशम घर में स्थित हों तो वह व्यापार और पराक्रमों करके धन और सुख को देते हैं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और जो इनसे पर (अन्य) ग्रह राज्यभाव में विराजमान हों तो वह धन, सुत, और राजा के संगम से सुख आदि देते हैं ॥ १४ ॥

लाभ भाव में स्थित ग्रहों का फल—

लाभे धनोपचयसौख्ययशोभिवृद्धिः सन्मित्रसङ्गबलपुष्टिकराश्च सर्वे ।
क्रूरा बलेन रहिताः सुतवित्तबुद्धिनाशं शुभास्तु तनुतां स्वफलस्य कुर्युः ॥१५॥

अन्वयः—सर्वे (ग्रहाः) लाभे धनोपचयसौख्ययशोभिवृद्धिः सन्मित्रसङ्गबलपुष्टिकराः भवंति, क्रूरा बलेन रहिताः सुतवित्तबुद्धिनाशं, शुभस्तु स्वफलस्य तनुतां कुरुते ॥ १५ ॥

जो सम्पूर्ण शुभ वा क्रूरग्रह बल से युक्त होकर ग्यारहवें स्थान में स्थित हों तो धनसमूह, सौख्य, यश की बढ़ती, अच्छे मित्रों का सङ्गम, बल और पुष्टि इन सबों के करने वाले होते हैं, तथा जो क्रूर ग्रह बलरहित होकर ग्यारहवें स्थान में स्थित हों तो वह पुत्र, धन, और बुद्धि का नाश करते हैं और जो बल से रहित शुभग्रह लाभस्थान में हों तो वे अपने फल को कमती करते हैं ॥ १५ ॥

बारहवें स्थान में स्थित ग्रहों का फल—

पापा व्यये नेत्ररुजं विवादं हानिं धनानां नृपतस्करादेः ।
सौम्या व्ययं सद्व्यवहारमार्गे कुर्युः शनिर्हर्षविवृद्धिमत्र ॥ १६ ॥

अन्वयः—पापा व्यये नेत्ररुजं विवादं नृपतस्करादेः धनानां हानिं च कुर्युः । सौम्याः सद्व्यवहारमार्गे व्ययं कुर्युः अत्र शनिः हर्षविवृद्धिं कुरुते ॥१६॥

पापग्रह बारहवें स्थान में स्थित हों तो नेत्ररोग, और विवाद, राजा व चोर आदिकों से धनहानि को करते हैं और जो शुभग्रह बारहवें भाव में स्थित हो तो अच्छे व्यवहार के कार्य में खर्च कराते हैं, और जो शनैश्चर यहाँ व्ययभाव में हो तो हर्ष समेत बहुत बढ़ती को देता है ॥ १६ ॥

अध्याय की समाप्ति का वर्णन

श्रीगर्गान्वयभूषणो गणितविच्चिन्तामणिस्तत्सुतोऽ-
नन्तोऽनन्तमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यै जनुः पद्धतिम् ।
तत्सूनुः खलुनीलकण्ठबिबुधो विद्वच्छिवाऽनुज्ञया
भावस्थग्रहपाकदौस्थ्यसुखतायुक्तं फलं सोऽभ्यधात् ॥१७॥

इति श्रीनीलकण्ठ्यां वर्षफलतन्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १७ ॥

श्रीगर्गाचार्यजी के वंश में भूषण ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता, चिन्तामणि नाम होता भया, उसका पुत्र अनन्तमति वाला अनन्त नामक भया जिसने दुष्टों के मतध्वंस के अर्थ जन्मपद्धति को बनाया, उसका पुत्र विशेष विद्वान् नीलकण्ठ नामक विद्वान् शिवजी की आज्ञा से भावस्थ ग्रहों की दशा के अशुभ व शुभ फल को कहता भया ॥१७॥

इति नीलकण्ठीभाषाटीकायां अन्तर्दशा तथा भावस्थग्रहफलाध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ मासदिनप्रवेशफलाष्टमोऽध्यायः प्रारभ्यते।

अब मासदिनप्रवेशफल का आठवाँ अध्याय लिखते हैं—

मासार्कस्य सदासन्नपंक्तिस्थेन सहान्तरम्।
कलीकृत्यार्कगत्याप्तं दिनाद्येन युतोनितम्॥ १॥
तत्पंक्तिस्थं वारपूर्वमासार्केऽधिकहीनके।
तद्वाराद्ये मासवेशो द्युवेशोप्येवमेव हि॥ २॥

अन्वयः—स्पष्टम्॥ १–२॥

यहाँ प्रथम दोनों श्लोकों में मासप्रवेश और दिनप्रवेश निकालने के रीति कहते हैं, जो पूर्व संज्ञातंत्र (तीसरे प्रकरण में ७० श्लो०) में कह चुके हैं इस कारण इनके अर्थ लिखने की यहाँ आवश्यकता नहीं॥ १–२॥

मासपति और दिनपति बनाने का प्रकार—

मासप्रवेशकाले ज्ञो ग्रहान्भावांश्च साधयेत्।
तत्र मासतनोर्नाथो मुंथहो जन्मपस्तथा॥ ३॥
त्रिराशिपो दिननिशो रवीन्दुभपतिस्तथा।
अब्दप्रवेशलग्नेश एषां वीर्याधिकस्तनुम्॥ ४॥
पश्यन्मासपतिर्ज्ञेयस्ततो वाच्यं शुभाशुभम्।
अपरे मासलग्नेशं मासाधिपतिमूचिरे॥ ५॥
दिनेशं दिनलग्नेशं तथा प्रोचुर्विचक्षणाः।
मासघस्रेशयोर्वाच्यं फलं वर्षेशवद् बुधैः॥ ६॥

अन्वयः—मासप्रवेशकाले ज्ञः (बुधः) ग्रहान्भावाँश्च साधयेत्, तत्र मासतनोर्नाथो मुंथहो जन्मपः त्रिराशिपः दिननिशोरवीन्दुभपतिस्तथा अब्दप्रवेश लग्नेश एषां वीर्याधिकः तनुं पश्यन् मासपतिः ज्ञेयः ततः शुभाशुभं वाच्यं, अपरे मासलग्नेशं मासाधिपतिं ऊचिरे, तथा दिनलग्नेशं दिनेशं विचक्षणाः प्रोचुः मासघस्रेशयोः वर्षेशवद् फलं बुधैः वाच्यम्॥ ३-४-५-६॥

मास प्रवेश काल में पूर्वोक्त प्रकार से तन्वादि बारहों भावों का साधन करे तदनन्तर मासपति के निर्णय के अर्थ अधिकारियों को विचारना चाहिये। (१) यथा प्रथम मासलग्नपति, (२) मुन्थहापति, (प्रतिमास में २॥ अंश मुन्थहा बढ़ता है इस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्रम से मुंथहाराशि का स्वामी) तथा (३) जन्मलग्न का स्वामी ॥ ३ ॥ (४) चौथा त्रिराशिपति, (५) दिन में सूर्यराशिपति, रात्रि में चन्द्रराशिपति, (६) वर्षप्रवेश लग्न का स्वामी इन छः अधिकारियों में से जो बलवान् होकर लग्न को ॥ ४ ॥ देखे उसे मासस्वामी जानना चाहिये, और इसी मासस्वामी से शुभ अशुभ फल कहना चाहिये। यहाँ पर आचार्य मास लग्न स्वामी को ही मास स्वामी कहते हैं ॥ ५ ॥ तथा अन्य आचार्यों के मत से दिनप्रवेश लग्न को ही दिन का स्वामी चतुर लोग कहते हैं। यहाँ भी अधिकारियों का निश्चय नहीं है इस मासेश और दिनेश का निश्चय करके उनका फल वर्षेश के समान कहना चाहिये ॥ ६ ॥

मास का फल—

लग्नांशाधिपतिर्विलग्नपनवांशेशेन मैत्रीदृशा
दृष्टो वा सहितः शशी च यदि तौ मैत्रीदृशाऽऽलोकते।
तस्मिन्मासि तनौ सुखं बहुविधं नैरुज्यमित्थं फलं
तावद्यावदिमे स्युरित्थमथ तां संचार्य वाच्यं फलम् ॥ ७ ॥

अन्वयः—लग्नांशाधिपतिर्विलग्नपनवांशेशेन मैत्रीदृशा दृष्टः सहितो वा शशी च यदि तौ मैत्री दृशालोकते तस्मिन् मासि बहुविधं तनौ सुखं नैरुज्यं इत्थं फलं तावद् यावदिमे स्युः अथ तां संचार्य फलं वाच्यम् ॥ ७ ॥

मासलग्न के नवांश के स्वामी मासलग्नेश नवांश के स्वामी के साथ मित्रता करता हुआ देखता हो अथवा युक्त हो, और उन दोनों स्वामियों को चन्द्रमा मित्रदृष्टि से अवलोकन करे, तो उस मास में नाना प्रकार का सुख और शरीर में नीरोगता होती, है इस प्रकार मासफल तब तक होता है जब तक यह ग्रह (लग्न नवाँश स्वामी, लग्नाधीश नवांश स्वामी, चन्द्रमा) इस प्रकार के होय अर्थात् प्रति दिन चलते हुए इन तीनों का राशिसंचार हो तब तक शुभ फल कहना योग्य है ॥ ७ ॥

अनिष्ट फल—

तौ चेच्छत्रुदृशा मिथश्च शशिना दृष्टौ मनोदुःखदौ
रोगाधिक्यकरौ च कश्चिदनयोर्नीचाऽस्तगो वा यदि।
कष्टात्सौख्यमिह द्वयं यदि पुनर्नीचास्तगं स्यान्मृतिः
सूत्यब्दोद्भवरिष्टतो मृतिसमं स्यादन्यथेत्यूचिरे ॥ ८ ॥

अन्वयः—तौ (लग्नांशनाथलग्नेशांशनाथौ) मिथः शत्रुदृशा दृष्टौ शशिना च शत्रुदृशा दृष्टौ तदा मनोदुःखदौ, अनयोःकश्चिन्नीचास्तगौ वा यदि तदा कष्टात्सौख्यं, यदि इह द्वयं पुनर्नीचास्तगं तदा मृतिः स्यात्, सूत्यब्दोद्भवरिष्टतो मृतिसमं स्यात् अन्यथा अन्यथेत्यूचिरे ॥ ८ ॥

यदि वे लग्नांशनाथ लग्नेशांशनाथ दोनों परस्पर शत्रुदृष्टि से देखते हों और उन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोनों को चन्द्रमा भी शत्रुदृष्टि से देखता हो तो मनोदुःख (चिन्ता) को देते हुये रोग को बढ़ाते हैं तथा पूर्वोक्त दोनों स्वामियों के बीच जो कोई एक नीच राशि को प्राप्त हो अथवा अस्त हो गया हो तो वह कष्ट को प्राप्त कर पीछे से सौख्य देता है अथवा वे दोनों नीच राशि में स्थित हों वा अस्तगंत हों अथवा एक नीच राशि में हो एक अस्तंगत हो तो मृत्यु होती है, ऐसा फल तब जानना जब कि जन्मकाल और वर्षकाल में अरिष्टयोग की उत्पत्ति होवे, अन्यथा मृत्यु के समान कष्ट जानना यह आचार्यों ने कहा है ॥ ८ ॥

मासलग्नसम्बन्धी शुभाशुभ फल—

भावांशाधिपतिः स्वभावपनवांशेशेन मैत्रीदृशा
दृष्टो वा सहितः शशी च यदि तौ मैत्रीदृशालोकते ।
तद्भावोत्थसुखं विलोक्यमथ तद्व्यत्यासतः कीर्तितं
नीचास्तादिफलं च लग्नवदिदं विद्वद्भिरूह्यं धिया ॥ ९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९ ॥

मासलग्न में जिस भाव का विचार करे तो उस भाव के नवांश का स्वामी अपने स्वामी के नवांशस्वामी करके मित्रदृष्टि से देखा जाता हो अथवा युक्त हो और वहाँ चन्द्रमा भी यदि उन भावनवांशस्वामी और भावेशनवांशस्वामी को मित्रदृष्टि से देखे तो उस भाव से उत्पन्न सुख उस महीना में होता है, इससे विरुद्ध हो तो उलटा फल (कष्टादि) कहना और इस समय नीच अस्त आदिकों का फल पूर्वोक्त लग्न के समान बुद्धिमानों करके कहना योग्य है, जैसे भाव नवांशनाथ भावेश नवांशनाथ इन दोनों में एक नीच राशि में हों, एक शुभ हो अथवा एक अस्तगत हो, एक शुभ हो, तो उस भावसम्बन्धी कष्ट को करके पीछे सुख को करता है, दोनों नीचास्तादि में हों तो उस भाव से उत्पन्न कष्ट को देते हैं ॥ ९ ॥

प्रकारान्तरसे इन्ही भावों का शुभफल—

लग्नेशमासेशसमेश्वरांशनाथा यदंशाधिपमित्रदृष्ट्या ।
दृष्टा युता वा शशिना च तद्वद्भावोत्थसौख्याय न चेदनिष्टम् ॥१०॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १० ॥

वर्षलग्नस्वामी, मासलग्नस्वामी, वर्षेश और मासलग्ननवांशपति ये चारो जिस-जिस भाव के अथवा भावेशनवांशस्वामी करके मित्रदृष्टि से देखे जाते हों, अथवा युक्त हों तो उस २ भाव का सौख्य होता है, यदि अनिष्ट न हों तो ऐसा फल कथन करना ॥१०॥

लग्ननवांशके वशसे ही उस उस भाव से उत्पन्न शुभाशुभ फल—

निर्बलो व्ययषष्ठाष्टांशपाः सत्फलदायकाः ।
अन्ये सवीर्याः शुभदा व्यत्यये व्यत्ययाः स्मृताः ॥११॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११ ॥

यदि अनिष्टकारक बारहवें, छठें, आठवें, इन भावों के नवांशस्वामी निर्बल (बल से रहित) हों तो उस उस भाव से शुभ फल के देने वाले कहे हैं और शेष भावों के नवांशस्वामी यदि बलिष्ठ हों तो उस २ भाव से शुभ फल देने वाले होते हैं, और जो कहे हुए से विरुद्ध हों तो उलटा फल होता है ॥ ११ ॥

अधिकारी ग्रहों के विरुद्ध स्थान में स्थित होने से अनिष्ट फल—

लग्नेशमासेशसमेशमुंथाधीशाः षडष्टोपगताः सपापाः ।
दृष्टाः खलैः शत्रुदृशाऽत्र मासे व्याध्यादिविड्भयदुःखदाःस्युः ॥१२॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १२ ॥

वर्षलग्नस्वामी, मासस्वामी, वर्षस्वामी और मुंथहास्वामी, ये चारों पापग्रहों से युक्त होकर, छठें वा आठवें स्थान में स्थित हों और इन चारों को पापग्रह शत्रुदृष्टि से देखते हों तो उस मासमें व्याधि आदि व शत्रुभय और दुःख को देते हैं ॥ १२ ॥

केन्द्रत्रिकोणायगतस्तु लग्नमासाऽब्दपा वीर्ययुताः नराणाम् ।
नैरुज्यशत्रुक्षयराज्यलाभमानोदयात्यद्भुतकीर्तिदाः स्युः ॥१३॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १३ ॥

वर्षलग्नेश, मासेश और वर्षेश्वर, ये तीनों बलवान् होकर केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान, त्रिकोण ९।५ स्थान और एकादश स्थान इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित हों तो वे मनुष्यों को आरोग्यता, शत्रुक्षय, राज्यलाभ, भाग्य का उदय और अति अद्भुत कीर्ति इनको देते हैं ॥ १३ ॥

मतान्तर से फल—

इन्थिहा लग्नपो राशिर्यो बली तत्र हद्दपाः ।
दशेशाः स्वांशतुल्याहैरित्युक्तं कैश्चिदागमात् ॥ १४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १४ ॥

मासमुंथहा, मासलग्न इनकी जो बली राशि उस राशि में जो हद्दा के स्वामी हैं, वे अपने अंशतुल्य दिनों करके दशा के स्वामी होते हैं यह आगम (मूलशास्त्र) से कितनेक विद्वानों ने कहा है ॥ १४ ॥

अन्य आचार्यों का मत—

रवीन्द्वोरसमावेशान्नैतद्युक्तं परे जगुः ।
दशान्तरदशाच्छेदे फलमाब्दं तु युज्यते ॥ १५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १५ ॥

यह पूर्वमत सूर्य और चन्द्रमा के सम्बन्ध के नहीं होने से युक्त नहीं, यहाँ पर आचार्य कहते हैं, और अब मासदशा व अन्तर्दशा का फल वर्णन करते हैं, कि वर्ष-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दशा, अन्तर्दशा के विभाग की रीति से किए हुए विभाग में वर्ष का कहा हुआ फल युक्त ही होता है ।। १५ ।।

दिनप्रवेश का फल—

दिनप्रवेशकालेऽपि ग्रहान्भावांश्च साधयेत् ।
चन्द्रलग्नांशकाभ्यां तु फलं तत्र वदेद् बुधः ।। १६ ।।

अन्वयः—स्पष्टम् ।। १६ ।।

दिन प्रवेश समय में ग्रह और भावों को साधे उस दिन प्रवेश में चन्द्रमा और लग्न के नवांशों करके शुभाशुभ फल को पण्डित वर्णन करे ।। १६ ।।

दिनस्वामी का निर्णय—

चतुष्कमिंथिहेशादि दिनमासाब्दलग्नपाः ।
एषां बली तनुं पश्यन्न दिनेशः परिकीर्तितः ।। १७ ।।

अन्वयः—इन्थिहेशादि चतुष्कं (मुथहेश, जन्मलग्नेश, त्रैराशिकेश, दिनरात्रीश) दिनमासाब्दलग्नपाः एषां बली तनुं पश्यन् दिनेशः परिकीर्त्तितः ।।१७।।

मुंथहास्वामी, जन्मलग्नस्वामी, त्रैराशिकस्वामी, दिनरात्रीश, ये चार और दिनलग्नेश मासलग्नेश, वर्षलग्नेश इन सातों के बीच जो बलवान् होके दिन लग्न को देखे उसी को आचार्यों ने दिन का स्वामी कहा है ।। १७ ।।

दिनप्रवेश में ग्रहों का शुभाशुभ फल—

त्रिकोणकेन्द्रायगताः शुभाश्चेच्चन्द्रात्तनोर्वा बलिनः खलास्तु ।
षट्त्र्यायगास्तत्र दिने सुखानि विलासमानार्थयशोयुतानि ।।१८।।

अन्वयः—चन्द्राद्वा तनोः बलिनः शुभाः त्रिकोणकेन्द्रायगताः खलाः षट्त्र्यायगाः तत्र दिने सुखानि विलासमानार्थयशोयुतानि भवन्ति ।। १८ ।।

शुभ ग्रह बलवान् होते हुए चन्द्रमा और लग्न से त्रिकोण ९।५ व केन्द्र १।४।७।१० व ग्यारहवें स्थान में स्थित हों और पाप ग्रह तीसरे, छठे, ग्यारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित हों तो उस दिन विलास, मान, धन और यश से युक्त सुख को देते हैं ।। १८ ।।

छठे, आठवें और बारहवें आदि स्थानों में स्थित दिनेशादिकों के फल—

षडष्टरिष्फोपगता दिनाऽब्दमासेन्थिहेशाः खलखेटयुक्ताः ।
गदप्रदा मानयशोहराश्च केन्द्रत्रिकोणायगताः सुखाप्त्यै ।।१९।।

अन्वयः—स्पष्टम् ।। १९ ।।

दिनेश, वर्षेश, मासेश, मुंथहेश, ये चारों पापग्रहों से युक्त होकर छठे, आठवें, और बारहवें इन स्थानों में से किसी स्थान में स्थित हों तो वह रोगों को देते हुए मान और यश को हरते हैं और जो दिनेश आदि चारों केन्द्र १।४।७।१० वा त्रिकोण ९।५ वा ग्यारहवें इन स्थान में स्थित हों तो सुख की प्राप्ति होती है ।। १९ ।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिनलग्ननवांशद्वारा फल—

लग्नांशकः सौम्यखगैः समेतो दृष्टोपि वा मित्रदृशेन्दुनापि ।
नैरुज्यराज्यादिशरीरपुष्टिर्मासोक्तिवद् दुःखमतोन्यथात्वे ॥२०॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २० ॥

जो दिनलग्ननवांशराशि शुभ ग्रहों से युक्त वा मित्रदृष्टि से दृष्ट होय तो वह आरोग्यता, राज्य आदि और शरीरपुष्टि को देता है, और जो उक्त प्रकार से विपरीत हो तो (तौ चेच्छत्रुदृशा०) इस मासोक्तरीति से फल जानना चाहिये ॥ २० ॥

उक्त रीति से मावेशलग्न के अर्थ का अतिदेश—

यदंशपः सौम्ययुतेक्षितो वा स्निग्धेक्षणाद्भावजसौख्यकृत्सः ।
दुःखप्रदः प्रोक्तवदन्यथात्वे सर्वेषु भावेष्वियमेव रीतिः ॥२१॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २१ ॥

जिस भाव के नवांश की राशि शुभग्रहों से युक्त अथवा मित्र दृष्टि से देखी जाती हो उस भाव से उत्पन्न सौख्य का करने वाली होती है अन्यथा दुःख देती है, यह रीति सब भावों के विचार में जानना ॥ २१ ॥

छठे और बारहवें भाव में विशेष फल—

षष्ठांशकस्सौम्ययुतो रोगदः पापयुक् शुभः ।
व्ययांशे शुभयुग्दृष्टे सद्व्ययः पापतस्त्वसत् ॥ २२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २२ ॥

जो छठे भाव का नवांश राशि शुभ ग्रहों से युत वा दृष्ट हो तो वह रोग को देता है और जो पापग्रहों से युक्त हो तो वह शुभ फल को देता है, और जो बारहवें भाव का नवांश राशि शुभग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो अच्छे काम में धन का खर्च होता है, पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो निकृष्ट काम में खर्च होता है, ॥ २२ ॥

जायांशः सौम्ययुग्दृष्टः स्वस्त्रीसौख्यविलासकृत् ।
पापैर्गृहकलिं दुःखं पापान्तःस्थे मृतिं वदेत् ॥ २३ ॥
शुभमध्यस्थिते त्र्यंशे बहुलं कामिनीसुखम् ।
स्वस्या रतिर्गुरावन्यखगेऽन्यासु रतिं वदेत् ॥ २४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २४ ॥

सप्तम भाव का नवांशराशि शुभग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो अपनी स्त्री से सौख्य और विलास को करता है तथा जो पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो घर में लड़ाई और दुःख होता है, और पापग्रहों के मध्य स्थित हो तो स्त्री की मृत्यु कह देवे ॥ २३ ॥ तथा जो सप्तम भाव नवांशराशि शुभग्रहों के मध्य में स्थित हो तो अपनी स्त्री में रति (रमण) कहे और जो अन्यग्रह स्थित हों तो अन्यभार्या में रमण कहे ॥ २४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अष्टम भाव का फल—

मृत्यंशे मृत्युगैस्सौम्यैर्युग्दृष्टं मरणं रणे ।
मिश्रैर्मिश्रं खलैः सौख्यं वर्षलग्नाऽनुसारतः ॥ २५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २५ ॥

जो अष्टमभाव नवांश को राशि दिनप्रवेशलग्न से आठवें घर में स्थित हो और शुभग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो रणभूमि में मरण होता है, और जो शुभग्रहों से मिश्रित व पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो मिले हुए फल को कहे, तथा जो केवल पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो वर्षलग्नानुसार सुख होता है ॥ २५ ॥

कर्तरीयोग फल—

द्विर्द्वादशे खला हानिं व्यये सौम्याः शुभव्ययम् ।
कर्तरी पापजा रोगं करोति शुभजा शुभम् ॥ २६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २६ ॥

जिसके दिन प्रवेश लग्न से दूसरे और बारहवें घर में पाप ग्रह स्थित हों तो वह उसके धन का क्षय करते हैं और जो बारहवें घर में शुभग्रह स्थित हों तो उत्तम काम में खर्च होता है, पापग्रह से उत्पन्न कर्तरीयोग रोग करता है, और शुभग्रहजनित कर्तरीयोग शुभफल को देता है ॥ २६ ॥

चन्द्रकृत अरिष्टयोग—

लग्नेऽष्टमे वा क्षीणेन्दुर्मृत्युदः पापदृग्युतः ।
रोगो वाग्रहणं वापि रिपुतः शस्त्रभीरपि ॥ २७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २७ ॥

जो दिनप्रवेश लग्न में अथवा दिनप्रवेश लग्न से आठवें स्थान में पापग्रहों से दृष्ट वा युक्त होकर क्षीण चन्द्रमा स्थित हो तो उस प्राणी के अर्थ मृत्यु को देता है अथवा वह रोगी होकर वैरियों से पकड़ा जाता है और किसी हथियार से भयभीत होता है ऐसा जानना ॥ २७ ॥

पुनः चन्द्रकृत अनिष्ट फल—

चन्द्रे सभौमे निधनारिसंस्थे नृणां भयं शस्त्रकृतं रिपोर्वा ।
पापैः सुखस्थैः पतनं गजाश्वयानात्तनौ स्याद्बहुला च पीड़ा ॥२८॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २८ ॥

जो वर्षलग्न से आठवें व छठें स्थान में मंगलसहित चन्द्रमा स्थित हो तो मनुष्यों को हथियार से भय वा शत्रु से भय होता है और जो पापग्रह चतुर्थ स्थान में स्थित हों तो हाथी व घोड़े की सवारी से गिरना होता है, कि जिससे शरीर में बड़ी भारी पीड़ा होती है ॥ २८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुभफल—

शुभा द्यूने विजयदा द्यूतादर्थे सुखावहाः ।
नवमे धर्मभाग्यार्थराजगौरवकीर्तिदाः ॥ २९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २९ ॥

जो शुभग्रह दिनप्रवेशलग्न से सप्तम स्थान में स्थित हों तो वे जुवा से विजय को देते हैं और जो दूसरे घर में स्थित हों तो दुःख को प्राप्त करते हैं और जो नवें स्थान में हों तो धर्म, भाग्य, धन राजगुरुत्वं और कीर्ति को देते हैं ॥ २९ ॥

दिन प्रवेश में चन्द्रमा की अवस्था से फल—

दिनप्रवेशेऽस्ति विधुरवस्थायां तु यादृशि ।
तदवस्थातुल्यमसौ फलं दत्ते न संशयः ॥ ३० ॥

अन्वयः—दिनप्रवेशे विधुः यादृशि अवस्थायां अस्ति तदवस्थातुल्यं अ स फलं दत्ते इति न संशयः ॥ ३० ॥

दिन प्रवेश समय चन्द्रमा जिस अवस्था में स्थित हो तो उसी अवस्था के तुल्य फल को देता है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ३० ॥

अवस्था लाने का प्रकार—

विहाय राशिं चन्द्रस्य भागा द्विघ्नाः शरोद्धृताः ।
लब्धं गता अवस्थास्स्युर्भोग्यायाः फलमादिशेत् ॥ ३१ ॥

अन्वयः—चन्द्रस्य राशिं विहाय भागा (अंशादयः) द्विघ्नाः शरोद्धृताः लब्धं गता अवस्था स्युः भोग्यायाः फलमादिशेत् ॥ ३१ ॥

दिन प्रवेश समय में स्पष्ट चन्द्रमा की राशि को छोड़कर अंशादिकों को दो से गुणा करे फिर उनमें पाँच का भाग लेने से जो लब्ध हो वह गत अवस्था होती है उसमें जो भोग्यावस्था है उसका फल कथन करे ॥ ३१ ॥

द्वादश अवस्थाओं के नाम (मुहूर्त चिन्तामणि)

प्रवाश नाशौ मरणं जयश्च हास्यं रतिः क्रीडितसुप्तभुक्ताः ।
ज्वराख्यकम्पस्थिरता अवस्था मेषात् क्रमान्नामसदृकूफलाः स्युः ॥

अवस्था के फल—

प्रवासः प्रवासोपगे रात्रिनाथेऽर्थनाशस्तु नष्टोपगे मृत्युभीतिः ।
मृतावस्थिते स्याज्जयायां जयस्तु विलासस्तु हास्योपगे कामिनीभिः ॥३२॥
रतौ स्याद्रतिः क्रीडिता सौख्यदात्री प्रसुप्तापि निद्रां कलिं देहपीडां ।
भयं तापहानिः सुखं स्यात्तु भुक्ता ज्वराकम्पिता सुस्थिताः स्युः क्रमेण ॥३३॥

इति नीलकण्ठ्यां वर्षतन्त्रेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—रात्रिनाथे प्रवासोपगे प्रवासः नष्टोपगे अर्थनाशः, मृतावस्थिते मृत्युभीतिः, जयायां जयः हास्योपगे कामिनीभिः विलासः, रतौ रतिः, क्रीडिता सौख्यदात्री, प्रसुप्ता निद्रां कलिं च, भुक्ता देहपीडां ॥ ३२-३३ ॥

(१) जो प्रवासावस्था में चन्द्रमा हो तो प्रवास (परदेश को गमन) होता है (२) नष्टावस्था द्रव्य का नाश (३) मृतावस्था में मृत्यु, (४) जया में जय, (५) हास्य में कामिनियों के साथ विलास, (६) रति अवस्था में रति, (विषय सुख) होते हैं (७) क्रीडिता अवस्था सौख्य देती है (८) प्रसुप्ता अवस्था नींद और कलह देती है (९) भुक्ति अवस्था में देह को पीड़ा होती है (१०) ज्वरावस्था में भय होता है (११) कम्पितावस्था में ताप (ज्वर) और हानि होती है (१२) सुस्थितावस्था में सुख होता है इस क्रम से ऐसा फल जानना योग्य है ॥ ३२-३३ ॥

इति नीलकण्ठीभाषाटीकायां मासदिवसफलविचारो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ मृगयादिविचारो नामनवमोऽध्यायः प्रारभ्यते।

प्रथम मृगयाविचार करते हैं—

सवीर्यौ कुजज्ञौ नृपाखेटसिद्ध्यै न सिद्धिर्यदा वीर्यहीनाविमौ स्तः।
जलाखेटमाहुः सवीर्यैर्ग्रहर्क्षैर्जलाख्यैर्नगाख्यैर्नगाखेटमाहुः ॥ १ ॥

अन्वयः—सवीर्यौ कुजज्ञौ नृपाखेटसिध्यै भवतः, यदा इमौ वीर्यहीनौ स्तः, तदा सिद्धिः न जलाख्यैः ग्रहर्क्षैः सवीर्यैः जलाखेटमाहुः नगाख्यैः नगाखेटमाहुः ॥ १ ॥

प्रश्नलग्न में यदि मंगल और बुध दोनों बलिष्ठ हों तो राजाओं के शिकार की सिद्धि होती है तथा जो दोनों निर्बल हों तो मृगया (शिकार) की सिद्धि नहीं होती है। जल-संज्ञक राशियों (कर्क, वृश्चिक, मीन,) करके जलसम्बन्धी शिकार की सिद्धि होती है और पर्वतसंज्ञक राशियों (मे० सिं० ध०) करके पर्वतसम्बन्धी शिकार की सिद्धि होती है ॥ १ ॥

लग्नास्तनाथौ केन्द्रस्थौ निर्बलौ क्लेशदायिनी।
मृगयोक्ता शुभफला वीर्याढ्यौ यदि तौ पुनः ॥ २ ॥

अन्वयः—लग्नास्तनाथौ केन्द्रस्थौ निर्बलौ मृगया क्लेशदायिनी उक्ता, यदि तौ पुनः वीर्याढ्यौ तदा शुभफला उक्ता ॥ २ ॥

लग्न और सप्तम स्थान के स्वामी ये दोनों यदि निर्बल होकर पहले, चौथे, सातवें इन स्थानों में से किसी स्थान में हों तो शिकार में क्लेश होता है, यदि वह दोनो बली होकर केन्द्र में स्थित हों तो शिकार में शुभ फल होता है ॥ २ ॥

भोजनचिन्ता—

लग्नाधिपो भोज्यदाता सुखेशो भोज्यमीरितम्।
बुभुक्षा मदपः कर्मपतिर्भोक्तेति चिन्तयेत् ॥ ३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३ ॥

लग्नस्वामी भोजन का देने वाला, चौथे घर का स्वामी भोजन की वस्तु आचार्यों ने कहा है, सप्तम भाव का स्वामी भोजन की इच्छा, दशम घर का स्वामी भोजन कर्ता यह विचार करे ॥ ३ ॥

लग्ने लाभे च सत्खेटैर्युते दृष्टे च भोजनम्।
जीवे लग्ने सिते वापि सुभोज्यं दुःस्थितावपि ॥ ४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मन्दे तमसि वा लग्ने सूर्येणालोकिते युते ।
लभ्यते भोजनं नाऽत्र शस्त्रभितिस्तदा क्वचित् ॥ ५ ॥
रविदृष्टं युतं वापि लग्नं न यदि तत्र हि ।
उपवासस्तदा वाच्यो नक्तं वा विरसाशनम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४-५-६ ॥

लग्न में ग्यारहवें स्थान में शुभग्रह युक्त हो अथवा शुभग्रहों की दृष्टि हो तो भोजन प्राप्त होता है, बृहस्पति वा शुक्र लग्न में हो तो दारिद्र्यादि दुःख की प्राप्ति में भी सुन्दर भोजन की प्राप्ति होती है ॥ ४ ॥ लग्न में शनि वा राहु स्थित हों और उनको सूर्य देखता हो वा सूर्ययुक्त हों तो इस योग में भोजन नहीं प्राप्त होता किन्तु कहीं से शस्त्रमय होता है ॥ ५ ॥ यदि लग्न सूर्य से दृष्ट वा युक्त हो तो उपवास कहना चाहिये अथवा रात्रि में विरस (रसरहित) भोजन मिलेगा ऐसा कहना ॥ ६ ॥

चन्द्रे कर्मगते भोज्यमुष्णं शीतं सुखे कुजे ।
तुर्ये खेटस्य वसतो भोज्यान्ने रसमादिशेत् ॥ ७ ॥
स्निग्धमन्नं सिते तुर्ये तैलसंस्कृतमर्कजे ।
नीचोपगे कदशनं विरसं च असंस्कृतम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७-८ ॥

जो चन्द्रमा दशम स्थान में स्थित हो तो गरम भोजन प्राप्त होता है, तथा मंगल चौथे स्थान में स्थित हो तो ठण्डा भोजन प्राप्त होता है, चौथे स्थान में स्थित ग्रह के अनुसार भोजन के अन्न में रसको वर्णन करे ॥ ७ ॥ चौथे घर में शुक्र स्थित हो तो भोजन में चिकना अन्न प्राप्त होता है, जो शनि चौथे स्थान में स्थित हो तो तैल से भुना हुआ अन्न प्राप्त होता है, तथा जो नीच राशि में युक्त ग्रह स्थित हों तो रसरहित तथा संस्कारहीन बुरा अन्न मिलता है ॥ ८ ॥

सूर्यादिभिर्लग्नगतैः सवीर्यै राजादिगेहे भुजिमामनन्ति ।
सुखे सुखेशे सबले सुभोज्यं चरादिके स्यादसकृत्सकृद्द्विः ॥ ९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९ ॥

जो सूर्यादि ग्रह बलवान् होकर लग्न में स्थित हों तो राजा आदि के घर में भोजन आचार्यों ने कहा है, चौथे घर का स्वामी बलवान् होकर चौथे घर में स्थित हो तो भोजन सुन्दर मिलता है, तथा जो चौथे घर का स्वामी चरराशि में विद्यमान हो तो अनेकवार भोजन प्राप्त हो, स्थिर राशि में स्थित हो तो एकवार, द्विस्वभाव राशि में स्थित हो तो दो वार भोजन प्राप्त होवे ॥ ९ ॥

मूलत्रिकोणगे खेटे लग्ने पितृगृहेऽशनम् ।
मित्रालये मित्रभस्थे शत्रुगेहेऽरिगेहगे ॥ १० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुभेक्षितयुते लग्ने बलाढ्ये स्वगृहे भुजिः ।
गृहराशिस्वभावेन यत्नादन्यच्च चिन्तयेत् ॥ ११ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १० ॥ ११ ॥

जो ग्रह मूलत्रिकोण में स्थित होकर लग्न में स्थित हो तो पिता के घर में भोजन प्राप्त होता है मित्र के राशि में स्थित होने से मित्र के घर में भोजन प्राप्त होता है, शत्रु के घर में स्थित हो तो शत्रु के घर में भोजन प्राप्त होता है ॥१०॥ यदि लग्न बलवान हो और शुभग्रहों से दृष्ट वा युत हो तो अपने घर में भोजन प्राप्त होता है, पण्डित को उचित है कि ग्रहों के राशिस्वभाव से यत्नपूर्वक भोजनपदार्थों का चिन्तन करे ॥ ११ ॥

भोजन के अन्नों का ज्ञान—

तिलान्नमर्के हिमगौ सुतन्दुला भौमे मसूराश्चणकाश्च भोज्यम् ।
बुधे समुद्गाः खलु राजमाषा गुरो सगोधूमभुजिः सवीर्ये ॥ १२ ॥
शुक्रे यवा बाजरिका युगन्धराः शनौ कुलित्थादि समाषमन्नम् ।
भोज्यं तुषान्नं शिखिराहुवीर्याच्छुभेक्षणालोकनतः सहर्षम् ॥ १३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १२ ॥ १३ ॥

लग्न में बलवान सूर्य हो तो तिलों के लड्डुओं का भोजन प्राप्त होवे, चन्द्रमा हो तो चावल, मंगल बली हो तो मसूर और चना, बुध बलवान् हो तो मूँगसहित उड़द का भोजन मिले, बृहस्पति बली हो तो गेहूँ का भोजन प्राप्त होवे ॥ १२ ॥ शुक्र बलवान् हो तो यव, बाजरा, जुन्हरी और जिमीकन्द का भोजन प्राप्त होता है, तथा जो शनैश्चर बली हो तो उड़दी समेत कुलथी आदि अन्नों का भोजन प्राप्त होता है, केतु, राहु ये दोनों बलवान् हों और शुभग्रह देखते हों तो आनन्दसहित भूसी व कनकी आदि के अन्नों का भोजन प्राप्त होता है ॥ १२ ॥ १३ ॥

सूर्ये मूलं पुष्पमिन्दौ कुजे स्यात्पत्रं शाखां चापि शाकं सवीर्ये ।
शुक्रेज्यज्ञे व्यजनं भूरिभेदं मन्देनेत्थं सामिषं राहुकेत्वोः ॥ १४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १४ ॥

सूर्य बलवान् हो तो मूली का शाक भोजन में प्राप्त होता है और चन्द्रमा के बलिष्ठ रहते पुष्प, (गोभी आदि के फूल का शाक) मंगल के बलवान् रहते डाली सहित पत्तों का शाक, शुक्र बृहस्पति और बुध के बली रहते नानाप्रकार के व्यञ्जनों का भोजन प्राप्त होता है, और शनैश्चर बली होने से भी इसी प्रकार होता है और जो राहु, केतु ये दोनों बल से संयुक्त हों तो मांससमेत व्यञ्जनों का भोजन प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

स्वप्नचिन्ता का वर्णन—

लग्नांशगेऽर्के तमुगेऽपि वास्मिन्दुःस्वप्नमीक्षेत यथार्कबिम्बम् ।
रक्ताम्बरं वह्निमथापि चन्द्रे शुभ्राश्वरत्नाम्बरवज्रपुष्पम् ॥ १५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्त्रियः सुरूपाश्च कुजे सुवर्णरक्ताम्बरस्रङ्मणिविद्रुमाणि ।
बुधेः हयस्वर्गतिधर्मवार्ता गुरौ रतिं धर्मकथां सुरेक्षाम् ॥ १६ ॥

अन्वयः—लग्नांशगेऽर्के वा तनुगेऽर्के दुःस्वप्नं ईक्षेत यथा अर्कबिम्बम्, रक्ताम्बरं, वह्निं अथेत्यादि स्पष्टम् ॥ १५ ॥ १६ ॥

सूर्य लग्न के नवांश में अथवा लग्न में स्थित हो तो मनुष्य नेष्टस्वप्न को देखता है, जैसे सूर्य का बिम्ब, लाल कपड़े और अग्नि आदि, चन्द्रमा लग्ननवांश वा लग्न में हो तो स्वप्न में श्वेत घोड़ा, रत्न, कपड़ा, वज्र, फूल और सुन्दर स्त्रियों को देखता है, मंगल लग्न नवांश व लग्न में स्थित हो तो स्वप्न में सुवर्ण, लाल कपड़ा, रक्त फूल की माला, मणि, मूँगा इनको देखता है तथा जो बुध लग्न के नवांश में वा लग्न स्थित हो तो स्वप्न में घोड़ा की सवारी, स्वर्ग में गमन, धर्मसम्बन्धी वार्ताओं का करना, इनको देखता है, और जो बृहस्पति लग्न नवांश वा लग्न में स्थित हो तो स्वप्न में रमण (विषय सुख), धर्मसम्बन्धी कथाओं का वर्णन करना और शिवालय, ठाकुरद्वार, आदिकों में देवमूर्तियों का दर्शन और सजातीय प्रिय भाइयों का समागम इन सबको देखता है ॥ १५ ॥ १६ ॥

सद्बन्धुसंगश्च सिते जलानां पारे गतिर्देवरतिर्विलासः ।
शनावरण्याद्रिगतिश्च नीचैः संगश्च राहौ शिखिनीत्थमेव ॥ १७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १७ ॥

शुक्रलग्नांश, वा लग्न में हो तो जलाशयों के तट पर गमन, देवरति और विलास को देखता है, एवं शनि लग्न के नवांश वा लग्न में हो तो स्वप्न, वनभ्रमण, पर्वत पर चढ़ना और नीचों की संगति को देखता है, इसी प्रकार राहु और केतु का स्वप्न दर्शन जानना ॥ १७ ॥

स्वप्न में सुन्दरी स्त्री के साथ रमण का ज्ञान—

सहजधीमदनायरिपुस्थितो यदि शशी गुरुभानुसितेक्षितः ।
नवमकेन्द्रगतेषु शुभग्रहेष्वबलया मनुजो रमते तदा ॥ १८ ॥

अन्वयः—यदि शशी सहजधीमदनायरिपुस्थितो गुरुभानुसुतेक्षितः नवमकेन्द्रगतेषु शुभग्रहेषु तदा अबलया मनुजो रमते ॥ १८ ॥

तीसरे, पाँचवें, सातवें, ग्यारहवें और छठें इन स्थानों में से किसी स्थान में यदि चन्द्रमा स्थित हो और उसको गुरु, सूर्य, शुक्र ये तीनों देखते हों और नवें, पहले, चौथे, सातवें इन स्थानों में शुभग्रह हों तो स्वप्न में सुन्दर प्यारी स्त्री के साथ रमण करता है ॥ १८ ॥

ग्रन्थकार के वंश का वर्णन—

आसीदसीमगुणमण्डितपण्डिताग्र्यो व्याख्यद्भुजङ्गपगवीः श्रुतिवित्सुवृत्तः ।
साहित्यरीतिनिपुणो गणितागमज्ञश्चिन्तामणिर्विपुलगर्गकुलावतंसः ॥१९॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—असीमगुणमण्डितपण्डिताग्रयः व्याख्यद्भुजङ्गपगवीः श्रुतिवित्सुवृत्तः साहित्यरीतिनिपुणः गणितागमज्ञः गर्गकुलावतंसः चिन्तामणिः आसीत् ॥ १९ ॥

अपरिमित गुणों से भूषित पण्डित जनों में श्रेष्ठ, महाभाष्य के पढ़ाने वाले, वेदविहित कर्मों के जानने वाले, अच्छे आचरणों के करने वाले, साहित्य रीति में निपुण गणित शास्त्र के ज्ञाता, सुन्दर गर्गकुल के भूषणरूप ऐसे चिन्तामणिनामक थे ॥१९॥

तदात्मजोऽनन्तगुणोऽस्त्यनन्तो योऽधोक्सदुक्तीः किल कामधेनुम् ।
संतुष्टये जातकपद्धतिं च न्यरूपयद् दुष्टमतं निरस्य ॥ २० ॥

अन्वयः—तदात्मजोऽनन्तगुणः अनन्तोऽस्ति यः तदुक्तीः कामधेनुं अधोक् तथा सत् तुष्टये दुष्टमतं निरस्य जातकपद्धतिं न्यरूपयत् ॥ २० ॥

उन चिन्तामणि के पुत्र अनन्तगुणों से युक्त अनन्त नामक जिन्होंने सज्जनों के आनन्दार्थ ज्योतिषशास्त्र में प्रसिद्ध पञ्चाङ्ग (तिथिपत्र) का साधक कामधेनुनामक ग्रन्थ के ऊपर तिलक बनाया, और दुष्टों के मत को दूरकर जातकपद्धति की, जिससे उत्पन्न बालक तथा कन्याओं के जन्मपत्र का शुभाशुभ फल कहा जाता है ॥ २० ॥

पद्माम्बयाऽसावि ततो विपश्चिच्छ्रीनीलकण्ठः श्रुतिशास्त्रनिष्ठः ।
विद्वच्छिवप्रीतिकरं व्यधासीत् समाविवेकं मृगयावतंसम् ॥ २१ ॥

अन्वयः—ततः पद्मांबया श्रुतिशास्त्रनिष्ठः विपश्चित् श्रीनीलकण्ठः असावि, असौ विद्वत् शिवप्रीतिकरं समाविवेकं मृगयावतंसं व्यधासीत् ॥२१॥

उन अनन्त दैवज्ञ से पद्मानाम्नी माता ने विद्वान् वेदवेदाङ्गों के ज्ञाता नीलकण्ठ-नामक पुत्र को उत्पन्न किया जो कि विद्वान् शिवजी की प्रीति को करने वाला जिसमें मृगया आदि का वर्णन भली भाँति किया ऐसे वर्षविचार को रचा ॥ २१ ॥

वर्षतन्त्र का पूर्तिसमय—

शाके नन्दाभ्रबाणेन्दुमिते आश्विनमासके ।
शुक्लेऽष्टम्यां समातंत्रं नीलकंठबुधोऽकरोत् ॥ २२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २२ ॥

इति श्रीगर्गवंशोद्भवदैवज्ञानन्तसुतदैवज्ञनीलकण्ठविरचितं वर्षतन्त्रं समाप्तम् ।

श्रीमहाराज शालिवाहनजी के शाके १५०९ आश्विनशुक्ल अष्टमी को नीलकण्ठजी ने इस वर्षतन्त्र को पूर्ण किया ॥ २२ ॥

इति ताजिकनीलकण्ठीभाषाटीकायां वर्षतन्त्रं समाप्तम् ॥ २ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ तृतीयं प्रश्नतन्त्रं प्रारभ्यते ।

अब प्रश्नतन्त्र का वर्णन करते हुए प्रश्नकर्ता को उपदेश करते हैं—

दैवज्ञस्य हि दैवेन सदसत्फलवाञ्छया ।
अवश्यं गोचरे मर्त्यः सर्वः समुपनीयते ॥ १ ॥

अन्वयः—दैवज्ञस्य[1] दैवेन सदसत्फलवाञ्छया गोचरे सर्वः मर्त्यः अवश्यं समुपनीयते ॥ १ ॥

दैवज्ञ का जो दैव से शुभाशुभ फल कहने की वाञ्छा हो तो ग्रहों के संचार से मनुष्यों का शुभाशुभ फल कह सकता है ॥ १ ॥

ब्रह्मा से प्रश्न व स्वर की परम्परा—

अश्रौषीच्च पुरा विष्णोर्ज्ञानार्थे समुपस्थितः ।
वचनं लोकनाथोपि ब्रह्मा प्रश्नादिनिर्णयम् ॥ २ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २ ॥

पूर्व जब ब्रह्मदेव को कर्म का परिपाक जानने की इच्छा हुई तब विष्णु के समीप गये तहाँ विष्णुजी के मुखकमल से प्रश्न और स्वर का निर्णय सुन कर ब्रह्माजी ने प्रश्नादि निर्णय को ज्योतिष द्वारा जगत् में प्रगट किया ॥ २ ॥

प्रश्नसमय के नियम—

तस्मान्नरः कुसुमरत्नफलाग्रहस्तः प्रातः प्रणम्य वरयेदपि प्राङ्मुखस्थः ।
होराङ्गशास्त्रकुशलान्हितकारिणश्च संहृत्य दैवगणकान्सकृदेव पृच्छेत् ॥३॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३ ॥

इस कारण मनुष्य प्रश्न करने के समय दाहिने हाथ में फूल, फल आदि वस्तु लेके प्रातः समय प्रणामपूर्वक पूर्वमुख बैठे होरांगशास्त्र में कुशल और हित करने वाले ज्योतिषी पण्डितों को एकत्र कर प्रश्ननिमित्त वरण करे, और थोड़े अक्षरों से एक ही बार प्रश्न करे ॥ ३ ॥

किसकी वाणी मिथ्या नहीं होती है उसे कहते हैं—

देशभेदं[2] ग्रहगणितं जातकमवलोक्य निरवशेषमपि ।
यः कथयति शुभमशुभं तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी ॥ ४ ॥

---

१. पूर्वकर्मार्जितविपाको दैवं तज्जानातीति दैवज्ञस्तस्य दैवज्ञस्य ।

२. यहाँ पर बहुत से टीकाकार "दशभेदं ग्रहगणितं" यही पाठ शुद्ध मानते हैं । यदि उक्त पाठ ही शुद्ध हो तो आगे १६ वें और १७ वें श्लोकों में पुनः "दशभेदं" कहने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—देशभेदं ग्रहगणितं निरवशेषं जातकमपि अवलोक्य यः शुभं अशुभं कथयति तस्य वाणी मिथ्या न भवेत् ॥ ४ ॥

प्रश्न समय पण्डित देश भेद से ग्रहणित करके समस्त जातक शास्त्र को देखकर जो शुभाशुभ फल कहता है उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती है ॥ ४ ॥

योग्य और अयोग्य प्रश्नकर्ता—

क्षुद्रपाखण्डधूर्तेषु श्रद्धाहीनोपहासके ।
ज्ञानं न तथ्यतामेति यदि शम्भुः स्वयं वदेत् ॥ ५ ॥
भक्तार्तदीनवदने दैवज्ञो न दिशेद्यदि ।
विफलं भवति ज्ञानं तस्मात्तेभ्यः सदा वदेत् ॥ ६ ॥

अन्वयः—क्षुद्रपाखण्डधूर्तेषु श्रद्धाहीनोपहासके ज्ञानं तथ्यतां न एति यदि स्वयं शम्भुः वदेत् । भक्तार्तदीनवदने दैवज्ञः यदि न दिशेत्तदा तस्य ज्ञानं विफलं भवति तस्मात् तेभ्यः सदा वदेत् ॥ ५-६ ॥

क्षुद्र, (अधम, क्रूर) पाखण्ड धूर्त (मायावी, चोर) और श्रद्धारहित, उपहासक (हँसी से पूछने वाला) इन अयोग्य पुरुषों में अर्थात् इनके पूछने में प्रश्नज्ञान यथार्थ नहीं होता, चाहे स्वयं शम्भु उत्तर देवें ॥ ५ ॥ तथा भक्त, दुःखी, दीनवदन, इनको जो दैवज्ञ नहीं बतलाता है तो उसका ज्ञान विफल होता है इस कारण इनके प्रश्न को अवश्य सर्वदा कहें ॥ ६ ॥

प्रश्नकर्ता की परीक्षा—

ऋजुरयमनृजुर्वा प्रष्टा पूर्वं परीक्ष्य लग्नबलात् ।
गणकेन फलं वाच्यं दैवं तच्चित्तगं स्फुरति ॥ ७ ॥

अन्वयः—अयं ऋजुः वा अनृजुः प्रष्टा इति गणकेन लग्नबलात् पूर्वं परीक्ष्य फलं वाच्यं शेषं स्पष्टम् ॥ ७ ॥

पंडित प्रथम लग्नबल से प्रश्नकर्ता के चित्त की परीक्षा करे कि यह सरल स्वभाव [सीधा] है वा कुटिल है यह पहिले परीक्षा करके प्रश्नफल कहे लग्नबल से प्रश्नकर्ता के चित्त की गति और दैव (कर्मपाक) स्फुरण हो जाता है ॥ ७ ॥

लग्नस्थे शशिनि शनौ केन्द्रस्थे ज्ञे दिनेशरश्मिगते ।
भौमज्ञयोः समदृशा लग्नगचन्द्रेऽनृजुः प्रष्टा ॥ ८ ॥

की क्या आवश्यकता थी । इसलिये यहाँ 'देशभेदं' यही पाठ ठीक मालूम होता है, क्योंकि प्रत्येक देश के मान से लग्न और ग्रह भिन्न भिन्न होते हैं । इसलिये "प्रत्येक देश में वहाँ के मान से इष्ट कालिक ग्रहों को बनाने वाला ज्योतिषी ही सभी फलों को यथार्थ कह सकता है" यह आशय ग्रन्थकर्ता का है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लग्ने शुभग्रहयुते सरलः क्रूरान्विते भवेत्कुटिलः ।
लग्नेऽस्ते सौम्यदृशा विधुगुरुदृष्ट्या च सरलोऽयम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—लग्नस्थे शशिनि शनौ केन्द्रस्थे ज्ञे दिनेशरश्मिगते लग्नगचन्द्रे भौमज्ञयोः समदृशा दृष्टे सति अनृजुः प्रष्टा ज्ञेयः । लग्ने शुभग्रहयुते सरलः प्रष्टा, क्रूरान्विते कुटिलः भवेत्, लग्नेऽस्ते सौम्यदृशा दृष्टे सरलः एवं विधुगुरुदृष्ट्या अयम् सरलः प्रष्टा ज्ञेयः ॥ ८–९ ॥

लग्न में चन्द्रमा, केन्द्र १।४।७।१० स्थान में शनि, स्थित हो और बुध अस्तङ्गत हो तथा लग्न में चन्द्रमा, मंगल, बुध की समदृष्टि से देखा जाता हो तो प्रश्नकर्त्ता का चित्त सरल नहीं है ऐसा जानना ॥ ८ ॥ लग्न में शुभग्रह हो तो प्रष्टा का चित्त सरल, और जो क्रूरग्रह हों तो कुटिल जानना, तथा लग्न में और सातवें स्थान में शुभ ग्रहों की दृष्टि हो वा चन्द्र, गुरु की दृष्टि हो तो यह प्रश्नकर्ता सरलस्वभाव है ऐसा जानना ॥९॥

यदि गुरुबुधयोरेकः पश्यत्यस्ताधिपं च रिपुदृष्ट्या ।
तत्कुटिलः प्रष्टा खल्वनयोरेकस्तयोः साधुः ॥ १० ॥
सम्यग्विचार्य लग्ने ब्रूयात्प्रश्नं सकृद्यथाशास्त्रम् ।
यस्त्वेकं ब्रूतेऽसौ तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी ॥ ११ ॥

अन्वयः—यदि गुरुबुधयोरेकः रिपुदृष्ट्या अस्ताधिपं पश्यति तदा कुटिलः प्रष्टा, अन्यत्स्पष्टम् ॥ १०–११ ॥

यदि बृहस्पति बुध ये दोनों सप्तम स्थान के स्वामी को शत्रुदृष्टि से देखते हों तो प्रश्नकर्ता का चित्त कुटिल जानना तथा इन दोनों में से एक भी मित्रदृष्टि से देखता हो तो प्रश्नकर्ता का साधु स्वभाव जानना ॥१०॥ ज्योतिषवेत्ता पण्डित अच्छे प्रकार यथाशास्त्रानुसार लग्न को विचार कर एक ही प्रश्न को कहता है उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती है ॥ ११ ॥

बहुत प्रश्नों के विषय में विधि—

बहूनि यदि प्रश्नानि युगपद्यदि पृच्छति ।
प्रष्टा तेषां विधिं वक्ष्ये शास्त्रतो लोकतुष्टये ॥ १२ ॥
आदिभं लग्नतो ज्ञानं चन्द्रस्थानाद्द्वितीयकम् ।
सूर्यस्थानात्तृतीयं स्यात्तुर्यं जीवगृहाद्भवेत् ॥ १३ ॥
बुधभृग्वोर्बलीयः स्यात्तद्गृहात्पंचमं पुनः ।
राश्यनुरूपं कथयेत्संज्ञाध्यायोक्तवद्बुधः ॥ १४ ॥

अन्वयः--यदि प्रष्टा बहूनि प्रश्नानि युगपत्पृच्छति (तदा) तेषां शास्त्रतो लोकतुष्टये विधिं वक्ष्ये शेषं स्पष्टम् ॥ १२-१३-१४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यदि प्रश्नकर्ता एक ही समय में बहुत प्रश्न करे तो उसकी विधि को शास्त्रानुसार लोकप्रसन्नार्थ वर्णन करता हूँ ॥ १२ ॥ पहला प्रश्न लग्न से जानना, दूसरा चन्द्रमा से, तीसरा सूर्य के स्थान से, चौथा बृहस्पति के स्थान से विचारना ॥ १३ ॥ पाँचवाँ प्रश्न बुध और शुक्र इन दोनों में जो बली हो उससे कहना, संज्ञाध्याय में कहे हुए राशियों के स्वरूपानुसार धातु, रूप, रङ्ग, आकार गुण आदि को विचार कर पण्डितों को फल कहना चाहिये ॥ १४ ॥

राशिचक्र का पूजन—

राशिचक्रं समभ्यर्च्य फलैः पुष्पैः सरत्नकैः ।
प्रष्टा सुभूमौ दैवज्ञानेकं पृच्छेत्प्रयोजनम् ॥ १५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १५ ॥

पवित्र भूमि पर बैठकर फल, फूल और रत्नों से प्रश्नकर्त्ता राशिचक्र का पूजन करके दैवज्ञ (पण्डित) से अपने प्रयोजन को एक बार पूछे ॥ १५ ॥

दीप्तादि अवस्थाओं का माहात्म्य—

दशभेदं ग्रहाणां च गणितं भावजं तथा ।
विमृश्यैकं च कथयेन्नानेकं प्राह पद्मभूः ॥ १६ ॥
दीप्ताद्यं दशभेदं च ग्रहाणां भावजं फलम् ।
विचार्य प्रवदेद्यस्तु तस्योक्तं नान्यथा भवेत् ॥ १७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १६ ॥ १७ ॥

ग्रहों के दश भेदों को गणित तथा भाव से उत्पन्न विचार करके प्रश्न को कहे अनेक प्रश्न नहीं कहें ऐसा ब्रह्माजी ने कहा है ॥ १६ ॥ दीप्तादि दस भेद और ग्रहों के भाव से उत्पन्न फल को विचार कर जो फल कहता है, उसका कहा मिथ्या नहीं होता है ॥ १७ ॥

दीप्तादि अवस्थाओं के नाम—

दीप्तो दीनोऽथ मुदितः स्वस्थः सुप्तो निपीडितः ।
मुषितः परिहीनश्च सुवीर्य्यश्चाधिवीर्यकः ॥ १८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १८ ॥

१ दीप्त, २ दीन, ३ मुदित, ४ स्वस्थ, ५ सुप्त, ६ पीडित, ७ मुषित, ८ परिहीन, ९ सुवीर्य, १० अधिवीर्य ये ग्रहों की दश अवस्थायें हैं ॥ १८ ॥

दीप्तादि अवस्थाओं का लक्षण—

स्वोच्चे दीप्तः समाख्यातो नीचे दीनः प्रकीर्तितः ।
मुदितो मित्रगेहस्थः स्वस्थश्च स्वगृहे स्थितः ॥ १९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शत्रुगेहस्थितः सुप्तो जितोऽन्येन निपीडितः ।
नीचाभिमुखगो हीनो मुषितोऽस्तं गतो ग्रहः ॥ २० ॥
सुवीर्यः कथितः प्राज्ञैः स्वोच्चाभिमुखसंस्थितः ।
अधिवीर्यो निगदितः सुरश्मिः शुभवर्गगः ॥ २१ ॥

अन्वयः—स्वोच्चे दीप्तः समाख्यातः, नीचे दीनः प्रकीर्त्तितः, मित्रगेहस्थः मुदितः, स्वगृहे स्थितः स्वस्थः शत्रुगेहस्थितः सुप्तः, अन्येन जितः निपीडितः, नीचाभिमुखगो हीनः, अस्तंगतः ग्रहः मुषितः, स्वोच्चाभिमुखसंस्थितः ग्रहः प्राज्ञैः सुवीर्यः कथितः, सुरश्मिः शुभवर्गगः अधिवीर्यः निगदितः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥

अपने उच्च राशि में स्थित ग्रह दीप्त कहा जाता है, नीच राशि में दीन कहाता है, मित्र के घर में स्थित मुदित और अपनी राशि में स्थित ग्रह स्वस्थ ॥ १९ ॥ शत्रु के घर में स्थित ग्रह सुप्त, और अन्य पापग्रहों से जीता हुआ ग्रह पीडित तथा नीचाभिलाषी ग्रह हीन और अस्तंगत ग्रह मुषित ॥ २० ॥ उच्चाभिलाषी ग्रह सुवीर्य पण्डितों ने कहा है, और सुन्दररश्मि व शुभवर्ग में प्राप्त ग्रह अधिवीर्य संज्ञक कहा जाता है ॥ २१ ॥

दीप्तादि अवस्थाओं का फल—

दीप्ते सिद्धिश्च कार्य्याणां दीने दुःखसमागमः ।
स्वस्थे कीर्तिस्तथा लक्ष्मीरानन्दो मुदिते महान् ॥ २२ ॥
सुप्ते रिपुभयं दुःखं धनहानिर्निपीडिते ।
मुषिते परिहीने च कार्यनाशोऽर्थसंक्षयः ॥ २३ ॥
गजाश्वकनकावाप्तिं सुवीर्ये रत्नसम्पदः ।
अधिवीर्ये राज्यलब्धिर्ग्रहैर्मित्रार्थसङ्गमः ॥ २४ ॥

अन्वयः—दीप्ते कार्याणां सिद्धिः, दीने दुःखसमागमः, स्वस्थे कीर्त्तिस्तथा लक्ष्मीः, मुदिते महानानन्दः, सुप्ते रिपुभयं दुःखं, निपीडिते धनहानिः, मुषिते परिहीने च कार्यनाशोऽर्थसंक्षयः, सुवीर्ये गजाश्वकनकावाप्तिं रत्नसञ्चयः, अधिवीर्ये ग्रहे राज्यलब्धिर्मित्रार्थसङ्गमश्च भवति ॥ २२-२४ ॥

दीप्त अवस्था में स्थित ग्रह कार्य की सिद्धि करता है और दीन में दुःख का आगम, स्वस्थ में कीर्ति तथा लक्ष्मी, मुदित में अत्यन्त आनन्द ॥ २२ ॥ सुप्तावस्था में शत्रु, भय और दुःख, पीड़ित में धन की हानि, मुषित और हीन में कार्यनाश व धन का नाश ॥ २३ ॥ सुवीर्यावस्था में हाथी, घोड़ा, सुवर्ण और रत्न वा सम्पत्ति का लाभ, अधिवीर्य में राज्यलाभ, मित्र, धन, इनका संग प्राप्त होता है ॥ २४ ॥

सूर्य का स्वरूप—

पूर्वःसत्वं नृपस्तातः क्षत्री ग्रीष्मोऽरुणश्चलः ।
मधुदृक् पैत्तिको धातुः शूरः सूक्ष्मकचो रविः ॥ २५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २५ ॥

पूर्व दिशा का स्वामी, सतोगुणी, राजा व पिता क्षत्रिय जाति, ग्रीष्मऋतु, रक्तवर्ण, चपल स्वभाव, शहद के रङ्गसमान नेत्र, पित्त धातु, शूर, सूक्ष्म (बारीक) केश, ये गुण सूर्य के हैं ॥ २५ ॥

चन्द्रमा का स्वरूप—

कफो वर्षा मृदुर्माता पयो गौरश्च सात्विकः ।
जीवो वैश्यश्चरो वृत्तो मारुताशो विधुः सुदृक् ॥ २६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २६ ॥

कफप्रकृति, वर्षाऋतु कोमल देह माताकारक, जलतत्व, गौरवर्ण, सतोगुणी, प्राणदाता, वैश्यजाति चरस्वभाव, गोलाकार वायुदिशा का स्वामी, सुहावने नेत्र ये चन्द्रमा के गुण हैं ॥ २६ ॥

मंगल का स्वरूप—

ग्रीष्मः क्षत्रतमो रक्तो याम्यः सेनाग्रणीश्वरः ।
युवा धातुश्च पिंगाक्षः क्रूरः पित्तं शिखी कुजः ॥ २७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २७ ॥

ग्रीष्मऋतु, क्षत्रियजाति, तमोगुण, रक्तवर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी, सेना का अधिपति, चरस्वभाव, युवावस्था, वीर्यवान्, पीतवर्णनेत्र, क्रूर प्रकृति, शिखा वाला, ये गुण मङ्गल के हैं ॥ २७ ॥

बुध का स्वरूप

शरदीशो हरिर्दीर्घः पंढो मूलं कुमारकः ।
लिपिज्ञः उत्तरेशश्च शूद्रः सौम्यस्त्रिधातुकः ॥ २८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २८ ॥

शरदृऋतु का ईश, हरा रंग, लम्बा देह, नपुंसक, मूलवस्तु का अधिपति, कुमार अवस्था, लिखने की विद्या का ज्ञाता, उत्तर दिशा का स्वामी, शूद्र जाति, सरल स्वभाव तीनों धातु समान ये बुध के गुण हैं ॥ २८ ॥

बृहस्पति का स्वरूप—

सत्त्वं पीतो हिमः श्लेष्मा दीर्घो मन्त्री द्विजो नरः ।
मध्वैशानी कफो जीवो मधुपिंगलदृक्तथा ॥ २६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २९ ॥

सतोगुणी, पीतवर्ण, ठण्डा स्वभाव, श्लेष्मप्रकृति, लम्बा देह, मन्त्री, ब्राह्मण जाति, पुरुष, मधुरप्रिय, ईशान दिशा का स्वामी, कफधातु तथा शहद के समान पीले नेत्र ये बृहस्पति के गुण हैं ॥ २६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुक्र का स्वरूप—

शुक्रः शांतो द्विजो नारी वैश्यो मन्त्री चरः सितः
आग्नेयी दिक्कफश्चाम्लः कुटिलासितमूर्धजः ॥ ३० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३० ॥

शांत स्वभाव, ब्राह्मणवर्ण, स्त्रीसंज्ञक, वैश्यजाति, मन्त्रज्ञ, चरस्वभाव, श्वेतवर्ण, अग्नि दिशा का स्वामी, कफप्रकृति, अम्लधातु, वक्र, श्यामरङ्गकेश ये गुण शुक्र के हैं ॥

शनि का स्वरूप—

कृष्णस्तमः कृशो वृद्धः षंढो मूलांत्यजोऽलसः ।
शिशिरः पवनः क्रूरः पश्चिमो वातुलः शनिः ॥ ३१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३१ ॥

कृष्णवर्ण, तमोगुणी, दुर्बल देह, वृद्धावस्था, नपुंसक मूलवस्तु, चांडालों का अधिपति, आलसी, शिशिर ऋतु का स्वामी, वायु, धातु, क्रूरस्वभाव, पश्चिम दिशा का स्वामी वाचाल, ये शनि के गुण हैं ॥ ३१ ॥

राहुकेतु का स्वरूप—

राहुर्धातुः शिखी मूलं शेषमन्यच्च मंदवत् ।
चिन्तनीयं विलग्नेशात्केंद्रगाद्वा बलाधिकात् ॥ ३२ ॥

अन्वयः—राहुर्धातुः इत्यादि पूर्वार्द्धं स्पष्टमेव, विलग्नेशादथवा केन्द्रगाद्बलाधिकाद्ग्रहात् चिन्तनीयं ॥ ३२ ॥

राहु धातु का स्वामी, जटाधारी, मूलवस्तु, शेष गुण शनि के समान हैं ऐसा ही केतु जानना, ये सब पूर्वोक्त ग्रह लग्न वा लग्नेश से अथवा केन्द्र स्थान में वा जो अधिक बली हो उसके अनुसार प्रश्न समय लक्षण कहना, विशेष गुण तथा राशियों के गुण प्रथम संज्ञातन्त्र में कह चुके हैं ॥ ३२ ॥

लग्न से विचारने योग्य कार्य—

सौख्यमायुर्वयो जातिरारोग्यं लक्षणं गुणम् ।
क्लेशाकृती रूपवर्णस्तनोश्चिन्त्यं विचक्षणैः ॥ ३३ ॥

अन्वयः—विचक्षणैः सौख्यमायुर्वयोजातिरारोग्यं लक्षणम् गुणम् क्लेशाकृती रूपवर्णस्तनोश्चिंत्यम् ॥ ३३ ॥

सुख, आयु, अवस्था, जाति, आरोग्यता, शरीर के लक्षण, गुण, क्लेश, आकृति, रूप, रङ्ग, यह सब लग्न से पण्डितों को विचारना चाहिये ॥ ३३ ॥

धनभाव से विचार योग्य कार्य—

मुक्ताफलं च माणिक्यं रत्नधातुधनाम्बरम् ।
हयकार्याध्वविज्ञानं वित्तस्थानाद्विलोकयेत् ॥ ३४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—वित्तस्थानात् मुक्ताफलं माणिक्यं रत्नधातुधनाम्बरं हयकार्याध्वविज्ञानं विलोकयेत् ॥ ३४ ॥

मोती और माणिक, रत्न, धातु, धन, वस्त्र, अश्वसम्बन्धी व मार्गसम्बन्धी कार्य यह सब धनभाव से देखे ॥ ३४ ॥

तीसरे भाव में विचारणीय कार्य—

भगिनीभ्रातृभृत्यानां दासकर्मकृतामपि ।
कुर्वीत वीक्षणं विद्वान्सम्यग्दुश्चिक्यवेश्मतः ॥ ३५ ॥

अन्वयः—विद्वान् भगिनीभ्रातृभृत्यानां दासकर्मकृतामपि सम्यक् दुश्चिक्यवेश्मतः वीक्षणं कुर्वीत ॥ ३५ ॥

बहिन, भाई, सेवक, और दासकर्म करने से व्यापारादि कर्म भी, तथा पराक्रमकर्म इन सब कर्मों का विद्वान् तीसरे घर से विचार करे ॥ ३५ ॥

चौथे घर से विचार योग्य कार्य—

वाटिकाखलकक्षेत्रमहौषधिनिधीनपि ।
विवरादिप्रवेशं च पश्येत्पातालतो बुधः ॥ ३६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३६ ॥

बगीचा और तालाव आदि जलाशय, खेती, औषध (अन्नादि पदार्थ), निधि, (भूमिगत द्रव्यादि वस्तु) कन्दरादिक में प्रवेश, इनका पण्डित चौथे स्थान से विचार करे ॥ ३६ ॥

पाँचवें भाव से विचारने योग्य कार्य—

गर्भापत्यविनेयानां मन्त्रसन्धानयोरपि ।
विद्याबुद्धिप्रबन्धानां सुतस्थाने विनिर्णयः ॥ ३७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३७ ॥

गर्भ, सन्तान, विनय, मन्त्रसाधन (सम्मति आदि लेना) और विद्या व बुद्धि बढ़ाने का प्रबन्ध, इन सबको पाँचवें स्थान में निर्णय करना ॥ ३७ ॥

छठे भाव से विचारने योग्य कार्य—

चौरभीरिपुसंग्रामखरोष्ट्रक्रूरकर्मणाम् ।
मातुलातङ्कभृत्यानां रिपुस्थानाद्विनिर्णयः ॥ ३८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३८ ॥

चोरों से भय, शत्रुओं से लड़ाई, गधा, ऊँट तथा क्रूरकर्म, मामा का पक्ष, रोग, सेवक, इनका विचार छठें स्थान में करना चाहिये ॥ ३८ ॥

सातवें भाव से विचारणीय कार्य—

वाणिज्यं व्यवहारं च विवादं च समं परैः ।
गमागमकलत्राणि पश्येत्प्राज्ञः कलत्रतः ॥ ३९ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३९ ॥

व्यापार, व्यवहार और अन्य के साथ विवाद अथवा मिलाप, तथा जाना और आना, स्त्रीसम्बन्धी विचार, यह सब बुद्धिमान् सातवें घर से विचारे ॥ ३९ ॥

आठवें भाव से विचारणीय कार्य—

नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये दुर्गे च शस्त्रसङ्कटे ।
नष्टे दुष्टे रणे व्याधौ छिद्रे छिद्रं निरीक्षयेत् ॥ ४० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४० ॥

नदी से तैरना, मार्गसम्बन्धी विचार, विषमस्थान, किला, शस्त्र, सङ्कट और नष्टता, दुष्टता, रण में, व्याधि में, गृहच्छिद्र, ये सब आठवें स्थान से विचारना ॥ ४० ॥

नवम भाव से विचारनेयोग्य कार्य—

वापीकूपतडागादिप्रपादेवगृहाणि च ।
दीक्षां यात्रां मठं धर्मकार्यन्निश्चिन्त्य कीर्तयेत् ॥ ४१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४१ ॥

बावली, कुवाँ, तालाब, आदि तथा गोशाला, देवमन्दिर, यात्रा, मठ, धर्मकार्य, यह सब नवमस्थान से विचार कर कहना ॥ ४१ ॥

दशम भाव से विचार योग्य कार्य—

राज्यं मुद्रां परं पुण्यं स्थानं तातं प्रयोजनम् ।
वृष्ट्यादिव्योमवृत्तान्तं व्योमस्थानान्निरीक्षयेत् ॥ ४२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४२ ॥

राज्य, मुद्रा, (मनोहर), पुण्य, स्थान, पिता, प्रयोजन; वृष्टि आदि आकाश का वृत्तान्त, यह सब दशम स्थान से विचार करना चाहिये ॥ ४२ ॥

ग्यारहवें भाव से विचारने योग्य कार्य—

गजाश्वयानवस्त्राणि सस्यकाञ्चनकन्यकाः ।
विद्वान् विद्यार्थयोर्लाभं लक्षयेल्लाभभावतः ॥ ४३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४३ ॥

हाथी, घोड़ा, पालकी आदि वाहन, वस्त्र अन्न. सुवर्ण, कन्या, विद्या तथा धन का लाभ, इनको पण्डित ग्यारहवें स्थान से विचार करें ॥ ४३ ॥

बारहवें स्थान से विचार योग्य कार्य—

त्यागभोगविवादेषु दानेष्टकृषिकर्मसु ।
व्ययस्थानेषु सर्वेषु विद्धि विद्वन् व्ययं व्ययात् ॥४४॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४४ ॥

त्याग, भोग, दूसरे से बहस, दान, इष्टवस्तु, खेती, तथा सब प्रकार के खर्च, इन सबका विचार विद्वान् बारहवें स्थान से जाने ॥ ४४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भावों का बलाबल—

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः।
पपैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतो जन्मतो वा ॥ ४५ ॥

अन्वयः—यो यो भावः स्वामिना सौम्यैर्वा दृष्टः स्यात्तस्य तस्य भावस्य वृद्धिः अस्ति। एवं पापैः तस्य भावस्य हानिः स्यात् एवं पृच्छतो जन्मतो वा निर्देष्टव्या ॥ ४५ ॥

जो जो भाव अपने स्वामी से अथवा शुभग्रहों से देखा जाता हो वा युक्त हो तो उस उस भाव की वृद्धि होती है, एवं जो पापग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तो उसकी हानि जानना। यह प्रश्नसमय तथा जन्मसमय में भी विचार करना ॥ ४५ ॥

प्रश्न में शुभाशुभ—

सौम्ये विलग्ने यदि वाऽस्य वर्गे शीर्षोदये सिद्धिमुपैति कार्यम्।
अतो विपर्यस्तमसिद्धिहेतुः कृच्छ्रेण संसिद्धिकरं विमिश्रम् ॥ ४६ ॥

अन्वयः—यदि सौम्ये विलग्ने वा अस्य वर्गे लग्ने वा शीर्षोदये लग्ने (तदा) कार्यं सिद्धिं उपैति। अतो विपर्य्ययः तम् असिद्धिहेतुः विमिश्रं तदा कृच्छ्रेण संसिद्धिकरं ज्ञेयम् ॥ ४६ ॥

शुभग्रह की राशि लग्न हो यद्वा शुभग्रह लग्न में हो वा लग्न शुभग्रहों के वर्ग में स्वयं स्थित हो, किं वा शीर्षोदय (मि० सिं० क० तु० वृ० कुं० मी०) लग्न हो तो प्रश्नकर्ता के कार्य की सिद्धी होती है। इससे विपरीत हो अर्थात् क्रूर लग्न अपने वर्ग में हो अथवा पृष्ठोदय (मे० वृ० क० ध० म०) लग्न हो तो कार्य की सिद्धि नहीं होती अथवा मिश्र हो अर्थात् शुभग्रह पापग्रह मिलकर सौम्य लग्न में हो वा पृष्ठोदय लग्न में शुभग्रह हों तो कठिनता से वा विलम्ब से कार्य की सिद्धी जानना ॥ ४६ ॥

दृष्टि से कार्यसिद्धि—

लग्नपतिर्यदि लग्नं कार्याधिपतिश्च वीक्षते कार्यम्।
लग्नाधीशः कार्यं कार्येशः पश्यति विलग्नम् ॥ ४७ ॥
लग्नेशः कार्येशं विलोकते लग्नपं तु कार्येशः।
शीतगुदृष्टौ सत्यां परिपूर्णा कार्यनिष्पत्तिः ॥ ४८ ॥

अन्वयः—यदि लग्नपतिः लग्नं, कार्याधिपतिश्च कार्यं वीक्षते, लग्नाधीशः कार्यं, कार्येशः विलग्नं पश्यति, लग्नेशः कार्येशं कार्येशः तु लग्नपं विलोकते, शीतगुदृष्टौ सत्यां परिपूर्णा कार्यनिष्पत्तिः स्यात् ॥ ४७-४८ ॥

यदि लग्न का स्वामी लग्न को देखता हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव को देखता हो तथा लग्नस्वामी कार्यभाव को और कार्यभाव का स्वामी लग्न को देखता हो, लग्न का स्वामी कार्यभाव के स्वामी को और कार्यभाव का स्वामी लग्नस्वामी को देखता हो और चन्द्रमा की दृष्टि हो तो कार्य की सिद्धि परिपूर्ण होती है ॥ ४७-४८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लग्नेशादि की लग्न पर दृष्टि का फल—

कथयन्ति पादयोगं पश्यति सौम्यो न लग्नपो लग्नम् ।
लग्नाधिपं च पश्यति शुभग्रहश्चार्धयोगोऽत्र ॥ ४९ ॥
एकः शुभग्रहो यदि पश्यति लग्नाधिपं विलोकयति ।
लग्नं पादोनयोगमाहुस्तदा बुधा कार्यसंसिद्धौ ॥ ५० ॥

अन्वयः—सौम्यः लग्नं पश्यति लग्नपो लग्नं न पश्यति तदा पादयोगं कथयन्ति, शुभग्रहः लग्नाधिपं न पश्यति अत्र अर्धयोगः, एकः शुभग्रहः लग्नाधिपं लग्नं च पश्यति तदा बुधाः कार्यसंसिद्धौ पादोनयोगम् आहुः ॥४९-५०॥

सौम्य (शुभ) ग्रह लग्न को देखता हो और लग्नस्वामी लग्न को न देखता हो तो चौथाई अर्थात् ५ विश्वा योग को कहते हैं, तथा लग्नस्वामी को शुभग्रह न देखता हो तो आधा योग अर्थात् दस विश्वा कार्यसिद्धि कहना ॥४९॥ यदि एक शुभाग्रह लग्न को देखता हो और लग्नस्वामी भी देखता हो तो चौथा भाग कमती अर्थात् १५ विश्वा कार्यसिद्धि योग होता है ॥ ५० ॥

अन्यप्रकार से—

लग्नपतिदर्शने सति शुभग्रहौ द्वौ त्रयोऽथ वा लग्नम् ।
पश्यन्ति यदि तदानीमाहुर्योगं त्रिभागोनम् ॥ ५१ ॥
क्रूरावेक्षणवर्ज्यश्चन्द्रः सौम्यश्च खेचरा लग्नम् ।
लग्नेशदर्शने सति पश्यन्तः पूर्णयोगकराः ॥ ५२ ॥

अन्वयः—लग्नपतिदर्शने सति द्वौ शुभग्रहौ त्रयो वा यदि लग्नं पश्यन्ति तदानीं त्रिभागोनं योगं आहुः । यदि लग्नेशदर्शने क्रूरावेक्षणवर्ज्यश्चन्द्रः सौम्यः खेचराश्च लग्नं पश्यन्तस्तदा पूर्णयोगकराः स्युः ॥ ५१-५२ ॥

लग्नस्वामी की दृष्टि होने पर यदि दो अथवा तीन शुभग्रह लग्न को देखते हों तो त्रिभाग ऊन (तिहाई कमती) कार्यसिद्धि योग कहा है ॥ ५१ ॥ यदि क्रूर-ग्रहों की दृष्टि से वर्जित होकर चन्द्रमा और शुभग्रह लग्न को देखते हों, और लग्न के स्वामी की भी लग्न पर दृष्टि हो अथवा क्रूर दृष्टि वर्जित चन्द्रमा और शुभग्रह लग्न व लग्नेश को देखते हों तो पूर्ण योगकारक जाने अर्थात् २० विश्वा कार्यसिद्धि के करने वाले होते हैं ॥ ५२ ॥

अनिष्ट योग—

क्रूराक्रान्तः क्रूरयुतः क्रूरदृष्टश्च यो ग्रहः ।
विरश्मितां प्रपन्नश्च सोऽनिष्टफलदायकः ॥ ५३ ॥

अन्वयः—यो ग्रहः क्रूराक्रान्तः क्रूरयुतः क्रूरदृष्टश्च विरश्मितां प्रपन्नश्च सः अनिष्टफलदायकः ॥ ५३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यदि कार्य करने वाला ग्रह पापग्रह से पीड़ित, पापग्रह से युक्त वा पापदृष्ट हो और रश्मि रहित अर्थात् अस्तभाव को प्राप्त हो गया हो तो वह अनिष्ट फल का देने वाला होता है ॥ ५३ ॥

हमारा काम कब होगा इस प्रश्न में समरसिंहोक्त उत्तर—

अमुकं गदेति कार्यं कदा भविष्यत्यमुत्र पृच्छायाम् ।
लग्नं लग्नाधिपतिः कार्यं कार्याधिपः पश्येत् ॥ ५४ ॥
लग्नस्थः कार्येशः पश्यति चेल्लग्नपं तदैव भवेत् ।
तत्कार्यं यद्यन्यस्थितंसत्वरं तदा न स्यात् ॥ ५५ ॥

अन्वयः—मेऽमुकं कार्यं कदाभविष्यति, अमुत्रपृच्छायाम् । चेद्यदा लग्नाधिपतिः लग्नं कार्याधियः कार्यंपश्येत्, लग्नस्थः कार्येशः लग्नपं पश्यति तदैव भवेत्, यद्यन्यस्थितदातत्कार्य सत्वरं न स्यात् ॥ ५४ ॥५५॥

यदि कोई प्रश्नकर्ता कहे कि हमारा कार्य कब होगा इस प्रश्न में लग्न को लग्न का स्वामी और कार्यभाव को कार्यभाव का स्वामी देखे तो शीघ्र कार्य की सिद्धि जानना ॥ ५४ ॥ तथा कार्यभाव का स्वामी लग्न में स्थित हो और लग्नस्वामी को देखता हो तो भी शीघ्र कार्यसिद्धि होगी तथा जो लग्नस्वामी अन्यत्र स्थित हो तो कार्यसिद्धि नहीं होगी ऐसा कहना ॥ ५५ ॥

पश्यति यदा च लग्नं द्रक्ष्यति चन्द्रं विलग्नपं च यदा ।
लग्ने कार्ये च यदा द्वयोश्च योगे तदा सिद्धिः ॥ ५६ ॥
यदि लग्नपं च पश्यति कार्याधीशो विलग्नमथ तस्य ।
कार्यस्य हानिरुक्ता लग्नमृते किमपि न वाच्यम् ॥ ५७ ॥

अन्वय.—यदा लग्ने कार्ये च स्थितः कार्याधीशः लग्नं पश्यति (अथवा) चन्द्रं विलग्नपञ्च द्रक्ष्यति, वा द्वयोश्च योगे तदा कार्यसिद्धिः, यदि कार्याधीशः लग्नपं विलग्नं च न पश्यति तदा तस्य कार्यस्यहानिरुक्ता किमपि न वाच्यम् ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

लग्न अथवा कार्यभाव में बैठा हुआ कार्येश चन्द्रमा लग्न अथवा लग्नस्वामी को देखता हो अथवा लग्नेश कार्येश एकही स्थान में स्थित हों तो कार्य की सिद्धि होगी ॥५६॥ लग्नेश कार्येश को न देखता हो अथवा कार्यस्थान को न देखे तो कार्यहानि होती है, लग्न को छोड़कर अन्य भावों से कुछ भी विचार न कहना ॥ ५७ ॥

द्रेष्काण वश से लाभालाभ ज्ञान—

लग्नपो मृत्युपश्चापि मृत्यो स्यातामुभौ यदि ।
स्थितौ द्रेष्काण एकस्मिन्प्रष्टुर्लाभस्तदा ध्रुवम् ॥ ५८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एवं द्वादशभावेषु द्रेष्काणैरेव केवलम् ।
बुधो विनिश्चयं ब्रूयाद्योगेष्वन्येषु निस्पृहः ॥ ५९ ॥

अन्वयः—यदि लग्नपो मृत्युपश्च उभौ एकस्मिन् द्रेष्काणस्थितौ मृत्यौ तदा ध्रुवम् प्रष्टुः लाभः स्युः अन्यत्स्पष्टम् ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

जो लग्नस्वामी और अष्टम स्थानस्वामी ये दोनों अष्टम स्थान में एकही द्रेष्काण में स्थित हों तो निश्चय प्रश्नकर्ता को लाभ होवे ॥ ५८ ॥ इस प्रकार बारहों भावों में केवल द्रेष्काण ही से निश्चय करके पण्डित भावफल कहे अन्य योगों से बली होता है। ऐसा जानना ॥ ५९ ॥

लाभ आदि के समय का निर्णय—

उदयोपगत राशिं तत्कलीकृत्य लिप्तिकां गुणयेत् ।
छायांगुलैश्च कुर्यात् हृत्वा मुनिभिस्ततः शेषम् ॥ ६० ॥
गणयित्वैव प्राग्वत् हृत्वा सौम्यस्य भवेदुदयः ।
कार्यप्राप्तिः प्रष्टुर्वक्तव्या नेतरैर्ग्रहैर्भवति ॥ ६१ ॥

अन्वयः—उदयोपगतं राशिं कलीकृत्यलिप्तिकां छायांगुलैः गुणयेत् ततः मुनिभिः हृत्वा शेषं कुर्यात् एवं प्राग्वत् गणयित्वा हृत्वा यदि सौम्यस्य उदयः भवेत् तदा प्रष्टुः कार्यप्राप्तिः वक्तव्या इतरैर्ग्रहैः न भवति ॥ ६० ॥ ६१ ॥

प्रश्न समय तत्काल लग्न को स्पष्ट करके उस समय बारह अङ्गुल की छाया से गुणन करके १४ से भाग देना, जो शेष रहे सो मेषादि राशि जानना ॥६०॥ वह राशि शुभग्रह की हों तो कार्यसिद्धि हो पापग्रह की राशि हो तो कार्यहानि कहना ॥६१॥

ग्रहगुणकारो ज्ञेयो दैवविदा पंच ५ विंशतिः सैकः ।
मनवो१४ङ्का९ष्टौ८त्रितयं३भवाः११सूर्यादितो ज्ञेयः ॥६२॥
गुणकारैक्यविभक्तः सूर्यादिगुणाङ्कसंशुद्धः ।
यस्य न शुद्ध्यति वर्गो विज्ञेयस्तद्दशात्कालः ॥ ६३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६२–६३ ॥

पण्डितों को इस प्रकार ग्रहों के गुणक जानने चाहिये कि सूर्य के ५, चन्द्रमा के २१, मंगल के १४, बुध के ९, बृहस्पति के ८, शुक्र के ३, शनि के ११, ये सूर्यादि से गुणक जानिये ॥ ६२ ॥ इन गुणाकार अंकों का ऐक्य ७१ से पूर्वोक्त जो तत्काल लग्न का कलापिण्ड छायाङ्गुलों से गुणन किया है, उसमें भाग लेना लब्धांक में सूर्यादिकों का गुणन सूर्यसे लेके एक २ करके घटाओ जहां तक घटजायें घटाजाते जाना जिसका गुणकांक न घटे उसी ग्रह से कहना सो आगे कहते हैं ॥ ६३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आरदिवाकरशेषे दिवसाः पक्षाश्च भृगुशशिनोः ।
गुर्ववशेषे मासो ऋतवः सौम्ये शनैश्चरेऽब्दाः स्युः ॥ ६४ ॥
आधाने घनप्राप्तौ गमनागमने पराजये चापि ।
रिपुनाशे वा कालं पृच्छायां निश्चितं ब्रूयात् ॥ ६५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

सूर्य मंगल का गुणक न घटे तो उतने दिन, शुक्रचन्द्रमा का न घटे तो पक्ष, बृहस्पति से मास, बुध से ऋतु, शनि से वर्ष जाने ॥ ६४ ॥ आधान के प्रश्नका समय, धनप्राप्ति का समय, जाने आने का समय, पराजय और विजय का समय, शत्रुनाश समय, इनका प्रश्नसमय में उक्त प्रकार से निश्चय कहें ॥ ६५ ॥

भूत भविष्य वर्तमान प्रश्न में शुभा शुभ फल—

भूतं भवद्भविष्यन्मम किं कथयेति जातपृच्छायाम् ।
लग्नपतेः शशिनो वा वलमन्वेष्यं बलाभावे ॥ ५८ ॥
दृष्ट्वा नवांशकबलं शुभदृग्योगं च सर्वकालेषु ।
प्रष्टुः शुभमादेश्यं विपरीतं व्यत्ययादेषा ॥ ५९ ॥

अन्वयः—मम भूतं भवद्भविष्यत् किं इति कथय जातपृच्छायाम्, लग्नपतेः शशिनोः वा बलमन्विष्य, बलाभावे नवांशकबलं शुभदृग्योगं च दृष्ट्वा प्रष्टुः सर्वकालेषु शुभमादेश्यं, व्यत्ययादेषा विपरीतं आदेश्यम् ॥ ५८–५९ ॥

कोई प्रश्नकर्ता पूछे कि हमारा भूत भविष्य वर्तमान फल क्या होगा, इस प्रश्न में लग्नस्वामी, वा चन्द्रमा का बल विचारना, बल का अभाव होवे ॥५८॥ तो नवांश का बल देखकर के अथवा शुभग्रहों की दृष्टि वा शुभग्रहों के योग से सर्वकाल में प्रश्नकर्ता को शुभफल कहना, इससे विपरीत हो तो अशुभ फल कहना ॥ ५९ ॥

लग्नेशो मूसरिफो यस्मात्तस्मादतीतमाख्येयम् ।
येन युतस्तस्माद्भवेदेष्यंयो योऽद्यते तस्मात् ॥ ६० ॥

अन्वयः—लग्नेशो यस्मान्मूसरिफो तस्मादतीतम् आख्येयम्, येन युतस्तस्मात् वर्तमानं यो ईक्ष्यते तस्मात् एष्यं भवेत् ॥ ६० ॥

लग्नेश का जिसके साथ ईसराफ योग हो उससे भूत (अतीत) कहना, और लग्नस्वामी का जिससे योग हो उससे वर्तमान कहना और दृष्टि से भविष्य फल कहना ॥

नोट—पृष्ठ २२१ श्लोक ५८ से लेकर पृष्ठ २२३ श्लोक ६५ तक प्रक्षिप्त विषय है जिसके श्लोकों का अंक असावधानी से क्रम से लग गया है, अतः छात्रवृन्द इसे सुधार लेगें इसके आगे क्रम ठीक है । टीकाकार—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुभ फल—

यदि लग्ने लग्नपतिः सौम्ययुतो वा विलोकितः सौम्यैः ।
तत्प्रष्टुर्व्याकुलता शरीरदोषा विनश्यन्ति ॥ ६१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६१ ॥

यदि लग्न का स्वामी लग्न में हो और उसमें शुभग्रहयुक्त हो वा शुभग्रहों से देखा जाता हो तो प्रश्नकर्ता के चित्त की व्याकुलता और शरीर दोष सब नाश हो जाते हैं ॥६१॥

शुभाशुभ फल—

पापो यदि लग्नपतिस्तदा कलिव्याधिधननाशाः ।
सौम्ये निर्वृतिबुद्धिर्द्रव्याप्तिः सौख्यमतुलं च ॥ ६२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६२ ॥

यदि लग्न का स्वामी पापग्रह हो तो कलह, रोग, धन का नाश हो और जो लग्न का स्वामी शुभग्रह हो तो पवित्र बुद्धि, द्रव्य की प्राप्ति और अतुल सुख होता है ॥६२॥

द्वितीय स्थान सम्बन्धी प्रश्न—

धनलाभस्य प्रश्ने लग्नेशे नेन्दुनाऽथ धननाथः ।
कुरुते यदीत्थशालं शुभयुतिदृष्ट्या भवेल्लाभः ॥ ६३ ॥
क्रूरग्रहैर्धनस्थैर्दूरे लाभोऽन्यदप्यशुभम् ।
क्रूरमुथशिले धनेशे प्रष्टा म्रियतेऽथ वा विलग्नेशे ॥ ६४ ॥
धनधनपेत्थशाले मन्दगतिर्यत्र भावानाम् ।
तनुधनसहजादीनां प्रष्टुस्तद्द्वारतो लाभः ॥ ६५ ॥

अन्वयः—अथ धनलाभस्य प्रश्ने लग्नेशेन इन्दुना च धननाथः यदि इत्थशालः कुरुते शुभयुतिदृष्ट्या च लाभः भवेत्, क्रूरग्रहैर्धनस्थैः दूरे लाभः अन्यदपि अशुभं भवति, अथ धनेशे वा विलग्नेशे क्रूरमुथशिले प्रष्टाम्रियते, यत्र धनधनपः मन्दगतिर्भूत्वा तनुधनसहजादीनां भावानाम् इत्थशाले तद्वारतो प्रष्टुः लाभः स्यात् ॥ ६३-६४-६५ ॥

धनलाभ प्रश्न में लग्नेश से चन्द्र राशीश, और धन भावेश का इत्थशाल योग हो और शुभग्रहयुक्त हों वा शुभग्रहों की दृष्टि हो तो धन का लाभ होवे ॥६३॥ पापग्रह धनस्थान में स्थित हों तो दूर से लाभ हो अथवा बहुत दिनों में लाभ हो, और अन्य भी कुछ अशुभ होवे, और धनेश वा लग्नेश ये दोनों पापग्रहों के साथ इत्थशाल करते हों तो प्रश्नकर्ता मरण को प्राप्त होगा ॥ ६४ ॥ तथा धनभाव वा धनभावस्वामी ग्रह मन्दगतिवाला होकर तनु धन सहज आदि भावों में से जिस किसी भाव के साथ इत्थशाल करता हो तो उस भाव के द्वारा धन प्राप्त होगा ॥ ६५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रश्नदीपक में लिखा धनलाभयोग—

लग्नस्थं चन्द्रजं चन्द्रः क्रूरो वा यदि पश्यति ।
धनलाभो भवत्याशु किं त्वनर्थो हि पृच्छति ॥ ६६ ॥
चन्द्रलग्नधनाधीशा दृष्टा युक्ता परस्परम् ।
धनकेन्द्रत्रिकोणस्थाः सद्यो लाभकराः स्मृताः ॥ ६७ ॥

अन्वयः—यदि लग्नस्थं चन्द्रजं चन्द्रः वा क्रूरो पश्यति तदा पृच्छतः आशुधनलाभो भवति, किन्तु अनर्थोऽपि भवति, चन्द्रलग्न धनाधीशा परस्परं दृष्टा वा युक्ता धनकेन्द्रत्रिकोणस्थास्तदा सद्यो लाभकराः स्मृताः ॥ ६६ ॥६७॥

यदि बुध लग्न में स्थित हो और उसको चन्द्रमा वा क्रूरग्रह देखता हो, तो शीघ्र लाभ होता है, परन्तु प्रश्नकर्ता को अनर्थ होगा ॥ ६६ ॥ चन्द्र, लग्नेश, धनेश इनकी परस्पर दृष्टि हो अथवा यह एक राशि में स्थित हो और धनभाव में केन्द्र १ । ४ । ७ । १० स्थान में वा त्रिकोण ९ । ५ स्थान में स्थित हों तो शीघ्र लाभ करने वाले होते हैं, ऐसा कहना ॥ ६७ ॥

शुभदस्वामिषड्वर्गे लग्ने सौम्ययुतेक्षिते
प्रष्टुस्तात्कालिकी लब्धिरलब्धिस्तु विपर्यये ॥ ६८ ॥
चतुर्थे सप्तमे चन्द्रे खे रवौ लग्नगे शुभे ।
प्रष्टुः सद्योऽर्थलाभः स्याल्लग्ने वा सुरमन्त्रिणि ॥ ६९ ॥

अन्वयः—लग्ने शुभदस्वामिषड्वर्गे सौम्ययुतेक्षिते तदा प्रष्टुः तात्कालिकी लब्धिः स्यात्, विपर्ययेऽलब्धिः स्यात् चतुर्थे सप्तमे चन्द्रे, खे रवौ लग्नगे शुभे प्रष्टुः सद्योऽर्थलाभः स्यात् अथवा लग्ने सुरमन्त्रिणि तदापि लाभः स्यात् ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

शुभफल के देनेवाले स्वामी के षड्वर्ग में लग्न हो और शुभग्रह दृष्टयुक्त हों तो प्रश्नकर्ता को तत्काल लाभ होवे, इससे विपरीत हो तो विपरीत फल कहना ॥ ६८ ॥ चतुर्थ वा सप्तम स्थान में चन्द्रमा हो, दशम घर में सूर्य, लग्न में शुभग्रह हो, अथवा लग्न में बृहस्पति हो तो प्रश्नकर्ता को शीघ्र धन का लाभ होवेगा ऐसा कहना ॥ ६९ ॥

तीसरे स्थान सम्बन्धी प्रश्न—

सहजपतिर्यदि सहजं पश्यति चेत्तद्द्वयं शुभैर्दृष्टम् ।
तद्भ्रातरो गतरुजः स्वस्थाः क्रूरेक्षणे वामम् ॥ ७० ॥
यदि सहजपतिः षष्ठे तत्पतिना मुथशिलेऽथ तन्मांद्यम् ।
षष्ठेशे सहजस्थे सहजपतौ क्रूरिते वापि ॥ ७१ ॥

षष्ठ इत्युपलक्षणमष्टमस्थेऽपि ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—यदि सहजपतिः सहजं पश्यति, तद्द्वयं चेत् शुभैः दृष्टम् तदा तद्भ्रातरो गतरुजः स्वस्थाः, क्रूरेक्षणे वामम् । अन्यत्स्पष्टम् ॥ ७० ॥ ७१ ॥

यदि तीसरे भाव का स्वामी तीसरे घर को देखता हो, तृतीय भाव वा तृतीय भावेश को शुभ ग्रह देखते हों तो उस प्रश्नकर्ता के भाई का रोग दूर हो जावे और वह आरोग्य शरीर हो जावे यदि पापग्रह देखते हों तो इससे विपरीत फल कहना ॥ ७० ॥ यदि तीसरे भाव का स्वामी छठें स्थान में हो वा षष्ठेश से इत्थशाल करता होवे तो उसके भाई को उस ग्रह सम्बन्धी रोग होवे वा षष्ठेश तीसरे भाव में हो वा तीसरे भाव का स्वामी पापयुक्त हो वा सूर्य के साथ (अस्तंगत) हो तो भी ऐसा ही फल जानना ॥७१॥

सूर्यस्य रश्मिसंस्थे भयावहं प्रष्टुरादेश्यम् ।
षष्ठाष्टमभावेशौ यद्भावेशेनेत्थशालिनौ स्याताम् ॥ ७२ ॥
पीड़ा तस्य प्रवदेत्षष्ठाष्टमभावगे वापि ।
एवं सर्वेपि यथा पित्रोस्तुर्ये सुते सुतानां ॥ ७३ ॥
भृत्यचतुष्पदवर्गस्यास्ते स्त्रिया सुहृदो ये ।

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

छठें आठवें स्थानों के स्वामी ये दोनों जिस भाव स्वामी के साथ इत्थशाल करते हों अथवा छठे, आठवें स्थान में स्थित हो तो उसको उस भावसम्बन्धी पीड़ा कहनी ॥ ७२ ॥ इस प्रकार सब भावों में विचार करना, जैसे चौथे स्थान के स्वामी से षष्ठेश वा अष्टमेश का इत्थशाल हो अथवा इन भावों के स्वामी चतुर्थ स्थान में हो वा चतुर्थेश इन भावों में हों तो माता-पिता को पीड़ा होवे एवं पञ्चमभाव से पुत्र को सप्तमभाव से सेवक, चतुष्पद इत्यादि का विचार करना ॥ ७३ ॥

चतुर्थ भाव सम्बन्धी प्रश्न—

लग्नपतीन्दुचतुर्थपतिमुथशिलमथवा गृहे गमनम् ॥ ७४ ॥
प्रष्टुः पृथ्वीलाभदमसौम्यदृग्योगतो नैव ।
यदि पृच्छति कृषको मे क्षेत्राल्लाभो भवेन्न वा ॥ ७५ ॥
लग्नं कृषकस्तुर्यं भूमिर्द्यूनं कृषिस्तरुर्दशमम् ।

अन्वयः—लग्नपतीन्दुचतुर्थपतिमुथशिलं अथवा (एकस्मिन्नेव) गृहे गमनम् तदा प्रष्टुः पृथ्वीलाभदम्, असौम्यदृग्योगतो नैव लाभः, यदि कृषकः पृच्छति मे क्षेत्रालाभो भवेन्न वा तदा लग्नं कृषकः (कल्प्यं) तुर्यं भूमिः दशमम् कृषिस्तरुः कल्प्यम् ॥ ७४-७५ ॥

किसी प्रश्नकर्ता ने पृथ्वीलाभ का प्रश्न किया तो लग्न का स्वामी, चन्द्रमा और चतुर्थभाव स्वामी ये तीनों परस्पर इत्थशाल योग करें अथवा एक ही स्थान में स्थित हों तो पृच्छक को पृथ्वी का लाभ होगा और पापग्रह से दृष्ट वा युक्त हों तो भूमिलाभ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं होवे ॥ ७४ ॥ यदि खेती करने वाला पूछे कि हमको खेतों से लाभ होगा वा नहीं तो लग्न कृषिकर्ता और चतुर्थभाव भूमि, सप्तमभाव खेती तथा दशम भाव को अन्न-वृक्षादि कल्पना करके इन भावों में बलाबल विचार कर कृषिप्रश्न का शुभाशुभ फल कथन करना ॥ ७५ ॥

लग्नस्थे शुभखेटे साफल्यं कर्षकस्य कृषितः स्यात् ॥ ७६ ॥
तुर्ये च क्रूरगते त्यक्त्वा भूमिं प्रयात्येषः ।
द्यूने च शुभोपगते शुभं कृषेस्त्वन्यथा तु विपरीतम् ॥ ७७ ॥
दशमे दशमपतौ वा शुभयुतदृष्टे शुभा वृक्षाः ।

अन्वयः—लग्नस्थे शुभखेटे कर्षकस्य कृषितः साफल्यं स्यात् । तुर्ये क्रूरगते एषः भूमिं त्यक्त्वा प्रयाति, द्यूने शुभोपगते कृषेः शुभं वाच्यमन्यथा विपरीतम्, दशमे दशमपतौ वा शुभयुतदृष्टे वृक्षाः शुभाः वाच्याः ॥ ७६–७७ ॥

लग्न में शुभग्रह स्थित हों तो कृषिकर्ता को खेती से सफलता होवे और चतुर्थ स्थान में क्रूर ग्रह स्थित हों तो भूमि को छोड़कर खेती करने वाला भाग जावे ॥ ७६ ॥ सप्तम स्थान में शुभग्रह स्थित हो तो कृषिकर्ता को खेती से अच्छा लाभ होवे इससे विपरीत हो अर्थात् पापग्रह स्थित हो तो हानि होवे और दशमस्थान में दशमभाव का स्वामी स्थित हो अथवा शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट दशम भाव हो तो अन्नादि वृक्ष अच्छे होंगे ॥ ७७ ॥

लग्ने क्रूरोपगते स्याच्चौरोपद्रवस्तु कृषिकर्तुः ॥ ७८ ॥
वक्रातिचारवर्जे क्रूरे चौरस्य कृषिलाभः ।

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७८ ॥

लग्न में पापग्रह स्थित हों तो खेती वालों को चोरों से उपद्रव हो अर्थात् कृषिकर्ता की चोरी होवे और लग्नस्थित पापग्रह जो वक्री वा अतिचारी न हो तो चोर से भी लाभ होवे ॥ ७८ ॥

भूभाटकपृच्छायां लग्ने प्रष्टा च भाटकं द्यूने ॥ ७९ ॥
तस्योत्पत्तिर्दशमे तथावसानं चतुर्थे स्यात् ।
लग्नस्य लग्नपस्य च शुभयोगे शुभमशोभनं वामे ॥ ८० ॥
द्यूने क्रूरोपगते यस्मादपि भाटकस्ततोऽनर्थः ।
दशमे क्रूरोपगते नोत्पत्तिर्बहुतरा भवेत्प्रष्टुः ॥ ८१ ॥

अन्वयः—तस्योत्पत्तिर्दशमे तथा चतुर्थेऽवसानं स्यात् । लग्नस्य लग्नपस्य च शुभयोगे शुभं वामेऽशोभनम् ज्ञेयं, यस्मात् द्यूने क्रूरोपगते प्रष्टुः बहुतरा उत्पत्तिः न भवेत् । ॥ ७९–८०–८१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब पृथ्वीसम्बन्धी भाड़ा किराया किस्त आदि के प्रश्न में लग्न को प्रश्नकर्ता सप्तम को किराया, दशम को उत्पत्ति, चतुर्थ को परिणाम, कल्पना करके इन स्थानों को विचार करके शुभाशुभ उत्तर देना ॥ ७९ ॥ लग्न और लग्न स्वामी शुभग्रह से युक्त हों तो शुभफल कहना, पापग्रह से युक्त दृष्ट होवे तो अशुभ फल कहना, सप्तम स्थान में पापग्रह स्थित होवे तो भाड़ा आदि में किसी प्रकार का अनर्थ होता है ॥ ८० ॥ दशम भाव में पापग्रह हो तो प्रश्नकर्ता को बहुत भाड़ा प्राप्त न होगा और चतुर्थ स्थान में पापग्रह हो तो परिणाम अच्छा नहीं होगा अर्थात् भाड़ा मिलने में अनर्थ होवेगा ॥८१॥

पंचम स्थानसम्बन्धी प्रश्न—

क्रूरार्दिते तु तुर्ये स्यादवसाने शुभं नास्य ।
यदि पृच्छत्येतस्याः स्त्रियो भवेन्मे प्रजा न वा कश्चित् ॥ ८२ ॥
लग्नेशेन्द्वोःसुतपतिना मुथशिलभावे प्रसूतिः स्यात् ।
सुतभावपतिर्लग्ने लग्नपचन्द्रौ सुतेथवा स्याताम् ॥ ८३ ॥
सत्वरितमेव वाच्या सविलम्बं नक्तयोगेन ।

अन्वयः—तुर्ये क्रूरार्दिते अस्य अवसाने शुभं न स्यात्, एतस्याः स्त्रियो मे प्रजा भवेन्न वा यद्येवं पृच्छति तदा लग्नेशेन्द्वोः सुतपतिना मुथशिलभावे प्रसूतिः स्यात्, सुतपतिः लग्नेऽथवा लग्नपचन्द्रौ सुते स्याताम् तदा सत्वरितमेव प्रसूतिः वाच्या नक्तयोगेन सविलम्बं वाच्यं ॥ ८२–८३ ॥

यदि कोई पृच्छक प्रश्न करे कि हमारी स्त्री के सन्तान होगी वा नहीं तो लग्नस्वामी और चन्द्रमा इन दोनों का पञ्चम भावस्वामी के साथ इत्थशाल होवे तो सन्तति अवश्य होवेगी ॥ ८२ ॥ पञ्चम भाव का स्वामी लग्न में हो और लग्नेश व चन्द्रमा पञ्चमस्थान में हो तो शीघ्र पुत्र उत्पन्न होवेगा, तथा नक्तयोग होवे तो विलम्ब से पुत्र उत्पन्न होगा ऐसा कहना ॥ ८३ ॥

द्विशरीरे च विलग्ने शुभयुतपुत्रे व्यपत्ययोगोऽस्ति ॥ ८४ ॥
यदि लग्नपुत्रपतिपुंराशौ चेत्स्यात्तदा सुतो गर्भे ।
पुंराशौ पुंग्रहकृतमुथशिलयुक्तस्तदा सुतदः ॥ ८५ ॥
अथवा विधुरपराह्णे सूर्यात्पृष्ठे तदा स्त्री स्यात् ।
होरास्वामी पुरुषः पुंराशौ चेत्तथापि सुतगर्भः ॥ ८६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८४–८५–८६ ॥

द्विस्वभाव लग्न हो और पञ्चमस्थान में शुभग्रह स्थित हों तो दो सन्तान उत्पन्न होवे ॥ ८४ ॥ यदि लग्नेश, पञ्चमेश पुरुष राशि में स्थित हों तो गर्भ में पुत्र है ऐसा कहना तथा चन्द्रमा यदि पुरुष राशि में हो और पुरुष राशि से इत्थशाल योग करे तो पुत्र उत्पन्न कहना ॥ ८५ ॥ अथवा अपराह्ण काल में सूर्य से पीछे राशि में चन्द्रमा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्थित हो तो कन्या होवेगी ऐसा कहना जो लग्न का स्वामी पुरुषग्रह पुरुष राशि में हो तो भी गर्भ में पुत्र कहना ॥ ८६ ॥

चन्द्रमा से पुत्र या कन्या का ज्ञान—

चन्द्रयुक्तेक्षिते गर्भे सौम्ययुक्तेक्षितेऽपि वा ।
उच्चस्थेऽभ्युदिते तत्र पुण्यापत्यं प्रजायते ॥ ८७ ॥
एषा गर्भवती किल न वा प्रमाणं प्रयाति गर्भोऽयम् ।
प्रश्ने लग्नपशशिनोः सुतस्थयोर्गर्भवत्येव ॥ ८८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८७-८८ ॥

सन्तानभाव चन्द्रमा को देखता हो या उसी में बैठा हो अथवा पंचम भाव शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो शुभग्रह और चन्द्रमा उच्च में हों और उदित हों तो पुण्यशील और दीर्घायु सन्तान होती है ॥ ८७ ॥ जो प्रश्नकर्ता पूछे कि हमारी यह स्त्री गर्भवती है या नहीं तो प्रश्न में लग्नस्वामी और चन्द्रमा पञ्चम स्थान में हो वा पञ्चम भाव को देखें तो गर्भवती है ऐसा कहना ॥ ८८ ॥

यद्येतयोर्मुथशिलं केन्द्रे सुतपेन गर्भिणी तदपि ।
आपोक्लिमेत्थशालादनीक्षणाल्लग्नपुत्रयोर्नैवम् ॥८९॥
चरलग्ने क्रूरेन्दोर्मुथशिलभावे विनश्यति हि गर्भः ।
लग्नपशशिनोस्तत्पतिरथ वक्रिमुथशिलेपि तथा ॥ ९० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८९-९० ॥

यदि लग्न स्वामी और चन्द्रमा का केन्द्र स्थान में स्थित पञ्चमेश के साथ इत्थशाल योग होवे तो भी गर्भिणी है, अथवा आपोक्लिम स्थान में इत्थशाल होवे अथवा लग्न स्वामी पुत्र भाव को पुत्रभाव स्वामी लग्न को नहीं देखे तो गर्भवती नहीं है ॥ ८९ ॥ चरलग्न में पापग्रह चन्द्रमा के साथ इत्थशाल करे तो गर्भ नष्ट हो जावेगा और लग्न स्वामी और लग्न स्वामी व चन्द्रमा नीचादि से पतित ग्रहों से इत्थशाल करे तो गर्भ नष्ट हो जावेगा ॥ ९० ॥

सन्तान जीयेंगे या मर जायेंगे—

जीवितमरणप्रश्ने बालानामन्त्यपे शुभैर्दृष्टे ।
केन्द्रस्थे सितपक्षे शुभयुक्तेऽन्त्ये विधौ जीवेत् ॥ ९१ ॥
क्रूरश्चेदन्त्यपतिर्दग्धश्चापोक्लिमे च युते ।
क्रूरैस्तु जातमात्रो म्रियते बालोऽथवा गर्भे ॥ ९२ ॥

अन्वयः—बालानाम् जीवितमरणप्रश्ने अन्त्यपे शुभैर्दृष्टे केन्द्रस्थे सितपक्षे शुभयुक्ते विधौ अन्त्ये जीवेत्। अन्त्यपतिश्चेत् क्रूरः दग्धश्च आपोक्लिमे क्रूरैः युते जातमात्रो म्रियते अथवा गर्भे म्रियते ॥ ९१-९२ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बालक के जीवन मरण प्रश्न में बारहवें भाव का स्वामी केन्द्र में शुभग्रहों से दृष्ट हो और बारहवें शुक्लपक्ष का चन्द्रमा शुभग्रह से युक्त होकर स्थित हो तो बालक बड़ी उमरवाला होवेगा ॥ ६१ ॥ तथा जो द्वादशभाव का स्वामी क्रूरग्रह हो और दग्ध हो वा आपोक्लिम स्थान में पापग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तो बालक उत्पत्ति समय वा गर्भ में मर जावेगा ॥ ६२ ॥

प्रसवसमयज्ञान—

प्रसवज्ञानप्रश्ने भुक्ताँल्लग्नांशकान् परित्यज्य ।
भोग्याद्विचिन्त्य शेषामनुमित्यैवं वदेद्दिवसान् ॥ ६३ ॥
यावन्तो नवमांशा गतास्तावन्तो गर्भस्य मासा गता ।
यावन्तो भोग्यास्तावेद्भिरग्रतः प्रसव इति व्याख्या ॥ ६४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६३-६४ ॥

बालक उत्पन्न कब होगा इस प्रश्न में लग्न के भुक्त अंशों को छोड़ कर भोग्यांश पर से दिनों का अनुमान कर वही दिन कहना, अथवा लग्न के भुक्त अंशों के समान गर्भ के भुक्त मास और भोग्यांशों से शेष दिन अनुमान से कथन करना ॥ ६३ ॥ जितने नवांश गत हों उतने गतमास गर्भ को जानना, जितने भोग्य हों उतने भोग्य मास जन्म होने को आगे कहना ॥ ६४ ॥

भुवनदीपकोक्तप्रसवज्ञानसमय—

मासज्ञानस्य पृच्छायां गर्भिण्या भृगुनन्दनः ।
लग्नात्स्याद्यावति स्थाने मासानाख्याति तावतः ॥ ६५ ॥
सुतात्संख्या तदा वाच्या यदाधर्मात्परंगतः ।
लग्नांतर्दिनराशिर्दिवाग्रहो लग्नपश्च दिनराशौ ॥ ६६ ॥
तद्दिवसे जन्म स्याद्विपरीते व्यत्ययश्चैषाम् ।

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६५-६६ ॥

प्रश्नलग्न से शुक्र जिस संख्यावाले स्थान में हो उतने महीने का गर्भ है ऐसा कहना तथा जो नवम स्थान से आगे शुक्र हो तो पञ्चम भाव से शुक्रस्थित भाव पर्यन्त गणना करके गर्भमास कहना ॥ ६५ ॥ जो लग्न दिवाबली और लग्नस्वामी दिवाबली राशि में स्थित हो तो दिन में प्रसव होवे, इससे विपरीत अर्थात् रात्रिबली लग्न हो और लग्नेश रात्रिबली राशि में हो तो रात्रि में प्रसव होवेगा ऐसा कहना ॥ ६६ ॥

नोट—एक लग्न में नौ ९ नवमांश होते हैं। एक नवमांश (२०० कला) का होता है। लग्न के भुक्त और भोग्यांशों का कला बनाकर अनुपात करै कि यदि २०० कला में १ नवमांश = एक मास मिलता है तो भुक्तकला या भोग्य कला में क्या मिलैगा, जो संख्या आवै उसी के अनुसार गत और ऐष्यमास कहना चाहिये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ रात्रि लग्न मन्हा तदधिपतिश्चेत्तस्य राशिपतेः ॥ ९७ ॥
बलमूह्यं दिनहोरा पुंराशि स्त्रीग्रहाप्येवम् ।

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९७ ॥

यदि लग्न रात्रिबली हो और लग्नेश दिवाबली हो तो लग्नेश के बलानुसार प्रसव समय कहना, इसी प्रकार दिन, होरा, पुरुष राशि और पुरुष तथा स्त्री ग्रहों द्वारा प्रसव काल का ज्ञान करना चाहिये ॥ ९७ ॥

इस वर्ष सन्तान होगी या नहीं—

अस्मिन्वर्षेऽपत्यं भविता विलग्नपञ्चमाधीशौ ॥ ९८ ॥
भजतो यदीत्थशालं तत्रैवाब्दे भवेन्नूनम् ।

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९८ ॥

इस वर्ष में हमारे सन्तान होवेगी वा नहीं ऐसे प्रश्न में जो लग्नस्वामी पञ्चमस्वामी इन दोनों का परस्पर इत्थशाल हो तों निश्चय सन्तान होवे, ईसराफ योग हो तो नहीं होंवे ॥ ९८ ॥

यदि वा मिथो गृहगतौ स्यातामेतौ च संततिस्तदपि ॥९९॥
वाच्या तस्मिन्वर्षे शुभयोगादन्यथा न पुनः ।
सूताप्रसूतयुवतिज्ञाने सुतपोऽथ षष्ठपः सूर्यात् ॥१००॥
निर्गत्योदयमायात्ततः प्रसूते च नारीयम् ।
अथ जीवभौमशुक्रा आकाशे उदयिनस्तथाप्येवम् ॥१०१॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९९-१००-१०१ ॥

लग्नस्वामी, पञ्चमस्वामी ये दोनों एक ही स्थान में अथवा परस्पर दूसरे के स्थान में हों तथा शुभग्रहों से युक्त हों तो उस वर्ष में सन्तति होवे अन्यथा नहीं होवेगी ॥ ९९ ॥ यह स्त्री प्रसूता होगी अथवा नहीं ऐसे प्रश्न में पञ्चमभावस्वाभी षष्ठभावस्वामी सूर्य के साथ मे निकल गये हों अर्थात् उदय होगये हों तो भी प्रसूता होवे ॥ १०० ॥ बृहस्पति मंगल शुक्र दशम स्थान में स्थित हो तो भी प्रसंज्ञा होवेगी ॥ १०१ ॥

छठे स्थानसम्बन्धी प्रश्न—

रोगादतमुत्थास्यति नवेति लग्नं भिषग्द्यूनम् ।
व्याधिर्दशमं रोगी हिबुकं भेषजमिहाहुराचार्य्याः ॥१०२॥
क्रूरार्दिते विलग्ने वैद्यान्नगुणस्तदोषधाद्रोगः ।
वृद्धिमुपयाति दशमे क्रूरैर्निजबुद्धितोप्यगुणः ॥ १०३॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १०२-१०३ ॥

रोगी मनुष्य रोग से आराम पावेगा अथवा नहीं इस प्रश्न में लग्न से वैद्य सप्तम भाव से रोग, दशमभाव से रोगी, चतुर्थभाव से औषध का विचार करना ऐसा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्वाचार्य्य ने कहा है ॥ १०२ ॥ जो लग्न पापग्रहों से युक्त हो तो वैद्यद्वारा रोग नहीं जायगा और औषध से रोग वृद्धि को प्राप्त होवेगा अर्थात् बढ़ेगा तथा दशमस्थान में पापग्रह हों तो अपनी ही बुद्धि से कोई अवगुण हो जाने से रोग बढ़ जावे ॥१०२-१०३॥

अस्ते च क्रूरयुते मान्द्यान्मान्द्यं तथौषधाद्बन्धौ ।
सौम्योपगतैरेतैररोगिता रोगिणो भवति ॥ १०४ ॥
लग्नेशेन्द्वोः सौम्येत्थशालतो रोगनाशनं वाच्यम् ।
वक्रे तु तत्र खेटे भूयोपि गदः समुपयाति ॥१०५॥

अन्वयः—अस्ते च क्रूरयुते मान्द्यात् मान्द्यं भवति, बंधौ क्रूरयुते औषधात् मांद्यं भवति, एतैः सौम्योपगतैः रोगिणो अरोगिता भवति शेषं स्पष्टम् १०४-१०५

सप्तम स्थान में पापग्रह युक्त हो तो रोग में से रोग उत्पन्न हो जावे तथा चौथे स्थान में पापग्रह हों तो औषध से दूसरा रोग हो जावे, और इन सब में शुभग्रह हों तो रोगी रोग से आराम पाकर आरोग्य हो जाता है ॥ १०४ ॥ लग्नस्वामी और चन्द्रमा इनका शुभग्रह से इत्थशाल योग होने से रोग का नाश कहना और वह वक्रगामी हों तो फिर भी रोग उत्पन्न हो जावे ॥ १०५ ॥

भूमिस्थलग्ननाथः शशिमुथशीले भवेन्मृत्युः ।
लग्नस्थे रन्ध्रपतौ लग्नपशशिनोर्विनाशे वा ॥ १०६ ॥
लग्नाधिपतिः सूर्यश्चन्द्रः सप्तेशमुथशिलविधायी ।
सप्तेशे षष्ठस्थे तन्मरणं रोगिणो वाच्यम् ॥१०७॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १०६-१०७ ॥

लग्नस्वामी चतुर्थस्थान में स्थित होता हुआ चन्द्रमा के साथ इत्थशाल करता हो तो मृत्यु होवे अथवा लग्न में अष्टम भाव का स्वामी और लग्न का स्वामी एवं चन्द्रमा अष्टमस्थान में हो तो भी मृत्यु हो ॥ १०६ ॥ लग्न का स्वामी सूर्य हो और चन्द्रमा सप्तम स्थान के स्वामी के साथ इत्थशाल योग करे और सप्तम स्थान का स्वामी छठें स्थान में स्थित हो तो रोगी का मरण कहना ॥ १०७ ॥

रन्ध्रेशेन विनष्टे नास्तमितेनापि केन्द्रस्थे ।
लग्नेशस्य मुथशिले मृत्युः स्याद्रोगपृच्छायाम् ॥ १०८ ॥
अथ वा तयोश्च केन्द्रे मुथशिलतः क्रूरपीडिते मरणम् ।
यदि केन्द्रे क्रूरग्रहस्तदापीडाष्टमेशेऽपि ॥ १०९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १०८-१०९॥

अष्टमस्थान का स्वामी नष्टबली होकर केन्द्रस्थान में स्थित हो और लग्नस्वामी के साथ इत्थशाल योग करता होवे तो रोग प्रश्न में मृत्यु होवे ऐसा कहना ॥ १०८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथवा लग्नस्वामी व अष्टमस्वामी का केन्द्र में इत्थशाल होवे और दोनों पापग्रह से पीडित हों तो मृत्यु होवे तथा जो केन्द्र में पापग्रह वा अष्टमेश हो तो रोग से पीडा होवे ॥१०९॥

सूर्यद्वादशभागे प्रविष्टे लग्नेश्वरेप्येवम् ।
तनुमृत्युभावनाथावन्योन्याश्रयगतौ मरणम् ॥ ११० ॥
लग्ने चरे च रोगी क्षणे स्यादरुक्चापि ।
द्विशरीरे पररोगः स्थिरे गदस्यैकरोगत्वम् ॥ १११ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११०-१११ ॥

लग्नस्वामी सूर्य के द्वादशांश में हो तो मृत्यु होवे एवं लग्न का स्वामी अष्टम भाव में अष्टम भाव का स्वामी लग्न में स्थित हो, अथवा परस्पर दृष्टी हो तो भी मृत्यु होवे, चरलग्न हो तो रोगी क्षण क्षण में दुःखी होता रहे, द्विःस्वभाव लग्न हो तो एक रोग से दूसरा रोग होवे स्थिर लग्न हो तो आदि अन्त में एक ही रोग रहे ऐसा कहना ॥११०-१११॥

शशिनो वक्रमुथशिले स्थिरे रोगो मन्दमुथशिले पूर्वम् ।
मूत्रनिरोधाद्रोगोत्पत्तिर्ज्ञेया कृतप्रश्ने ॥ ११२ ॥
अथ पृच्छायाः पूर्वे सप्ताहानि च विलोक्य चत्वारि ।
यदि तेषु शशांकरवी शुभयुतदृष्टौ तदा शस्तम् ॥ ११३ ॥
अथ मन्दोऽयमथ नवेति प्रश्नेश्वरोऽथ चन्द्रो वा ।
षष्ठेशमुथशिली स्यादस्तमितस्तदा मन्दः ॥ ११४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११२-११३-११४ ॥

चन्द्रमा वक्री ग्रह से इत्थशाल योग करे तो रोग स्थिर रहे शनैश्चर से इत्थशाल-योग हो तो प्रथम मूत्र के निरोध से रोग की उत्पत्ति इस प्रश्न में जानना ॥ ११२ ॥ अब प्रश्न के प्रथम सात वा चार दिन में सूर्य चन्द्रमा शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हों तो शुभ फल जानना ॥ ११३ ॥ अब यह रोगी होगा वा नहीं इस प्रश्न में प्रश्न लग्न का स्वामी अथवा चन्द्रमा षष्ठेश से इत्थशाल करता हो तो रोगी होवेगा ऐसा कहना ॥ ११४ ॥

स्वामिसेवक और चतुष्पद का प्रश्न—

ईशोऽन्यो मम भविता नवेति लग्नेश्वरस्य यदि केन्द्रे ।
नो भवति मुथशिलं षष्ठांत्यपतिभ्यां तदा नान्यः ॥ ११५ ॥

अन्वयः—मम अन्यो ईशो भविता नवेति प्रश्ने यदि केन्द्रे लग्नेश्वरस्य षष्ठान्त्यपतिभ्यां मुथशिलं नो भवति तदा अन्यः पतिः न भवति ॥ ११५ ॥

हमारा अन्य स्वामी होगा वा नहीं अर्थात् अन्यत्र हमारी नौकरी होगी वा नहीं इस प्रश्न में लग्नस्वामी यदि केन्द्र १।४।७।१० में हो और छठें व बारहवें स्थान के स्वामी से इत्थशाल नहीं होवे तो अन्यस्वामी नहीं होवेगा ॥ ११५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वक्री वाऽन्येन समं लग्नपतिः सहजनवमसंस्थेन ।
कुरुते यदीत्थशालं तदाऽन्यनाथो भवेत्प्रष्टुः ॥ ११६ ॥
लग्नपतौ केन्द्रस्थे रिपुदृष्ट्या क्रूरवीक्षिते सुखपे ।
रविरश्मिगतेऽथ भवेद्यावज्जीवं न चाऽन्यपतिः ॥ ११७ ॥

अन्वयः—यदि लग्नपतिः वक्री वा अन्येन सहजनवमसंस्थेन इत्थशालं कुरुते तदा प्रष्टुः अन्यनाथो भवेत्। लग्नपतौ केन्द्रस्थे सुखपे रिपुदृष्ट्या क्रूरवीक्षिते अथवा लग्नपतौ रविरश्मिगते तदा यावज्जीवं तावदन्यपतिः न भवेत् ॥ १६-१७ ॥

लग्न का स्वामी वक्री हो अथवा अन्य तीसरे नवें स्थान में स्थित ग्रह से इत्थशाल करता होवे, तो प्रश्नकर्ता का अन्य स्वामी होवेगा ॥ १६ ॥ तथा लग्न का स्वामी केन्द्र में हो और चौथे स्थान के स्वामी को क्रूरग्रह शत्रुदृष्टि से देखता हो अथवा लग्नस्वामी अस्त हो तो जब तक जीवे तब तक दूसरा स्वामी नहीं होवे ऐसा कहना ॥ १७ ॥

अयमीशो भद्रो मे पृच्छायां लग्नपस्य कम्बूले ।
स्वामी स एव भव्यो द्यूनेशस्य च शुभोऽन्येशः ॥ १८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १८ ॥

हमारा यही स्वामी अच्छा है वा अन्य इस प्रश्न में लग्न का स्वामी शुभ ग्रह से कम्बूल योग करता होवे तो यही स्वामी शुभ है, तथा जो सप्तम भाव का स्वामी शुभ ग्रह से कम्बूली हो तो दूसरे स्वामी से शुभ होगा ॥ १८ ॥

गृहभूमिस्थानानां चलनप्रश्ने पुरोक्त एव विधिः ।
सम्यग्विचार्य्य वाच्यं शुभमशुभं पृच्छतः स्वधिया ॥ १९ ॥
भृत्यचतुष्पदलाभं प्रश्ने लग्नेशशीतगू षष्ठे ।
षष्ठेशमुथशिलो वा लग्ने षष्ठेश्वरोऽथ तल्लाभः ॥ १२० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १९-२० ॥

गृहभूमि (जगह) के स्थित रहने वा चलायमान होने में भी ऐसा ही विचार भले प्रकार से करके अपनी बुद्धि के अनुसार प्रश्नकर्ता को शुभाशुभ कहना ॥ १९ ॥ सेवक और चौपाये के लाभ प्रश्न में लग्न का स्वामी एवं चन्द्रमा छठें स्थान में हों अथवा छठें स्थान के स्वामी से इत्थशाल करते हों अथवा छठें स्थान का स्वामी लग्न में हों तो लाभ होवेगा ॥ १२० ॥

भृत्यस्य वाहनस्य च यद्वा प्रश्ने च लग्नलग्नपती ।
अर्थी दाता सप्तमसप्तमपौ तद्बलात्प्राप्तिः ॥ २१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेवक और वाहन के प्रश्न में लग्न और लग्नस्वामी अर्थी (लेने वाले) और सप्तम व सप्तमभावस्वामी दाता (देने वाले) जानना इनका बलाबल देख के प्राप्ति अप्राप्ति कहना, यथा लग्नस्वामी का सप्तम भाव से व सप्तम भाव का स्वामी लग्न से अथवा लग्न स्वामी व सप्तमस्वामी का परस्पर इत्थशालयोग होवें, तो सेवक व वाहन की प्राप्ति होगी ईसराफ योग होने से नहीं प्राप्ति होगी ऐसा जानना ॥ २१ ॥

स्त्रीसम्बन्धी प्रश्न—

स्त्रीलाभस्य प्रश्ने स्मराधिपे लग्नपेन शशिना वा ।
कृतमुथशिले युवत्या अयाचिताया भवेल्लाभः ॥ २२ ॥
यदि लग्नपो विधुर्वा द्यूने तदयाचितां स्त्रियं लभते ।
लग्नेशान्मूसरिफे चन्द्रेऽस्तमुथशिले स्वयं लाभः ॥ २३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥

स्त्री लाभप्रश्न में सप्तम भाव का स्वामी और लग्नस्वामी वा चन्द्रमा का इत्थशाल योग हो तो बिना याचना किये ही स्त्री का लाभ होवे ॥ २२ ॥ जो लग्नस्वामी वा चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो भी बिना माँगे स्त्री प्राप्ति हो अथवा लग्नस्वामी का सप्तम भाव से ईसराफ योग हो और चन्द्रमा का सप्तमेश से इत्थशाल हो तो स्वयं (बिना प्रयास अर्थात् आप ही से) स्त्री की प्राप्ति होवे ॥ २३ ॥

येन समं तु मुथशिलं तत्र विनष्टे च पापयुतदृष्टे ।
निकटीभूय तदा किल विनश्यति स्त्रीगतं कार्यम् ॥ २४ ॥
पापेऽत्र रन्ध्रनाथे स्त्रीजातेरेव विघटते कार्यम् ।
सहजपतौ भ्रातृभ्यस्तुर्येशे पितृव्य एव नान्येभ्यः ।
सौम्यकृतयुतिदृग्भ्यां पूर्वोक्तस्थानतः शुभं वाच्यम् ॥ २५ ॥

अन्वयः—येन समं मुथशिलं तत्र विनष्टे वा पापयुतदृष्टे तदा स्त्रीगतं कार्यं निकटीभूय पुनः विनश्यति शेषं स्पष्टम् ॥ २४ ॥ २५ ॥

जिस ग्रह के साथ इत्थशाल योग हो वह ग्रह नष्टबली और पापग्रहयुक्त वा दृष्ट हो तथा सप्तम में नष्टबली ग्रह वा पापग्रह हो तो स्त्रीलाभसम्बन्धी कार्य समीपवर्ती होने पर भी नष्ट हो जावे ॥ २४ ॥ सप्तम भाव में पापग्रह वा अष्टम भाव का स्वामी हो तो स्त्रीसम्बन्धी कार्य न हो तीसरे भाव के स्वामी से सम्बन्ध हो तो भाई से चतुर्थ भाव के स्वामी से सम्बन्ध हो तो पिता व पिता के भाई से एवं जिस भाव के स्वामी से सम्बन्ध हो उसके द्वारा कार्य का नाश होवे तथा जो सप्तम भाव वा सप्तमभावेश पर शुभ ग्रह का योग हो अथवा शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उक्त सम्बन्धवाले से स्त्री का लाभ होवे ॥२५॥

स्त्रीसम्बन्धी प्रेम का प्रश्न

प्रीतिस्थानप्रश्ने स्मरपतिलग्नेशमुथशिले स्नेहः ।
झकटकदृशा झकटकः शशिकम्बूले तु सापि शुभा ॥ २६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि मन्दो लग्नेशः केन्द्रे च स्यात्तदा बली प्रष्टा ।
अस्तेश्वरे च मन्दे केन्द्रे प्रतिवादिनोऽस्तिबलम् ॥ २७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २६-२७ ॥

अब स्त्री प्रीति के प्रश्न में सप्तमभावस्वामी और लग्नस्वामी का इत्थशाल हो तो स्त्री से प्रीति होगी और इनकी शत्रुदृष्टि हो तो कलह हो और चन्द्रमा कम्बूल योग करता हो तो स्त्री सरलस्वभाववाली होगी ॥ २६ ॥ यदि शनि लग्नस्वामी केन्द्र में हो तो प्रश्नकर्ता बली जानना, और सप्तमभावस्वामी शनि केन्द्र में हो तो प्रतिवादी को बली जानना ॥ २७ ॥

उभयोरेकस्थितयोर्ज्ञातव्या झकटकं तयोः प्रीतिः ।
सूर्येन शुभं विबले नरस्य शुक्रे तयोर्द्वितयोः ॥ २८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २८ ॥

लग्न का स्वामी और सप्तम का स्वामी ये दोनों एक ही राशि में स्थित हों तो प्रथम कलह हो उपरांत प्रीति हो जावे और सूर्य बलहीन हो तो पुरुष को शुभ नहीं, शुक्र बलहीन हो तो स्त्री को शुभ नहीं जानना तथा दोनों बलरहित हों तो दोनों को शुभ नहीं जानना ॥ २८ ॥

रुष्ट स्त्री के आगमन का प्रश्न—

मम गृहिणी रुष्टा पुनरेष्यति वाथ भूम्यधःस्थरवौ ।
भूपरिगते च शुक्रे नैति पुनर्वक्रितेऽभ्येति ॥ २९ ॥
सूर्यान्निर्गतशुक्रे वक्रेऽपि समेति चान्यथा रुष्टा ।
क्षीणेन्दौ बहुदिवसैः पूर्णविधौ च द्रुतमुपैति ॥ १३० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २९-३० ॥

किसी प्रश्नकर्ता ने प्रश्न किया हो कि हमारी रूठी हुई स्त्री घर आवेगी कि नहीं तो इस प्रकार विचार करना कि चतुर्थस्थानपर्यन्त सूर्य हो और चतुर्थ भाव के ऊपर शुक्र हो तो स्त्री नहीं आवेगी, तथा जो शुक्र वक्री होवे तो आवेगी ऐसा कहना ॥ २९ ॥ सूर्य के साथ से निकल गया अर्थात् समीप ही शुक्र का उदय भया हो और वक्री शुक्र हो तो रुष्टा स्त्री आपही आ जावेगी, इससे विपरीत हो तो नहीं आवेगी, तथा जो क्षीण चन्द्रमा इससे सम्बन्ध करे तो बहुत दिनों में और पूर्ण चन्द्रमा सम्बन्ध करे तो शीघ्र रुष्टा स्त्री लौट आवेगी ॥ १२० ॥

कन्यापरीक्षा—

एषा कुमारिका किल निर्दोषा किन्नवेति पृच्छायाम् ।
लग्ने स्थिरे स्थिरर्क्षे लग्नपशशिनोश्च निर्दोषा ॥ ३१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चरराशिगतैरेतैरियं कुमार्यपि च जातदोषा स्यात् ।
द्विशरीरस्थे चन्द्रे चरलग्ने स्वल्पदोषा स्यात् ॥ ३२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३१-३२ ॥

यह कुमारी निर्दोष है वा नहीं इस प्रश्न में लग्न स्थिर हो और स्थिर राशि में लग्न का स्वामी व चन्द्रमा हो तो यह कन्या निर्दोष है ऐसा कहना ॥ ३१ ॥ तथा प्रश्नलग्न चरसंज्ञक हो और लग्नेश व चन्द्रमा चर राशि में हो तो यह कन्या दोषी है, और द्विःस्वभाव राशि में चन्द्रमा स्थित हो तो थोड़े दोषवाली जानना ॥ ३२ ॥

शशिभौमावेकर्क्षे स्थिरवर्जे तत्परेण गुप्तमियम् ।
रमिताशनिचन्द्रमसोर्लग्नपयोः प्रकटमुपभुक्ता ॥ ३३ ॥
यदि भौमशनी केन्द्रे विधुदृष्टौ वृश्चिकेऽथ शुक्रः स्यात् ।
तद्द्रेष्काणेथ तदा निभ्रान्तं जातदोषैषा ॥ ३४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३३-३४ ॥

चन्द्रमा, मङ्गल एक राशि में स्थित हों परन्तु वह राशि स्थिर न हो तो इस कन्या का किसी ने गुप्त रमण किया है तथा जो शनि और चन्द्रमा लग्न में स्थित हों तो प्रगट भोगकरी है ॥ ३३ ॥ यदि मंगल, शनि केन्द्र में स्थित हों और वृश्चिक में शुक्र हो और चन्द्रमा देखता हो अथवा वृश्चिक के द्रेष्काण में शुक्र हो तो यह स्त्री निस्सदेह दोषी है ऐसा कहना ॥ ३४ ॥

प्रसूतिपरीक्षा—

एषा किल प्रसूता सिते घटे ज्ञे हरा च नो सूता ।
अनयोरलिवृषगतयोः सूता नारी परिज्ञेया ॥ ३५ ॥
भौमबुधशुक्रचन्द्रा द्विशरीरे चापवर्जिते चेत्स्युः ।
अग्रेऽस्ति तत्प्रसूतिश्चापेनाग्रेण पृष्ठतः सूता ॥ ३६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३५-३६ ॥

यह स्त्री प्रसूत भई अथवा नहीं, इस प्रश्न में जो शुक्र कुम्भ का वा बुध सिंह का हो तो प्रसूत नहीं भई और शुक्र वृश्चिक का, बुध वृष का हो तो प्रसूति हुई है ऐसा जानना ॥ ३५ ॥ मङ्गल, बुध, शुक्र चन्द्रमा ये धन राशि से रहित द्विस्वभाव राशि में विद्यमान हों, तो यह स्त्री प्रथम प्रसूति हो चुकी है धन राशि में पूर्वोक्त ग्रह विद्यमान हो तो न भई न अगाड़ी होगी ॥ ३६ ॥

गर्भ किसका है—

क्रूरश्चेच्चरराशौ परतः सूता स्थिरे तु निजपत्युः ।
मिश्रेण तु मिश्रमूह्यं जातकसन्देहपृच्छायाम् ॥ ३७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुर्विण्येषा स्वपत्युः परपुरुषाद्वेति लग्नसुतपत्योः ।
शुभयुतिदृग्भ्यां स्वपतेः शनिभौमदृशाऽन्यतो गुर्वी ॥ ३८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३७–३८ ॥

जो चर राशि में लग्नेश पञ्चमेश क्रूर ग्रह हों तो दूसरे से बालक भया, स्थिर राशि में हों तो अपने पति का बालक जानना, मिश्र हों तो मिला भया जानना, अर्थात् प्रसूति स्त्री को व्यभिचारिणी जानना, जातकसन्देह प्रश्न में यह विचार करना ॥ ३७ ॥ यह स्त्री अपने पति से गर्भिणी है अथवा परपुरुष से ? इस प्रश्न में लग्न का स्वामी और पञ्चम भाव का स्वामी ये दोनों शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो पति से गर्भिणी जानना । और शनि, मङ्गल की दृष्टि हो तो दूसरे से गर्भिणी भई है ऐसा जानना ॥३८॥

पतिव्रता की परीक्षा—

कुलटा सतीयमथवेति लग्नपतिश्चन्द्रमाश्च भौमेन ।
एकांशेन मथशिलकृत्तदैव भवने भजत्यन्यम् ॥ ३९ ॥
यदि निजगृहगो भौमस्तदान्यदेशं प्रयाति जारकृते ।
रविणेति मुथशिले सत्युपभुक्ता सा तु राजपुरुषेण ॥ १४० ॥
सौम्येन लेखकवणिक् निजभे शुक्रेण योषयैव स्त्री ।
एतैर्योगैरसती विपरीते सुचरितेति विज्ञेयम् ॥ ४१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १३९–१४०–१४१ ॥

यह कुलवधू पतिव्रता है अथवा नहीं, इस प्रश्न में लग्न का स्वामी और चन्द्रमा मङ्गल के साथ एक ही अंश पर इत्थशाल योग करता हो तो इसी घर में किसी दूसरे से रमण करती है ॥ ३९ ॥ यदि मंगल अपनी राशि में हो तो किसी दूसरे पुरुष के साथ परदेश को निकल जायगी तथा जो सूर्य के साथ इत्थशाल हो तो किसी राजपुरुष से रमण करी है ऐसा कहना ॥ ४० ॥ तथा जो पूर्वोक्त मंगल का बुध के साथ इत्थशाल हो तो स्त्रीसमान पुरुष से संयोग करी है, इन पूर्वोक्त योगों के होने से व्यभिचारिणी और इन योगों के न होने से पतिव्रता जानना ॥ ४१ ॥

लग्नपतिनाऽथ शशिना मूसरिफे भूसुते भवेज्जारः ।
त्यक्तः पुनर्गुरुदृशा पुत्रभयाद्रविदृशा च राजभयात् ॥ ४२ ॥
सितदृष्ट्या परनारीभयात्सितज्ञैकराशिगतदृष्ट्या ।
जारस्य स्थविरत्वाल्लज्जितत्वात्त्यजति जारं सा ॥ ४३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४२–४३ ॥

लग्नस्वामी वा चन्द्रमा से मंगल का ईसराफ होवे, तो स्त्री जार (व्यभिचारी पुरुष) से रमण करनेवाली होगी और जो उसपर बृहस्पति की दृष्टि होवे तो पुत्र के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भय से, सूर्य की दृष्टि हो तो राजभय से जार का त्याग करे ॥ ४२ ॥ तथा जो मंगल पर शुक्र की दृष्टि हो तो स्त्री के भय से स्त्री जार को परित्याग करे और जो शुक्र, बुध एकराशि पर स्थित हो और पूर्वोक्त मंगल को देखे तो जार पुरुष की वृद्धावस्था होने से लज्जा मानकर जार का परित्याग कर देवे ॥ ४३ ॥

अष्टम स्थानसम्बन्धी प्रश्न—

नृपसंग्रामप्रश्ने विलग्नेशसंस्थितात्खेटात् ।
शसिमूसरिफात्प्रष्टास्तास्तपसंस्थेन्दुमुथशिलाच्छत्रुः ॥ ४४ ॥
अथ वा शनिकुजजीवाः शीघ्रगम्यो बलयुता उपरिचराः ।
बुधसितचन्द्रास्तेभ्यश्चदुर्बलाधश्चराश्च सञ्चिन्त्याः ॥ ४५ ॥

अन्वयः—नृपसंग्रामप्रश्ने विलग्नलग्नेशसंस्थितात्खेटात् शशिमूसरिफात्प्रष्टा जयी अस्तपसंस्थेन्दुमुथशिलाच्छत्रुः जयी भवति। अथवा शनिकुजजीवा बलयुताः शीघ्रगम्यो उपरिचरास्तदा प्रष्टा जयी, बुधसित चन्द्राः दुर्बलाः तेभ्य (शीघ्रेभ्यो) अधश्चराः तदा पराभवः स्यात् ॥ ४४–४५ ॥

राजा से संग्राम होने के प्रश्न में लग्न और लग्नेश प्राप्त ग्रह से चन्द्रमा का ईसराफ योग होवे तो प्रश्नकर्ता की जय होगी और सप्तम भाव तथा सप्तमेष का चन्द्रमा का इत्थशाल होवे तो शत्रु की जय होगी ॥ ४४ ॥ अथवा शनि, मङ्गल, बृहस्पति ये ग्रह बलवान् होकर शीघ्रगामी ग्रह से ऊपर हों तो अपना विजय और बुध, शुक्र, चन्द्रमा बलहीन होकर उनसे नीचे रहें तो शत्रु की विजय होगी ॥ ४५ ॥

लग्नपतावस्तपतेः षट् त्रिदशायां मुथशिले द्वयोः स्नेहः ।
वर्गद्वयमध्याधः पतितः सोऽन्येन बद्धः स्यात् ॥ ४६ ॥
वर्गद्वयाधिपानां मूसरिफेऽस्तङ्गते न रणदैर्घ्यम् ।
लग्नस्वामिनि मन्दे कम्बूले उपरिगे जयः प्रष्टुः ॥ ४७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४६–४७ ॥

लग्नस्वामी और सप्तमस्वामी का द्रेष्काण दृष्टि से इत्थशाल हो तो परस्पर दोनों राजाओं में स्नेह हो जावे, और जो तीसरे, छठे इन दोनों वर्गों के मध्य में हो तो कोई दूसरा शत्रु को बाँध लेवे ॥ ४६ ॥ तथा युद्ध करने वाले दोनों के वर्गस्वामियों से ईसराफ योग होवे और अस्तंगत हों तो बहुत संग्राम होगा और जो लग्नस्वामी मन्दगामी सप्तम स्वामी शीघ्रगामी हो और कम्बूल योग हो तो प्रश्नकर्ता की विजय होगी ॥ ४७ ॥

एवं गुणे तु तस्मिन्विप्रविनष्टेऽस्तपतिनीचस्थे ।
केन्द्रेऽस्ते वास्तपतौ प्रष्टुर्हानिः प्रवक्तव्या ॥ ४८ ॥

लग्नादधः शुभे सति उपरि च मन्दे शुभः सहायः स्यात् ।
लग्नपतौ रन्ध्रस्थे रन्ध्रपमुथशिलेऽहितः प्रष्टुः ॥ ४९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४८ । ४९ ॥

एवं जो मन्दगामी ग्रह अधिकांश और शीघ्रगामी ग्रह अल्पांश होके चन्द्रमा से मुथशिल अस्तङ्गत नीचगत हो अथवा सप्तमभावस्वामी केन्द्र में एवं अस्त व नीच गत हो तो रण में प्रष्टा की हानि कहना ॥ ४८ ॥ लग्न से अधः अर्थात् दशम भाव से लग्न पर्यन्त शुभग्रह और लग्न से ऊपर अर्थात् लग्न से चतुर्थ भाव पर्यन्त शनि हो तो युद्ध में अच्छा सहाय प्राप्त होवे, तथा जो लग्न का स्वामी अष्टम हो वा अष्टमेश से इत्थशाल करता हो तो प्रश्नकर्ता का पराजय होगा ॥ ४९ ॥

सप्तेशे धनसंस्थे धनेशकृतमुथशिले रिपोर्नाशः ।
लग्नेशदशमपत्योर्मुथशिलतः पृच्छकस्य जयवीर्ये ॥ १५० ॥
तुर्यास्तपयोरेवं शत्रोर्योगे जयो ज्ञेयः ।
उभयवर्गेऽपि केन्द्रे तत्पतिकृतमुथशिले बलं ज्ञेयम् ॥ ५१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १५०-५१ ॥

सातवें भाव का स्वामी धन भाव में स्थित हो और धनेश के साथ इत्थशाल करता हो तो शत्रु का नाश होवे और लग्नेश दशमेश का इत्थशाल हो तो पराक्रम से प्रश्नकर्ता की विजय होगी ॥ ५० ॥ एवं चतुर्थभाव स्वामी सप्तमभाव स्वामी इन दोनों का इत्थशाल हो वा योग हो तो शत्रु की जीत जानना तथा जो दोनों के वर्ग स्वामियों में केन्द्रस्थित स्थानेश से इत्थशाल हो तो प्रश्नकर्ता का पक्ष बलवान् पक्ष जानना ॥ ५१ ॥

चरराशौ सबलत्वं जित्वा प्रान्ते विनाशस्तु ।
लग्नपतावन्त्यस्थे प्रष्टा नश्यति परोऽस्तपे षष्ठे ॥ ५२ ॥
खपतौ लग्ने प्रष्टुस्तुर्येशेऽस्ते रिपोः सहायबलम् ।
यन्मुथशिलौ रवीन्दू तस्य बलं मुसरिफे हानि ॥ ५३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५२-५३ ।

जिसका वर्गेश चरराशि में बलवान् हो तो वह प्रथम शत्रु को जीत के आप भी विनष्ट हो जावेगा तथा जो लग्नेश बारहवें स्थान में हो तो प्रश्नकर्ता नष्ट हो जावेगा, तथा जो सप्तमेश छठे हों तो शत्रु का नाश होगा ॥ ५२ ॥ दशम भाव का स्वामी लग्न में और चतुर्थ भाव का स्वामी सप्तम भाव में हो तो पृच्छक को शत्रु की सेना से सहायता मिले और सूर्य चन्द्रमा का इत्थशाल हो वा मूसरिफ हो तो उसकी सेना का नाश होगा ऐसा कहना ॥ ५३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवमस्थानसम्बन्धी प्रश्न—

मम गमनं भविता किं नवेति लग्नेश्वरेथवा चन्द्रे ।
नवमेशमुथशिले सति नवमे वा स्याद्भवेद्गमनम् ॥ ५४ ॥
लग्नस्थे नवमपतौ लग्नाधिपमुथशिले च सञ्चारात् ।
रहितो याति पुनर्ना नवमदृशा वर्जिते योगे ॥ ५५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५४-५५ ॥

हमारा गमन होगा या नहीं इस प्रश्न में लग्न का स्वामी अथवा चन्द्रमा नवम स्थान के स्वामी से इत्थशाल योग हो वा लग्नेश नवम स्थान में हो तो गमन होगा ॥ ५४ ॥ नवम स्थान का स्वामी लग्न में हो और लग्नेश से इत्थशाल करता हो तो स्थित रहेगा, तथा जो लग्नेश और नवम स्वामी की नवम स्थान में दृष्टि न हो तो मनुष्य गमन नहीं करेगा ॥ ५५ ॥

लग्नपतौ केन्द्रस्थे सहजेशमुथशिले च विक्रूरे ।
गमनं स्यादस्मिन्वा केन्द्रे क्रूरे च नास्ति गतिः ॥ ५६ ॥
अस्ते क्रूरेपि च यत्कार्यं निर्याति विघ्नमत एव ।
आकाशस्थे पापे राजकुलाज्ज्येष्ठतो निजाद्वापि ॥ ५७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५६-५७ ॥

लग्न का स्वामी केन्द्र १।४।७ १० में स्थित होकर तीसरे स्थान के स्वामी से इत्थशाल करता हो और पापी न हो तो गमन होगा, और केन्द्र में क्रूर ग्रह हो तो गमन नहीं होगा ॥५६॥ तथा जो सप्तम स्थान में पापग्रह हों तो जिस कार्यनिमित्त गमन करे उसमें विघ्न होवे, तथा जो दशम भाव में पापग्रह हो तो राजकुल से वा अपने बड़े से अथवा अपने से ही विघ्न होगा ॥ ५७ ॥

नवमेशे मुथशिलगे लग्नाधीशेन पापरिपुदृष्टे ।
गमनेवसानतः स्यात्प्रष्टुः कष्टं क्षयोऽर्थस्य ॥ ५८ ॥
लग्नेशे नवमेशे मुथशिलकृतिरन्ध्रसप्तमे कष्टम् ।
उदयेऽस्मिन्वा यायाद्विनिःसृतिः स्यात्सुखकरः पन्था ॥५९॥

अन्वयः—लग्नाधीशेन नवमेशे मुथशिलगे पापरिपुदृष्टे गमने अवसानतः प्रष्टुः कष्टं अर्थस्य क्षयः स्यात् । शेषं स्पष्टम् ॥ ५८-५९ ॥

नवमभाव स्वामी का लग्नेश के साथ इत्थशाल हो और पापग्रह की शत्रुदृष्टि हो तो गमन होगा परन्तु अन्त में कष्ट व धन का क्षय होगा ॥ ५८ ॥ तथा जो लग्नस्वामी व नवम स्वामी का इत्थशाल, आठवें वा सातवें स्थान में हो तो गमन करने में कष्ट होवे तथा जो वह अस्त से उदय हो गया हो तो मार्ग सुखकारी होगा ऐसा जानना ॥५९॥

लग्नान्मार्गानुभवो व्योम्नः कार्यं स्मराद्गतिस्थानम् ।
भूमेः कार्यं परिणतिरेवं लग्ने शरीरसुखम् ॥ १६० ॥
दशमे शुभं च सिद्धिः कार्यस्यास्ते प्रयाति यत्स्थाने ।
तत्र शुभं च चतुर्थे परिणामः सुन्दरः कार्ये ॥ ६१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६०–६१ ॥

लग्न से मार्ग का अनुभव करना अर्थात् लग्न जैसा ह्रस्व वा दीर्घ हो वैसा ही मार्ग कहना, तथा दशम भाव से कार्य, सप्तम भाव से गमन स्थान, चतुर्थ भाव से कार्य का परिणाम एवं लग्न से शरीर का सुख, विचार करना ॥ ६० ॥ दशमस्थान में शुभग्रह हो तो कार्यसिद्धि होवे सप्तम में हो तो सुखपूर्वक गमन चतुर्थ स्थान में शुभग्रह हो तो कार्य का परिणाम अच्छा होगा ॥ ६१ ॥

लग्नेशं शशिनं वा यः क्रूरस्तुदति तत्र मनुजर्क्षे ।
मनुजत्रिराशिके वा तदा भयं द्विपदतो गन्तुः ॥ ६२ ॥
जलराशौ वारिभयं चतुष्पदर्क्षे तथाश्वादेः ।
घटचापे द्रुमकंटकभयं हरौ व्याघ्रसिंहादेः ॥ ६३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६२–६३ ॥

लग्नस्वामी और चन्द्रमा को जो पापग्रह पीड़ित करे वह नरराशि वा नरराशि के द्रेष्काण में हो तो गमन कर्ता को द्विपद (दो पैरवाले) से भय होगा ॥६२॥ तथा जो जलराशि में हो तो जल से भय होवे, चतुष्पद राशि में हो तो घोड़ा आदि चौपाये से भय होवे, तथा कुम्भ व धन का हो तो वृक्षकंटकादि से भय हो, और सिंह का हो तो व्याघ्र सिंहादि से भय हो ॥ ६३ ॥

नगर से लाभ होगा या नहीं—

नगरप्रवेशतोऽस्मान् फलमस्ति न वा प्रवेशलग्नमिह ।
तस्मिन्धनपे वक्रे नो वसतिः कार्यसिद्धिर्वा ॥ ६४ ॥
अतिचरिते बहुदिवसे वसतिर्ना कार्यसिद्धिरीषदपि ।
नवमतृतीयगतेस्मिन्कार्यं कृत्वाशु निजपुरं याति ॥ ६५ ॥
लग्ने कर्मण्यायेधनपयुते शोभने ज्ञेयम् ।
सक्रूरसप्तमस्थे पथि विघ्नाज्झकटकश्चतुर्थस्थे ॥ ६६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

नगर में प्रवेश करने से हमको फल होगा या नहीं इस प्रश्न में जो प्रवेश लग्न में जो धनेश वक्री हो तो स्थिति नहीं होगी और कार्य भी नहीं सिद्ध होगा ॥६४॥ तथा जो धनेश अतिचारी हो तो बहुत दिन रहना नहीं होगा और कुछ भी कार्यसिद्धि न होगी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और जो धनेश नवम वा तृतीय स्थान में हो तो कार्य करके शीघ्र अपने पुर को जावे ॥६५॥ लग्न, दशम, एकादश स्थान में नवमेश, धनेशयुक्त हो तो शुभ फल जानना, वा पापग्रहसहित सप्तम भाव में स्थित हो तो मार्ग में विघ्न होगा, चतुर्थ स्थान में हो तो कलह होगा ऐसा जानना ॥ ६६ ॥

दशमस्थानसम्बन्धी प्रश्न—

राज्याप्तिप्रश्नलग्ने लग्नेशे शशिनि वा नभःपतिना ।
कृतमुथशिलेऽम्बरदृशा राज्यं रूपक्रमाद्भवति ॥ ६७ ॥
अन्योन्यभवनगमनात्क्रूराभावेऽथ चिन्तितप्राप्तिः ।
लग्नस्थेनान्येन च सौम्येनाम्बरस्थमुथशिलेप्येवम् ॥ ६८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६७–६८ ॥

हमको राज्यप्राप्ति होगी वा नहीं इस प्रश्न में लग्न का स्वामी वा चन्द्रमा लग्न में हो अथवा दशम भाव स्वामी से इत्थशाल करे और मित्र दृष्टि हो तो अपने कुल के अनुसार राज्य प्राप्त होवे ॥ ६७ ॥ अथवा परस्पर एक दूसरे के स्थान में हो अर्थात् लग्नेश दशम में, दशमेश लग्न में पापग्रहरहित स्थित हो तो चिन्तित राज्य व सुख की प्राप्ति होवे और लग्नेश का दशमस्थित शुभग्रह से इत्थशाल हो तो भी राज्य प्राप्त होवेगा ॥ ६८ ॥

पापार्दिते तु मन्दे निकटीभूयोत्तरत्यधोराज्यम् ।
भूमिस्थे क्रूरदृशा त्वपवादः शुभदृशा कीर्तिः ॥ ६९ ॥
मन्दग्रहे बलवति क्रूरवियुते यदा शशी विबलः ।
मन्दे बलेन भ्रमणाद्राज्यप्राप्तिर्भवेत्प्रष्टुः ॥ १७० ॥

अन्वयः—मन्दे पापार्दिते निकटीभूय अधो राज्यं उत्तरति शेषं स्पष्टम् ॥ ६९–१७० ॥

मन्दगतिवाला ग्रह पापग्रह से पीडित हो तो राज्य का नाश हो चतुर्थस्थान में हो और पापग्रह की दृष्टि हो तो अपवाद हो, शुभग्रह की दृष्टि हो तो कीर्ति हो ॥६९॥ मन्दगतिवाला ग्रह बलवान् हो और पापग्रह का योग न हो और चन्द्रमा बलहीन हो तो भ्रमण करने से राज्य प्राप्त होवे ॥ १७० ॥

लग्नाधिपतौ स्वगृहे लाभो राज्यस्य तुङ्गगे भौमे ।
लग्नांबराधिपौ यदि केन्द्रगौ केन्द्रगेन्दुमुथशिलतः ॥ ७१ ॥
उत्तमराज्यावाप्तिः स्वर्क्षस्थे चेन्दुतो विपुला ।
यत्रर्क्षे लग्नेशस्तत्पतिरशुभे गृहे तदा कार्यम् ॥ ७२ ॥
न स्यादस्ते कष्टाद्दशमदृशा कटुकता कार्ये ।
राज्यप्राप्तौ सत्यां यदि पृच्छति कोपि परिणतिं च तदा ॥ ७३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—लग्नाधिपतौ स्वगृहे तुङ्गगे भौमे राज्यस्य लाभः, शेषं स्पष्टम् ॥ ७१-७२-७३ ॥

लग्न का स्वामी अपने घर में हो और अपनी उच्चराशि (मकर) में मङ्गल हो तो राज्य लाभ होवे तथा लग्नेश और कर्मेश इत्थशाल करते हुये केन्द्र में हों और केन्द्रस्थ चन्द्रमा से कम्बूली हों तो भी राज्यलाभ होवे ॥ ७१ ॥ तथा लग्नेश दशमेश अपनी २ राशि में हों और इत्थशाल योग करते हुये चन्द्रमा से कम्बूल योग करें तो अच्छे प्रकार राज्यप्राप्ति हो परन्तु उत्तम कम्बूल हो और जिस राशि में लग्नेश हो उसके स्वामी पापग्रह की राशि में हों तो राज्यकार्य नहीं होवे ॥७२॥ और जो वह ग्रह अस्तङ्गत हो तो कष्ट से राज्यकार्य होवे और शत्रुदृष्टि से दृष्ट हो तो कार्य में किसी प्रकार की कडुवाई होवे, राज्यप्राप्ति विषय में यदि कोई भी प्रश्न करे तो इस प्रकार परिणाम कहना ॥७३॥

लग्नं शरीरकार्यं गृहकर्मास्तं नभश्च राज्यार्थम् ।
लाभो मित्रस्यार्थे चतुर्थकं कर्मणोवासितये च ॥ ७४ ॥
द्रव्यं धनायसहजं भृत्येभ्यो रिपुश्च वैरिभ्यः ।
एतैः शुभैः शुभं स्यादशुभे वामं च सर्वकार्य्याणाम् ॥ ७५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७४-७५ ॥

यदि कोई प्रश्नकर्ता राज्य का परिणाम पूछे तो लग्न से शरीर का विचार करना सप्तम से गृहकार्य, दशम भाव से राज्यकार्य, चतुर्थ भाव से लाभ व मित्रकार्य व निवास के विषय में भी विचार करना ॥ ७४ ॥ धन भाव और ग्यारहवें भाव से धन का विचार करना, तीसरे से सेवक छठें भाव से शत्रु का विचार करना, इन स्थानों में शुभग्रह हों तो शुभ फल अशुभ (पाप) ग्रह हों तो अशुभ फल सब कार्यों में कहना ॥७५॥

वित्तस्वामिनि भौमे नीचस्थे पारदारिके व्ययकृत् ।
जीवे धर्मायरिपौ गुरुपूजायै सिते विलासाय ॥ ७६ ॥
वाणिज्याय ज्ञे पुनरिंदौ मुथशिलिनी चान्यथान्यर्थम् ।
लग्नपतौ पतितस्थे विबले राज्यात्ययस्तु कम्बूले ।
कोपि गुणः स्यात्पापाक्रांतैरशुभं च्युतो भवति ॥ ७७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७६-७७ ॥

दूसरे भाव का स्वामी मंगल लग्नस्वामी के साथ इत्थशाल करता हो तो परस्त्री के कारण धन का व्यय (खर्च) होवे, और बृहस्पति धनेश हों तो धर्म में सूर्य धनेश हो तो गुरु और ब्राह्मण के पूजन में शुक्र धनेश हो तो विलासादि सुख के हेतु धन का व्यय होवे ऐसा कहना ॥ ७६ ॥ बुध हो तो वाणिज्यकर्म में, चन्द्रमा धनेश मुथशिली हो तो व्यय दूसरे के अर्थ व्यय होवे, तथा जो लग्नेश नीच स्थान में स्थित और बलहीन हो तो राज्य का नाश हो तथा कम्बूल योग करे तो कुछ शुभ फल प्राप्त होवे और पापग्रह से आक्रान्त हो तो अशुभ फल हो और राज्य से विमुख हो जावे ॥ ७७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नरपतिसचिवस्नेहप्रश्ने कम्बूल लग्नसप्तपयोः ।
मुथशिलयोः शुभदृष्ट्या शुभता राज्ये मिथः स्नेहः ॥ ७८ ॥
राज्यं चरं स्थिरं वा लग्नपगगनेशयोः सहयोः ।
यद्येको मन्दः स्यात्केन्द्रे तत्स्थितमतोन्यथा वाच्यम् ॥ ७९ ॥
यदि वा स वाममार्गे भूमेर्वा प्रच्युतिर्भवेत्पूर्वम् ।
कम्बूले सति लभते शीघ्रं मूसरिफतौ न पुनः ॥ १८० ॥

अन्वयः—नरपतिसचिवस्नेहप्रश्ने लग्नसप्तपयोः कम्बूले तयो शुभदृष्ट्या मुथशिलयोः मिथःस्नेहः राज्ये शुभता च स्यात्, राज्यं चरं स्थिरं वा प्रश्ने लग्नपगगनेशयोः सहयोः एको मन्दः केन्द्रे तदा तत्स्थितं स्यात् अन्यथा न स्यादिति वाच्यम् । यदि वा स वाममार्गे पूर्वं भूमेः प्रच्युतिः पश्चादुन्नतिः कम्बूले सति शीघ्रं लभते, (तयोः) मुसरिफे पुनः न लभते ॥ ७८–७९–१८० ॥

राजा और राजमन्त्री के स्नेह प्रश्न में लग्नस्वामी और सप्तमस्वामी दोनों कम्बूल योगसहित इत्थशाल योग करते हों और शुभग्रह की दृष्टि हो तो राजा व राजमन्त्री में परस्पर स्नेह रहे और राज्य में शुभता (आनन्द) रहे ॥ ७८ ॥ यह राज्य चर रहेगा वा स्थिर इस प्रश्न में लग्नस्वामी और कर्मेश दोनों एक राशि में हों उनमें से एक मन्दगति ग्रह केन्द्र १ । ४ । ७ । १० स्थान में हो तो राज्य स्थिर रहेगा अन्यथा स्थिर न रहेगा ॥ ७९ ॥ यदि वा उक्तग्रह वक्रगामी हो तो प्रथम राज्य की हानि हो पश्चात् उन्नति होवे, कम्बूल योग हो तो शीघ्र राज्य का लाभ हो, ईसराफ योग हो, तो राज्य का लाभ नहीं होवे ॥ १८० ॥

एकादशस्थानसम्बन्धी प्रश्न—

नृपतेर्गौरवलाभाशादि मम स्यान्नवेति पृच्छायाम् ।
आयेशलग्नपत्योः स्नेहदृशा मुथशिले द्रुतं भवति ॥ ८१ ॥
रिपुदृष्ट्या बहुदिवसैः केन्द्रे चायेशचन्द्रकम्बूले ।
वाच्या पूर्णवाशा चरस्थिरद्विःस्वभावगे स्वनामफलम् ॥ ८२ ॥
मन्दे क्रूरोपहते भूत्वाशाशु प्रणाशमुपयाति ।
क्रूरायुक्ते च शुभयुज्यधिकारवशेन लब्ध्याशा ॥ ८३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८१–८२–८३ ॥

राजा से गौरव व धन तथा आशा आदि का लाभ होवेगा या नहीं, इस प्रश्न में लाभ भाव का स्वामी और लग्नस्वामी का मित्र दृष्टि से इत्थशाल हो तो शीघ्र लाभ होवेगा ॥ ८१ ॥ शत्रु दृष्टि से इत्थशाल हो तो बहुत दिनों में लाभ होवे तथा लाभेश लग्नेश का केन्द्र में इत्थशाल होवे और चन्द्रमा से कम्बूल योग हो तो आशा पूर्ण होगी ऐसा कहना परन्तु चर, स्थिर द्विःस्वभाव में जैसी राशि में हो उसके नाम सदृश

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फल कहना ॥ ८२ ॥ लाभ भाव का स्वामी जो अस्त वा पापपीडित हो तो आशा पूर्ण होकर फिर नाश हो जावे, पापरहित शुभयुक्त हो तो अपने अधिकार के समान लघु वा बृहत् आशा पूर्ण होवे ॥ ८३ ॥

मित्रेण सह प्रीतिर्भविता लग्नेश्वरायपत्योश्च ।
प्रियदृष्ट्या मुथशिलतः प्रीतिर्वान्योन्यगृहयानात् ॥ ८४ ॥
केन्द्रस्थितयोरनयोर्मैत्री किल पूर्वजातैव ।
पणफरगतौ पुरस्तादापोक्लिमतो महाप्रीतिः ॥ ८५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८४-८५ ॥

मित्र के साथ प्रीति होने के प्रश्न में लग्नस्वामी और लाभभावस्वामी मित्रदृष्टि से इत्थशाल करते हों अथवा लग्नस्वामी लाभभाव में लाभस्वामी लग्न में हों तो प्रीति बढ़ेगी ऐसा कहना ॥ ८४ ॥ तथा लग्नेश लाभेश दोनों केन्द्र में हों तो मैत्री पहिले ही से है । पणफर स्थान में दोनों हों तो आगे होगी और आपोक्लिमस्थान में हों तो प्रीति बहुत बढ़ेगी ऐसा जानना ॥ ८५ ॥

गुप्तं कार्यमिदं मे सिध्यति लग्नेश्वरेऽथ चन्द्रमसि ।
शुभमुथशिलगे केन्द्रे तन्निकटे वाथ सिद्धिः स्यात् ॥८६॥

अन्वयः—इदं गुप्तं कार्यं सिध्यति नवेति प्रश्ने लग्नेश्वरेऽथ चन्द्रमसि शुभमुथशिलगे केन्द्रे वा तन्निकटे कार्यसिद्धिः स्यात् ॥ ८६ ॥

हमारा गुप्त कार्य सिद्ध होवेगा ? इस प्रश्न में लग्न का स्वामी और चन्द्रमा शुभग्रह के साथ इत्थशाल करते हुए केन्द्र में हो वा केन्द्रस्थान के समीपवर्ती हो तो गुप्त कार्य की सिद्धि जानना ॥ ८६ ॥

द्वादश स्थान सम्बन्धी प्रश्न—

रिपुविग्रहपृच्छायां बलवति षष्ठे रिपुः सबलः ।
द्वादशपे शुभदृष्टे बलवति वाच्यं शुभं प्रष्टुः ॥ ८७ ॥
शुभयुतदृष्टे सद्व्ययमशुभेक्षणयोगतो व्ययमनर्थात् ।
एवं भावेष्वखिलेषूह्यं सदसत्फलं सुधिया ॥ ८८ ॥
इति श्रीताजिकनी० प्रश्नतन्त्रे लग्नादिद्वादशभावप्रश्ननिरूपणम् ।

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८७-८८ ॥

शत्रु से युद्ध होने के प्रश्न में जो छठा स्थान बलवान् हो तो शत्रु बलवान् होवे और बारहवें स्थान का स्वामी बलवान् हो और शुभग्रहों की दृष्टि हो तो प्रश्नकर्ता को शुभ कहना ॥८७॥ बारहवें भाव का स्वामी शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो तो शुभकार्य में व्यय (खर्च) होवे और पापग्रह से युक्त दृष्ट हो तो अशुभ कार्य में व्यर्थ व्यय होवे, इसीप्रकार सुन्दर बुद्धिवालों का सम्पूर्ण भावों में शुभाशुभ फल कहना चाहिये ॥ ८८ ॥

इति प्रश्नतन्त्रे भाषाटीकायां लग्नादिद्वादशभावप्रश्ननिरूपणम् ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ केचन प्रश्ना विशेषतोनिरूप्यन्ते ।

अब कुछ थोड़े प्रश्न विशेषता से निरूपण करते हुए समरसिंहोक्तपथिकागमन प्रश्न—

आगमने पृच्छायां लग्नेशे लग्नमध्यसंस्थेन ।
कृतमुथशिले समेति हि सुखमस्ततुरीयगे कष्टात् ॥ १ ॥

अन्वयः—पथिका गमनपृच्छायां लग्नेशे लग्नमध्यसंस्थेन कृतमुथशिले सुखं समेति, अस्ततुरीयगे कष्टात् समेति ॥ १ ॥

परदेशी के आगमन प्रश्न में लग्नस्वामी और लग्न में स्थित ग्रह से इत्थशाल हो तो पथिक सुख से घर आवेगा जो सप्तम चतुर्थ ग्रह से इत्थशाल हो तो कष्ट से आवेगा ॥१॥

वह परदेश से चला या नहीं—

स्थानाच्चलितः प्रश्ने लग्नपतौ सहजनवमगृहसंस्थे ।
लग्नस्थेन मुथशिले पन्थानं वहति पथिकोयम् ॥ २ ॥
रन्ध्रेऽथधने तस्मिन्नाकाशसंस्थेन मुथशिलेप्येवम् ।
केन्द्रस्थितेत्थशाले लग्नेक्षणवर्ज्यमेति न कदापि ॥ ३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २-३ ॥

स्थान से पथिक चला या नहीं इस प्रश्न में लग्न का स्वामी तीसरे वा नवें स्थान में स्थित होता हुआ लग्नस्थित ग्रह के साथ इत्थशाल करता हो तो पथिक मार्ग चल रहा है ॥ २ ॥ तथा लग्न का स्वामी अष्टम अथवा दूसरे स्थान में स्थित होता हुआ दशमस्थानस्थित किसी ग्रह से इत्थशाल करे तो भी पथिक मार्ग चल रहा है और केन्द्र में स्थित दशमेश से इत्थशाल करता हो तो भी पथिक मार्ग में है तथा जो लग्नेश लग्न को देखे तो पथिक नहीं आवेगा ऐसा कहना ॥ ३ ॥

लग्नाधिपतौ वक्रं लग्नं पश्यत्यमुत्र चन्द्रे वा ।
वक्रगमूथशिले सति समेति पथिकः सुखं शीघ्रम् ॥४॥
अन्त्यस्थितलग्नपतौ शशिना कृतमुथशिले द्रुतमुपैति ।
लग्नाद्वापि चतुर्थाच्छुभाद्द्वितीयतृतीयगा वापि ।
कथयन्ति नष्टलाभं प्रवासिनश्चागमं त्वरितम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—लग्नाधिपतौ वक्रे लग्नं पश्यति वा चन्द्रे पश्यति वक्रगमुथशिले पथिकः सुखं शीघ्रं समेति । लग्नाद् वा चतुर्थात् वा शुभात् द्वितीयतृतीयगा वा लग्नेशः स्यात्तदा त्वरितं नष्टलाभं प्रवासिनश्चागमं कथयन्ति ॥४-५॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लग्न का स्वामी वक्रगामी हो और लग्न को वा चन्द्रमा को देखे तथा वक्री ग्रह से इत्थशाल करे तो पथिक शीघ्र आवेगा ॥ ४ ॥ तथा लग्नस्वामी बारहवें स्थान में स्थित हो और चन्द्रमा से इत्थाल करे तो पथिक शीघ्र आवे अथवा लग्नेश लग्नसे वा चतुर्थ-भाव से वा शुभ ग्रहसे दूसरे तीसरे हो अथवा लग्न से, चतुर्थ से शुभ ग्रह दूसरे, तीसरे हों तो भी पथिक शीघ्र आवे, पूर्वोक्त योग में नष्टवस्तु का लाभ और प्रवासी मनुष्य का तुरन्त आगमन हो ऐसा पूर्वाचार्य कहते हैं ॥ ५ ॥

प्रश्नचिन्तामणि से पथिकागमन प्रश्न—

ग्रहः षष्ठेऽथ यामित्रे वाक्पतिः कण्टके स्थितः ।
पथिकागमनं ब्रूते सिते ज्ञे वा त्रिकोणगे ॥ ६ ॥
पृष्ठोदये पापदृष्टे पापदृग्वर्जिते बुधः ।
लग्नात्षष्ठं यदा पापा यातुश्च निधनं वदेत् ॥ ७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६–७ ॥

छठें अथवा सातवें घर में ग्रह हो बृहस्पति केन्द्र में स्थित हो अथवा शुक्र त्रिकोण ५।६ स्थान में हों तो पांथ का शीघ्र आगमन कहना ॥ ६ ॥ छठें और लग्न में पापदृष्टि हो शुभदृष्टि से वर्जित हो, लग्न से छठें स्थान में पापग्रह हो तो पण्डित जानेवाले की मृत्यु कहे ॥ ७ ॥

यदा क्रूरास्तृतीयस्था देशाद् देशान्तरं गतः ।
चौरेणैव हृतः स्वश्च पथिकः केन्द्रगा यदि ॥ ८ ॥
पापैः षष्टत्रिलाभस्थैः कंटकस्थैः शुभग्रहैः ।
प्रवासी सुखमायाति दूरस्थेऽपि सुनिश्चितम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—यदा क्रूराः तृतीयस्थास्तदा (पथिकः) देशाद्देशान्तरं गतः; यदि (क्रूरा) केन्द्रगा तदा पथिकः चौराण हृतः स्वश्च हृतः शेषं स्पष्टम् ॥ ८–९ ॥

यदि पापग्रह तीसरे स्थान में हों तो पथिक एक देश से अन्य देश को चला गया जानना, तथा यदि केन्द्रस्थान में क्रूरग्रह हों तो चोरों ने धन लूट लिया ऐसा कहना ॥ ८ ॥ तथा जो पापग्रह ६ । ३ । ११ स्थान में हों और शुभग्रह केन्द्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ न हों तो पथिक निश्चय करके दूर भी स्थित हो तो भी सुखपूर्वक घर आता है ऐसा कहना ॥ ९ ॥

चतुरस्रे त्रिकोणे वा पापगेहस्थितः शनिः ।
पापदृष्टश्च नियतं बन्धनं यातुरादिशेत् ॥ १० ॥
शुभयुक्ते स्थिरे लग्ने स्थिरो बन्धश्चरेऽन्यथा ।
द्वितनौ सौम्यसंयुक्ते बन्धमोक्षौ क्रमेण तु ॥ ११ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १०-११ ॥

केन्द्र १ । ४ । ७ । १० वा त्रिकोण ५ । ९ स्थान में तथा पापराशि में पापग्रह-दृष्ट शनि स्थित हो तो अवश्य पथिक बन्धन में पड़ गया है ॥ १० ॥ तथा स्थिरलग्न शुभयुक्त उक्त योगों में हो तो बन्धन स्थिर होगा चर लग्न हो तो नाममात्र और द्विःस्वभाव हो तो बन्धन छूट गया ॥ ११ ॥

पापत्रिकोणयामित्रे विलग्ने पृष्ठकोदये ।
शत्रुभिर्वीक्ष्यमाणश्च यातुः कष्टं वदेत्सुधीः ॥ १२ ॥
मार्गस्थानगतैः सौम्यैर्मार्गं तस्य शुभं वदेत् ।
क्रूरैर्दुःखं विलग्नस्थैः पापैः क्लेशमवाप्नुयात् ॥ १३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १२-१३ ॥

त्रिकोण ५ । ९ सातवें पापग्रह और पृष्ठोदय लग्न हों, और शत्रुदृष्ट हों तो बुद्धिमान् पथिक को कष्ट कहै ॥१२॥ मार्गस्थान में शुभ ग्रह हों तो पथिक का मार्ग शुद्ध होवेगा, पापग्रह हों तो दुःख होवेगा, तथा लग्न में पापग्रह हो तो क्लेश प्राप्त होवे ॥१३॥

चरलग्ने चरांशे वा चतुर्थे यदि चन्द्रमाः ।
प्रवासी सुखमायाति कृतकार्यश्च वेश्मनि ॥ १४ ॥
कंटकैः सौम्यसंयुक्तैः पापग्रहविवर्जितैः ।
प्रवासी सुखमायाति निधनस्थे सुधाकरे ॥ १५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १४-१५ ॥

लग्न में चरराशि हो अथवा चरराशि के नवांशों में प्रश्न हो तथा चन्द्रमा चौथे हो तो प्रवासी (पथिक) कार्य करके सुखपूर्वक घर आवे ॥ १४ ॥ केन्द्रस्थान शुभग्रहों से युक्त हों, पापग्रह न हों, तथा अष्टम स्थान में चन्द्रमा हो तो पथिक सुखपूर्वक आवे ॥ १५ ॥

गमागमौ तु न स्यातां स्थिरराशौ विलग्नगे ।
न रोगोपशमो नाशो द्रव्याणां न पराभवः ॥ १६ ॥
विपरीतं चरे वाच्यं फलं मिश्रं द्विमूर्तिषु ।
स्थिरवत्प्रथमे खण्डे परार्थे चरराशिवत् ॥ १७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १६-१७ ॥

लग्न में स्थिरराशि हो तो आना जाना नहीं होगा, रोग का नाश नहीं होवेगा, धननाश होवेगा और पराजय नहीं होवेगा ॥ १६ ॥ चरलग्न हो तो स्थिर से विपरीत जानना, द्विस्वभाव हो तो मिश्र फल जानना, द्विःस्वभाव के पूर्वभाग में स्थिर के समान फल हो और उत्तरार्द्ध में चरराशि के समान फल जानना ॥ १७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गमागमौ तु न स्यातां योगे दुरुधराकृते ।
शुभैः शुभकृतो रोधः पापैस्तस्करतो भयम् ॥ १८ ॥
प्रवासी सुखमायाति गुरुशुक्रौ त्रिवित्तगौ ।
चतुर्थस्थानगावेतौ शीघ्रमायाति कार्यकृत् ॥ १९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १८-१९ ॥

जो प्रश्नसमय चन्द्रसम्बन्धी दुरुधरा योग हो तो प्रवासी न आवे न जाय तथा जो यह योग शुभ ग्रहों से हो तो कार्य में अटकाव होवे, पापों से हो तो चोरादि से हानि होवे ॥ १८ ॥ जो प्रश्नसमय तीसरे दूसरे स्थान में गुरु, शुक्र हों तो पथिक सुखपूर्वक आवे और जो चौथे स्थान में दोनों हों तो शीघ्र कार्य करके घर आवेगा ॥ १९ ॥

इन्दुः सप्तमगो लग्नात्पथिकं वक्ति मार्गगम् ।
मार्गाधिपश्च राश्यर्धात्परभागे व्यवस्थितः ॥ २० ॥
शुक्रार्कजीवसौम्यानामेकोपि स्याद्यदायगः ।
तदाशुगमनं ब्रूयात्प्रष्टुर्न गमनं व्यये ॥ २१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २०-२१ ॥

चन्द्रमा लग्न से सातवें हो तो पथिक मार्ग में है और मार्ग (नवमभाव) स्वामी राशि के उत्तरार्ध में हो तो भी पूर्वोक्त फल जानना ॥ २० ॥ शुक्र, सूर्य, बृहस्पति, बुध इनमें से एक भी ग्यारहवें स्थान में हो तो प्रवासी शीघ्र गमन करें अर्थात् शीघ्र आवेगा, और बारहवें हो तो गमागम नहीं होवे ॥ २१ ॥

प्रवासी के आगमन का समय—

लग्नाद्यावतिथे स्थाने बली खेटो व्यवस्थितः ।
ब्रूयात्तावत्स्थिते मासे पथिकस्य निवर्तनम् ॥ २२ ॥
एवं कालं चरांशस्थे द्विगुणं च स्थिरांशके ।
द्विस्वभावांशगे खेटे त्रिगुणं चिन्तयेत्सुधीः ॥ २३ ॥

अन्वयः—लग्नात् यावतिथे स्थाने बली खेटो व्यवस्थितः तावत्स्थिते मासे पथिकस्य निवर्तनम् ब्रूयात् । पूर्वोक्तग्रहः चरांशस्थे एवं कालं स्यात्, स्थिरांशके द्विगुणं द्विस्वभावांशगे पूर्वोक्तखेटे सुधीः त्रिगुणं चिन्तयेत् ॥ २२-२३ ॥

प्रश्न लग्न से जितने संख्यावाले स्थान में बलवान् ग्रह स्थित हो उतनी संख्या के मास में प्रवासी घर लौटेगा, यहाँ मास के स्थान में दिन, वर्ष अपनी बुद्धि से देशकालादि चिन्तवन कर कहना ॥ २२ ॥ ये पूर्वोक्त बलवान् ग्रह चरराशि के नवांशों में हों तो कहे हुये समय में आवेगा ऐसा कहना, स्थिरांशक में हों तो पूर्वोक्त समय से द्विगुण कहना, तथा द्विस्वभाव के अंश में बली ग्रह हों तो त्रिगुण समय बुद्धिमान विचार कर कहे ॥ २३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यातुर्विलग्नाद्यामित्रभवनाधिपतिर्यदा ।
करोति वक्रमावृत्तः कालं तु ब्रूवतेऽपरे ॥ २४ ॥
चतुर्थे दशमे वापि यदि सौम्यग्रहो भवेत् ।
तदा न गमनं क्रूरैस्तत्रस्थैर्गमनं भवेत् ॥ २५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २४–२५ ॥

गमन वा प्रश्न लग्न से सप्तमभाव स्वामी जो वक्री हों तो कोई आचार्य कहते हैं कि प्रवासी लौट आने की इच्छा करता है ॥ २४ ॥ अथवा चौथे दशवें स्थान में यदि शुभ ग्रह होवे तो गमन नहीं होवे, पापग्रह तहाँ स्थित होवे तो गमन होवे ॥ २५ ॥

लग्नाद्वा लग्ननाथाद्वा यावन्तः सौम्यखेचराः ।
मार्गे तत्रोदया वाच्याः स्थाने स्थाने विचक्षणैः ॥२६॥
लग्नाद्वा लग्ननाथाद्वा यावन्तः क्रूरखेचराः ।
नवमे द्वादशे वापि तत्संख्या स्युरुपद्रवाः ॥ २७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २६–२७ ॥

प्रश्न लग्न से वा लग्न स्वामी से नवम स्थान में जितने शुभग्रह हों उतने स्थान में पथिक को मार्ग में हर्ष का उदय होवेगा ऐसा पण्डितों करके कहना चाहिये ॥ २६ ॥ तथा लग्न से वा लग्न स्वामी से नवें वा बारहवें स्थान में जितने पापग्रह होवें उतने ही उपद्रव मार्ग में होंगे ॥ २७ ॥

क्रूरयुक्तेक्षितो मन्दः शुभदृग्योगवर्जितः ।
धर्मस्थस्तनुते व्याधिं प्रोषितस्याष्टमे मृतिम् ॥ २८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २८ ॥

पापग्रहयुक्त दृष्ट शनैश्चर शुभग्रहों की दृष्टि वा शुभग्रहों के योग से वर्जित होता हुआ नवम स्थान में स्थित हो और अन्य कोई योग न हो तो शरीर में रोग हो आठवें में हो तो मृत्यु होवे ऐसा पथिक को कहना ॥ २८ ॥

यामित्रस्य शुभोत्थे यातानायाति दुरुधरायोगे ।
मित्रस्वामिनिषेधात्पापोत्थे शत्रुरुक्चौरात् ॥ २९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २९ ॥

प्रश्नलग्न से सातवें स्थान में शुभ ग्रहों से दुरुधरा योग हो तो पथिक लौट आवेगा, पापग्रहों से हो तो नहीं तथा सप्तमेश अपने मित्र से युक्त, दृष्ट न हो तो शत्रु रोग, चोर, इनसे कष्ट प्राप्त होवे ॥ २९ ॥

चन्द्राऽर्कयोश्छिद्रगयोर्यमेन संदृष्टयोः स्यात्पथि शस्त्रभीतिः ।
रन्ध्रे सिते ज्ञे च सुखास्तिरारे मन्दे भयं पापयुगीक्षितेऽध्वनि ॥३०॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३० ॥

चन्द्रमा और सूर्य अष्टम स्थान में हो शनि की दृष्टि दोनों पर हो तो पथिक को मार्ग में हथियार से भय होवे और अष्टम स्थान में शुक्र, बुध हो तो सुख प्राप्त होवेगा ऐसा कहना ॥ ३० ॥

प्रवासी जीता है या मर गया—

लग्नेश्वरे शीतकरेऽथ षष्ठे तुर्येऽष्टमे वाप्यतिनीचगे वा ।
अस्तंगते छिद्रपतीत्थशालयुक्ते शुभैर्दूरगतो मृतः स्यात् ॥३१॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३१ ॥

(प्रवासी) मनुष्य जीता है वा मर गया इस प्रश्न में लग्न का स्वामी या चन्द्रमा छठे स्थान में हो अथवा चौथे, आठवें स्थान में अति नीचराशिस्थ अस्तङ्गत हो और अष्टमेश से इत्थशाल करे तो प्रवासी दूर जाकर मृत्यु को प्राप्त हो गया ऐसा कहना ॥३१॥

भूमेरधऽस्थेन च मध्यगेन यदीत्थशालं कुरुते शशांकः ।
सौम्यैरदृष्टे मरणं प्रकुर्याद्दूरस्थितस्यापि विदेशगस्य ॥ ३२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३२ ॥

प्रश्न लग्न से चौथे स्थान के मध्य किसी स्थान में स्थित ग्रह से चन्द्रमा इत्थशाल करे और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो विदेश गये हुए दूरस्थित जन की मृत्यु को करता है ॥ ३२ ॥

सौम्यैः षष्ठांत्यरंध्रस्थैर्विबलैश्च शुभेक्षितैः ।
पापयुक्तौ शशांकार्कौ तदा दूरस्थितो मृतः ॥ ३३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३३ ॥

जो शुभग्रह छठे, बारहवें, आठवें स्थान में निर्बल शुभ ग्रहों से दृष्ट तथा पापग्रहों से युक्त स्थित हो और चन्द्रमा सूर्य पापग्रहों से युक्त हों तो दूरस्थ (प्रवासी) जन मर गया है ऐसा कहना ॥ ३३ ॥

पृष्ठोदये पापयुते त्रिकोणकेंद्राष्टषष्ठोपगतैश्च पापैः ।
सौम्यैरदृष्टः परदेशसंस्थो मृतो गदार्तो नवमे च सूर्ये ॥३४॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३४ ॥

पृष्ठोदय (मे० वृ० क० ध० मे० मी०) राशि में पापग्रह त्रिकोण ६ । ५ केन्द्र १।४।७।१० और अष्टम स्थान में हों शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो परदेश में स्थित रोगी पुरुष मर गया है ऐसा कहना, नवम सूर्य हो तो भी ऐसा ही फल कहना ॥३४॥

तुर्योपरिस्थेन खगेन चन्द्रमा यदीत्थशालं कुरुते शुभेक्षितः ।
सौम्यैर्युतो वा परदेशसंस्थितः सुखी च जीवेत्पथि सख्यमेति ॥३५॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथे से सातवें स्थान के मध्य में स्थित किसी ग्रह से चन्द्रमा इत्थशाल कर शुभ ग्रह से दृष्ट वा युक्त भी हो तो परदेशस्थ मनुष्य जीता है, और सुखपूर्वक मार्ग में भी रह कर घर आवेगा ॥ ३५ ॥

षट्पञ्चाशिकोक्त—परचक्रागमन प्रश्न—

मार्गान्निवर्तते शत्रुः पापैः शत्रुगृहाश्रितैः ।
चतुर्थगैरपि प्राप्तः शत्रुर्भग्नो निवर्तते ॥ ३६ ॥

अन्वयः—पापैः शत्रुगृहाश्रितैः शत्रुः, मार्गान्निवर्तते चतुर्थगैः अपि पापै शत्रुः प्राप्तः भग्नो निवर्तते ॥ ३६ ॥

अब शत्रु के आने के प्रश्न में जो पापग्रह शत्रु गृह (छठे स्थान) में स्थित हो तो शत्रु मार्ग ही से लौट जावेगा कहना, ऐसा और जो चतुर्थ स्थान में पापग्रह हो तो पहुंच गया भी शत्रु भागकर हट जायगा ॥ ३६ ॥

झषालिकुम्भकर्कटा रसातले यदा स्थिताः ।
रिपोः पराजयस्तदा चतुष्पदैः पलायनम् ॥ ३७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३७ ॥

जो प्रश्नलग्न से चौथे स्थान में मीन, वृश्चिक, कुम्भ, कर्क राशि स्थित हों तो शत्रु का पराजय हो और चतुष्पदराशि, चतुर्थ भाव में स्थित हो तो शत्रु भाग जावे ॥३७॥

स्थिरोदये जीवशनैश्चरे स्थिते गमागमौ नैव वदेत्तु पृच्छतः ।
त्रिपञ्चषष्ठा रिपुसङ्गमाय पापाश्चतुर्था विनिवर्तनाय ॥ ३८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३८ ॥

प्रश्न समय स्थिर लग्न हो और उसमें गुरु, शनि स्थित हों तो पृच्छक को कहे कि शत्रु का जाना, आना न होगा, और तीसरे, छठें, पाँचवें पापग्रह हों तो शत्रु से संगम हो चौथे पापग्रह हों तो शत्रु हट जायगा ॥ ३८ ॥

दशमोदयसप्तमगास्सौम्या नगराधिपस्य विजयकराः ।
आरार्किज्ञगुरुसिताः प्रभङ्गदौ विजयदा नवमे ॥ ३९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३९ ॥

दशम और सप्तम स्थान में सौम्य ग्रह हों तो नगराधिपति की विजय करते हैं, और मंगल, शनि, बुध और गुरु व शुक्र नवें स्थान में हों तो भी विजय देनेवाले होते हैं॥३९॥

शत्रु कितने दिनों में आवेगा—

उदयर्क्षाच्चन्द्रर्क्षं भवति च यावद्दिनैश्च तावद्भिः ।
आगमनं स्याच्छत्रोर्यदि न हि मध्ये ग्रहः कश्चित् ॥ ४० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh.

उदय लग्न से चन्द्रमा जितनी राशि पर हो उतने दिवस में शत्रु आवे यदि उनके मध्य में कोई ग्रह नहीं होवे ॥ ४० ॥

हार जीत के विषय में प्रश्न—

दैत्येज्यवाचस्पतिसोमपुत्रैरेकर्क्षगैर्लग्नगतैर्बलाढ्यैः ।
द्वाभ्यामथेज्ये भृगुजेऽथलग्ने हन्याद्रणे यायिनृपं पुरेशः ॥४१॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४१ ॥

जयपराजय प्रश्न में शुक्र, गुरु, बुध, एक राशि में बलयुक्त होकर लग्न में हो अथवा गुरु, शुक्र इन दोनों में से एक भी बली होके लग्न में हो तो संग्राम में स्थायी राजा चढ़कर आनेवाले राजा को नाश करे ॥ ४१ ॥

सूर्येन्दुभौमार्कजसैंहिकेयैः सर्वैश्चतुर्भिस्त्रिभिरेवलग्नगैः ।
हन्यात्तदा स्थायिनमाशु यायी द्यूनस्थितैर्यायिनृपं पुरेशः ॥४२॥
दैत्येज्यशीतांशुबुधाः सुरेज्यैः सर्वैस्त्रिभिर्द्यूनगतैर्बलाढ्यैः ।
हन्याद्रणे स्थायिनमाशु यायीसुखास्पदस्थैश्चशुभैःसुसन्धिः ॥४३॥

अन्वयः—सूर्येन्दुभौमार्कजसैंहिकेयैः सर्वैश्चतुर्भिः वा त्रिभिरेव लग्नगैः तदा स्थायी यायिनं आशु हन्यात्, तयोः द्यूनस्थितैः पुरेशः यायिनृपं हन्यात् । दैत्येज्यशीतांशुबुधाः सुरेज्यैः सर्वैः त्रिभिः बलाढ्यैः द्यूनगतैः रणे यायी स्थायिनं आशु हन्यात् सुखास्पदस्थैः शुभैः सुसन्धिः स्यात् ॥ ४२–४३ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि, राहु, ये सब अथवा इनमें से चार वा तीन ग्रह लग्न में हों तो स्थायी राजा को यायी राजा मारता है तथा ये जो सातवें स्थान में हों तो स्थायी राजा यायी राजा को मारता है ॥ ४२ ॥ और शुक्र, चन्द्रमा, बुध, गुरु ये सब बलयुक्त होकर अथवा इनमें से तीन ग्रह सप्तम् स्थान में हों तो यायी राजा को शीघ्र नाश करे और चौथे स्थान में हों तो शीघ्र सन्धि (मिलाप) हो जावे ॥ ४३ ॥

कुजेत्थशाले हिमगौ विलग्ने वन्धोथ मृत्युर्युधि नागरस्य ।
भौमेत्थशाले च विधौ कलत्रे वन्धं मृतिर्वा लभतेत्रयायी ॥४४॥
लग्नेशयामित्रपयोश्च मध्ये भवेद्ग्रहो यः स्वगृहोच्चसंस्थः ।
तद्वर्गमत्यान्नृपयोश्चसन्धिर्ज्ञेयो बुधैर्लेखकपण्डिताभ्याम् ॥ ४५ ॥

अन्वयः—कुजेत्थशाले हिमगौ विलग्नेऽथ वन्धौ युधि नागरस्य मृत्युः । विधौ कलत्रे भौमेत्थशाले यायी बन्धं मृति वा लभते, लग्नेशयामित्रपयोर्मध्ये यः स्वगृहोच्चसंस्थः ग्रहः स्यात् तद्वर्गमत्या बुधैः लेखकपण्डिताभ्याम् सन्धिः ज्ञेयः ॥ ४४–४५ ॥

मंगल के साथ इत्थशाल करता हुआ चन्द्रमा लग्न में वा चौथे स्थान में स्थित हो तो युद्ध में स्थायी राजा की मृत्यु होवे और पूर्वोक्त चन्द्रमा सातवें घर में हो तो यायी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राजा की मृत्यु वा बन्धन हो स्थायी (अपने किला में स्थित राजा) यायी (जो चढ़कर आया है) ॥ ४४ ॥ लग्नस्वामी और सप्तमस्वामी इन दोनों के मध्य जो ग्रह अपनी राशि वा उच्चस्थित हो उसके लेखक व पंडितादि व मन्त्रीद्वारा दोनों राजाओं की संधि जानना, यहाँ सूर्य, चन्द्र राजा, मंगल सेनापति, बुध युवराज, बृहस्पति शुक्र मन्त्री, शनि दास जानना चाहिये ॥ ४५ ॥

क्रूरे कलशे ह्युदये शुभग्रहो यच्छेद्धनं यायीनृपाय नागरः ।
विपर्ययाद्यायिनृपः पुरेश्वरं दुर्गात्विनिष्कास्य ददाति वासपदम् ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४६ ॥

पाप ग्रह सातवें, लग्न में शुभ ग्रह हो तो यायी राजा को स्थायी राजा द्रव्य देकर शान्ति करावे, तथा जो लग्न में पापग्रह और सप्तम में शुभ ग्रह हों तो यायी राजा स्थायी राजा को किला से निकाल कर पुनः स्थान देवे ॥ ४६ ॥

रवीत्थशाले शशिजे सुगुप्ताश्चरा भवेयुश्च कुजेसराफात् ।
गृहाच्छशाङ्केन युताश्च तस्मिन्येऽन्यवेषाश्च भवन्ति चाराः ॥ ४७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४७ ॥

बुध सूर्य से इत्थशाल करता हो तो अति मूढ अर्थात् गुप्त प्रकार से राजा के दूत रहें, मंगल से ईसराफ योग हो और चन्द्रमा से युक्त हो तो दूत लोग दूसरा वेष धारण करके संयुक्त होवें ॥ ४७ ॥

प्रश्नचिन्तामणि में दुर्गप्रश्न —

प्रश्ने विलग्ने क्रूरे वा दुर्गभङ्गो न जायते ।
विशेषतो भूमिपुत्रे राहौ वा मूर्तिगे सति ॥ ४८ ॥
सप्तमे सिंहिकासूनुर्दुर्गं शीघ्रेण लभ्यते ।
यामित्रोदयगे क्रूरे रिष्फगे लग्ननायके ॥ ४९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४८-४९ ॥

दुर्गप्रश्न में प्रश्नसमय क्रूर ग्रह लग्न में हों तो विशेष करके मंगल वा राहु मूर्ति में हो तो दुर्ग (कोट) का भंग नहीं होता है अर्थात् किला नहीं टूटता है ॥ ४८ ॥ तथा सप्तम स्थान में राहु हो तो किला शीघ्र प्राप्त हो जायगा और जो पापग्रह लग्न में व सप्तम में हो लाभ स्वामी बारहवें हो ॥ ४९ ॥

द्वितीये वाष्टमे षष्ठे तदा दुर्गं न लभ्यते ।
सक्रूरो लग्नपो वक्री युद्धदः केन्द्रसंस्थितः ॥ ५० ॥
षष्ठाधिपो द्यूनगते पापे वा युद्धमादिशेत् ।
पृच्छायां केन्द्रगैः क्रूरैः कोटे दुर्गवधो नृणाम् ॥ ५१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५०-५१ ॥

दूसरे, आठवें, छठें लग्नेश हों तो किला नहीं मिल सकेगा और जो लग्नस्वामी वक्री होकर केन्द्र १।४।७।१० स्थान में स्थित हो तो युद्ध होवे ॥ ५० ॥ छठें भाव का स्वामी सप्तम होवे, अथवा पापग्रह सप्तम हो तो युद्ध होवे, प्रश्नसमय में केन्द्रस्थान में क्रूरग्रह हों तो किला में बहुत मनुष्यों का वध होगा ॥ ५१ ॥

भौमाष्टमेशावेकत्र ददाति निधनं नृणाम् ।
स्वायपुत्रस्थिते जीवे कोटमध्ये भयं नहि ।
शनौ भौमे च केन्द्रस्थे बहूनां वधबन्धनम् ॥ ५२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५२ ॥

मंगल और अष्टमभावस्वामी एक राशि में हों तो पृच्छक के बहुत मनुष्यों के मरण को देते हैं, दूसरे, ग्यारहवें, पाँचवें, भाव में बृहस्पति हों तो किला में भय नहीं हो, शनि और मङ्गल केन्द्र में हों तो बहुत मनुष्य मारे व बाँधे जायँगे ॥ ५२ ॥

लग्नगतो यदि पापः पापेन युतेक्षितो वा स्यात् ।
लग्नात्पूर्वापरगौ पापौ युद्धं तदा घोरम् ॥ ५३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५३ ॥

यदि पापग्रह लग्न में हों और पापग्रह से युक्त दृष्ट हो और लग्न से बारहवें दूसरे स्थान में पापग्रह हों तो घोर युद्ध होवे ॥ ५३ ॥

रोगी के शुभाशुभ के विषय का प्रश्न—

विलग्ने षष्ठपः पापो जन्मराशिनिरीक्षिते ।
रोगिणस्तस्य मरणं निश्चयेन वदेद्बुधः ॥ ५४ ॥
चतुर्थाष्टमगे चन्द्रे पापमध्यगतेऽपि वा ।
मृतिः स्याद्बलसंयुक्तः सौम्यदृष्ट्या चिरात्सुखम् ॥ ५५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५४-५५ ॥

रोगी के शुभाशुभ प्रश्न में, छठे स्थान का स्वामी पापग्रह लग्न में हो और जन्मराशि को देखता हो तो उस रोगी का मरण निश्चय पण्डित कहे ॥ ५४ ॥ चौथे, आठवें स्थान में चन्द्रमा हो अथवा पापग्रहों के मध्य में हो तो रोगी की मृत्यु निश्चय से जानना, तथा जो शुभ बलयुक्त होकर देखे तो रोगी शीघ्र सुखी होवे ॥ ५५ ॥

विधौ लग्ने स्मरे भानौ रोगी याति यमालयम् ।
प्रश्ने क्रूरग्रहे लग्ने रोगवृद्धिश्चिकित्सकात् ॥ ५६ ॥
तथा लग्ने गते सौम्ये वैद्योक्तममृतं वचः ।
लग्ने वैद्यो द्युनं व्याधिः खं रोगी तुर्यमौषधम् ॥ ५७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५६-५७ ॥

लग्न में चन्द्रमा, सप्तम में सूर्य हो तो रोगी यमलोक को जाता है, लग्न में पापग्रह प्रश्न समय में हो तो वैद्य से रोग की वृद्धि होवे ॥ ५६ ॥ तथा लग्न में शुभग्रह हो तो वैद्य के वचन अमृत समान कहना लग्न को वैद्य, सप्तम को रोग, दशम भाव को रोगी, चतुर्थ को औषध कल्पना करके तत्तस्थान में स्थित दृष्ट शुभाशुभ ग्रहों द्वारा रोग प्रश्न में विचार करना ॥ ५७ ॥

रोगिणो भिषजो मैत्री मैत्रीभेषजरोगयोः ।
व्याधेरुपशमो वाच्यः प्रकोपः शात्रवे तयोः ॥ ५८ ॥
लग्ननाथे च सबले केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ।
उच्चगे वा त्रिकोणे वा रोगी जीवति निश्चयम् ॥ ५९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५८-५९ ॥

रोगी और वैद्य की मित्रता अर्थात् दशमेश और लग्नेश की मैत्री, और औषध व रोग की अर्थात् चतुर्थेश और सप्तमेश की मित्रता होवे तो रोग की शान्ति कहना और जो शत्रु होवे तो रोग कोप को प्राप्त होवेगा ऐसा कहना, यहाँ मैत्री सम्बन्ध से इत्थशाल योग व शत्रुता सम्बन्ध से इसराफ योग का भी विचार करना ॥ ५८ ॥ लग्न का स्वामी बलवान् हो और शुभग्रह केन्द्र में अथवा अपनी उच्च राशि में हो वा त्रिकोण में हो तो निश्चय रोगी रोग से बच जायगा ऐसा कहना ॥ ५९ ॥

एकः शुभो बली लग्ने त्रायते रोगपीडितम् ।
सौम्या धर्मारिलाभस्थास्तृतीयस्था गदापहाः ॥ ६० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६० ॥

एक भी बलवान् शुभग्रह लग्न में स्थित हो तो रोग की रच्छा करता है तथा शुभग्रह नवें, ग्यारहवें, तीसरे स्थान में स्थित हो तो रोग को नाश करने वाले होते हैं ॥ ६० ॥

देवदोष ज्ञान का प्रश्न—

वह्न्यंकद्वादशे षष्ठे लग्नात्पापग्रहो यदि ।
हतो गदैर्जलैश्शस्त्रैस्तस्य दोषः कुलोद्भवः ॥ ६१ ॥

अन्वयः—लग्नात् वह्न्यंकद्वादशे षष्ठे यदि पापग्रहो भवेत् गदैः जलैः शस्त्रैर्हतः तस्य कुलोद्भवः दोषः स्यात् ॥ ६१ ॥

लग्न से तीसरे, नवें, बारहवें, छठें स्थान में जो पापग्रह हों तो रोग व जलशस्त्रादि से पीड़ित मनुष्य को अपने कुल से उत्पन्न देवता का दोष कहना ॥ ६१ ॥

प्रश्न लग्न से दोष ज्ञान—

देवस्य मेषे गवि पितृपक्षे आकाशदेव्या मिथुनेऽथ कर्के ।
स्याच्छाकिनी चेत्रपतिस्तु सिंहे स्त्रियां कुलार्हा च तुले तु मातुः ॥६२॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नागास्त्वलौ यक्षपतिर्धनुष्ये नक्रेम्बुदेव्यास्तु घटेथ पक्षी ।
झषे कुलोपासितदैवतस्य दोषं भवेद्धर्मबहिष्कृताय ॥ ६३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६२-६३ ॥

प्रश्न लग्न पर से देवदोष ज्ञान यह है कि प्रश्न लग्न मेष हो तो देवता का दोष जानना, यहाँ देवशब्द से इष्ट देवता का ग्रहण है, वृष हो तो पितरों का, मिथुन हो तो आकाश देवी (मातृका परी आदि) का, कर्क हो तो शाकिनी डाकिनी आदि का, सिंह हो तो क्षेत्रपति (भूमिपालादि) देवता का, कन्या से कुलपूजित देवता का, तुला हो तो मातृपक्ष के देवता का ॥ ६२ ॥ वृश्चिक हो तो नाग देवता का, धन हो तो यक्षपति शिव नारसिंह भैरवादि का, मकर हो तो जलदेवी का, कुम्भ हो तो यक्षिणी-पिशाचादि का, मीन हो तो कुलदेवता का दोष जानना, ये दोष धर्मरहित जनों के अर्थ बाधित होते हैं जिस देवता का दोष हो उसको शांति करने से दोषशान्ति हो जाती है ॥ ६३ ॥

प्रेताश्च राहौ पितरः सुरेज्ये चन्द्रेम्बुदेव्यस्तपनेपि देव्यः ।
स्वगोत्रदेव्यश्च शनौ बुधे च भूतानि विद्याद्व्ययरन्ध्रसंस्थे ॥६४॥
शाकिन्य आरे भृगुजेम्बुदेव्यो गृह्णंति मर्त्यं विमुखं मुकुन्दात् ।
स्वर्क्षोच्चगे वीर्ययुते च साध्यश्चन्द्रे च नीचे विबलेन साध्याः ॥६५॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६४-६५ ॥

आठवें, बारहवें स्थान में राहु हो तो प्रेतदोष, बृहस्पति हों तो पितरों का दोष, चन्द्रमा हो तो जलदेवी का, सूर्य हो तो देवी का, बुध से अपने कुलपूज्य देवता का दोष कहना ॥ ६४ ॥ मंगल हो तो शाकिनी आदि का, बुध हो तो जलदेवी का जो मनुष्य ईश्वर से विमुख हैं उनको ये दोष होते हैं उक्त ग्रह जिससे दोष ज्ञात भया वह यदि अपनी राशि वा उच्चादि में हो तो उपाय से दोष साध्य होगा जो चन्द्रमा और बृहस्पति बलहीन हो तो असाध्य जानना ॥ ६५ ॥

केन्द्रस्थैर्बलिभिः पापैरसाध्या देवतागणाः ।
सौम्यग्रहैश्च केन्द्रस्थैः साध्या मंत्रस्तवार्चनैः ॥ ६६ ॥
कंटकाष्टत्रिकोणस्थाः शुभा उपचये शशी ।
लग्ने च शुभसंदृष्टे रोगी रोगाद्विमुच्यते ॥ ६७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६६-६७ ॥

बलवान् पापग्रह केन्द्र में हों तो वे देवता असाध्य और शुभग्रह केन्द्र में हों तो मंत्रस्तोत्रादि से साध्य जानना ॥ ६६ ॥ केन्द्र व अष्टम और त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह हो तथा उपचय स्थान में चन्द्रमा हो और लग्न को शुभग्रह देखे तो रोगी [1]रोग से निवृत्त होवे ॥ ६७ ॥

१ नोट—यहाँ रोग उपलक्षण मात्र है, सन्तान बाधा में भी इसी प्रकार विचार करना चाहिये ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वामी सेवक प्रश्न (त्रैलोक्य प्रकाश) में—

शीर्षोदये सौम्ययुतेक्षितो वा सौम्यद्वितीयाष्टमसप्तमस्थैः ।
तृतीयलाभारिगतैश्च पापैः सौख्यार्थलाभो नृपसेवकस्य ॥ ६७ ॥
लग्नाद्द्वितीये मदनाष्टमर्क्षे वित्तक्षयं संभ्रमभीतिमृत्युम् ।
कुर्वन्ति पापाः क्रमशो नरेन्द्राद्भृत्यस्य तस्मात्परिवर्जयेतम् ॥६८॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

स्वामी सेवक प्रश्न में शीर्षोदय लग्न हो और उसमें शुभग्रह स्थित हों अथवा शुभग्रह देखते हों और दूसरे, आठवे में भी शुभग्रह हों और तीसरे, छठे, ग्यारहवें स्थान में पापग्रह हों तो राजा से सेवक को सुख और धन का लाभ होवेगा ॥ ६७ ॥ लग्न से दूसरे, सातवें, आठवें स्थान स्थित पापग्रह धन का क्षय, संभ्रम और मृत्यु आदि को करते हैं इससे क्रम यह है कि पापग्रह दूसरे हों तो धनक्षय, सातवे हों तो संग्राम, आठवें हों तो मृत्यु हो इस कारण इन स्थानों में पापग्रह वर्जित करे अर्थात् इन स्थानों में पापग्रह हों तो स्वामि सेवा न करे ॥ ६८ ॥

लग्नाद्द्वितीयाष्टमसप्तमस्थाः पापाः विनाशं नृपभृत्ययोश्च ।
कुर्वन्ति तेष्वेव गताश्च सौम्याःकुर्युर्धनारोग्यसुखानि चोभयोः ॥६९॥
शशांकसौम्यैरुदयास्तभावौ दृष्टौ युतौ वा सबलैर्न पापैः ।
प्रष्टुस्तदा स्याद्धृदि पार्थिवस्य स्नेहप्रसादावकृपा प्रतीपात् ॥७०॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६९ ॥ ७० ॥

लग्न से दूसरे, आठवें, सातवें पापग्रह हों तो स्वामी और सेवक दोनों का नाश और शुभग्रह हों तो दोनों को धन, आरोग्य और सुख करते हैं ॥ ६९ ॥ चन्द्रमा बुध ये दोनों सप्तम में बलवान् शुभग्रहों से दृष्ट वा युक्त हों, पापयुक्त न हों तो प्रश्नकर्ता के हृदय में स्नेह व कृपा रहे, इससे विपरीत हो अर्थात् शुभग्रह के स्थान में पापग्रह हो तो उलटा फल जानो ॥ ७० ॥

दूसरा स्वामी होगा या नहीं इस प्रश्न में—

षष्ठेश्वरेण व्ययपेन केन्द्रे यदीत्थशालं कुरुते विलग्नपः ।
प्रभुस्तदान्यः प्रभुरर्थद स्यादतः प्रतीपान्न भवेत्परःप्रभुः ॥७१॥
लग्नेश्वरे स्वर्क्षगते स्वतुङ्गे केन्द्रस्थिते शीतकरेत्थशाले ।
शुभग्रहैर्दृष्टयुते बलान्विते प्रष्टुर्निजस्वाम्यमितार्थलाभः ॥७२॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

दूसरे स्वामी के प्रश्न में यदि छठे भाव के स्वामी वा बारहवें भाव के स्वामी से केन्द्र में स्थित लग्नेश इत्थशाल करे तो प्रश्नकर्त्ता का अन्य स्वामी धन का देने वाला

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होगा, इससे विपरीत हो तो अन्य प्रभु नहीं होगा ॥ ७१ ॥ लग्न का स्वामी अपनी राशि वा अपने उच्च में केन्द्रस्थित होकर चन्द्रमा से इत्थशाल करता हो, तथा शुभग्रहों से युक्त दृष्ट और बलवान् हो तो प्रश्नकर्ता को अपने ही स्वामी से असंख्य धन प्राप्त होगा ॥ ७२ ॥

जायेश्वरे स्वोच्चनिजर्क्षसंस्थे केन्द्रस्थिते शीत करेत्थशालगे ।
शुभग्रहैर्दृष्टयुते बलोत्कटैः प्रष्टुस्तदान्यः प्रभुरर्थदो भवेत् ॥७३॥
इदं गृहं वा शुभमन्यदालयं स्थानं त्विदं वाऽशुभमन्यदालयम् ।
ममात्र भद्रं गमनात्तु तत्र वा पृष्टोदयेत्थं विधिना विमृश्य ॥७४॥

अन्वयः – स्पष्टम् ॥ ७३–७४ ॥

सप्तम भाव का स्वामी अपनी उच्च राशि वा अपने घर में हो और केन्द्र स्थान में स्थित चन्द्रमा के साथ इत्थशाल करता हो और बलवान् शुभग्रह देखते हों वा युक्त हों तो प्रश्नकर्ता को अन्य प्रभु वञ्चना देने वाला होवे ॥ ७३ ॥ यह गृह हमारे को शुभ-दायक है अथवा अन्य स्थान, तथा यह स्थान अशुभ वा अन्य और गमन में शुभ होगा वा नहीं, इन प्रश्नों में लग्नेश, कार्येश के इत्थशाल ईशराफादि योग से शुभाशुभ फल स्वबुद्ध्यनुसार विचार कर कहना ॥ ७४ ॥

गड़े हुये या—खोये हुये धन के लिए प्रश्न–(प्रश्न चिन्तामणि)

प्रश्ने चतुर्थाधिपतिस्तत्रस्थे वावलोकिते ।
अवश्यं वर्तते तत्र धनं चन्द्रेऽथ वा भवेत् ॥ ७५ ॥
वित्तपे धनगे बंधौ वास्ति तत्र धनं बहु ।
पापे तुर्यगते द्रव्यस्थितं तूर्णं न लभ्यते ॥ ७६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७५–७६ ॥

अब नष्टद्रव्यलाभ के प्रश्न में, प्रश्न लग्न में चतुर्थ भाव का स्वामी हो वा चतुर्थेश प्रश्न लग्न को देखे, तो अवश्य धन प्राप्त होवेगा अथवा चन्द्रमा भी प्रश्न लग्न में हो तो भी द्रव्य अवश्य प्राप्त होवेगा ऐसा कहना ॥ ७५ ॥ धन भाव का स्वामी धन स्थान वा चतुर्थ स्थान में हो तो बहुत धन मिले चतुर्थ स्थान में पापग्रह होने से धरा हुआ धन भी न प्राप्त हो ॥ ७६ ॥

भौमे सप्ताष्टराशिस्थे धनमन्यत्र नाप्यते ।
लग्ने तमोरविच्छिद्रे तदा द्रव्यं न लभ्यते ॥ ७७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७७ ॥

मंगल सप्तम वा अष्टम राशि में स्थित हो तो अन्यत्र धन प्राप्त न होवे और लग्न में राहु, अष्टम सूर्य हों तो द्रव्य प्राप्त नहीं होवे ॥ ७७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चोरी गये हुए धन का प्रश्न—

लग्नेश्वरे द्यूनगते विलग्ने जायेश्वरे नष्टधनस्य लाभः ।
जायेशलग्नाधिपतीत्थशाले द्यूने विनष्टं धनमेति मर्त्यः ॥ ७८ ॥
लग्नेशजायाधिपतीत्थशाले लग्नेश्वरं यच्छति तस्करोऽयम् ।
सूर्ये विलग्नेऽस्तमिते शशांके न लभ्यते यद्द्रविणं विनष्टम् ॥७९॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७८-७९ ।

लग्न का स्वामी सप्तम और सप्तम का स्वामी लग्न में हो तो नष्ट भया धन प्राप्त होवेगा, और सप्तमेश, लग्नेश का सप्तम स्थान में इत्थशाल हो तो आप से आप धन प्राप्त होवेगा ॥ ७८ ॥ लग्नस्वामी और सप्तम स्वामी का इत्थशाल हो तो चोर स्वयं धन देवे और सूर्य लग्न में चन्द्रमा सातवें हो तो नष्ट धन नहीं प्राप्त होवे ऐसा कहना ॥७९॥

कर्मेशलग्नाधिपतीत्थशाले चौरः स्वमादाय पुरात्पलायते ।
चन्द्रेऽस्तपेचाऽर्ककरैर्विनष्टे तल्लभ्यते नष्टधनं सतस्करम् ॥ ८० ॥
तस्येश्वरे केन्द्रगतेऽस्ति चौरस्तत्रैवान्यत्र पुराद्विनिर्गतः ।
धर्मेशदुश्चिक्यपतीत्थशाले जायेश्वरेऽन्यत्र गतः स चौरः ॥ ८१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८०-८१ ॥

दशम भाव का स्वामी लग्नेश से इत्थशाल करता हो तो चोर धन लेकर पुर से भाग जायगा और चन्द्रमा व सप्तमेश ये दोनों अस्तंगत हों तो चोर सहित धन का लाभ होवे ॥ ८० ॥ सप्तम भाव का स्वामी केन्द्र में हो तो चोर वहीं है पुर से दूर नहीं भागा धर्मेश और तृतीयेश व सप्तमेश के इत्थशाल हो तो चोर भाग गया है ऐसा कहना ॥ ८१ ॥

कर्मेशलग्नाधिपतीत्थशाले तल्लभ्यते राजकुलैश्च चौर्यम् ।
त्रिधर्मद्यूनपतीत्थशाले त्वन्यत्प्रदेशाद्गमने तदाप्तिः ॥ ८२ ॥
शुभेत्थशाले हिमगौ विलग्ने स्वस्थेऽथ वा नष्टधनस्य लाभः ।
सुस्नेहदृष्ट्या रविणा शुभेन दृष्टे विलग्ने हिमगौ च लाभः ॥ ८३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८२ । ८३ ॥

दशमेश लग्नेश का इत्थशाल हो तो राजकुल से चोर पकड़ा जावे, तथा तीसरे, नवें और सातवें इन भावों के स्वामी का इत्थशाल हो तो दूसरे देश जाने से चोरों की प्राप्ति होवे ॥ ८२ ॥ लग्न में अथवा दशम भाव में स्थित चन्द्रमा शुभग्रहों से इत्थशाल करे तो नष्ट हुए धन का लाभ हो, और जो लग्न में चन्द्रमा को सूर्य व शुभग्रह मित्रदृष्टि से देखें तो भी वही फल होवेगा ॥ ८३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

षट्पञ्चाशिका—

स्थिरोदये स्थिरांशे वा वर्गोत्तमगतेपि वा ।
स्थितं तत्रैव तद्द्रव्यं स्वकीयेनैव चोरितम् ॥ ८४ ॥
आदिमध्यावसानेषु द्रेष्काणेषु विलग्नतः ।
द्वारदेशे तथा मध्ये गृहान्ते च वदेद्धनम् ॥ ८५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८४-८५ ॥

स्थिरलग्न का उदय हो, वा स्थिर राशि का नवांश हो, अथवा वर्गोत्तम राशि हो तो उसी जगह पर द्रव्य स्थित है अथवा आपस में किसी ने चोराया है ॥ ९१ ॥ जो लग्न का प्रथम द्रेष्काण हो तो घर के द्वार के समीप नष्ट वस्तु कहनी । मध्य का द्रेष्काण हो तो घर के बीच में, अन्त का (तीसरा) द्रेष्काण हो तो घर के पीछे वस्तु कहनी ॥८५॥

चोरी गये हुये पतित धन के दिशा का ज्ञान—(प्रश्न तन्त्र)

पतितधनस्य प्रश्ने मिथो गृहस्थौ विलग्नसप्तेशौ ।
यदि मुथशिलं तयोः स्यात्तदाशु तत्रैव वदति धनम् ॥ ८६ ॥
नष्टं क्व दिशि प्राप्तं पृच्छायां लग्नगे विधौ प्राच्यां ।
खस्थाने याम्यायामस्ते वारुण्यां वा सुव्युदीच्याम् ॥ ८७ ॥

अन्वयः—पतितधनस्य प्रश्ने विलग्न सप्तेशौ मिथो गृहस्थौ तयोः मुथशिलं स्यात्तदा आशु तत्रैव धनं वदति । नष्टं क्व दिशि प्राप्तं इति पृच्छायां लग्नगे विधौ प्राच्यां ख स्थाने (दशमे) याम्यायां अस्ते वारुण्यां भुवि उदीच्यां ॥

गिरे हुए धन के प्रश्न में लग्न का स्वामी सप्तम में और सप्तमभाव का स्वामी लग्न में हो और दोनों का इत्थशाल योग होवे तो शीघ्र कहना कि धन वहीं है ॥८६॥ अब नष्ट वस्तु कहाँ प्राप्त होगी इस प्रश्न में चन्द्रमा लग्न में हो तो पूर्व, दशम में हो तो दक्षिण, सप्तम में हो तो पश्चिम, चतुर्थ स्थान में हो तो उत्तर दिशा में प्राप्त होवे ॥

यदि नेन्दुः केन्द्रे न तदा तच्चत्वारिंशांशकैश्च पंचयुतैः ।
भागोदिक्क्रम उक्तो वह्न्यवनी वायु वारिराशौ वा ॥ ८८ ॥
नष्टहतवित्तलब्धेः पृच्छायां चौरसप्तमं लाभः ।
हिबुकं द्रव्यस्थानं लग्नं चन्द्रश्च धननाथः ॥ ८९ ॥

अन्वयः—यदि इन्दुः केन्द्रे न तदा तच्चत्वारिंशांशकैः पंचयुतैः भागः वह्नि, अवनि, वायु, वारिराशौ वा दिक्क्रमः उक्तः । नष्टहतवित्तलब्धेः पृच्छायां चौरः सप्तमं लाभः हिबुकं लग्नं, चन्द्रश्च धननाथः ज्ञेयः ।

यदि चन्द्रमा केन्द्र में न हो तो चन्द्रस्थित अंश से भाव अंश में जो राशि है उसकी जो दिशा, उपदिशा अथवा अग्नि, वायु, पृथिवी, जल में से जो राशि हो उसमें

नष्ट धन कहना ॥ ८८ ॥ नष्ट वा चोरी गये हुए धन लाभ के प्रश्न में सप्तम स्थान से चोर, चतुर्थ स्थान और लग्न से धन, चन्द्रमा धन का स्वामी जानना ॥ ८६ ॥

लग्नेशोऽस्तस्तेऽस्तपतिस्तनौ चेन्मुथशिली ततो लाभः ।
यद्यष्टेशो लग्ने तदा स्वयं तस्करोऽर्पयति ॥ ९० ॥
रविरश्मिगे धनेशे वास्तमिते तस्करस्य लाभः स्यात् ।
लग्नेशदशमपत्योर्मुथशिलतः प्राप्यतेऽर्थवान् चौरः ॥ ९१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९०-९१ ॥

जो लग्न का स्वामी सप्तम स्थान में सप्तमेश से इत्थशाल करता हो तो नष्ट धन का लाभ होवे, तथा अष्टम स्थान का स्वामी लग्न में हो तो चोर स्वयं धन दे देवे ॥ ९० ॥ धनभाव का स्वामी सूर्य के साथ हो अथवा अस्तंगत हो तो चोर मिल जावे, तथा लग्नेश, दशमेश का इत्थशाल हो तो धन सहित चोर प्राप्त हो जावे ॥ ९१ ॥

लग्नेशदृष्ट्यभावे चौरः सह मात्रया याति ।
अस्ताधिपतौ दग्धे रविरश्मिगतेऽथ लभ्यते चौरः ॥ ९२ ॥
लग्नपकृतेत्थशाले राजभयाद्धनमिदं स्वयं दत्ते ।
लग्नास्तपयोर्नस्याद्यदि दृष्टिर्लग्नपस्तथा विकलः ॥ ९३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९२-९३ ॥

लग्नस्वामी की दृष्टि सप्तम भाव पर नहीं हो तो चोर धन सहित आवेगा, सप्तम भाव का स्वामी दग्ध व अस्तंगत हो तो चोर पकड़ा जावे ॥ ९२ ॥ लग्नेश का सप्तमेश से इत्थशाल हो तो राजा के भय से चोर स्वयं धन दे देवे और लग्नेश, सप्तमेश की दृष्टि न हो तथा लग्न स्वामी बलहीन हो ॥ ९३ ॥

तत्तस्करो स्वहस्ताद्ददाति चौर्यं हि राजकुले ।
लग्नपमध्यपयोगे राजकुले प्राप्य लभ्यते चौर्यम् ॥ ९४ ॥
रंध्रं चौरस्य धनं धनदे तत्राथ सप्तमे नाप्तिः ।
रंध्रपतौ धनपस्य तु मुथशिलयोगे तु प्राप्यते वित्तम् ॥ ९५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९४-९५ ॥

तो चोर अपने हाथ से राजसभा में चोरी का धन दे देवे, दशमेश और लग्नस्वामी एक साथ हों तो राजद्वार से चोरी मिले ॥ ९४ ॥ अष्टम भाव चोरी का धन तहाँ धनेश हो अथवा धनेश सप्तम में हो तो धन नहीं मिले और अष्टम भाव का स्वामी धनेश से इत्थशाल करते हों तो धन प्राप्त होवे ॥ ९५ ॥

रंध्रपतौ दशमपतेर्मुथशिलगे चौरपक्षकृद्भूपः ।
धनपे विलग्नपे सति दृष्टिविहीनं श्रुतिर्भवति नाप्तिः ॥ ९६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९६ ॥

अष्टमभाव स्वामी, दशमभाव स्वामी का इत्थशाल हो तो राजा चोर का पक्षपात करे और लग्नेश, धनेश एक ही हों और लग्न व धनस्थान पर दृष्टि न हो तो चोरी की वस्तु सुनने में आवे मिले नहीं ॥ ९६ ॥

चोर के विषय में प्रश्न—

चौरज्ञानप्रश्ने लग्ने रविशशिदृशा स्वगृहचौरः ।
अनयोरेकदृशा गृहसमीपवर्ती वसत्येषः ॥ ९७ ॥
लग्नस्थे लग्नपतावस्तपयुक्ते च गृहगतश्चौरः ।
अस्ताधिपतावन्त्ये सहजे वा स्वीयभृत्योऽयम् ॥ ९८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९७-९८ ॥

अब चौरज्ञान प्रश्न में लग्न में सूर्यचन्द्रमा की दृष्टि हो तो अपने ही घर में चोर है, इनमें से एक की दृष्टि हो तो समीपवर्ती (नजदीक बसनेवाला) चोर है ऐसा कहना ॥ ९७ ॥ लग्नस्वामी लग्न में सप्तमेशसहित स्थित हो तो घर ही में चोर रहता है, तथा सप्तमस्वामी बारहवें व तीसरे में स्थित हो तो चोर अपना ही सेवक है ॥ ९८ ॥

अस्तेशे तुङ्गस्थे स्वगृहे वा तस्करः प्रसिद्धः स्यात् ।
लग्नदशमास्तभावाः क्रमेण वीक्ष्याः स्वतुङ्गभवनादौ ॥ ९९ ॥
यः खेटः स्याद्बलवान् स ज्ञेयस्तस्करस्य बली ।
लग्नादिषु यो ग्रहः स्वोच्चादिबली स यज्जातिः ॥ १०० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सप्तमभाव का स्वामी उच्च में वा अपने घर में हो तो चोर प्रसिद्ध नामी है, ऐसा कहना, तथा लग्न, दशम, सप्तम यह भाव क्रम से देखना, इन भावों में कोई उच्चादि बली ग्रह हो तो वह चोर का बल जानना उसके अनुसार फल वर्णन करना, लग्नादि के विषे जो ग्रह उच्चादि बलयुक्त हों वही चोर की जाति उसके अनुसार कहना ॥ ९९ ॥ १०० ॥

एवं योगं तु विना द्यूनेशस्यैव बलमभिग्राह्यम् ।
इत्थं चौरज्ञाने चौरः गृहेश्वरस्य पिता ॥ १ ॥
चन्द्रे माता शुक्रे भार्या मन्दे सुतो भवेन्नीचे ।
जीवे गृहप्रधानं भौमे पुत्रोऽथवा भ्राता ॥ २ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १ ॥ २ ॥

एवं पूर्वोक्त योग के बिना सप्तमेश ही का बल ग्रहण करना उस ग्रह के अनुसार जातिस्वरूपवाला चोर कहना, अथवा चोर का सहायक जानना, इस प्रकार जानने में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्य भी विचार करना, सो इस प्रकार कि पूर्वोक्त योग कर्ता सूर्य हो तो घर के स्वामी का पिता चोर है ॥ १ ॥ चन्द्रमा हो तो माता, शुक्र हो तो स्त्री शनि हो तो पुत्र वा दास, बृहस्पति हो तो घर का प्रधान, मंगल से पुत्र अथवा भाई कहना ॥ २ ॥

ज्ञे स्वजनो मित्रं वा ज्ञात्वेत्थं पुण्यसहममावेक्ष्यम् ।
तस्मिन् क्रूरादृष्टे पुरा न चौरोस्तपे पुरापि स्यात् ॥ ३ ॥
अस्तेशान्मूसरिफे भौमश्चौरः पुरापि निगृहीतः ।
सप्तेशे रविपुत्रे चंद्रदृशा तस्करो हि पाखण्डी ॥ ४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३ ॥ ४ ॥

बुध हो तो स्वजन वा मित्र, ऐसा जानकर पुण्य सहम देखना, पुण्य सहम पर क्रूरदृष्टि न हो तो प्रथम चोर नहीं था, सप्तमेश पापदृष्ट हो तो पहले भी चोर था ॥ ३ ॥ तथा सप्तमभाव स्वामी से मंगल का ईसराफ योग हो तो चोर प्रथम भी चोरी में पकड़ गया था, सप्तमेश शनि हो और चन्द्रमा की दृष्टि हो तो चोर पाखण्डी है ऐसा कहना ॥ ४ ॥

जीवे विलोक्य लोकं भौमे खातेन पालकं भक्त्वा ।
प्रतिकुंचिकयापहृतं सितेऽतिथिर्ज्ञे प्रपंचकरः ॥ ५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५ ॥

बृहस्पति की दृष्टि पूर्वोक्त शनि पर हो तो चोर लोक में विदित है मंगल सप्तम में हो और चन्द्रमा की दृष्टि हो तो सेंध देकर ताला, जंजीर आदि तोड़कर चोर ने धन हरा है तथा सप्तम शुक्र, चन्द्रदृष्ट होय तो अपूर्व (नवीन) चोर है, बुध चन्द्रदृष्ट हो तो प्रपंची चोर जानना ॥ ५ ॥

चोर के वयोज्ञान के विषय का प्रश्न—

चौरस्य वयोज्ञाने सिते युवा ज्ञे शिशुर्गुरौ मध्यः ।
तरुणो भौमे मन्दे वृद्धोऽर्के स्यादतिस्थविरः ॥ ६ ॥
तनुनभयोः स्वगृहे वा स्मरभूम्योर्भूमिलाभयोर्मध्यम् ।
चरति रवौ नवमध्यमवृद्धवयोतीतकाः क्रमशः ॥ ७ ॥

अन्वयः—तनुनभयोः स्वगृहे रवौ, स्मरभूम्योः स्वगृहे रवौ, भूमिलाभयोर्मध्ये स्वगृहे रवौ क्रमशः नवमध्यम वृद्धवयोऽतीतकाः चरित ॥ ६–७ ॥

अब चोर के आयुज्ञान में शुक्र से युवा, बुध से बालक, बृहस्पति से मध्य अवस्था मंगल से तरुण, शनि से बूढ़ा, सूर्य से अति बूढ़ा ॥ ६ ॥ जो सूर्य लग्न में वा दशम में अपनी राशि में हो तो नवीन युवा अवस्थावाली, तथा जो सप्तम व चौथे के बीच में अपनी राशि में सूर्य हो तो मध्यावस्था चौथे ग्यारहवे के बीच हो तो बूढ़ा जानना ॥ ७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नष्टस्थान के प्रश्न—

नष्टस्थानप्रश्ने तुर्ये भूम्यग्निवायुजलमध्यात् ।
यो भवति राशिस्तस्मात्स्थानं ज्ञेयं गतधनस्य ॥ ८ ॥
अथ चतुर्थगृहे तुर्येश्वरोथ यः स्याद्ग्रहस्ततो ज्ञेयः ।
मन्दे मलिनस्थाने चन्द्रेंबुनि गीष्पतौ सुरारामे ॥ ९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८–९ ॥

अब नष्टस्थान प्रश्न में चौथे स्थान में भूमि, अग्नि, वा वायु, जल इन तत्वों में से जिस तत्व की राशि हो इसका विशेष स्थान, गये हुये धन का कहना ॥ ८ ॥ जब चौथे घर में चतुर्थेश हो, अथवा जो ग्रह हो उसके बलानुसार चोरी के धन का स्थान जानना, अथवा शनि हो तो मलिन स्थान में, चन्द्रमा हो तो जलाशय में, अथवा हाथ पाँव धोने के स्थान में, बृहस्पति हो तो देवता के समीप वा बगीचा में नष्ट वस्तु कहना ॥९॥

भौमे वह्निसमीपे रवौ गृहाधीश्वरासनस्थाने ।
तल्पे शुक्रे सौम्ये पुस्तकवित्तान्नपार्श्वे च ॥ ११० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११० ॥

मंगल हो तो अग्नि के समीप, सूर्य हो तो घर के स्वामी के बैठने के स्थान में, शुक्र हो तो शयन स्थान में, बुध हो तो पुस्तक, धन, अन्न वा डोली सवारी के समीप कहना ॥ ११० ॥

यह चोर है या नहीं इस प्रश्न में—

चौरोयमथ न वेति क्रूरेंद्वोर्मुथशिले च चौरः स्यात् ।
सौम्यशशिमुथशिले खलु न भवति चौरः प्रवक्तव्यम् ॥ ११ ॥
किमनेन तस्करत्वं कदापि विहितं न वेति पृच्छया ।
लग्नपशशिनोरेकस्मादपि मूसरिफेऽस्तपे विहितम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११–१२ ॥

चोर जानने को चन्द्रमा पापग्रह से इत्थशाल करता हो तो चोर होगा जो शुभग्रह से इत्थशाल करे तो चोर नहीं है ऐसा कहना ॥ ११ ॥ इसने कभी चोरी करी वा नहीं इस प्रश्न में लग्न का स्वामी वा चन्द्रमा से सप्तम स्वामी का ईसराफ योग हो तो पहिले भी चोरी करी है ॥ १२ ॥

चोर स्त्री है वा पुरुष—

चोरः स्त्री पुरुषो वा पृच्छायामस्तपे स्त्रियो राशौ ।
स्त्रीखेटे स्त्रीदृष्टश्चौरः स्त्री व्यत्ययात्पुरुषः ॥ १३ ॥
लग्नेशनवमांशतो वयः प्रमाणजातयो ज्ञेयाः ।
चौरोयमिहानन्तं शास्त्रं कथितोयमुद्देशः ॥ १४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १३-१४ ॥

चोर स्त्री वा पुरुष ऐसे प्रश्न में सप्तम भाव का स्वामी स्त्री राशि में हो स्त्री ग्रह हो अथवा स्त्रीग्रह की दृष्टि हो तो चोरी स्त्री ने करी है, इससे विपरीत हो अर्थात् सप्तमेश पुरुषग्रह और पुरुषग्रह दृष्टि से युक्त हो तो चोर पुरुष जानना ॥ १३ ॥ लग्नस्वामी के नवांश वश से चोर की अवस्था का प्रमाण और जाति को जानना, अथवा लग्न में द्रेष्काण वश से रूप रंग आकृति कहना, विशेष विचार करने को शास्त्र अनन्त है यहाँ बुद्धिमानों के निश्चयार्थ उद्देशमात्र वर्णन किया है ॥ १४ ॥

सन्तान के विषय के प्रश्न—

लग्नेश्वरेणाथ निशाकरेण यदीत्थशालं कुरुते सुतेशः ।
शुभः शुभैस्संयुत ईक्षितः स्यात्ससन्तति प्रष्टुरसौ विदध्यात् ॥१५॥
पुंस्त्रीग्रहाः पुत्रगृहं विलग्नात्पश्यन्ति यावन्त इहातिवीर्याः ।
तत्संख्यकाः स्युस्तनयाश्च कन्याः शुभेशयोगात्सुतभांशतुल्याः॥१६॥

अन्वयः—अथ लग्नेश्वरेण निशाकरेण शुभः सुतेशः इत्थशालं करुते शुभैः संयुतः ईक्षितः स्यात् तदा असौ प्रष्टुः सन्ततिः विदध्यात्। विलग्नात् यावन्तः पुंस्त्रीग्रहाः अतिवीर्य्याः पुत्रगृहं पश्यन्ति तत्संख्यकाः तनयाः कन्याश्च स्युः, शुभेशयोगात्सुतभांशतुल्याः स्युः ॥ १५-१६ ॥

अत्र सन्तान प्रश्न में लग्न के स्वामी अथवा चन्द्रमा से पंचम भाव का स्वामी इत्थशाल करे, तथा पंचमेश शुभग्रह हो, शुभग्रह से युक्त वा शुभ दृष्ट हो तो प्रश्नकर्ता को सन्तति होगी ऐसा कहना ॥ १५ ॥ जितने पुरुषसंज्ञक ग्रह बलवान् होकर पंचम भाव को देखें उतने पुत्र तथा जितने स्त्रीग्रह बली होके देखें उतनी कन्या हों अथवा पंचम में जितने नवांश भुक्त हों उतनी संख्या सन्तान जाने किन्तु यह संख्या पूर्वोक्त इत्थशाल हुए में और अपने स्वामी शुभयुक्त होने में होती है ॥ १६ ॥

लग्नेशपुत्राधिपती परस्परं न पश्यतश्चेदुदयं च पंचमम् ।
पापेत्थशालौ सुतलग्नपौ च प्रष्टुस्तदा संततिनास्ति तां वदेत् ॥१७॥
पुत्रालये सिंहवृषालिकन्याः प्रश्नोदयाज्जन्मभतस्तथेन्दोः ।
अल्पप्रजः सन्ततिपृच्छकः स्यात्पादः सुतर्क्षे सहितेक्षिते वा ॥१८॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १७-१८ ॥

लग्नस्वामी, पंचमस्वामी ये दोनों परस्पर न देखें तथा लग्न और पंचम को भी न देखें अथवा लग्नेश, पंचमेश पापेत्थशाली हो तो सन्तति नहीं है ऐसा कहना ॥ १७ ॥ पंचम भाव में सिंह, वृष, वृश्चिक, कन्या, ये राशि हों अर्थात् इनमें से कोई भी राशि हो, प्रश्न लग्न से, जन्म लग्न से वा चन्द्रमा से पञ्चम भाव यहाँ देखना, पूर्वोक्त राशि पञ्चमभाव में हो तो प्रश्नकर्ता थोड़े सन्तानवाला होता है, पञ्चम भाव पापग्रहों से युक्त दृष्ट होने में भी यही फल जानना ॥ १८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वर्क्षस्थितौ रन्ध्रगतौ यमार्कौ प्रष्टुः स्त्रियं सन्दिशतश्च वन्ध्याम् ।
छिद्रस्थितौ चंद्रबुधौ सदोषां वा काकवन्ध्या तनयाप्रसूतिम् ॥१६॥

अन्वयः—यमार्कौ स्वर्क्षस्थितौ रन्ध्रगतौ प्रष्टुः स्त्रियं वन्ध्यां सन्दिशतः, छिद्रस्थितौ चन्द्रबुधौ सदोषां वा काकवन्ध्या वा तनया प्रसूतिम् सन्दिशतः ॥

शनि वा सूर्य अपनी राशि में स्थित आठवें स्थान में स्थित, हो तो प्रश्नकर्ता की स्त्री बन्ध्या है, जो चन्द्रमा अष्टम स्थान में स्थित हो तो भूतादि दोष जानना और बुध हो तो एक पुत्र होकर काकवन्ध्या होवे, अथवा कन्या होवे ॥ १६ ॥

मृतप्रजाछिद्रगयोः सितेज्ययोर्गर्भस्रवा भूमिसुतेष्टमर्क्षे ।
छिद्रेश्वरे छिद्रगतेतिवीर्ये पुष्पं न विन्दत्यबला सुतप्रदम् ॥१२०॥
शुक्रार्कयोरष्टमसंस्थयोर्वा क्रूरैर्धनांत्याष्टमराशिसंस्थैः ।
जाता पुरस्तान्म्रियते प्रजा वा प्रष्टुर्न चाग्रे शुभसन्ततिः स्यात् ॥२१॥

अन्वयः—सितेज्ययोः छिद्रगयोः मृतप्रजा, भूमिसुतेऽष्टमर्क्षे गर्भस्रवा, छिद्रेश्वरे छिद्रगतेऽतिवीर्ये अबला सुतप्रदं पुष्पं न विन्दति । शुक्रार्कयोः अष्टम संस्थयोः वा क्रूरैः धनांत्याष्टमराशिसंस्थैः जाता प्रजा पुरस्तान्म्रियते तथा प्रष्टुः अग्रे शुभः सन्तति न स्यात् ॥ २०–२१ ॥

शुक्र वा गुरु अष्टम हों तो मृतप्रजा हो अर्थात् जो सन्तान हो सो मर जाय, मङ्गल अष्टम में हो तो गर्भ गिर जावे, अष्टम भाव का स्वामी अष्टम में हो वा बलवान् हो तो स्त्री को पुत्र देनेवाला ऋतु नहीं प्राप्त होवे ॥ १२० ॥ अथवा शुक्र सूर्य अष्टमस्थान में स्थित हो, और पापग्रह दूसरे, बारहवें और आठवें में स्थित हों तो प्रश्नकर्ता के सन्तान होकर मरते जावें और आगे भी अच्छे प्रकार सन्तानसुख न होवे ॥ २१ ॥

रिष्फेश्वरे केन्द्रगते च सौम्यैर्युतेक्षिते जीवति बालकश्च ।
अपूर्णमासे शुभयुक्त इन्द्रौ केन्द्रे शिशुर्जीवति दीर्घकालम् ॥ २२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २२ ॥

बारहवें भाव का स्वामी केन्द्र १।४।७।१० स्थान में हो और शुभग्रह युक्त दृष्ट हो तो बालक जीता है तथा पूर्ण चन्द्रमा शुभग्रहों से युक्त केन्द्र में स्थित हो तो बालक बहुत कालतक जीता है ॥ २२ ॥

पञ्चमेशोऽथ लग्नेशो विषमस्थानगा तदा ।
पुत्रजन्मप्रदौ ज्ञेयौ कन्यानां समराशिगौ ॥ २३ ॥
युग्मराशिगते लग्ने यदा तत्र शुभग्रहः ।
गर्भेऽपत्यद्वयं वाच्यं दैवज्ञेन विपश्चिता ॥ २४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २३–२४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पञ्चमभाव का स्वामी वा लग्न का स्वामी विषम भाव में हो तो पुत्रजन्म देनेवाले जानना समराशि में हों तो कन्या का जन्म होवे ॥२३॥ लग्न विषम राशिवाला हो और वहाँ शुभग्रह स्थित हों तो गर्भ में दो बालक कहना, ऐसा दैवज्ञों से कहा गया है ॥२४॥

विषमोपगतो लग्नाच्छनिः पुत्रसुखप्रदः ।
समभे योषितां जन्म विशेषो जातकोक्तिवत् ॥ २५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २५ ॥

लग्न से शनि विषम स्थान में हो तो पुत्रसुख देता है, समराशि में कन्या जन्म को देता है, विशेष विचार जातकोक्त यहाँ जानना ॥ २५ ॥

भोजन ज्ञानप्रश्न—(प्रश्नचिन्तामणि)

कटुको लवणस्तिक्तो मिश्रितो मधुरो रसः ।
अम्लः कषायः कथिता रव्यादीनां रसा बुधैः ॥ २६ ॥
लग्नं पश्यति यः खेटस्तस्य यः कथितो रसः ।
भोजनेऽसौ रसो वीर्यक्रमाद्वाच्यं परे रसाः ॥ २७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २६–२७ ॥

पण्डितों ने सूर्यादि ग्रहों के रस वर्णन किये हैं सो इस प्रकार सूर्य का कटुरस, चन्द्रमा का खारा, मंगल का तिक्त (चरपरा), बुध का मिश्रित, बृहस्पसि का मधुर रस, शुक्र का अम्ल (खट्टा), शनि का कषाय (कसेला) ॥ २६ ॥ लग्न का जो बली ग्रह देखता हो उस ग्रह का जो रस कहा गया है सो भोजन में विशेष कहना, पुनः क्रम से अन्य रस कहना ॥ २७ ॥

चन्द्रो यस्य मुथशिलस्तस्य विशेषं वदेद्भुक्तौ ।
लग्ने राहौ मंदे रविदृष्टे भोजनाभावः ॥ २८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २८ ॥

चन्द्रमा जिस ग्रह से इत्थशाल करता हो, उस ग्रह का रस भोजन में विशेष कहना, लग्न में राहु स्थित हो और शनि, सूर्य की दृष्टि हो तो भोजन का अभाव कहना भोजन नहीं प्राप्त होगा ॥ २८ ॥

मैंने आज कैसा भोजन किया इसका ज्ञान—(प्रश्नतन्त्र)

कीदृङ्मयाद्य भुक्तं पृच्छायां यदि भवेत्स्थिरं लग्नम् ।
तद्भुक्तमेकवेलं द्व्यात्मनि वेलद्वयं चरे त्वसकृत् ॥ २९ ॥
चंद्रे लग्नगते स्यात्क्षारं भौमे च कटुकमम्लगुरौ ।
मधुरं दिनकृति तिक्तं शुक्रे स्निग्धं बुधे च सर्वरसम् ॥३०॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २९–३० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आज मैंने कैसा भोजन किया इस प्रश्न में यदि प्रश्न लग्न स्थिर हो तो एक बार, द्विःस्वभाव हो तो दो बार, चर लग्न हो तो बहुत बार भोजन किया ऐसा कहना ॥२९॥ लग्न में चन्द्रमा हो तो क्षार, मंगल हो तो कटु और खट्टा, बृहस्पति हो तो मधुर, सूर्य हो तो तिक्त, शुक्र हो तो चिकना, बुध हो तो सब रसों का भोजन किया है ॥ १३० ॥

मंदे कषायमशुभान्मूसरिफे मुथशिले शुभेऽरिदृशा ।
उद्वाहात्प्रियदृष्ट्या प्रायणिकत्वात्समागतं भोज्यम् ॥ ३१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३१ ॥

शनि से कषाय (कसेले) रस के भोजन कहना, चन्द्रमा पापग्रहों से ईसराफ और शुभग्रहों की शत्रुदृष्टि से इत्थशाल करता हो तो कष्ट से भोजन प्राप्त होगा, मित्रदृष्टि से इत्थशाल हो तो विवाहस्थान से आया हुआ भोजन प्राप्त होगा ॥ ३१ ॥

शुभेसराफे त्वशुभेत्थशाले चन्द्रे कदन्नं मधु आज्यवर्ज्यम् ।
शुभेत्थशालेथखलेसराफे शक्यं न भोक्तुं परतोऽपि लब्धम् ॥३२॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३२ ॥

यदि चन्द्रमा शुभग्रह से ईसराफ और पापग्रह से इत्थशाल योग करता हो तो स्वादरहित और मधुघृतरहित अन्न भोजन किया है, और शुभग्रह से इत्थशाल हो और पापग्रह से ईसराफ योग करता हो तो दूसरे से भी प्राप्त भया भोजन नहीं मिलेगा ॥३२॥

चन्द्रे स्वनाथदृष्टे सुखभोजनमन्यथा कष्टात् ।
गुरुमुथशिले सगौरवमर्केण मुथशिलेऽतिशुचि तीक्ष्णम् ॥३३॥
शुक्रे सुस्वादुरसं सहास्यगीतं बुधे जनैः कीर्णम् ।
शस्त्रकथाढ्यं शशिना कुस्थानगतं कुजे चोष्णम् ॥ ३४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

चन्द्रमा अपने स्वामी से दृष्ट हो तो भोजन सुखपूर्वक होगा अन्यथा कष्ट से भोजन मिलेगा, और बृहस्पति से इत्थशाल हो तो बड़े गौरव से भोजन मिले, सूर्य से इत्थशाल हो तो अत्यन्त शुचि और तीक्ष्ण भोजन प्राप्त होगा ॥ ३३ ॥ शुक्र से सुन्दर स्वादवाला रस, बुध से हास्य व गीतादि गाते हुये बहुत जनों के साथ उत्तम भोजन प्राप्त होगा, शनि से शस्त्रकथायुक्त कुत्सित स्थान में मंगल से उष्ण (गरम) भोजन प्राप्त होगा ॥ ३४ ॥

यदि वदति भोजनार्थं निमंत्रितो यामि शशिमहीसुतयोः ।
एकस्थितयोः केन्द्रे मुथशिलयोर्वापि पूर्णता भवति ॥ ३५॥

१ मूसरिफे और मुथशिले इनके बीच में "शशिनि" ऐसा पाठ पुस्तकों में है परन्तु इससे छन्दोभंग होता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विधिनानेन शनेः स्यात्कुभोजनं ज्ञसितयोरभीष्टान्नम् ।
जीवस्य तुष्टिजनकं होरेशे तनुखगे स्वयमुपैति ॥३६॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

यदि कोई पृच्छक कहे कि निमन्त्रित भोजनार्थ जाता हूँ कैसा भोजन मिलेगा, तो इस प्रश्न में चन्द्रमा व मंगल एक राशि में स्थित हो के केन्द्रस्थान में इत्थशाल करे तो भोजन पूर्णता से होवे ॥ ३५ ॥ इसी प्रकार से शनि हो तो कुत्सित भोजन, बुध, शुक्र हों तो मनोवांछित भोजन प्राप्त होगा, बृहस्पति हो तो प्रसन्नताजनक भोजन मिलेगा और लग्नेश हो तो आप ही से भोजन प्राप्त होगा ॥ ३६ ॥

यश्चन्द्रेण मुथशिली तस्मिन्नीशे तनोः स्वगृहे भोज्यम् ।
वित्तेशे भृत्यगृहे भ्रातॄणां सहजपे तथान्यत्र ॥ ३७ ॥

यश्चन्द्रेण मुथशिली स यस्य भावस्येशस्तत्सम्बन्धेन भोजनमिती ज्ञेयम् ।
अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३७ ॥

जो ग्रह चन्द्रमा से इत्थशाल करता हो, वह ग्रह यदि लग्नेश हो तो अपने घर भोजन होगा, धनेश हो तो सेवक के घर, सहज (तृतीय) भावेश हो तो भाई के घर, एवं अन्य भावों का कहना ॥ ३७ ॥ जो ग्रह चन्द्रमा से इत्थशाल करे वह जिस भाव का स्वामी हो उस भाव के स्वामी के सम्बन्ध से भोजन का विचार करना ॥

जीवे सिते चन्द्रगते बलाढ्ये चन्द्रे बुधे केन्द्रगते शुभान्विते ।
त्रिलाभषष्ठास्पदगैश्च पापैः स्यात्प्रेमनिर्वैरकरं सुभोजनम् ॥ ३८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३८ ॥

गुरु, शुक्र बली हो के चन्द्रमा के घर में हों और चन्द्र वा बुध केन्द्र में शुभग्रह से युक्त हों और तीसरे, ग्यारहें, छठे स्थान में पापग्रह हों तो प्रेम से सुन्दर भोजन प्राप्त होगा ॥ ३८ ॥

भोज्यं बुभुक्षा भोक्ता च सुखाप्तांगबलक्रमात् ।
लग्नपो भोज्यदस्तेषां बलेन फलमादिशेत् ॥ ३९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३९ ॥

भोजनपदार्थ, भोजनदाता, भोजनकर्ता, सुखाप्ति, इसमें भोजनदाता लग्नेश है, इनके बल से फल कहना ॥ ३९ ॥

तुर्येशलाभाधिपतीत्थशाले शुभग्रहेक्षायुतितत्सुभोज्यम् ।
इत्थं खलग्नाधिपतीत्थशाले लाभेश्वरे तत्सुखलाभ ऊह्यः ॥१४०॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १४० ॥

चौथे भाव का स्वामी, लाभेश इन दोनों का इत्थशाल हो और शुभग्रह की दृष्टि हो वा शुभग्रहयुक्त हो तो उत्तम भोजन मिले, इसी प्रकार दशमेश व लग्नेश का इत्थशाल लाभेश से हो तो सुख का लाभ जानना ॥ ४० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वप्नदर्शनप्रश्न में विचार—

लग्नेऽर्के नृपतिं वन्हिं शस्त्रं पश्यन्ति लोहितम् ।
श्वेतं पुष्पं सितं वस्त्रं गन्धं नारीं च शीतगौ ॥ ४१ ॥
रक्तं मांसं प्रवालं च सुवर्णं धरणीसुते ।
बुधे खे गमनं जीवे धनं बंधुसमागमम् ॥ ४२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४१-४२ ॥

लग्न में सूर्य हो तो राजा, अग्नि, हथियार, रक्तवर्ण के पदार्थ देखने में आते हैं, चन्द्रमा हो तो सफेद फूल, वस्त्र, चन्दन, स्त्री व सफेद रंग के पदार्थ दृष्टिपथ में आते हैं ॥४१॥ मङ्गल लग्नगत होने से रक्त, मांस, मूँगा, सुवर्णादि-पदार्थ दीख पड़ें, बुध हो तो आकाश में गमन दीख पड़े, बृहस्पति हो तो धन तथा बन्धुजनों से समागम होवे॥४२॥

जलावगाहनं शुक्रे शनौ तुङ्गावरोहणम् ।
लग्नलग्नांशपवशात्स्वप्नो वाच्योऽथवा बुधैः ॥ ४३ ॥
सर्वोत्तमबलाद्वापि खेटाद्बुद्ध्या विचिन्तयेत् ।
बलसाम्ये फलं मिश्रं दुःस्वप्नो निर्बलैः खगैः ॥ ४४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४३-४४ ॥

यदि लग्न में शुक्र हो तो जल में स्नानादि, शनि हो तो ऊँचे पर चढ़ना, अथवा लग्न व लग्नांशस्वामी के वश से पण्डितों करके स्वप्न का फल कहना चाहिये ॥ ४३ ॥ अथवा अपनी बुद्धि से जो ग्रह सब से उत्तम बलवाला हो उसके वश से फल कहना, बल समान हों तो मिला भया अर्थात् अच्छा बुरा दोनों प्रकार का स्वप्न कहना तथा जो स्वप्नकर्ता का ग्रह निर्बल हो तो दुःस्वप्न कहना ॥ ४४ ॥

भट्टोत्पलः—

रविलग्ने शशिदृष्टे रविशशिसमेते विलग्नाद्वा ।
स्वप्नं दृष्टं प्रवदेत्प्रष्टुर्लग्नान्तरात्कालः ॥ ४५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४५ ॥

सूर्य लग्न में चन्द्रमा से दृष्ट हो अथवा सूर्य चन्द्र दोनों लग्न में हों तो स्वप्न देखा है ऐसा कहना, लग्न और ग्रह के अन्तर से समय कहना ॥ ४५ ॥

आखेटसम्बन्धी विचार—

लग्नेशयामित्रपतीत्थशाले सुस्नेहदृष्ट्या त्वनयोर्द्वयोश्च ।
आखेटकः स्यात्सफलोरिदृष्ट्या स्यान्निष्फलोवाल्पफलोतिकष्टात् ॥४६॥
लग्नेश्वरे द्यूनगते विलग्ने जायेश्वरे स्यान्मृगया प्रभूता ।
यामित्रनाथे हिबुके नभस्थे चाखेटकः स्वल्पतरोऽपि न स्यात् ॥४७॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४६-४७ ॥

लग्नस्वामी सप्तमस्वामी से इत्थशाल करता हुआ मित्रदृष्टि से परस्पर दोनों का सम्बन्ध हो तो आखेट (शिकार) सफल होवे, शत्रुदृष्टि हो तो निष्फल अथवा अति परिश्रम से आखेट की प्राप्ति होवे ॥ ७६ ॥ लग्न का स्वामी सप्तम में और सप्तम भाव का स्वामी लग्न में हो तो शिकार बहुत प्राप्त होवे, तथा सप्तम भाव का स्वामी चतुर्थ वा दशम हो तो शिकार कुछ भी प्राप्त नहीं होवे ॥ ४७ ॥

ज्ञभौमो सबलौ सिद्धिरस्तांशे मृगयाच्युतिः ।
लग्नद्यूने तत्पती च हेतुस्तैर्जलजादिगैः ॥ ४८ ॥
जलजाखेटकं ब्रूयाद्वन्यक्षैर्वनसम्भवः ।
क्रूराक्रान्तानि यावन्ति मध्ये भानीन्दुलग्नयोः ।
तावन्तः प्राणिनो वाच्या द्वित्रिघ्नाः स्वांशकादिषु ॥ ४९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४८ ॥

अन्वयः—इन्दुलग्नयोः मध्ये यावन्ति भानि क्रूराक्रान्तानि तावन्तः प्राणिनो वाच्या, स्वांशकादिषु द्वित्रिघ्नाः वाच्याः ॥ ४९ ॥

बुध और मंगल बलवान् हों तो शिकार सिद्ध होवे जो बुध मंगल सप्तम राशि के नवांश में हो तो शिकार हाथ से छूट जावे लग्न और सप्तम राशि वा उसके पति स्थल जल, आकाश जैसी राशियों में वा जैसे स्वभाव के हों वैसा ही आखेट कहना ॥४८॥ चन्द्रमा के मध्य जितनी राशि आक्रान्त हों उतने प्राणी आखेट में प्राप्त होवेंगे, जो वे अपने उच्च मित्रांशकों में हों तो द्विगुण आखेट प्राप्त हो और वर्गोत्तम में होने से अनेक गुण आखेट प्राप्त होवें ऐसा कहना ॥ ४९ ॥

विवाद प्रश्न—(भुवन दीपक)

क्रूरः खचरो लग्ने विवादपृच्छासु जयति विवादं तम् ।
सर्वावस्थासु परं नीचेऽस्ते जयति न द्विषतः ॥ १५० ॥
लग्नद्यूने मुक्त्वा परस्परं क्रूरयोर्झकटदृष्टौ ।
विवदद्वादियुगं तच्छुरिकाभ्यां प्रहरति तदैवम् ॥ ५१ ॥

अन्वयः—विवादपृच्छासु क्रूरः खचरो लग्ने सर्वावस्थासु तम् विवादं जयति, परं नीचेऽस्ते द्विषतः न जयति । लग्नद्यूने मुक्त्वा क्रूरयोः परस्परं झकटदृष्टौ तदा एवम् योगे तद् विवदद्वादियुगं छुरिकाभ्यां प्रहरति ॥५०-५१॥

लग्न में पापग्रह हों तो सब अवस्था में वादी को जीतेगा परन्तु नीच में होने से शत्रु से विजय नहीं होगा ॥ ५० ॥ लग्नपर सप्तम स्थान दृष्टि को छोड़कर पापग्रह परस्पर शत्रुदृष्टि से देखते हों तो दोनों वादियों में छुरी चलेगी ॥ ५१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लग्नद्यूने च यदि क्रूरः खचरो विवादिनोर्न तदा ।
कलहनिवृत्तिः काले जयति हि बलवान् गत बलं तु ॥ ५२ ॥

अन्वयः—यदि क्रूरः खचरो लग्ने द्यूने च तदा विवादिनोः कलहनिवृत्तिः न तथा बलवान् गत बलं काले जयति ॥ ५२ ॥

लग्न और सातवें में पापग्रह हो तो वादी की कलह समाप्ति न होगी निर्बल को बलवान् बहुत काल में जीतेगा ॥ ५२ ॥

लग्नेशसुतपः सौम्याः केन्द्रे सन्धिर्न वान्यथा ।
लग्नद्यूनेशषष्ठेशरित्वेप्यन्योन्यविग्रहः ॥ ५३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५३ ॥

लग्नस्वामी और पंचमेश व शुभग्रह केन्द्रस्थान में हों तो सन्धि होगी और लग्नेश, सप्तमेश, षष्ठेश छठें स्थान में हों तो दोनों की परस्पर लड़ाई होगी ॥ ५३ ॥

बंधन प्रश्न—

गृहमागतो न यदसौ किं बन्धः किमथ वा हत इति प्रश्ने ।
मूर्तौ क्रूरो यदि तन्नहतो बद्धोऽथ वा पुरुषः ॥ ५४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५४ ॥

वह घर नहीं आया क्या बाँधा गया अथवा मारा गया ? इस प्रश्न में लग्न में यदि पापग्रह हों तो मारा नहीं गया कदाचित् वह पुरुष बाँधा गया हो तो विस्मय नहीं ॥५४॥

त्रिकोणचतुरस्रास्तस्थितः पापग्रहो यदि ।
क्रूरैर्निरीक्षितः पापैर्नूनं बन्धनमादिशेत् ॥ ५५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम ॥ ५५ ॥

त्रिकोण ६।५ स्थान में अथवा चतुरस्र (चौथे, आठवें) सातवें में पापग्रह हो वा इनको पापग्रह देखें तो निश्चय करके वह पुरुष बांधा गया ऐसा कहना ॥ ५५ ॥

सप्तमगोऽष्टमगो वा चेत्क्रूरस्तद्धतोपि वा बद्धः ।
मूर्तौ च सप्तमे वा यद्वा लग्नेऽष्टमेऽपि भवेत् ॥ ५६ ॥
क्रूरस्तदसौ पुरुषो बद्धश्च हतश्च मुच्यते परम् ॥ ५७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५६–५७ ॥

जो सातवें वा आठवें में क्रूरग्रह हों तो वह मारा गया वा बाँधा गया है और लग्न में वा सातवें में पापग्रह हों अथवा लग्न में आठवें में भी हों ॥ ५६ ॥ तो वह पुरुष बाँधा गया और मार खाकर पीछे से छूट जायगा ॥ ५७ ॥

बद्धः सप्ताष्टगे क्रूरे मूर्त्यस्ते चाष्टलग्नगे ।
बद्धो विमुच्यतेऽस्त्याशु सौम्यः श्रेयांस्तनौ तदा ॥ ५८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५८ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सातवे, आठवें स्थान में वा लग्न में वा सातवें अथवा आठवें लग्न में पापग्रह स्थित हों तो बन्धन में प्राप्त है, लग्न में शुभग्रह हों तो बन्धनयुक्त मनुष्य शीघ्र छूट जायगा ॥ ५८ ॥

बद्धोऽस्ति तत्किं भवितेति प्रश्ने विमुच्यतेऽसौ खलु मृत्युयोगे ।
कदा विमुच्येदिति पृच्छमाने शुभं कदा भावि च तैर्मृतिः स्यात् ॥५९॥

यह मनुष्य बद्ध है इसका क्या होगा इस प्रश्न में लग्न में यदि मृत्यु योग होवे तो छूट जावेगा । कब छूटेगा ऐसे प्रश्न में लग्न में शुभाशुभ ग्रहों के अनुसार फल कहना कि कब मर जावेगा ॥ ५९ ॥

कैद से छूटने का प्रश्न —

मुक्तिप्रश्ने यदा केन्द्रे केन्द्रेशाः स्युर्न मोक्षदा ।
तस्मिन्वर्षेऽथ लग्नेशः पतितः केन्द्रगे न च ॥ १६० ॥
सम्बन्धेप्सु स चेत्क्रूरो मृतीशः स्यात्तदा मृतिः ।
लग्नेशेऽस्तमितेऽम्बुस्थे कुजदृष्टे तदा मृतिः ॥ ६१ ॥

अन्वयः—मुक्तिप्रश्ने यदा केन्द्रेशाः केन्द्रे तदा तस्मिन् वर्षे मोक्षदा न स्युः अथ लग्नेशः पतितः केन्द्रगे च न मुक्तिः मृतीशः चेत्क्रूरः संबन्धेप्सुः स्यात्तदा मृतिः, लग्नेशेऽस्तमितेऽम्बुस्थे कुजदृष्टे तदा मृतिः ॥ ६०-६१ ॥

यदि केन्द्र में केन्द्र का स्वामी हो तो उस वर्ष में नहीं छूटेगा एवं लग्नेश पतित होकर केन्द्र में हो तब भी कैद से नहीं छूटेगा, यदि अष्टमेश क्रूरग्रह हो और लग्नेश से सम्बन्ध की इच्छा रखता हो तो मृत्यु होगी, लग्नेश अस्तंगत होकर जलराशि का होकर मंगल से देखा जाता हो तो मृत्यु कहना ॥ ६०-६१ ॥

चन्द्रश्चाम्बुगपापेन मृत्युनाथेन योगकृत् ।
तदा गुप्त्यां मृतिश्चन्द्रः केन्द्रे मन्दयुगीक्षितः ॥ ६२ ॥
दीर्घपीडा च भौमेन युग्दृष्टौ बन्धताडने ।
दृश्यार्धे लग्नपश्चेस्याद्व्ययपेनेत्थशालवान् ॥ ६३ ॥

अन्वयः—चन्द्रः अम्बुगपापेन मृत्युनाथेन योगक्रत् तदा गुप्त्यां मृतिः, चन्द्रः केन्द्रे मन्दयुगीक्षितः दीर्घपीडा भौमेन युग्दृष्टौ दृश्यार्धे तदा बन्धताडने लग्नपश्चेद्व्ययपेन इत्थशालवान् व्ययगे लग्नगेऽपि वा तदा बद्धः पलायते ॥६२-६३॥

चन्द्रमा जलराशि में हो और पापग्रह व अष्टमेश से योग करे अर्थात् युक्त हों तो कारागार (जेलमें) मरण होगा और चन्द्रमा केन्द्र में शनि से युक्त वा दृष्ट हों तो भी मरण जानना ॥ ६२ ॥ लग्नस्वामी मंगल से युक्त वा दृष्ट हो अथवा दृश्यार्ध में हो और बारहें भाव का स्वामी लग्नेश से इत्थशाल करता हुआ बारहवें या लग्न में हो तो बँधा हुआ कैदी भाग जायगा ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पलायते तदा बद्धो व्ययगे लग्नगेऽपि वा ।
तृतीयनवमस्वामी व्ययगो लग्नपेन च ॥ ६४ ॥
यदीत्थशालयोगेप्सुस्तदापि च पलायते ।
दृश्यार्धेत्युपचारेण चन्द्रो मुथशिलस्तदा ॥ ६५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६४–६५ ॥

तृतीय भाव का स्वामी, और नवमभाव स्वामी बारहवें वा लग्न में हो अथवा लग्नेश के साथ बारहवें हों तो बँधुवा (कैदी) भाग जावेगा ॥६४॥ तथा जो इत्थशाल योग की इच्छावाला हो तो भी भाग जावे, और जो चन्द्रमा दृश्यार्ध में इत्थशाल योग करे तो भी भागेगा ॥ ६५ ॥

बन्धमोक्षस्त्रिधर्मेशः संग्रहः शीघ्रमोक्षकृत् ।
पतितेन्दुस्त्रिधर्मस्थग्रहसम्बन्धकृत्तदा ॥ ६६ ॥
केन्द्रस्थात्रिभवेशेन योगेप्सुश्चेत्तदा चिरात् ।
यावच्छुक्रो बली लग्ने तावत्कर्ता बलाधिकः ॥ ६७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६६–६७ ॥

तृतीय भाव स्वामी, नवम भाव स्वामी का योग हो तो बन्धमोक्ष और पतित चन्द्रमा तीसरे वा नवें स्थान स्थित ग्रह से सम्बन्ध करे तो भी बन्धन से मोक्ष पावे अर्थात् छूट जावे ॥ ६६ ॥ केन्द्र में स्थित तृतीयेश लाभेश से योग की इच्छावाला हो और लग्न में शुक्र बली हो तो जब तक शुक्र बली लग्न में रहे तब तक कर्ता का बल अधिक होगा ॥ ६७ ॥

अस्तङ्गते तनौ शुक्रे बद्धमोक्षादिसंभवः ।
म्रियते येन योगेन तेन योगेन मुच्यते ॥ ६८ ॥
मेषे तुले च शीघ्रं स्यात्कर्के नक्रे सकष्टता ।
स्थिरे चिराद्द्विदेहस्थे मोक्षो मध्यमकालतः ॥ ६९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ६८–६९ ॥

लग्न में शुक्र अस्तंगत हो तो बद्ध मनुष्य के छूटने का सम्भव है जिस योग में मरता है उसी योग से छूटता है ऐसा जानना ॥ ६८ ॥ मेष और तुला में शीघ्र छूटता है कर्क व मकर में कष्ट से छूटे स्थिर में बहुत काल में छूटेगा और द्विःस्वभाव में मध्यम प्रकार का मोक्ष होगा ॥ ६९ ॥

नौका के विषय में प्रश्न—

क्षेमायातं वहित्रस्य मज्जनं पवनं जले ।
पण्यव्यवहृतौ लाभो नापि प्रश्नचतुष्टयम् ॥ ७० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—वहित्रस्य (नौकायाः) क्षेमायातं, जले मज्जनम्, जलेपवनं, पण्यव्यवहृतौ लाभो न इति प्रश्नचतुष्टयं स्यात ॥ १७० ॥

नौका विषय में प्रश्न चार हैं (१) कुशलपूर्वक नाव का आना (२) जल में डूबना (३) जल में पवन (चलना वा तैरना), (४) व्यवहार में लाभ, ये नाव के चार प्रश्न है ॥ ७० ॥

नालाभदा स्यान्मम नेति पृष्टे केन्द्रे शुभाश्चेदितरेषु पापाः ।
बलान्विताः क्षेमजयार्थदा नौर्भवाति वाच्यं विदुषा विमृश्य ॥७१॥
लग्नाधिपे वक्रिणि चास्य नाथे व्यावृत्त्य नौरेति च मार्गतः सा ।
चेत्सौम्यदृष्टः कुशलेन पापैर्दृष्टस्तदा वस्तुविनेति वाच्यम् ॥७२॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

नाव के व्यवहार में हमको लाभ होगा वा नहीं इस प्रश्न में, केन्द्र में शुभग्रह हों और शेष स्थानों में बलसहित पापग्रह हों तो क्षेम, जय, अर्थ देनेवाला जानना इस प्रकार नौका प्रश्न में पण्डित कहै ॥ ७१ ॥ लग्न का स्वामी वक्रगामी हो और उसके स्थान का वा चतुर्थेश शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो मार्ग से नाव कुशलपूर्वक लाभ-सहित लौटेगी और जो पापयुत दृष्ट हो तो विना वस्तु के नौका आवेगी ॥ ७२ ॥

विलग्नरन्ध्राधिपती स्वगेहे प्रवेच्यतश्चेद्व्यवहारलाभः ।
यद ष्टमे सौम्यखगा बलाढ्यास्तदा तरी लाभसुखप्रदा स्यात् ॥७३॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७३ ॥

जो लग्नस्वामी और अष्टमस्वामी अपने घर में हों अथवा अपने स्थान को देखते हों तो व्यवहार से लाभ होवे तथा जो आठवें स्थान में शुभग्रह बलवान् स्थित हों तो नाव लाभ व सुख के देनेवाली होती है ॥ ७३ ॥

कुशला याति पृच्छायां मृत्युयोगे समागते ।
तदा नौरेति शीघ्रेण लाभाद्यं चान्ययोगतः ॥ ७४ ॥
लग्नेशं चन्द्रनाथं वा चन्द्रं वा मृत्युपो यदि ।
पश्येत्क्रूरदृशा नावा समं नश्यति नौपतिः ॥ ७५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम ॥ ७४–७५ ॥

हमारी नाव कुशलपूर्वक आवेगी इस प्रश्न में जो प्रश्नसमय मृत्युयोग हो तो नौका शीघ्रतापूर्वक आवे, जो अन्य योग हो तो लाभसहित आवे ॥ ७४ ॥ लग्नस्वामी, चन्द्र-राशि स्वामी वा चन्द्रमा, इनको अष्टमस्वामी क्रूर से देखे तो नौकासहित स्वामी का नाश होवेगा ॥ ७५ ॥

लग्नेशाष्टपतिः स्वस्य गेहे नालोकते यदि ।
तदा यानस्य वक्तव्यं निश्चितं मज्जनं बुधैः ॥ ७६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तावुभौ सप्तमस्थौ चेज्जले वापनिकां वदेत् ।
लग्नचन्द्रपती क्रूरदृष्ट्याऽन्योन्यं यदीक्षिता ।
तदा पोतजनानां च मिथः कलहमादिशेत् ॥ ७७ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

यदि लग्नस्वामी और अष्टमस्वामी ये अपने स्थान को न देखें तो नौका डूबेगी ऐसा निश्चय पण्डितों को कहना चाहिये ॥ ७६ ॥ तथा ये दोनों अर्थात् लग्नेश और अष्टम स्वामी सप्तम स्थान में स्थित हों तो नौका जल में द्रव्यसहित डूब जायगी ऐसा कहना, तथा लग्नस्वामी और चन्द्रमा की राशि स्वामी ये दोनों जो एक दूसरे को देखें तो नाववाले जनों का परस्पर कलह होवे ऐसा कहना ॥ ७७ ॥

किंवदन्ती (जनश्रुति) के सत्यासत्य का प्रश्न—

लग्नं लग्नेश्वरशीतगूदयैः शुभान्वितैः केन्द्रगतैस्तु सत्या ।
पापान्वितैःपापनिरीक्षितैश्च त्रिकस्थितैर्वा भवतीह मिथ्या ॥
शुभदृश्योगतः सौम्यां वार्तां सत्यां विनिर्दिशेत् ।
पापदृग्योगतो दुष्टा वार्ता सत्येति कीर्त्यते ।
लग्नेश्वरे भाविवक्रे मिथ्या वार्ता भविष्यति ॥ ७९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७८-७९ ॥

लग्न, लग्नस्वामी और चन्द्रमा, शुभग्रहों से युक्त केन्द्रस्थित हों तो सुनी हुई बात सच्ची और पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट वा त्रिक ६।८।१२ में स्थित हों तो मिथ्या ॥ ७८ ॥ लग्न और चन्द्रमा पर शुभग्रहों की दृष्टि हो वा शुभग्रह युक्त हों तो सौम्यवार्ता सत्य, क्रूर वार्ता हो तो असत्य जानना, पापदृष्टि योग से क्रूर वार्ता सत्य, सौम्य वार्ता असत्य और लग्नेश वक्री होने वाला हो तो सभी वार्ता मिथ्या होवेगी ॥ ७९ ॥

क्रय-विक्रय के विषय में विचार—

क्रेता लग्नपतिर्ज्ञेयो विक्रेता लाभपः स्मृतः ।
गृह्णाम्यहमिदं वस्तु प्रश्न एवं विधे सति ॥ १८० ॥
बलशालि विलग्नं चेद्गृह्यते तत्क्रयाणकम् ।
तस्मात्क्रयाणकाल्लाभः प्रष्टुर्भवति निश्चितम् ॥ ८१ ॥
विक्रीणाम्यमुकं वस्तु प्रश्न एवंविधे सति ।
आयस्थाने बलवति विक्रेतव्यं क्रयाणकम् ॥ ८२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८०-८१-८२ ॥

लग्नस्वामी लेने वाला जानना, लाभस्वामी बेचने वाला कहा है, यह वस्तु मैं खरीद करूँगा इस प्रकार के प्रश्न करने में ॥ ८० ॥ जो लग्न बलवान् हो तो वह वस्तु लेना, इस कारण खरीदने से लाभ होगा ऐसा पृच्छक को निश्चय लाभालाभ विचार कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहना ॥ ८१ ॥ अमुक वस्तु बेचता हूँ लाभालाभ फल क्या होगा ऐसे प्रश्न में ग्यारहवाँ स्थान बलवान् हों तो वस्तु बेचने से लाभ होवेगा बेचो, ऐसा कहना ॥ ८२ ॥

धान के उत्पत्ति में विचार—

दिशि कस्यां भवेत्सस्यनिष्पत्तिः क्व च सा नहि ।
पूर्वदेशस्य भङ्गो हि क्व दिशि क्व च ते नहि ॥ ८३ ॥
चतुर्णामपि केन्द्राणां मध्ये यत्र शुभग्रहः ।
तस्यां च सस्यनिष्पत्तिः स्वास्थ्यं चैव भविष्यति ॥ ८४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८३-८४ ॥

अब धान्य उत्पत्ति के प्रश्न में किस दिशा में धान्य उत्पन्न होगा किस दिशा में नहीं, पूर्वादि देशों में किस देश का और किसका नहीं अथवा भंग किसकी बृद्धि होगी ऐसे प्रश्न में ७३ चारों केन्द्रस्थानों में शुभग्रह हों उस दिशा में धान्य उत्पन्न होगा और स्वस्थता रहेगी यहाँ लग्न पूर्व, चतुर्थ उत्तर, सप्तम पश्चिम, दशमभाव की दक्षिण दिशा जानना ॥ ८४ ॥

यस्यां दिशि शनिः पापैर्युतो वाप्यवलोकितः ।
दिशि तस्यां च तत्स्वास्थ्यं दुर्भिक्षं च भविष्यति ॥ ८५ ॥
दिशि यस्यां रविस्तत्र धान्यनाशो नृपाद्भवेत् ।
यत्रास्ति मंगलस्तत्र धान्यनाशोऽग्निभीस्तथा ॥ ८६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८५-८६ ॥

जिसदिशा में शनिपाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो उस दिशा में रोग और दुर्भिक्ष होगा ॥ ८५ ॥ तथा जिस दिशा में सूर्य पापयुक्त दृष्ट स्थित हो वहाँ अन्न का नाश होवे, तथा मंगल जिस में पापयुक्त दृष्ट स्थित हो वहाँ अन्न का नाश और अग्निभय होगा ॥ ८६ ॥

यस्यां दिशि शुभाः खेटाः समस्तबलशालिनः ।
निष्पन्ना सैव विज्ञेया तस्य स्वास्थ्यं च तत्र हि ॥ ८७ ॥
केन्द्रेषु सर्वतः पापाः समस्तबलसंयुताः ।
देशस्तदा विनष्टोऽसौ ज्ञातव्यः शास्त्रकोविदैः ॥ ८८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ८७-८८ ॥

जिस दिशा में शुभग्रह सम्पूर्ण बलयुक्त स्थित होवे, उस दिशा में सब अन्न अच्छे प्रकार उत्पन्न होवेंगे और स्वस्थता भी उसी दिशा में जानना ॥ ८७ ॥ तथा सब केन्द्रस्थानों में पापग्रह सम्पूर्ण बलसहित स्थित हों तो देशनाश हो ऐसा शास्त्रज्ञ पण्डितों को जानना चाहिये ॥ ८८ ॥

इति भाषाटीकायां विशेष प्रश्नाध्यायः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ प्रकीर्णकाध्यायः (भुवनदीपके)

लाभालाभ के विषय में विचार—

लग्नपो मृत्युपश्चापि मृत्यौ स्यातामुभौ यदि ।
स्थितौ द्रेष्काण एकस्मिन्प्रष्टुर्लाभस्तदा ध्रुवम् ॥ १ ॥
एवं द्वादशभावेषु द्रेष्काणैरेव केवलम् ।
बुधैर्विनिश्चयं ब्रूयाद्योगेष्वन्येषु निस्पृहः ॥ २ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १ - २ ॥

यदि लाभालाभ प्रश्न में लग्नस्वामी, अष्टमस्वामी ये दोनों अष्टम स्थान में हों और एक ही द्रेष्काण में स्थित हों तो निश्चय करके प्रश्नकर्ता को लाभ कहना ॥ १ ॥ इस प्रकार बारहों भावों के विषे केवल द्रेष्काण ही से निश्चय करके पण्डितों को कहना चाहिये और अन्य योगों में यही बलवान् है ॥ २ ॥

प्रश्नकाले सौम्यवर्गो लग्ने यदधिको भवेत् ।
ग्रहभावानपेक्षेण तदाख्येयं शुभं फलम् ॥ ३ ॥
लग्नाधिपश्च लाभस्याधीशश्च दायको भवेत् ।
लग्नाधिपस्य योगो लाभाधीशेन लाभदः ॥ ४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३–४ ॥

प्रश्नसमय लग्न में शुभग्रहों के वर्ग अधिक हों तो ग्रहभाव की अपेक्षा शुभ ही फल कहना ॥ ३ ॥ लग्नस्वामी लाभस्वामी लाभदायक जानने, लग्नेश का लाभेश के साथ उत्पन्नयोग लाभ का देने वाला होता है ॥ ४ ॥

भवति परलाभकरस्तदैव स यदि चन्द्रदृग्लाभे ।
योगाः सर्वेप्यफलाश्चन्द्रमृते व्यक्तमेतच्च ॥ ५ ॥
पण्याधिशेनैवं कर्मेशेन निवृत्त्यधीशेन ।
मृत्युपतिना च योगे लग्नाधीशस्य वक्तव्यः ॥ ६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ५–६ ॥

लग्नस्वामी लाभस्थान में चन्द्रदृष्ट हो तो लाभ होवे सम्पूर्ण योग चन्द्रमा के दृष्टि विना निष्फल है ऐसा स्पष्ट ही है ॥ ५ ॥ इसी प्रकार लाभेश, कर्मेश, सप्तमेश और अष्टमेश का लग्नेश से योग हो और उक्त पण्यादि भावों पर भावेश की दृष्टि हो तो क्रम से पण्यवृद्धि, कमवृद्धि निवृत्ति और मृत्यु होती है ॥ ६ ॥

लत्तस्थानेक्षणतः पुण्यविवृद्धिः कर्मवृद्धिश्च ।
विबुधैस्तदा निवृत्तिर्मृत्योर्भावः परेप्येवम् ॥ ७ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लग्नेशो यदि षष्ठो स्वयमेव रिपुस्तदा भवत्यात्मा ।
मृत्युकृदष्टमगोऽसौ व्ययगः सततं व्ययं कुरुते ॥ ८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ७-८ ॥

चन्द्रमा की जिस २ स्थान पर दृष्टि हो तो उस २ स्थान में देखने से पुण्य की वृद्धि और कर्म की वृद्धि पण्डितों ने कहा है, यहाँ नवम से पुण्यवृद्धि, दशम से कर्मवृद्धि जानना तथा अष्टम वा अष्टमेश पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो विपरीत फल कहना, एवं सब भावों में विचार कर कहना ॥ ७ ॥ लग्नस्वामी यदि छठा हो तो अपनी आत्मा ही शत्रु होती है लग्नेश अष्टम हो तो मृत्यु को करे है और बारहवें हो तो बहुत व्यय (खर्च) को करती है ॥ ८ ॥

लग्नस्थं चन्द्रजं चन्द्रः क्रूरो वा यदि पश्यति ।
धनलाभो भवत्याशु किन्त्वनर्थोऽपि पृच्छतः ॥ ९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ९ ॥

यदि लग्न में स्थित बुध को चन्द्रमा वा पापग्रह देखें तो धन लाभ शीघ्र होता है किन्तु प्रश्नकर्ता को कुछ अधर्म भी होता है ॥ ९ ॥

अथ सामान्यरीति से भावविचार कहते हैं—

इन्दुः सर्वत्रः बीजाभो लग्नं च कुसुमप्रभम् ।
फलेन सदृशोंशश्च भावः स्वादुसमप्रभः ॥ १० ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १० ॥

ग्रहविचार में सर्वत्र चन्द्रमा बीज के समान, और लग्न फल के सदृश तथा भाव स्वाद के तुल्य जानना ॥ १० ॥

लग्नपतिर्यदि लग्नं कार्याधीशश्च वीक्षते कार्यम् ।
लग्नाधीशः कार्यं कार्येशः पश्यति विलग्नम् ॥ ११ ॥
लग्नेशः कार्येशं विलोकयेल्लग्नपे च कार्येशः ।
शीतगुदृष्टा सत्यां परिपूर्णा कार्यसंसिद्धिः ॥ १२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ११-१२ ॥

लग्न का स्वामी लग्न को, और कार्यभाव स्वामी कार्य को, और लग्नस्वामी कार्यभाव को, कार्यभाव स्वामी लग्न को देखता हो ॥११॥ तथा लग्नेश कार्येश को और कार्येश लग्नेश को और इन सबको चन्द्रमा देखता हो तो कार्य की सिद्धि पूर्ण होगी ॥ १२ ॥

कथयन्ति पादयोगं पश्यति सौम्यो न लग्नपो लग्नम् ।
लग्नाधिपं च पश्यति शुभग्रहश्चार्धयोगोऽत्र ॥ १३ ॥
एकः शुभग्रहो यदि पश्यति लग्नाधिपं विलग्नं वा ।
पादोनयोगमाहुस्तदा बुधाः कार्यसंसिद्ध्यै ॥ १४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १३-१४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लग्नस्वामी लग्न को न देखे और शुभग्रह देखता हो तो चौथाई योग जानना, ऐसा पूर्वाचार्य कहते हैं, तथा केवल लग्न स्वामी को शुभ ग्रह देखें तो कोई भी योग हो तो आधा होता है ॥ १३ ॥ एक शुभ ग्रह जो लग्न वा लग्नेश को देखे तो बुध जन उसे कार्य सिद्धि के अर्थ एक चौपाई से हीन योग वर्णन करते हैं ॥ १४ ॥

लाभादि में समय का निर्णय—(भट्टोत्पलः)

उदयोपगतं राशिं तत्कालंकृत्य लिप्तिकां गुणयेत् ।
छायाङ्गुलैश्च कुर्यात् हृत्वा मुनिभिस्ततः शेषः ॥ १५ ॥
गणयित्वैवं प्राग्वद्धृत्वा सौम्यस्य भवेदुदयः ।
कार्यप्राप्तिः प्रष्टुर्वक्तव्या नेतरैर्ग्रहैर्भवति ॥ १६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ १५-१६ ॥

लाभादि सम्पूर्ण प्रश्नों में उस समय की लग्न का कलापिंड करे फिर उस समय में द्वादशांगुल के शङ्कु की छाया के अङ्गुलों से गुणन करके चौदह से भाग देवे जो शेष रहे वह मेषादिराशि जानना ॥ १५ ॥ वह राशि जो शुभग्रह की हो तो कार्यप्राप्ति हो, पापग्रह की राशि हो तो कार्यसिद्धि नहीं होवे ॥ १६ ॥

ग्रहगुणकारो ज्ञेयो दैवविदा पञ्च ५ विंशतिः सैकः २१ ।
मनवो १४ का ६ ष्टौ ८ त्रितयं ३ भवाः ११ सूर्यादितो ज्ञेयः ॥१७॥
गुणकारैक्यविभक्तः सूर्यादिगुणकसंशुद्धः ।
यस्य न शुद्धयति वर्गो विज्ञेयस्तद्वशात्कालः ॥ १८ ॥

सूर्य के ५, चन्द्रमा के २१, मङ्गल के १४, बुध के ६, गुरु के ८, शुक्र के ३, शनि के ११, ये सूर्यादि ग्रहों के गुणक जानने ॥ १७ ॥ इन गुणकार अङ्कों का ऐक्य ७१, इससे पूर्व कहा हुआ तत्काल लग्न का कलापिंड छायांगुलों से गुणा है उसमें भाग लेना, लब्धि में सूर्यादिग्रहों के गुणक एक एक करके घटाना जिसका गुणकांक नहीं घटे उससे समय कहना जो आगे वर्णन करते हैं ॥ १८ ॥

आरदिवाकरशेषे दिवसाः पक्षाश्च भृगुशशिनोः ।
गुर्ववशेषे मासो ऋतवः सौम्ये शनैश्चरेब्दाः स्युः ॥ १९ ॥
आधानेथ प्राप्तौ गमनागमने पराजये विजये ।
रिपुनाशे वा काले पृच्छायां निश्चितं ब्रूयात् ॥ २० ॥

अन्वयः – स्पष्टम् ॥ १९–२० ॥

पूर्वोक्त प्रकार से जो मङ्गल व सूर्य का गुणक नहीं घटे उतने दिन, जानना और शुक्र चन्द्रमा न घटे तो पक्ष, बृहस्पति से महीना, बुध से ऋतु, तथा शनि से वर्ष जानना ॥ १९ ॥ आधान अथवा प्रसूति वा धन आदि की प्राप्ति तथा गमनागमन, जयपराजय, शत्रुनाश आदि में समय निश्चय करके प्रश्नकर्ता को कहना ॥ २० ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रश्न समय में लग्न जानने का प्रकार—

अकचटतपयशवर्गा रविकुजसितसौम्यजीवसौराणाम् ।
चन्द्रस्य च निर्दिष्टास्तैः स्युः प्रथमोद्भवैर्वर्णैः ॥ २१ ॥
ज्ञात्वा तस्माल्लग्नं विज्ञाय शुभाशुभं च वदेत् ।
वर्गादिमध्यमान्त्यैर्वर्णैः प्रश्नोद्भवैर्विषमराशिः ॥ २२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २१-२२ ॥

अमुक कार्य कितने समय में होगा इसके जानने के लिये पूर्व में ६० । ६१ । ६२ ६३ । ६४ । ६५ श्लोकों में कह चुके हैं अब लग्न ज्ञान करने के लिये कहते हैं ।

अवर्ग का सूर्य, कवर्ग का मंगल, चवर्ग का शुक्र, टवर्ग का बुध, तवर्ग का गुरु, पवर्ग का शनि, यवर्ग और शवर्ग का चन्द्रमा ये वर्गों के क्रम से अधिपति हैं, जहाँ लग्न का ज्ञान न हो सके अथवा दो तीन प्रश्न एक ही समय में हों तो वर्ग से लग्न निश्चय कर लेना सो इस प्रकार कि प्रश्न अक्षरों में प्रथम अक्षर के वर्ग का जो स्वामी है ॥२१॥ उसके लग्न को जानकर शुभाशुभ फल कहना, तहाँ प्रत्येक ग्रह की दो दो राशि हैं इनमें विषम राशि में जानना, जैसे मङ्गल वर्गेश हो तो १ । ८ में से मेष जानना, सर्वत्र सूर्य, चन्द्रमा की एक ही राशि है सो जानना, जहाँ बहुत प्रश्न हों वहाँ प्रथम प्रश्नाक्षर प्रथम वर्ण से, दूसरे प्रश्न में मध्यम वर्ण, तीसरे में अन्त्यवाले वर्ण से लग्न निश्चय करना ॥२२॥

लग्नज्ञाने प्रवदेत्पृच्छायुग्मं कुजज्ञजीवानाम् ।
सितरविजायोश्चानेकं रविशशिनोरेकराशित्वात् ॥ २३ ॥
तस्मात्प्राग्वत्प्रवदेत्पृच्छासमये शुभाशुभं सर्वम् ।
कालस्य च विज्ञानादेतच्चिन्त्यं बहुप्रश्ने ॥ २४ ॥

अन्वयः—कुजज्ञजीवानाम् लग्नज्ञाने पृच्छायुग्मं प्रवेदत् । सितरविजयोश्च अनेकं, रविशशिनोः एकराशित्वात् एकैव, तस्मात् पृच्छासमये सर्वं शुभाशुभं प्राग्वत् प्रवदेत् बहुप्रश्ने कालस्य च विज्ञानात् एतच्चिन्त्यम् ॥ २३-२४ ॥

लग्नज्ञान में प्रश्नकर्ता को मङ्गल बुध, गुरु के राशि का लग्नज्ञान हो तो दो प्रश्न कहना, शुक्र और शनि से अनेक प्रश्न कहने, सूर्य चन्द्र एकराशि वाले होने से एक ही प्रश्न कहना ॥ २३ ॥ इस कारण पूर्वकथनानुसार प्रश्नकर्ता को सब शुभाशुभ कथन करना प्रश्न समय में इस प्रकार विचारना, तथा समय के विज्ञान से बहुत प्रश्नों में यह सब विचार करना ॥ २४ ॥

मुष्टिगत वा मानसिक प्रश्न—(षट् पञ्चाशिका)

स्वांशे विलग्ने यदि वा त्रिकोणे स्वांशे स्थितः पश्यति धातुचिंताम् ।
परांशकस्थश्च करोति जीवं मूलं परांशोपगतः परांशम् ॥ २५ ॥
धातुर्मूलं जीवमित्योजराशौ युग्मे विद्यादेतदेव प्रतीपम् ।
लग्ने योंशस्तत्क्रमाद्गण्य एवं संक्षेपोयं विस्तरात्तत्प्रभेदः ॥ २६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २५-२६ ॥

मूकप्रश्न अथवा मुष्टि प्रश्न में लग्नेश वा चन्द्रमा अपने नवांश वा लग्न में अथवा त्रिकोण (नवम, पञ्चम) स्थान में वा अपने नवांशराशि में स्थित होकर लग्न को देखे तो धातु चिन्ता कहना, तथा दूसरे के नवांश में होके लग्न व चन्द्रमा को देखे तो मूलचिन्ता जाननी ॥ २५ ॥ विषमलग्न में प्रथम नवांश से धातु, दूसरे से जीव, चौथे से धातु, पाँचवें से मूल, छठे से जीव, सातवें से धातु, आठवें से मूल, नवें से जीव जानना, जौ समराशि लग्न हो तो विपरीत अर्थात् १ । ४ । ७ नवांश से जीव, २ । ५ । ८ से मूल, ३ । ६ । ९ नवांश से धातु चिन्ता कहनी ॥ २६ ॥

(भट्टोत्पल)

बलिनौ केन्द्रोपगतौ रविभौमौ धातुकरौ प्रश्ने ।
बुधसौरौ मूलकरौ शशिगुरुशुक्राः स्मृता जीवाः ॥ २७ ॥
मेषालिसिंहलग्ने कुजार्कयुक्ते निरीक्षितेप्यथ वा ।
धातोश्चिन्तां प्रवदेद्युगघटकन्यागतैर्लग्नैः ॥ २८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २७-२८ ॥

यदि सूर्य मङ्गल बली हो के केन्द्रस्थान में हों तो धातुचिन्ता, बुध, शनि हों तो मूल चिन्ता, चन्द्र, गुरु, शुक्र हों तो जीवचिन्ता कहना ॥ २७ ॥ मेष, बृश्चिक, सिंह लग्न हों और लग्न में मङ्गल, सूर्य युक्त हों वा लग्न को देखते हों तो धातुचिन्ता, मिथुन, कुम्भ, कन्या लग्न हो ॥ २८ ॥

बुधरविजयुतैर्मूलंवृषतुलहरिमीनचापकर्कटकैः ।
चन्द्रगुरुशुक्रयुतैर्दृष्टैर्जीवो विनिर्देश्यः ॥ २९ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ २९ ॥

और लग्न में बुध, शनियुक्त हो तो मूलचिन्ता, वृष, तुला, सिंह, धन, कर्क इन लग्नों में से कोई लग्न हो और चन्द्र, गुरु, शुक्र ये ग्रह हों वा देखते हों तो जीवसम्बन्धी प्रश्न कहना ॥२९॥

प्रश्नकर्त्ता के मन में किस भाव सम्बन्धी चिन्ता है इसका ज्ञान-(ज्ञानप्रकाश)

लग्नलाभपयोः प्राणी तयोर्यद्भावगः शशी ।
तस्य भावस्य वा चिन्ता प्रष्टुः सा हृदि वर्तते ॥ ३० ॥
एवं बलाधिकाच्चन्द्राल्लग्ननाथो यतः स्थितः ।
दैवज्ञेन विनिर्णेयः प्रश्नस्तद्भावसम्भवः ॥ ३१ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३०-३१ ॥

लग्नेश भावेश इनके जितने संख्याके भाव में चन्द्रमा हो उस भाव सम्बन्धी जो चिन्ता हो वही पृच्छक के हृदय में जानना ॥ ३० ॥ इसी प्रकार बलवान् चन्द्रमा से जितने संख्यावाले भाव में लग्नस्वामी हो उस भाव सम्बन्धी प्रश्न पृच्छक के हृदय में ज्योतिषी निर्णय करे अर्थात् बताना चाहिये ॥ ३१ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(पृथुयशा)

आत्मसमं लग्नगतस्तृतीयगैर्भ्रातरः सुतं सुतगैः ।
माता वा भगिनी चतुर्थगैः शत्रुगैः शत्रुः ॥ ३२ ॥
जायासप्तमसंस्थैर्नवमे धर्माश्रितो गुरुर्दशमे ।
स्वांश पतिर्मित्रशत्रुषु तथैव वाच्यं बलयुतेषु ॥ ३३ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३२ ३३ ॥

सबसे उत्तम बलवाला ग्रह वा तत्काल लग्न का नवमांशेश लग्न में हों तो अपने शरीर सम्बन्धी, तीसरे में हों तो भ्रातृसम्बन्धी, पञ्चमभाव में हों तो पुत्रसम्बन्धी, चतुर्थ भाव में हो तो माता व बहन सम्बन्धी. छठे स्थान में हों तो शत्रुसम्बन्धी प्रश्नकर्ता के हृदय में चिन्ता जानना ॥३२॥ तथा सप्तम भाव में स्थित होने से स्त्री सम्बन्धी, नवम भाव में धर्मसम्बन्धी, दशम भाव में गुरु वा राजसम्बन्धी प्रश्न कहना तथा स्वामीं बलवान् होकर मित्र की राशि में स्थित हो तो मित्र सम्बन्धी प्रश्न जानना, शत्रुराशि में हो तो शत्रुसम्बन्धी प्रश्न जानना इनमें जो बली हो उसी से प्रश्न कहना ॥ ३३ ॥

स्त्री संभोग सम्बन्धी प्रश्न —

चरलग्ने चरभागे मध्याद्भ्रष्टे प्रवासिचिन्ता स्यात् ।
भ्रष्टः सप्तमभवनात्पुनर्निवृत्तो यदि न वक्री ॥ ३४ ॥
अस्ते रविसितवक्रैः परजायां स्वां गुरौ बुधे वेश्याम् ।
चन्द्रे च वयः शशिवत्प्रवदेत्सौरेऽन्त्यजादीनाम् ॥ ३५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३४–३५ ॥

पूर्वोक्त ग्रह जो चर राशि के लग्न में वा चर नवांशक में दशमस्थान से ऊपर (दशम, एकादश, द्वादश) भाव में हों तो प्रवासी (परदेश में स्थित मनुष्य) का प्रश्न जानना, तथा चर राशि नवांश में सप्तम भाव से ऊपर (सप्तम, अष्टम, नवम) भाव में हों तो प्रवासी के लौटने की चिन्ता कहना । यदि वह वक्री नहीं होवे तो पूर्वोक्त रीति से विपरीत कहना ॥ ३४ ॥ जो सप्तमभाव में सूर्य, शुक्र वक्री होकर बलयुक्त स्थित हों तो परस्त्रीसम्बन्धी, बृहस्पति हो तो अपने स्त्रीसम्बन्धी बुध हो तो वेश्या सम्बन्धी, चन्द्रमा हो तो सुरूपा चन्द्रमा के समान स्त्रीसम्बन्धी शनि हो तो अन्त्यज (हीन जाति) स्त्री सम्बन्धी, प्रश्न पृच्छक के चित्त में है ऐसा कहना ॥ ३५ ॥

कुमारिकां बालशशी बुधश्च वृद्धां शनिः सूर्यगुरू प्रसूताम् ।
स्त्रीं कर्कशां भौमसितौ च धत्ते एवं वयः स्यात्पुरुषेषु चैवम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३६ ॥

बालचन्द्रमा वा बुध हो तो कुमारी कन्या, शनि से वृद्धा स्त्री, सूर्य तथा गुरु से प्रसूता मंगल, शुक्र हो तो कठोर स्वभाव की स्त्री सम्बन्धी प्रश्न है ऐसा कहना, एवं पुरुष की अवस्था भी विचार से कहनी ॥ ३६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुरत प्रश्न—

सौम्यैत्थशाले हिमगौ तु केन्द्रे सौख्यातिरेकःसविलासहासः ।
क्रूरेत्थशाले हिमगौ सरोषे क्रूरान्वितेऽभूत्कलहो नृवध्वाः ॥ ३७ ॥
पीडाऽथवासीत्सुरते युवत्या रजोयथास्तर्क्षमुपैति तद्वत् ।
लग्ने सुरेज्ये भृगुजे कलत्रे तुर्ये हिमांशौ सविलासहासौ ॥ ३८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ३७-३८ ॥

शुभग्रह से इत्थशाल योग करता हुआ चन्द्रमा केन्द्र में हो तो सुखपूर्वक विलास-सहित हास्य को करता है तथा पापग्रह के साथ मुथशिली चन्द्रमा पापग्रहयुक्त होने से रोषसहित स्त्री पुरुषों में कलह होवे ॥ ३७ ॥ सप्तम में पापग्रह हों तो रति विषे स्त्री के रजदोष से क्लेश होवे और लग्न में बृहस्पति, सप्तम में शुक्र और चौथे चन्द्रमा हो तो रतिक्रीडा हास्यपूर्वक होवे ॥ ३८ ॥

शुभग्रहोत्थे च कंबूल योगे युनो रजः पुष्पसुगन्धियुक्तम् ।
स्वार्क्षोच्चगे हर्म्यरतिंतं निगद्यं स्थिते द्विदेहे वनिता स्वकीया ॥३९॥
चरोदये सा रमिते परस्त्री केन्द्रे शनौ सा सुरजो दिवारतिम् ।
निशोदये रात्रिखगे च रात्रौ दिवानिशं तद्वलिनोर्द्विखेटयोः ॥४०॥

अन्वयः—(लग्नेश सप्तमेशयोः) शुभग्रहोत्थे कंबूल योगे पुष्पसुगन्धि युक्तम् रजः स्यात् । स्वर्क्षोच्चगे हर्म्यरतिंतं निगद्यं, द्विदेहे स्वकीया वनिता, चरोदये परस्त्री रमिते, केन्द्रे शनौ सुरजो रमिते, दिवाबली लग्नं चेत्तदा दिवारतिम्, निशोदये रात्रिखगे द्विखेटाः बलिनस्तदा रात्रौ, एवं द्विस्वभाव-राशौ दिवानिशं रतिं ब्रूयात् ॥ ३९ ॥ ४० ॥

लग्नेश व सप्तमेश का शुभ ग्रहों से कंबूल योग हो तो पुष्परज सुगन्धी से संयुक्त हो पापकम्बूल से दुर्गन्धयुक्त जानना, तथा उक्तग्रह अपनी राशि वा उच्च में हों तो अच्छे घरमें, और अन्यथा हो तो सामान्य स्थान में सुरत हों द्विस्वभाव राशि में हों तो अपनी स्त्री से ॥ ३९ ॥ चरराशि लग्न हो तो पराई स्त्री से संभोग होवे, शनि केन्द्र में हो तो रजस्वला स्त्री से, दिवाबली लग्न हो तो दिन में रात्रिबली हो तो रात्रि में, संध्या-बली हो तो सायंकाल में द्विस्वभाव से दिन तथा रात्रि में भी सुरत कहना ॥ ४० ॥

महर्घविचार—

मेषे वृषे च मिथुने शुभयुक्तदृष्टे न ग्रैष्मिकं तु सुलभं भवति पृथिव्याम् ।
सौम्ये धनुर्मृगघटेषु च सारधान्यं कुर्यात्समर्घमशुभैः सहितोऽसमर्घम् ॥४१॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४१ ॥

मेष, वृष, और मिथुन, ये राशि शुभग्रहों से युक्त दृष्ट हों तो ग्रीष्म ऋतु का धान्य पृथिवी पर सुलभ (अच्छा) होगा और धन, मकर, कुम्भ में हों तो शरद ऋतु की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फसल अच्छी होगी, तथा लग्न लग्नेश और चन्द्रमा शुभयुक्त दृष्ट हों तो समय अच्छा हो पापयुक्त दृष्ट से महँगा होवे ॥ ४१ ॥

लग्ने बलाढ्ये निजनाथसौम्यैर्युक्तेक्षिते केन्द्रगतैः शुभैश्च ।
सर्वैः समर्घं विबलैर्विलग्ने केन्द्रेषु पापैः सकलं समर्घम् ॥ ४२ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४२ ॥

लग्न बलवान् और अपने स्वामी शुभग्रह से युक्त दृष्ट हों केन्द्र स्थान में शुभग्रह हों तो सब सस्ता होवे अर्थात् समय सुकाल होवे, और जो लग्न बलहीन हों और केन्द्र में पापग्रह हो तो समय अच्छा नहीं हो अन्नादि महँगा हो जावे ॥ ४२ ॥

मेषार्क प्रवेश से शुभाशुभ—

राकाकुहूशशिपभास्वदजप्रवेशेलग्नेश्वराःशुभखगैर्युतवीक्षिताश्चेत् ।
तद्वत्सरेजगतिसौख्यमलंप्रकुर्युःपापार्दितेगदनरेन्द्रभयं प्रजानाम् ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४३ ॥

मेष के प्रवेश समय में अमावास्या, पूर्णिमा हो और चन्द्रराशिका स्वामी सूर्य हो, लग्न का स्वामी शुभग्रहयुक्त वा शुभग्रह देखता हो तो वह संवत्सर जगत् को सुखकारी होता है। और यदि पापग्रहों करके पीड़ित हो तो प्रजा को रोग और राजा को भयदायक होता है ॥ ४३ ॥

मेषप्रवेशोदयतः स्वरांशः केन्द्रेषु पापोडुपतीत्थशाले ।
पापग्रहैर्दृष्टयुतेऽथतस्मिन्वर्षेगदार्तिः प्रियमन्नमुर्व्याम् ॥ ४४ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४४ ॥

मेषके सूर्य का जिस लग्न में प्रवेश हो उस लग्न का सप्तमांश केन्द्र में हो और पापग्रह से इत्थशाल हो अथवा पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो उस संवत्सर मे रोग से पीड़ा हो तथा पृथ्वी पर अन्न सबको प्रिय होवे ॥ ४४ ॥

भानोर्मेषप्रवेशोदयभवनपतिः सद्ग्रहः स्वोच्च संस्थः
स्वर्क्षस्थो वापि केन्द्रे शुभगगनचरैर्दृष्टयुक्तो बलाढ्यः ।
तस्मिन्वर्षे विदध्याज्जगति शुभसुखं भूरि शस्यं सुवृद्धिः
क्रूरः क्रूरार्दितो वा दिशति नृपभयं कष्टमन्नं महर्घम् ॥ ४५ ॥

अन्वयः—स्पष्टम ॥ ४५ ॥

सूर्य से मेषार्क प्रवेश लग्नस्वामी अपनी उच्च राशि में अथवा अपनी राशि में हो वा केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) स्थान में शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो और बलवान् हो तो उस संवत्सर में सुन्दर सुख और खेती की अच्छी वृद्धि होती है। यदि पाप पीड़ित हो तो राजभय और कष्ट हो एवं अन्न की महर्घता होती है ॥ ४५ ॥

मनुष्यों के जन्मलग्न से प्रत्येक वर्ष में शुभ और अशुभ फल ज्ञान—

जन्मोदयाद्भास्वदजप्रवेशलग्नं हि यद्भावगतं शुभान्वितम् ।
तद्भाववृद्धिं विदधाति तस्मिन्वर्षे नृणां पापयतं तदन्यथा ॥४६॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४ ॥

जन्म लग्न से सूर्य और मेषार्क प्रवेश लग्न जिस भाव में हो और शुभग्रह युक्त हों तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि हाती है और पापग्रह से युक्त हों तो भाव की हानि कहना ॥ ४६ ॥

जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थलाभस्तृतीये च कुटुम्बवृद्धिः ।
तुर्येसुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिः पुत्रेऽथ षष्ठेऽरि पराजयः स्यात् ॥४७॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४७ ॥

जन्मलग्न में मेषार्क प्रवेश हो तो देह का सुख हो धन लग्न में हो तो धन लाभ, तीसरे लग्न में हो तो कुटुम्ब की वृद्धि हो, चौथे लग्न में हो तो मित्र सुख, पाँचवें लग्न में हो तो पुत्र सुख, छठें लग्न में हो तो शत्रु का पराजय होवे ॥ ४७ ॥

स्त्रीसौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्तसौख्यास्पदाप्तिः ।
लाभे लाभः सुखधनचया दुःखदारिद्र्यमन्त्ये
पुंसोमेषं प्रविशति रवौ जन्मलग्नाद्विलग्ने ॥ ४८ ॥

अन्वयः—स्पष्टम् ॥ ४८ ॥

सातवें लग्न में हो तो स्त्री का सुख हो, आठवें लग्न में हो तो मृत्यु अथवा रोगभय हो, नवें लग्न में हो तो धर्म लाभ, दशवें लग्न में हो तो धन का सुख और स्थान लाभ हो, ग्यारहवें लग्न में हो तो लाभ, सुख और धन संचय हो, बारहवें लग्न में हो तो दुःख और दरिद्रता होवे इस प्रकार मेषार्क प्रवेश होने पर जन्म लग्न से जिस लग्न में हो उस भाव का फल मनुष्यों को शुभ अशुभ कहना ॥ ४८ ॥

श्री नीलकण्ठेन शरत्फलोत्तरं प्रश्नाख्यतन्त्रं यदकारि पूर्वम् ।
तत्सांप्रतं पूर्णतरं न लभ्यते ह्यावश्यकं प्रश्नफलं हि मन्ये ॥ ४९ ॥

अन्वयः—श्री नीलकंठेन शरत्फलोत्तरं प्रश्नाख्यं तन्त्रं यत् पूर्वं अकारि तत्साम्प्रतं पूर्णतरं न लभ्यते हि एतत् प्रश्नफलं आवश्यकं इति मन्ये ॥ ४९ ॥

श्री नीलकण्ठ दैवज्ञ ने संज्ञातन्त्र और वर्षफल कहने के उपरान्त जो प्रश्न तन्त्र पूर्वकथन किया था वह पूर्ण प्राप्त नहीं हुआ इस कारण प्रश्न फल को आवश्यक मानकर जो कुछ रचित वा संगृहीत प्राप्त हुआ वह यहाँ लिख दिया है ॥ ४९ ॥

इति श्रीदैवज्ञानन्तसुतनीलकण्ठदैवज्ञसगृहीतं तृतीयं प्रश्नतन्त्रं समाप्तम् ॥ ३ ॥

इति नीलकण्ठीभाषाटीकायां प्रश्नतन्त्रे प्रकीर्णकाध्यायः समाप्तः ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिशिष्टप्रकरणम्

अथवर्षे शुभाशुभफलज्ञानार्थं त्रिपताकिचक्रम्–उक्तम् मुक्तावल्याम्

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्वसंस्थमन्योन्यविद्धाग्रगमेककोणात् ।
स्मृतं बुधैस्तत्त्रिपताकिचक्रम्प्राङ्मध्यरेखाग्रगवर्षलग्नात् ॥ १ ॥
न्यसेद्धचक्रं किल तत्र सैकां याताब्दसंख्यां विभजेन्नभोगैः ।
शेषोन्मिते जन्मगचन्द्रराशेस्तुल्ये च राशौ विलिखेच्छशाङ्कम् ॥ २ ॥
परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये स्थाने स्वराशौ खचरास्तु लेख्याः ।
स्वर्भानुविद्धे हिमगौ तु कष्टं पातार्किविद्धे रुगिणो भवन्ति ॥ ३ ॥
महीजविद्धे तु शरीरपीडा शुभैश्च विद्धे जयसौख्यलाभः ।
शुभाशुभंव्योमगवीर्यतोऽत्र फलञ्च वर्षस्यवदेत्सुधीमान् ॥ ४ ॥

तीन रेखा खड़ी और तीन रेखा तिरछी लिखकर परस्पर एक के कोण से दूसरे के कोण में रेखाओं के मिलाने से त्रिपताकी चक्र होता है । इसमें मध्य के रेखा में वर्षलग्न का स्थापन कर क्रम से बारहों भावों की स्थापना करनी चाहिये । गतवर्ष में एक जोड़कर ९ से भाग देना जो शेष बचे तत्तुल्य जन्मराशि से गिनकर जो राशि हो उस पर चन्द्रमा को लिखना, इसके बाद उसी एक जोड़े हुये गत वर्ष में चार से भाग देकर शेषतुल्य प्रत्येक ग्रहों के राशि से गिनकर शेष ग्रहों को रखना । यदि चन्द्रमा और राहु का वेध होता हो तो उस वर्ष में कष्ट होता है, केतु और शनि से चन्द्रमा का वेध हो तो रोग, मंगल से चन्द्रमा का वेध होता हो तो शरीर में पीड़ा (फोड़ा फुंसी वगैरह) होता है और यदि शुभग्रहों से चन्द्रमा का वेध होता हो तो जय और सुख तथा धनादि का लाभ होता है, इस प्रकार शुभाशुभ ग्रहों के द्वारा वर्ष में शुभ पापफल कहना चाहिए ।

त्रिपताकी चक्रम् ।

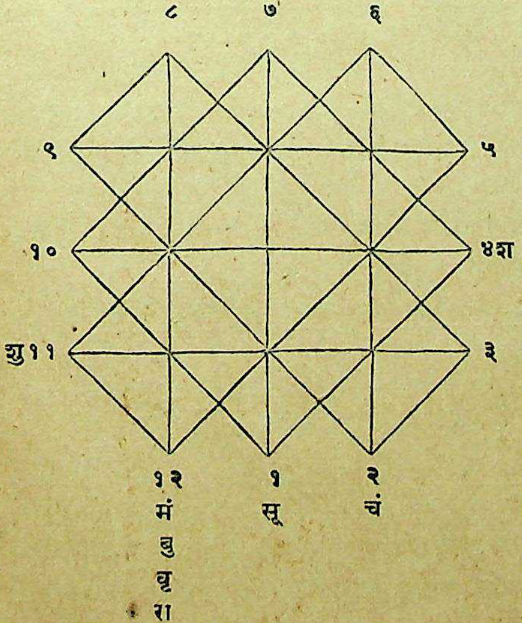

उदाहरण—

जैसे पूर्वोक्त गत वर्ष संख्या २१ इसमें १ जोड़ा तो २२ हुये इसमें ९ से भाग दिया शेष ४ बचा जन्मराशि कुम्भ उससे गणना करने से वृष राशि हुई उसपर चन्द्रमा को लिखा । तथा पूर्वोक्त सैकगतवर्ष २२ संख्या में चार ४ से भाग दिया तो शेष २ सूर्य मीन राशि का है उससे दूसरी राशि मेष में सूर्य हुआ इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी जानना चाहिये ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुद्दादशा बनाने का नियम—

जन्मर्क्षसंख्यासहिता गताब्दा द्व्यूनिता नन्दहृतावशेषम् ।
आ चं-कु-रा-जी-श-बु केतु-भार्गवाः दशाक्रमोऽब्दे परिचिन्तनीयाः ॥ १ ॥

अश्विनी से जन्मनक्षत्र तक गिनने से जो संख्या हो उसमें गतवर्ष की संख्या जोड़ कर दो २ घटाकर शेष में नौ ९ का भाग देवे, एकादि शेष में क्रम से सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र, वर्ष में मुद्दादशा के स्वामी होते हैं। अर्थात् शेषतुल्य ग्रह की दशा पहले आरम्भ होती है

मुद्दादशा के मासादिक—

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन

उदाहरण—जन्मनक्षत्र शतभिषा (आश्विन्यादि से गणना करने से) की संख्या २४ इसमें गतवर्ष की संख्या २१ जोड़कर दो २ घटाया तो शेष २४+२१−२=४३ इसमें ९ का भाग दिया तो $\frac{४३}{९}$=७ शेष बचा। एकादि गणनाक्रम में बुध की दशा आरम्भ में हुई।

दशाचक्रम् ।

बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं	रा.	बृ.	श.		
१	०	२	०	१	०	१	१	१		मास
२१	२१	०	१८	०	२१	२४	१८	२७		दिन
१९९२	१९९३	९३	९३	९३	९३	९३	९३	९३	१९९३	सम्वत्
११	०	१	३	४	५	५	७	९	११	सू. रा.
०	२१	१२	१२	०	०	२१	१५	३	०	अंश

गताः समा इति—पृ. ६ श्लो. १६

अत्रोपपत्तिः— दि. घ. प. वि.

एकस्मिन्सौरवर्षे सौरमतेन सावन दिनाद्यम् = ३६५ । १५ । ३१ । ३१·४

अत्राचार्येण लाघवाथ स्वल्पान्तरात् विपलास्थाने ३० इति गृहीताः तथा वारस्थाने सप्ततष्टिते शेष = १ । १५ । ३१ । ३०

ततोऽनुपातः—यद्येकस्मिन्वर्षे एतावन्ति सावनानि (१ । १५ । ३१ । ३०) तदा गतवर्षे किमिति गतवर्षसम्बन्धिदिनाद्यम् ।

$$\text{गवसंदिआ} = \frac{(१ । १५ । ३१ । ३०) \times \text{गव}}{१} = \frac{\text{गव}\left(१+\frac{१५}{६०}+३१+\frac{३०}{६०}\right)}{१}$$

$$= \text{गव}\left(१+\frac{१}{४}+३१+\frac{१}{२}\right) = \text{गव} + \frac{\text{गव}}{४} + \left(\frac{६३}{२\times६०}\right)\text{गव}$$

$$= \text{गव} + \frac{\text{गव}}{४} + \frac{२१\times\text{गव}}{४०}$$

अत्रागतसावनदिनाद्यम् जन्मकालादग्रतो गतवर्षसम्बन्धिनः, अतो जन्मकालिक वारादिना युतं सृष्ट्यादितो वारादिकम् भवेत्। वारः सप्तैवातो वारस्थाने सप्ततष्टितमत उपपन्नम्।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिवघ्नोऽब्द इति—पृ० ९ श्लो० १७

एकस्मिन्सौरवर्षे सावनादिनादि = ३६५ । १५ । ३१ । ३१·४

" " अवम दिनादि = ५ । ४८ । २२ । ७

द्वयोर्योगेनैकस्मिन् वर्षे चान्द्रदिनादिकम् = ३७१ । ३ । ५३ । ३८·४

दिनेषु त्रिंशतातष्टितेषु शेषं = ११ । ३ $\times \frac{५४}{६०}$ स्वल्पान्तरात् ।

$$= ११ + \frac{२३४}{६० \times ६०}$$

अत्र $\frac{२३४}{३६००}$ हरांशौ विंशत्यापवर्त्तितौ $= \dfrac{\frac{२३४}{२०}}{\frac{३६००}{२०}} = \dfrac{११ + \frac{१४}{०}}{१८०}$ अत्राचार्येण सुखार्थमभिन्न-गुणनभजनार्थं

स्वल्पान्तरात् हरांशस्थाने क्रमेण १०, $\frac{१४}{२०}$ त्यक्त्वा $\frac{११}{१७०}$ इति हरांशौ कल्पितौ, तथा कृते एकस्मिन् वर्षे तिथ्यादिकं $= ११ + \frac{११}{१७०}$ ततोऽनुपातः—यद्येकस्मिन् वर्षेऽयं $११ + \frac{११}{१७०}$ तिथ्यादिकं तदा गतवर्षे किमिति गतवर्षसम्बन्धि तिथ्यादिकं $= \dfrac{\left(११ + \frac{११}{१७०}\right) \times गव}{१}$

$= गव \times ११ + \dfrac{११ \; गव}{१७०}$ एतज्जन्मकालिकतिथ्यादिना सहितं तदा चैत्रशुक्लप्रदिपदादितो वर्षप्रवेशकालिकतिथयो भवेयुरित्युपपन्नम् ।

गतैष्यदिवसाद्येनेति—पृ० ११ श्लो० १८

अत्रोपपत्तिः—कश्चिद्दिवसीयाभीष्टकालिकस्पष्ट ग्रहेभ्यः तत्पूर्वापरदिवसीयेष्टघटीपलादिषु स्पष्टग्रहज्ञानमावश्यकं तदा अन्तरदिनादिकं चालनं गतं ऋणसंज्ञकमैष्यंधनसंज्ञकं च ज्ञेयम् सम्प्रति जन्मेष्टकालिकं वर्षेष्टकालिकं वा ग्रहसाधनं पञ्चाङ्गस्थमिश्रकालीनग्रहादेव चालनवशेन कुर्वन्ति दैवज्ञाः । तथा चैतत्प्रयुक्तं कस्यचित्पद्यम्—"स्वेष्टादग्रे भवेत्पक्तिरित्यादि"

प्रकृतमनुसरामः —

अनुपातः—यद्येकस्मिन्दिने ग्रहगतिकला लभ्यते तदा गतैष्यदिवसाद्येन किमिति फलं गतैष्यदिनसम्बन्धिन्यो गतिकलाः $= \dfrac{ग्रगक \times गत० ऐ० दि}{१}$ कलासु षष्टितष्टितेषु फलमंशाद्यं

$= \dfrac{ग्रगक \times गतैष्यदि}{१ \times ६०}$ इदमंशादिकं फलं गतगम् यच्चालनक्रमेण मिश्रकालीनग्रहेषु ऋणं धनं वा कार्यं तदा स्वेष्टकालिकाः स्पष्टग्रहाः भवेयुरित्युपपन्नं सर्वम् ।

खषट्घ्नं भयातमिति—पृ० १४ श्लो० १९

जन्मसमयात्पूर्वं यावत्यो नक्षत्रस्य गतघट्यस्ताः भयातपदेन व्यवह्रियन्ते । एवं नक्षत्रस्य भोगघट्यादिकं भभोगपदेन व्यवह्रियते इति स्पष्टार्थः । जन्मसमयात्पूर्वं जन्मनक्षत्रस्य कियन्ति घटिकादीन्यतीतान्येतज्ज्ञानार्थं गतनक्षत्रस्य घट्यादिकं षष्टिघटिकासु शोध्यं तदा जन्मनक्षत्रारम्भकालाज्जन्मदिनजसूर्योदयात्पूर्वं जन्मनक्षत्रस्य गतघटिका भवेयुस्तस्मिन्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूर्योदयाज्जन्मसमयपर्यन्तमिष्टघट्यादिकं योज्यं तदा जन्मसमयपर्यन्तं जन्मनक्षत्रस्य गतघटिकाः भयातसंज्ञका भवेयुः। एवं पूर्वागतशेषे जन्मदिवसीया जन्मनक्षत्रस्यघटिकाः योज्यास्तदा जन्मनक्षत्रस्य सम्पूर्णभोगः भभोगसंज्ञको भवेत्। यथा कस्यचित्पद्यम्—गतर्क्ष-नाड्यः खरसेषु शुद्धाः" इति।

अथ मूलोपपत्तिः—

अत्रानुपातः—यदि भभोगघटीभिः सम्पूर्णमेकं नक्षत्रमानं लभ्यते तदा भयातघटीभिः किमिति लब्धं जन्मनक्षत्रस्य घटिकादयः $= \frac{१ \text{ भया}}{\text{भभो}}$ इदमश्विन्यादितो गतनक्षत्रसंख्यया युतं तदा

अश्विन्यादितो गतनक्षत्रप्रमाणं $= \text{गत} + \frac{१ \times \text{भया}}{\text{भभो}}$ ततोऽनुपातः—यदि सप्ताश्विमितै-र्नक्षत्रैर्भगणांशाः लभ्यंते तदा भुक्तनक्षत्रैः किमिति लब्धं चन्द्रस्य भुक्तांशाः

$$= \frac{६\left\{ ६०\left(\text{गत} + \frac{\text{भया}}{\text{भभो}} \right) \right\}}{९ \times ३} = \frac{२\left\{ ६० \text{ गत} + \frac{६० \times \text{भया}}{\text{भभो}} \right\}}{९}$$

उपपन्नं चन्द्रानयनम्।

अथ गत्यानयनोपपत्तिः—

$$\left\{ \begin{array}{l} १ \text{ भगणः } १२ \text{ राशि} = २७ \text{ नक्षत्र} \\ = १२ \times ३० = ३६० \text{ अंशाः} \end{array} \right.$$

चन्द्रस्य सप्तविंशतिनक्षत्रात्मकभगणपूर्त्तिस्तु २१६०० कलाभिर्भवति तदैक नक्षत्र पूर्तिकालः ८०० कलाभिर्भवति। ततोऽनुपातः—यदि भभोगघटीभिः ८०० कलाः प्राप्यन्ते तदा षष्टिघटिकासु किर्यादति लब्धं चन्द्रस्य कलात्मिका गतिः

$$= \frac{८०० \times ६०}{\text{भभो}} = \frac{४८०००}{\text{भभो}} \qquad \text{उपपन्नं गत्यानयनम्}$$

पूर्वं नतमिति—पृ० १६ श्लो. २०

पूर्वं क्षितिजादूर्ध्वमहोरात्रवृत्तयाम्योत्तरवृत्तसम्पातावधि दिवसस्य पूर्वकपालं तदेव दिनार्धञ्च। एवं याम्योत्तराहोरात्रवृत्तसम्पातादस्तक्षितिजावधि अर्थात् (पश्चिमक्षितिजावधि) पश्चिमकपालमपरदिनार्धञ्च। अस्तक्षितिजादधः याम्योत्तराहोरात्रवृत्तसम्पातावधि निशायाः पूर्वकपालं तदेव रात्र्यर्धञ्च। एवमधोयाम्योत्तराहोरात्रवृत्तसम्पातात्पूर्वक्षितिजाहोरात्रवृत्त-सम्पातावधि रात्रेः पश्चिमकपालमपरं रात्र्यर्धञ्च भवति। पूर्वक्षितिजाद्ग्रहावध्यहोरात्रवृत्ते इष्टकालः स चेद्दिनार्धाच्छोध्यते तदोर्ध्वयाम्योत्तराहोरात्रवृत्तसम्पाताद्ग्रहावध्यवशिष्यते तदेव पूर्वनतमिति व्यवह्रियते। चेद्दिनार्धादधिकमिष्टं तदा ग्रहः पश्चिमकपाले वर्त्ततेऽतो इष्ट-कालादेव दिनार्धं शुध्यति तदा शेषं दिवापरनतं भवेत्। एवं रात्रावपि बोध्यम्। उपपन्नम्॥

तत्काले सायनार्कस्यैति—पृ. १६, श्लोक २१. २२

अत्रोपपत्तिः—इष्टकाले क्रान्तिवृत्तस्य यो प्रदेशः क्षितिजे लगति तदेव लग्नपदेन व्यवह्रियते, यत उक्तं भास्कराचार्येण—'यत्रलग्नमपमण्डलं कुजे' तद्गृहाद्य मिह लग्नमुच्यते, अत्र सावनेष्टकालतात्कालिकार्काभ्यां लग्नं साध्यते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रवितः क्रान्तिवृत्तक्षितिजवृत्तसम्पातावधि क्रान्तिवृत्ते रवेर्भोग्यांशा लग्नस्य भुक्तांशास्तदन्तरालोदयांशाश्च वर्त्तन्ते। एवं रवितः रव्युपरिगताहोरात्रवृत्तक्षितिजवृत्तसम्पातावध्यहोरात्रवृत्तेऽर्कस्य भोग्यपलानि लग्नस्य भुक्तपलानि तदन्तरालोदयपलानि वर्त्तन्ते, परन्त्वेवं भोग्यप्रकारेण लग्नानयने ज्ञेयं। भुक्तप्रकारेण तु—

रवितः क्रान्तिवृत्तक्षितिजवृत्तसम्पातावधि क्रान्तिवृत्ते रवेर्भोग्यांशाः लग्नस्य भुक्तांशाः तदन्तरालोदयांशाश्च वर्त्तन्ते। एवं रवितः रव्युपरिगताहोरात्रवृत्तक्षितिजवृत्तसम्पातावध्यहोरात्रवृत्तेरवे. भोग्यकालः लग्नस्य भुक्तकालः तदन्तरालोदयकालश्च वर्त्तते। तत्रतावत् रवेः भोग्य कालज्ञानार्थमनुपातः—यदि त्रिंशदंशैः रविनिष्ठराश्युदयपलानि प्राप्यन्ते तदा रवेर्भोग्यांशै किमिति लब्धमर्कस्य भोग्यपलानि $= \frac{\text{रविनिराश्उप} \times \text{रभोअं}}{३०}$ (अ)

एवं पूर्ववदनुपातेनार्कस्य भुक्तपलानि $= \frac{\text{र०नि०रा०उ०प} \times \text{र०भु०अं}}{३०}$ (व)

एतानी (अ)। (व) इष्टनाडीपलेभ्यः शोध्यानि तदा शेषम्

भोप्र—इनाप = रभोप + लभुप + अंराउप

भुप्र—इनाप = रभुप + लभोप + अंराउप

शेष = (रभोप + लभुप + अंराउप)—रभोप = लभुप + अंराउप

शेष = (रभुप + लभोव + अंराउप)—रभुप = लभोप + अंराउप

उपर्युक्तशेषे यावन्तिराश्युदयपलानि शुध्येत्तावन्ति शोध्यानि—यस्य भस्योदयपलमानं न शुद्धेत्तदशुद्ध संज्ञकं वेद्यम् एवं शोधने क्रमेण शेषे =

भो० शे = (लभु + अंराउप)—राउप = लभुप

भु० शे = (लभो + अंराउप)—राउप = लभोप

एवमागतशेषाभ्यां क्रमेण लग्नस्य भुक्त—भोग्यांशानयनमनुपातेन—यद्यशुद्धभोदयपलैः त्रिंशदंशास्तदा लग्नभुक्तभोग्यपलः किमिति

लभुक्तांशाः $= \frac{३० \times \text{लभुप}}{\text{अशुराउप}}$ (इ)

(इ) अनेनयुक्ता शुद्धराशिसंख्या तदा चलमेषादितोऽर्थात् सायनमेषादितो सायनलग्नं स्यात्।

लभोग्यांशाः $= \frac{३० \times \text{लभो अं}}{\text{अशराउप}}$ (इ')

(इ') एतेऽशुद्धराशिसंख्यासूनितासु शेषं सायनमेषादितो सायनलग्नं स्यात्।

उभयत्र व्ययनांशेन निरयणमेषादितो लग्नम् स्यादित्युपपन्नं यथोक्तम्।

एवं लङ्कोदयैरित्यादि—पृ० १६ श्लो० २२

अत्रोपपत्तिः—तत्रेष्टसमये क्रांतिवृत्तस्य यः प्रदेशो याम्योत्तरवृत्ते लगति तदेव दशमलग्नपदेन व्यवहृयते यथोक्तं भास्कराचार्येण—'मध्यलग्नमिति दक्षिणोत्तरे'। तत्र पूर्वस्वस्तिकवतां निरक्षदेशीयानां स्वयाम्योत्तरवृत्तमेव निरक्षक्षितिजम्। तथा रविदशमलग्नांतर्गतं भुजकोट्यंशभवविपुवपलं नतकालसमं तेन निरक्षोदयमानादेव दशमलग्नानयनं समुचितं। अत्र पूर्वनते रवितः नतकालांतरे दशमलग्नस्य स्थितत्वात्पूर्वोक्त्या भुक्तप्रकारेण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्रिया कार्या एवं परनते रवितः नतकालांतरेण पूर्वं दशमलग्नस्य स्थितत्वात्भोग्यलग्नवल्लग्नं साध्यं तद्दशमलग्नं भवेदित्युपपन्नम् ।

सषड्भे इति—पृ १६ श्लो. २४....२६

अत्रोपपत्तिः—गोलीयरेखागणितयुक्त्या द्वयोर्महद्वृत्तयोः षड्भान्तरे सम्पातसत्वात्क्षितिजवृत्तक्रान्तिवृत्तसम्पातरूपप्रथमलग्नाद्द्वितीयसम्पातं षड्भान्तरितमर्थादस्तक्षितिजक्रान्तिवृत्तसम्पातरूपमस्तलग्नमतः सषड्भं लग्नं जायाभवनं स्यात् । एवमूर्ध्वं याम्योत्तरवृत्तक्रान्तिवृत्तसम्पातरूपदशमलग्नादधः याम्योत्तरवृत्तक्रान्तिवृत्तसम्पात रूपचतुर्थ लग्न षड्भान्तरेऽतो दशमं सषड्भं चतुर्थभावो भवतीति सुष्टुक्तं 'सषड्भे लग्न खे जायातुर्यौ' इति ।

अथ लग्नाच्चतुर्थभावावधि तथा चतुर्थात्सप्तमावधि, सप्तमाद्दशमावधि तथा च दशमाद्द्वादशावधि ये क्रान्तिवृत्तप्रदेशानां समास्त्रयो विभागाः त एवश्रीपत्यादिभिः आचार्यैः सामान्यतो तन्वादि भावाः स्वीकृताः । तया च भावयोरन्तर्गतक्रान्तिवृत्त प्रदेशानामर्धं त्र्यंशार्धं वा पूर्वापरभावयोः विराम आरम्भ सन्धीति स्वीकृतम् । अतः चतुर्थलग्नान्तरस्य त्र्यंशार्धं $\left(\frac{\text{च-ल}}{३ \times २}\right) = \left(\frac{\text{च-ल}}{६}\right)$ मिदं लग्ने योज्यं तदा तनुभावस्यविरामसंधिः ।

तथा धनभावस्यारम्भसंधिः स्यादेवमग्रेऽपि षष्ठांशयोजनात् ससंधयो त्रयो भावाः स्युः । अथ लग्नात्सप्तमावधि षड्राशिस्तेन चतुर्थलग्नांतरं षड्राशिमध्ये शोध्यं तदा चतुर्थसप्तमांतरं जातम् ।

$६ - \left(\frac{\text{च-ल}}{६}\right) = १ - \left(\frac{\text{च-ल}}{६}\right)$ इदमंतरं क्रमेणोत्तरोत्तरं चतुर्थादिभावेषु योज्यं तदाऽग्रे रिपु भावपर्यंतं ससंधयो त्रयो भवाः स्युः । अथ लग्नात्सप्तमभावावधि षड्राशिस्तथा सप्तम भावाद्दशमभावावधि षड्राशिस्तेन चतुर्थसप्तमांतरं सममुभयनिष्ठं खण्डंचेच्छोध्यते तदा उभयतः लग्नचतुर्थांतरं तथा सप्तमदशमांतरसममेवावशिष्यते । अतो तन्वादिससंधि भावमध्ये षडराशियोजनेन परेऽपि षट् भावाः स्युरित्युपपन्नम् सर्वम् ।

भुक्तं भोग्यमिति—पृ. १९ श्लो० २७

अत्रोपपत्तिः—अभीष्टलग्नराशौ यदि रविः स्यात्तदाऽर्कभुक्तभोग्यकालेभ्यो इष्टकालो न्यून इति रविलग्नान्तर्गतभागेभ्यो भुक्तभोग्यकालस्याल्पत्वात् । तत्र इष्टनाडीपलोद्भवैः लग्नार्कान्तरांशैः ऊनयुक्तरवौ अभीष्टलग्नं भवति । इष्टनाडीपलजनितलग्नार्कान्तरांशानयनार्थमनुपातः—यदि राश्युदयपलैः स्वदेशीयैः त्रिंशदंशाः तदेष्टनाडीपलैः किमिति जातम् $= \frac{३० \times इ० प}{रा० उ० प}$ अत्र रात्रीष्टकाले लाघवात्सषड्भरवितः भोग्यं वा भुक्तं साध्यं तथेष्टनाडीपलं तु सूर्यास्तादेव ग्राह्यं सूर्यस्य सषड्भत्वात् । उपपन्नम् ।

तत्सप्तमं नीचमित्यादि—पृ० २५ श्लो० ३२

अत्रोपपत्तिः

तत्र उच्चसमे ग्रहे परमं फलं विंशतिसमं, नीचस्थे ग्रहे खं फलमिति । अवान्तरेऽ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नुपातः तद्यथा—उच्चान्नीचः सषड्भान्तरे अर्थात् मष्टेन्दुमितांशान्तरेऽतोऽनुपातः यदि नीचग्रहयोरंतराशैः खाष्टेन्दुमितैरंशैः विंशति बलं तदेष्टग्रहनीचान्तरांशैकिमिति जात-

मुच्चबलं $= \frac{२० \times (\text{नीच} \sim \text{ग्रह})}{१८०} = \frac{१ \times (\text{नीच} \sim \text{ग्रह})}{९}$ अत्र ग्रहान्नीचावधि उच्चबलस्य

सत्वान्नीच ग्रहान्तरं षड्भादधिकं चक्राद्विशोध्यते तदा ग्रहोननीच समावशिष्यते। उपपन्नन्।

दृष्टिः स्यान्नवपञ्चमे बलवतीति—पृ० ४५ श्लो० ९।

अत्रोपपत्तिः—उक्त सूत्रेण मेषादिराशौ यत्संख्यकभागादौ द्रष्टाग्रहः स्थितस्ततः दृष्ट्युक्तस्थाने तत्समभागादौ यदा दृश्यग्रहः स्यात्तदोक्तदृष्टिः स्याद्यथा द्विराश्यादौ शून्य-समा दृष्टिः त्रिराश्यादौ त्रिभागोना चत्वारिंशत्कला दृष्टिः परन्तु यदेवैकस्यान्तः स एव द्वितीयस्यादिः एवं क्रमेण दृष्टिकलाः पठिताः आचार्येण–द्रष्टा दृश्यग्रहयोरन्तरज्ञानार्थं द्रष्टा-ग्रहेणोनः दृश्यग्रहः कृतस्तत्र राशिस्थाने एकादिशेषे गताः दृष्टिध्रुवाः स्युः, अशाद्यवयवस्य दृष्टिसाधनार्थमनुपातः—त्रिंशदंशैः गतैष्यध्रुवान्तररूपमुपचयापचयं फलं तदेष्टांशै किमिति

$= \frac{(\text{गध्रु} \sim \text{ऐध्रु})\ \text{शेअं}}{३०}$ फलं गत ध्रुवास्याधिकोनकैष्ये सति गतध्रुवे क्रमेण धनर्णं

कार्यमित्युपपन्नम्।

स्वनाथहीनं सहममिति—पृ० ९२ श्लो० २५

अत्रोपपत्तिः—

तत्रवर्षारम्भतः स्वनाथोनसहमोत्पन्नसौरदिवसैरेव सहमफलं भविष्यतीति प्राची-नोक्तिः तदन्तरसौरदिन साधनार्थमनुपातः–यदि त्रिंशदंशैः सहमराश्युदयपलानि लभ्यते

तदा स्वनाथोनसहमांशैः किमिति लब्धं तदुत्पन्नपलानि $= \frac{\text{स. राउप} \times (\text{स}-\text{सस्वा})}{३०}$

पलानि दशभक्ताविषुवांशाः भवेयुः, अतः पूर्वानीतपलसम्बधि विषुवांशाः $=$

$\frac{\text{स. राउप}-(\text{स}-\text{सस्वा})}{३० \times १०}$ = सूर्यभुक्तांशाः ततोऽनुपातः यद्येकांशैः एकं दिनं तदा एभिः

किमिति सौदि$= \frac{\text{स. राउप}-(\text{स}-\text{सत्वा})-१-\text{स. राउप}-(\text{स}-\text{सत्वा})}{३०० \times १ \qquad ३००}$

स्पष्टांसलग्नानिति—पृ० १०२-१०३ श्लो० ६४····६७

अत्रोपपत्तिः—यः कोऽपि ग्रहः रात्र्यादौ पूर्णफलदः मध्ये मध्यफलदः अंत्ये अल्प-फलदः इति प्राचीनोक्तिः तथा च तद्वाक्यम्—

आदौ सम्पूर्णफलदं मध्ये मध्यफलप्रदं।
अन्ये तुच्छफलं लग्नं सर्वस्मिन्नेवमेवहि॥

इत्यादि वचनात्सर्वांशाल्पग्रह एव पूर्णफलदः अतस्तस्यैव प्रथमा दशा पूर्वाततस्त-तोऽधिकांशस्य इति हीनाशस्थापनं सुयुक्तिकमुक्तं—

प्रथमहीनांशदशामानात्तदग्रिमाधिकहीनांशदशामानं कियत्कालावधिस्यात्। एतदर्थं पूर्वहीनाशोनस्तदग्रिमो विहित इति पात्यांशस्थापनं सुयुक्तिकमुक्तं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिनाद्यनयनार्थमनुपातः—यदि सर्वाधिकांशैः शुद्धांशयोगैः सौरवर्षोद्भवदिनं ३६० लभ्यते तदा पृथक् पात्यांशैः किमिति लब्धं दिनाद्यं $= \frac{३६० \times पात्यां}{शुयो}$ = अत्रलाघवार्थं $\frac{३६०}{शुद्धांशयो}$ अस्य ध्रुवाङ्कसंज्ञा कृतमाचार्येण-उपपन्नम् ।

प्रत्यहं शरलिप्ताभिरित्यादि—पृ० ४१ श्लो० ६६...६७

अत्रोपपत्तिः—स्वजन्मलग्नात्प्रतिवर्षमेकैकराशिभोगादित्यादिना जन्मसमये जन्मलग्ने एव मुथहा ततः एकैकं राशिवृद्ध्या मुथहाया व्यवहारस्तेन द्वादश समगतवर्षेषु पुनर्जन्मलग्ने एव मुथहा स्यात्तेन द्वादशाल्पे गतवर्षे जन्मलग्नयुतं राश्यादिकं मुथहा स्यात्तेन रवितष्टं वात शरघ्नयुतमित्युपपन्नम् ।

अथ प्रत्येकमासे अंशादिमुथहानयनार्थमनुपातः—यदि द्वादशभिर्मासैः त्रिंशद्भागास्तदैकेन मासेन किमिति लब्धं सार्धमंशद्वयं $= \frac{३० \times १}{१२} = २\frac{१}{२}$

अथ प्रत्येकदिने मुथहानयनार्थमनुपातः—यदि त्रिंशद्दिनैः खवाणेंदुमिताः कलास्तदैकेन दिनेन किमिति लब्धं पंचकलाः $= \frac{१५० \times १}{३०}$ ५ उपपन्नम् ।

एकैकराशिवृद्ध्या चेत्तुल्योंऽशाद्यैरिति—पृ० १०५–१०६श्लो० ६९—७१

अत्र "मासैर्द्वादशभिर्वर्ष"मिति सौरोक्तपद्येन सूर्यांशसाम्यात्सौरमानेन मासप्रवेशः स्यात् । परन्तु "मासास्तथा च तिथयस्तुहिनांशमानात्" इति सौरोक्तपद्येन मासगणना सौरमानेनानुचिता सत्यं परन्तु चान्द्रमानेन त्रयोदशमासात्मकवर्षगणनायां गौरवदोषापत्तिस्तेन सौरात्मकएव मासप्रवेशो दिनप्रवेशश्चग्राह्य इति । मासार्कस्य तदासन्नेति—अत्रोपपत्तिः ।

तत्र प्रथममासप्रवेशः वर्षप्रवेशेष्टार्क सम एव वर्त्तते । द्वितीयादिमासप्रवेशकालिक इष्ट, सूर्यादिसाधनार्थमुपायः तत्रैकैकराशिवृद्ध्या यो मासार्कः यस्मिन् दिनजसूर्यतुल्यस्तदासन्नपंक्तिस्थार्कयोरन्तरं विधेयमतोऽनुपातः—यदि पंक्तिस्थ रविगतिकलाभिरेकं दिनं तदा अन्तरकलाभिः किमिति फलं दिनाद्यं$=\frac{१ \times अन्तरकला}{र. ग. क}$पंक्तिस्थार्कान्मासार्केऽधिकहीनके पंक्त्यां फलं युतोनं विधेयं तदा तद्वारादौ मासप्रवेशः स्यादित्युपपन्नम् एवं द्युप्रवेशेऽपि विधेयम् ।

वेदनन्दाङ्कभूतुल्ये वैक्रमीये सुवत्सरे ।
श्रावणस्य सितेपक्षे पञ्चम्यां बुधवासरे ॥ १ ॥
यन्त्रैः प्रकाशितश्चायं श्रीगणेशेनधीमता ।
यदत्रस्खलनं किञ्चिच्छोधनीयं बुधैर्धियां ॥ २ ॥

* श्रीरस्तु *

मुद्रक—पं० वैकुण्ठनाथ भार्गव, आनन्दसागर प्रेस, गायघाट, बनारस १.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

State Museum Library * Lucknow *

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh